त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

Dr. Harish Kumar
Professor
Bihta Patna

मंगल मूर्त्तये गणाधि पतये नमः

भूमिका

सन् १९३६ ई० में स्व० बाबा गंगा प्रसाद सिंह और बाबा शिवनन्दन सिंह (मुंशी, पुलिस विभाग) की सहायता से मैंने 'पयनाल' ग्राम के सावर्णियाँ भूमिहार ब्राह्मणों की वंशावली' तैयार की थी। उसकी मूल प्रति श्री गंगा प्रसाद सिंह के पास थी, जो उनकी मृत्यु के पश्चात् गुम हो गयी। परन्तु, सन् १९३५ ई० में जो मैंने 'रफ' किया था, वह प्रति अचानक मुझे मिल गयी। तब उसे पुनर्निर्माण की उत्कण्ठा हुई।

गाँव के प्रमुख व्यक्तियों को एकत्र करके इस पर विचार-विमर्श किया गया और सर्व सम्मति से इसे प्रकाशित कराने का प्रस्ताव पास हो गया।

इस गाँव के एक वयों वृद्ध व्यक्ति मुनिजी (श्री कृष्ण सिंह) ने परामर्श दिया कि 'वंशावली के साथ-साथ एतद् विषयक कुछ इतिहास लिखना भी आवश्यक है। और जब 'पयनाल का इतिहास' लिखा जाय, तब इसमें यहाँ की सभी जातियों का समावेश हो। हमारी भी पहले से यही इच्छा थी। यह भी पास हो गया।

अब रहा यह कि इतिहास लिखेगा कौन? इस पर बहुत तर्क-वितर्क के बाद इसका भार भी मुझ पर ही सौंपा गया, परन्तु मैं इस गुरुतर कार्य के उपयुक्त नहीं था, क्योंकि सन् १९२२ ई० में मैंने मिड्ल वर्नाक्युलर परीक्षा पास की थी और तब से अभी तक मैं गार्हस्थ्य-जीवन में व्यस्त रह कर सम्प्रति एल० एल० पी० पी० (लिख लोढ़ा-पढ़ पत्थर) सदृश हूँ। अस्तु, यह कार्य सम्पन्न करना मुझे असंभव प्रतीत हुआ। परन्तु, (हिम्मते मर्दां, मद्द दे खुदा) कहावत स्मरण कर के, जब मैंने दृढ़ प्रतिज्ञ होकर कार्यारम्भ किया, तब यह बात विहटा कॉलेज के, अमहरा निवासी एक आध्यापक श्री रामनाथ शर्मा को ज्ञात हुई। उन्होंने मुझे प्रोत्साहित करने के निमित एतद् विषयक अपनी प्रकाशित पुस्तक 'अमहरा' की एक प्रति मेरे पास भेजकर मुझे परम उपकृत और अनुगृहीत करके इस कार्य के लिए मार्ग-दर्शन किया। श्री शर्मा का मार्ग-दर्शन मेरे इस कार्य का 'संबल' बना।

जन नायक श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती

जन्म—
महा शिवरात्रि, १९४५ वि०

निर्वाण—
आषाढ़ कृष्ण ११ सं० २००७ वि०

अति अपार जे सरित वर, जो नृप सेतु कराहिं।
चढ़ी पिपीलकउ परम लघु, बिनुश्रम पारहि जाहिं॥

'अमहरा' के आधार पर मैंने 'पयनाल' का इतिहास लिखने की चेष्टा की है, 'अमहरा' एक विद्वान् व्यक्ति का लिखा हुआ है। उसमें उल्लिखित बहुत-सी बातें मेरी समझ नहीं आ सकी। परन्तु जो बातें सुलभ थीं, उसके आधार पर ही मैंने 'पयनाल का इतिहास' लिखा है।

'पयनाल का इतिहास' एक कहानी की तरह लिखा गया है, जिससे बच्चों से बूढ़ों तक का अपने पूर्वजों की जानकारी के साथ-साथ मनोरंजन भी हो सके।

इसमें धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, ज्योतिष, गणित, संगीत आदि कृत्यों का भी समावेश है। भाषा बिलकुल सरल है। कहीं-कहीं फारसी के शब्द भी इस्तेमाल किये गये हैं, वे भी कठिन नहीं हैं।

पुस्तक-प्रकाशनार्थ अर्थ-संचय करने में इस ग्राम के श्री शालिग्राम सिंह और श्री राम प्रभु सिंह ने अथक परिश्रम किया है। वस्तुतः इन दोनों के ही प्रयत्न और प्रयास से इसका प्रकाशन संभव हुआ है।

चन्दा-वसूल करने में श्री कृष्ण मुरारि शर्मा, श्री चन्द्रदेव सिंह और श्री रामरेखा सिंह से भी सहायता मिली है। मैं इन लोगों का सदा कृतज्ञ रहूँगा।

सरिता कुमारी शर्मा, सियावरी शर्मा, शान्ति कुमारी शर्मा, प्रभावती मिश्रा और रुमा मिश्रा से लोकगीत प्राप्त हुए हैं। अस्तु, इन बच्चियों की भी मैं शुभ कामना करता हूँ।

पयनाल गढ़ का इतिहास लिखनें में स्व० बच्चू प्रसाद (रणजीत प्रसाद सिंह) से, स्वतंत्रता संग्राम में श्री कपिलदेव सिंह (टी०टी० ई०), पं० दुग्धेश्वर मिश्र और स्वतंत्रता सेनानी श्री चन्द्रिका सिंह (गांधी) से सहायता मिली है। अतः मैं इनका भी कृतज्ञ हूँ।

इस पुस्तक में जो भूमिहार ब्राह्मणों का वंश-विस्तर लिखा गया है, उससे भिन्न 'वंश-वृक्ष' का एक वृहद् चार्ट बनाया गया था। फोटोग्राफर ने इस चार्ट को देखकर बताया कि इसे छपवाने में बहुत रुपये लगेंगे। मैंने सोचा, इतने रुपये कहाँ से एकत्र होंगे? अस्तु, मैंने उस चार्ट को लपेट कर रख दिया।

एक दिन इसे इस ग्राम के श्री रामप्रवेश सिंह (पत्रकार) ने देखा, तो कहाकि बेजोड़ चीज आपने तैयार की है। इसे अवश्य प्रकाशित कराना चाहिए। इसके लिए यदि इसमें व्यक्तियों के नामके बाद सिंह शर्मा, ठाकुर इत्यादि

उपाधियों को छोड़कर नाम लिखे जाएँ तो यह चार्ट छोटा हो जायगा और इसका ब्लॉक बनकर यह छप जायगा। इसमें रुपये बहुत कम लगेंगे। यह एक अच्छा सुझाव हुआ। मैंने श्री रामप्रवेश सिंह के अनुसार फिर सेइसका चार्ट बनाया और हम दोनों आदमी इस चार्ट के साथ पटना नालंदा ब्लोक वर्क्स में पहुँचे।

नालन्दा ब्लॉक वर्क्स के मैनेजर श्री कमला प्रसाद इसे देखकर आश्चर्य चकित हो गये और उन्होंने कहा कि वस्तुत: यह एक अद्भुत् चार्ट है। हमारे यहाँ ऐसा विचित्र नक्शा का ब्लॉक कभी किसी ने नहीं बनवाया।

हमलोगों ने इनसे कहा कि इसे इतना छोटा रूप में ब्लॉक बना दीजिए कि रुपये कम से कम लगें और छपने पर लिखावट स्पष्ट पढ़ा जा सके। मेरा हस्तनिर्मित नकशा लम्बाई-चौड़ाई में ३१ × ३० ईंच था। इसे मैनेजर श्री कमला प्रसाद ने १३ × १२ ईंच साइज में तैयार करने का खर्च, मात्र २६५ रुपया बतलाया।(हमलोग तत्काल उन्हें यह काम सुपुर्द कर दिये।

ब्लॉक बनकर 'वंश-वृक्ष' छपकर प्रत्येक पुस्तक में जुड़ गया। इसके बाद यहाँ के शाकद्वीपी ब्राह्मणों के अनुग्रह और अनुरोध एवं व्यय-वहन के आश्वासन पर इन लोगों का भी एक वंश-वृक्ष तैयार कर के पुस्तक में जोड़ा गया है।

यह कार्य पत्रकार (राम प्रवेश सिंह) के प्रयत्न और प्रयास से ही सफल हुआ है। इन्होंने प्रेस में जाने-आने और प्रूफ संशोधन करने में भी सहयोग दिया है। अस्तु, मैं इनका हार्दिक अभिनन्दन कर रहा हूँ।

प्रत्येक ग्रंथ का कुछ न कुछ प्रयोजन होता है। मेरा उद्देश्य है ग्रामवासियों को अपने पूर्वजों की जानकारी करा देना। इसमें मैं कहाँ तक सफल हो चुका हूँ, विज्ञपाठक ही निर्णय करेंगे।

वंशावली के अन्त में ४ पन्ने रिक्त इसलिए छोड़ दिये गये हैं कि आगे अपनी-अपनी किताब में अपनी वंशावली महीन-महीन अक्षरों में लिखते जायेंगे।

शाकद्वीपी ब्राह्मणों की वंशावली तैयार करने में मुझे पं० दुग्धेश्वर मिश्र और पं० कृष्णमोहन मिश्र से विशेष सहायता मिली है।

अन्त में, मैं कालिका प्रेस के मैनेजर श्री कामेश्वर प्रसाद एवं प्रेस के मालिक श्री मोहन बाबू के द्वारा इस पुस्तक के छपने में जो मुझे सहुलियत मिली है, किन शब्दों में धन्यवाद दूँ, समझ में नहीं आता। भगवान इन्हें दीर्घ आयु प्रदान करें।

नम्र-निवेदन

मैं तो नाम मात्र का पढ़ा लिखा हूँ। व्याकरण इत्यादि से सर्वथा अनभिज्ञ हूँ। अतः इसमें बहुत कुछ गलतियाँ रह गई हैं। पाठक क्षमा करेंगे। अशुद्धियों पर ध्यान न देकर सिर्फ जानकारी की बातों को ग्रहण करेंगे।

'जो बालक कह तोतरि बाता,
सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता'।

आँख की रोशनी कम हो जाने से प्रयास के बावजद भी इस पुस्तक में प्रूफ सम्बन्धी कुछ अशुद्धियाँ यत्र-तत्र रह गई है। इसके लिए पाठकों से हम क्षमा प्रार्थी हैं।

बहुत परिश्रम करने के बाद भी अपेक्षित रकम एकत्र नहीं हो सकी। फलतः जिस रुप में मैं इसे प्रकाशित करना चाहता था उस रूप में नहीं कर सका, न पुस्तक सजिल्द ही हो सकी और न बढ़ियाँ 'कभर' ही लग सकी। पुस्तक पाने वाले सज्जनों से निवेदन है कि अपनी-अपनी पुस्तक को सजिल्द बना लेंगे, जिससे पुस्तक सुरक्षित रह सकेगी।

इस पुस्तक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। चिर प्रतीक्षा के बाद पाठक गण भी इस पुस्तक की प्रतियाँ प्राप्त कर आनन्द का अनुभव करेंगे।

हाँ, मैं विद्वानों से निवेदन करता हूँ कि आगे और भी छान-बीन करके बढ़ियाँ ढंग से इस ग्राम का एक नया इतिहास तैयार कर छपवाने की कोशिश करेंगे।

हरि ॐ

किशोरीशरण सिंह

नोट—बहुत से बच्चों का लार-प्यार में घरेलू नाम शुरुमें कुछ और रहता है और आगे चल कर नाम बदल कर किताबी नाम कुछ और हो जाता है। इस

किताब में भी बहुत से नामों का परिवर्त्तन हो गया है। जैसे—

पृष्ट	पंक्ति	आदिनाम	बदले हुए नाम
४०	९	करीमन से	देव प्रसाद
६१	६	राकेश ,,	राकेश कुमार रंजन
		रत्नेश ,,	रत्नेश रतन
		टुन टुन ,,	विमलेश
		झुन-झुन ,,	राजेश
		ढुन ढुन ,,	राधा मोहन इत्यादि।

कुछ नामों के लिखने में बड़ाई छोटाई का क्रम बदल गया है। पाठक उसे सुधार लेंगे। किताब में बड़ों के नाम के ऊपर १ लिख लेंगे, उससे छोटे के ऊपर २, उससे छोटे के ऊपर ३ इत्यादि। इस तरह लिख देने से बड़ाई छोटाई का क्रम मालूम हो जायगा। जैसे पृष्ठ ४१ के ८ वें पक्ति में पहले रामजन्म सिह का नाम लिखा गया है और बाद में बंशीधारी सिह का, बंशीधारी सिह बड़े हैं और रामजन्म सिह छोटे। बशीधारी सिह के ऊपर १ लिख देंगे और रामजन्म सिह के नाम के ऊपर २।

कुछ छूटे हुए एवं गलत नाम—

पृष्ठ ८६ के १० वें पंक्ति में चक्रपाणि के दो लड़के हैं। बड़ा उपेन्द्र और छोटा नृपेन्द्र पृष्ठ ८८ में रामधन मिश्र के भगिना प्रभुनाथ मिश्र गलत है। ८७ पृष्ठ में जो नन्द राम है, उन्हीं के भगिना प्रभु नाथ मिश्र भी हैं। अर्थात् नकछेदू मिश्र और प्रभुनाथ मिश्र दोनों नन्द राम मिश्र के ही भगिना हैं। पृष्ट ६० के १० वें पंक्ति में उग्रह सिह का लड़का हरिहर सिह अधिम (गलत) लिखा गया है। ५८ पृष्ठ के अंत पंक्ति में विश्वंभर सिह को लड़का नहीं था। चन्दर नाम गलत लिखा गया है। पृष्ठ ४७ के ९ वें पंक्ति में सुदामा सिह के आगे की वंशावली छपने में छूट गई है। वह इस तरह है—

सुदामा सिह
|
वाणेश्वर सिह	जयगोबिन्द सिह	श्रीनारायण सिह
		बुलेन्दु

पृष्ठ ९९ में खखनू साव चतुरी साव और राम प्रसाद साव आपस में सहोदर भाई होते हैं। वंशावली में राम प्रसाद साव का नाम छूट गया है। पृष्ठ ५१ के ४ पंक्ति में चन्द्र देव के लड़के का नाम जगन्नाथ गलत है शुद्ध नाम अखिलेश्वर कुमार सिह है—वे इंजिनियर के पद पर भाभा एटोमिक रिसर्च सेन्टर बम्बई में काम कर रहे हैं। पृष्ट ५१ के ४ पक्ति में बैजू के लड़के का नाम जगन्नाथ गलत है। शुद्ध नाम अंगनाथ है। पृष्ठ ६२ के ८ पंक्ति में राम भवन के लड़के उदयंत तथा संदीपन कुमार हैं। पृष्ठ ६१ के ६ पंक्ति में कौशल कुमार के लड़के का नाम दीपक कुमार है। पृष्ठ ६१ के ५ पंक्ति में शचीन्द्र शर्मा के तीसरे पुत्र का नाम राहुल है। पृष्ठ ८५ के ४ पंक्ति में लक्ष्मण सिह नाम गलत है। शुद्ध नाम लक्ष्मण मिश्र है पृष्ठ ८३ के ६ पंक्ति में सच्चिदानन्द का लड़का राजेश। पृष्ठ ४० के ९ वें पंक्ति में रामसिंगार का लड़का करीमन गलत है। शुद्ध नाम देव प्रसाद है। पृष्ठ ५१ के ८ पंक्ति में राम भजन सिह के चौथे पुत्र का नाम सत्य नारायणसिह छुटा हुआ है। पृष्ठ ५६ के १२ पंक्ति में परमानन्द का चौथा लड़का अजयनाम गलत है। ठीक नाम अञ्जनी है। पृष्ठ ३८ के ७ पंक्ति में जगन्नाथ सिह शिक्षक के लड़के का सुखारी नाम गलत है। सही नाम नागेन्द्र कुमार है। दूसरे लड़के का नाम अतुल कुमार है।

इस तरह की गलती यदि पाठकों के नजर में और भी आ जाय तो उसे सुधार लेंगे। पृष्ठ ११९ के १२ पंक्ति में माधो पंडित का लड़का रूपा पं०, रूपा पं० का लड़का काली पं०, काली पं० का लड़का नन्द्रमनि पंडित है। अकलू का लड़का सूखन।

श्री कपिल देव सिह और रणजीत सिह के पूर्वज खो खुना सुलतान पुर (पटना) से आकर यहीं बस गये। ये लोग चेसियार ब्राह्मण हैं। गोत्र भारद्वाज है।

●

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	२९	प्रतिद्वन्द्वी	प्रति द्वन्दी
	३०	के	से
१६	१३	यहि	यही
२३	१३	पही	पट्टी
	१५	मिल जुमले	मिनजुमले
२९	५	सुवील	सुनील
३५	१४	बालमिकि	बालमीकि
३६	९	सिताराम	सीताराम
४०	३	आशीवाद	आशीर्वाद
५४	१०	रछेला	रछेआ
५७	८	"	"
७७	अन्त	जय राम	राज किशोर
१०८	१९	सतेन्व	सत्येन्द्र
११४			
११७			
१८२	१७	नटुआ	नतुआ
१८३	८	लूटे	फूटे
	२२	जनता	जतना
१८४	१९	ओबसन	ओइसन
१८५	२८	बारहो	बाहरो
१८६	३	बेकार	बेआर
	१७	मांग	मांनऽ
१८७	४	सनाईऽ	सनाऽहेऽ
१८९	४	सर	बर
१९४	४	सथ	सब
१९६	७	मदते	मददे
१९८	१२	फिकहीं	फिकिहिया
२०२	२८	किसीम	किसिम

२०५	३	मुठिया	मठिया
२०६	२४	प्रराइमरी	प्राइमरी
२०७	२४	महात्यम	महात्म
२२१	८	चरहबबा	चरवहबा
२२७	१६	लट्ठा	लट्टा
२३०	११	संक्केद	संक्लेद
२३२	१२	अक्तमूभूल	अभुक्त मूल
२३८	नीचे	अबग	अलग
२४१	१२	दिबरा	डिबरा
	२७	सेन्दुर	सिन्दूर
२४२	५	पाणी-ग्रहण	पाणि-ग्रहण
२४४	९	जमान	जवान
२५३	२५	चलन्हेई	चलइहें
	२९	बढ़हन	बढ़इन
२५४	४	रोपन	ऐपन
२५५	३०	हुआ	हुये
२५७	२	तिलचउकी	तिलचउरी
२६७	२२		
	२४	Capy	Copy
२६७	२२	Juvges	Judges
	२४	Capy	Copy

लेखक का परिचय

(कामेश्वर प्रसाद सिंह, एम० ए०)

लेखक (श्री किशोरी शरण सिंह) का जन्म श्री संवत् १९६३ कार्त्तिक शुक्लपक्ष चौथ, रविवार-तदनुसार २१ नवम्बर १९०६ ई० को हुआ। इनके पिता का नाम श्री नथुनी सिंह एवं माता का नाम श्रीमती सकलवासी देवी था। १९१८ ई० में बारह वर्ष की उम्र में इनका विवाह मनेर थानान्तर्गत सराय (पटना) के प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय पहलवान बाबू हरष सिंह की सुपुत्री आयुष्मती झुरुक के साथ सम्पन्न हुआ। श्रीमती झुरुक का वैयक्तिक वैशिष्ट भी पति देव के अनुरूप रहा। ये १९२२ ई० में मिडल वर्न्यक्यूलर की परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होकर गार्हस्थ जीवन व्यतीत करने लगे। फलतः लेखक को प्रतिभा विकास एवं सामाजिक व्यक्तित्व के प्रसार का प्रचुर सुअवसर प्राप्त हुआ। कुछ दिनों तक इन्होंने शिक्षा-दान भी किया। जब स्वतंत्रता संग्राम जवानी पर था, ब्रिटिश सरकार के प्रतिरोधी यातनाओं और प्रताड़नाओं के शिकार बनाये जा रहे थे, ऐसे समय में लेखक ने हस्त-लिखित 'प्रतिबिम्ब' पत्रिका का प्रकाशन एवं सम्पादन कर मातृ-भूमि-भक्ति का अद्भुत परिचय दिया। तत्कालीन परिवेश में लेखक की लेखनी हुंकार कितनी समर्थ थी, प्रतिबिम्ब के उपलब्ध अंकों को देख कर परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

इन्होंने १९७४ ई० में चौबीस लक्ष 'गायत्री-मंत्र' का एक पुरश्चरण तेरह महीने में विधिवत सम्पन्न किया, जिसकी पूर्णाहुति १९७५ ई० के फरवरी महीने में सफलता पूर्वक हुई। तुलसी कृत 'मानस' के सातों काण्ड का इन्होंने हस्तलिखित प्रति तैयार की है। यदि लेखक को कला एवं धर्म का अन्यतम उपासक कहा जाय, तो अति शयोक्ति नहीं होगी। इन के अनुज श्री भुवनेश्वर सिंह, जो स्वर्गवास कर गये 'रामचरित मानस' के अद्वितीय विद्वान थे। लेखक के चार पुत्र एवं एक पुत्री क्रमशः इस तरह हैं—सर्व श्री रामस्वरुप सिंह, कृष्ण मुरारि सिंह, शचीन्द्र कुमार शर्मा एवं बालमुकुन्द पयनाली तथा हीरामणि।

डा० रामस्वरुप सिंह श्री सम्वत १९८९ ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष तृतीया मंगलवार तदनुसार १९३२ ई० को इनका जन्म हुआ—ये लेखक के प्रथम पुत्र हैं।

शैक्षणिक योग्यता—आई० ए० (पटना विश्वविद्यालय) तक, स्वास्थ्य विभाग में निरीक्षक के रुप में कुछ वर्षों तक सरकारी सेवा में रहे। पुनः आयुर्वेद और

डा० रामस्वरुप सिंह

होमियोपैथी चिकित्सा प्रणाली की ओर झुकाव और एच० एम० डी० (डाक्टरेट इन होमियोपैथिक मेडिसिन) करके चिकित्सा कार्य शुरु करके जनसेवा में संलग्न, अखिल भारतीय होमियोपैथिक विद्वत परिषद के सदस्य के रुप में मान्यता प्राप्त, ए० आई० एच० आर० का सम्मान प्राप्त। विशेष योग्यतायें—ये एक पत्रकार लेखक और कवि भी हैं। प्रगति पत्रिका का कुछ दिनों तक सम्पादन, नाट्य कला परिषद् के निदेशक के रूप दर्जनों नाटकों का सफल निर्देशन। यह सब कार्य करते हुए भी मुख्यतः जन चकित्सा कार्य में संलग्न हैं।

श्री कृष्ण मुरारि सिंह—श्रीसंवत १९९४ मार्गशीर्ष पूर्णिमा शुक्रवार-तदनुसार १७ दिसंबर, १९३७ ई० को इनका जन्म लेखक के द्वितीय पुत्र के रुप में हुआ। शैक्षणिक योग्यता—माध्यमिक परीक्षोत्तीर्ण तथा आई० टी० आई० प्रशिक्षण प्राप्त। भोपाल (मध्यप्रदेश) में विशिष्ट आद्योगिक प्रशिक्षण की प्राप्ति। सम्प्रति भारी अभियत्रण निगम, हटिया राँची (बिहार) के एच० एम० बी० पी० में जीव इन्स्पेक्टर। सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विशेष अभिरुचि।

श्री शचीन्द्र कुमार शर्मा—श्रीसंवत् १९९७ चैत्र शुक्लपक्ष चतुर्दशी रविवार - तदनुसार २१ अपैल, १९४० ई० को इन का जन्म लेखक के तृतीयपुत्र के रूप में हुआ। शैक्षणिक योग्यता – बी० ए० (आनर्स, पटना विश्व विद्यालय) तक साहित्य, कला एवं चित्रकारी में विशेष अभिरुचि। १०-१२ वर्षों से नाट्यकला परिषद, पयनाल के साज-सज्जा एवं दृश्य संयोजक। एच० एम० डी० का प्रमाण पत्र-प्राप्तकर्त्ता। अपने अनुज 'पयनाली' के रचनात्मक प्रतिभा के प्रेरणा-स्रोत सम्प्रति सरकारी दूरभाष के जमशेदपुर में टेलीफोन आपरेटर तथा पिछले कई वर्षों से विभागीय यूनियन N F P T E के निर्विरोध प्रमण्डलीय सचिव।

श्री बालमुकुन्द पयनाली – श्रीसंवत् २००५ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष चौथ शुक्रवार—तदनुसार १९ जून, १९४८ ई० को इनका जन्म लेखक के चतुर्थ पुत्र के रूप में हुआ। शैक्षणिक योग्यता—एम० ए० (हिन्दी, पटना विश्व विद्यालय)

लेखक

जन्म—श्री संवत १९६३, कार्त्तिक शुल्क ४, रविवार
तदनुसार—२१ नवम्बर, १९०६ ई०

श्री कृष्ण मुरारि शर्मा

श्री गणेश प्रसाद सिंह

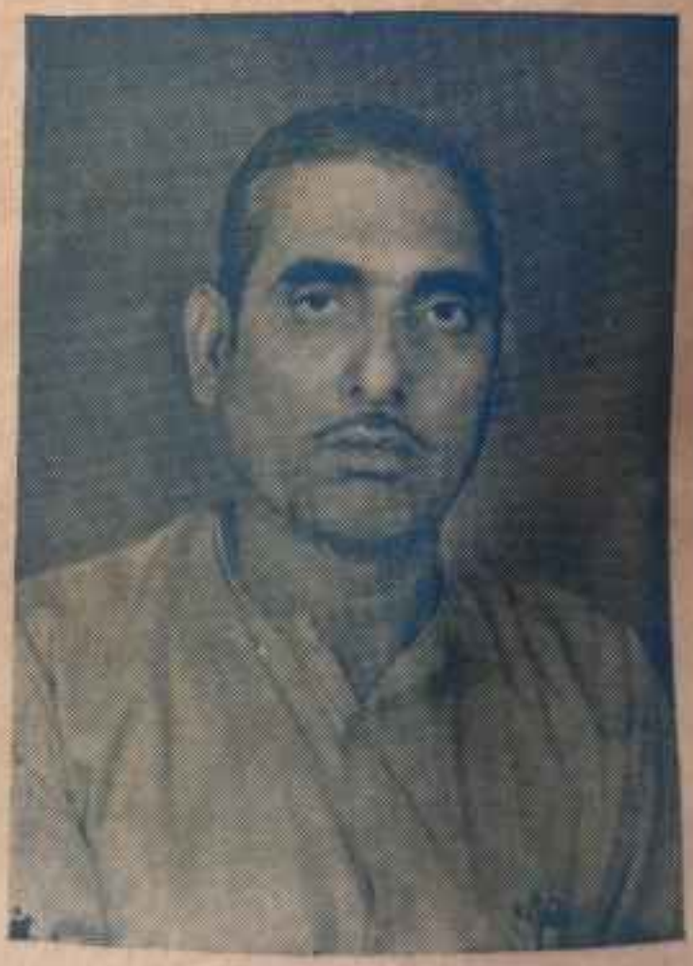

श्री राजेश्वर प्रसाद शर्मा

प्रधानाध्यापक

उच्च विद्यालय पयनाल

से हिन्दी साहित्य सदन पयनाल' के कई वर्षों से अवैतनिक सचिव। सैकड़ों कविताएँ, दो दर्जन कहानियाँ एवं दो-तीन दर्जन साहित्यिक समाजिक लेखों के रचियिता। चम्बल के सपूत, डाकू मानसिंह, रावण-वध, चम्बल का अभिशाप एवं चम्बल के प्रतिशोध आदि नाटकों के यशस्वी रचनाकार। धर्म युद्ध श्री कृष्ण, जयद्रथवध आदि नाटक लेखनाधीन। 'नाट्यकला परिषद पयनाल' के लोकप्रिय कवि एवं गीतकार। 'सुन्दरी' खण्ड काव्य के प्रणेता। कई पत्र-पत्रिकाओं के अवैतनिक सम्पादक। सम्प्रति हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्रभारी प्राचार्य। भगवान जी बी० पारीख जनता कॉलेज, जमशेदपुर (बिहार) में कार्यरत तथा 'छायावादोत्तर हिन्दी कविता में बिम्बयोजना' पर डॉ० बचन देव कुमार आचार्य एवं अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग राँची विश्व विद्यालय के निदेशन में शोध कार्य में संलग्न।

डा० कौशलेश कुमार एम० बी० ई० एच० :—ये लेखक के पौत्र (डा० रामस्वरूप सिंह के पुत्र) हैं। ये मैट्रिक पास करके होमियोपैथिक कौलेज से M. B. E. H. (बैचलर औफ एलेक्ट्रो होमियो मेडिसिन) परीक्षा पास करके अपने पिता के साथ चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। साथ ही होमियोपैथी की M. D. E. H. भी कर रहे हैं।

इस तरह लेखक का सम्पूर्ण परिवार सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रगण्य ही नहीं, आदमियत की ऊच्चता को प्राप्त करने में सदैव सचेष्ट रहा।

●

५० समाज सेवी एवं कल्याणकारी संस्थाएँ और योजनाएँ ....
(क) बाल वाग्वर्द्धिनी
(ख) नाटक
५१ पुस्तकालय ....
५२ उच्च विद्यालय ....
५३ स्वतंत्रता संग्राम-क्रान्तिकारी कदम ....
५४ सामाजिककार्य-मोतियाबिन्द की धर्मार्थ शल्य-चिकित्सा ....
५५ गंगा राम बावा ....
५६ दंगल ....
५७ आवश्यक उपकरण एवं बर्त्तन ....
५८ रचनाकार का अन्तिम मन्तव्य ....
५९ विभिन्न सरकारी एवं गैरसरकारी सेवाओं में कार्यरत व्यक्तियों की नामावली ....
६० भक्तमाल (चन्दा देने वाले भक्तों की सूची तथा आय-व्यय का ब्योरा) ....
६१ संदर्भ-सूची

श्री गणेशाय नमः

श्रीमद् गोस्वामि तुलसी दास कृत

रामायण

बालकाण्ड

सुमिरि कृष्णा गणपति गिरा गुरु सन्तन सुखदानि ।
रामायण तुलसी कृत लिखौं ललित निजपानि ॥

लेखक—

किशोरी शरण सिंह ग्राम पैनाल पश्चिमभर
डाकखाना पैनाल थाना बिहटा (पटना)

लेखक के हस्त लिखित मानस
रामायण के अक्षरों का नमूना

पयनाल गाँव के मुख्य स्थानों के संकेत

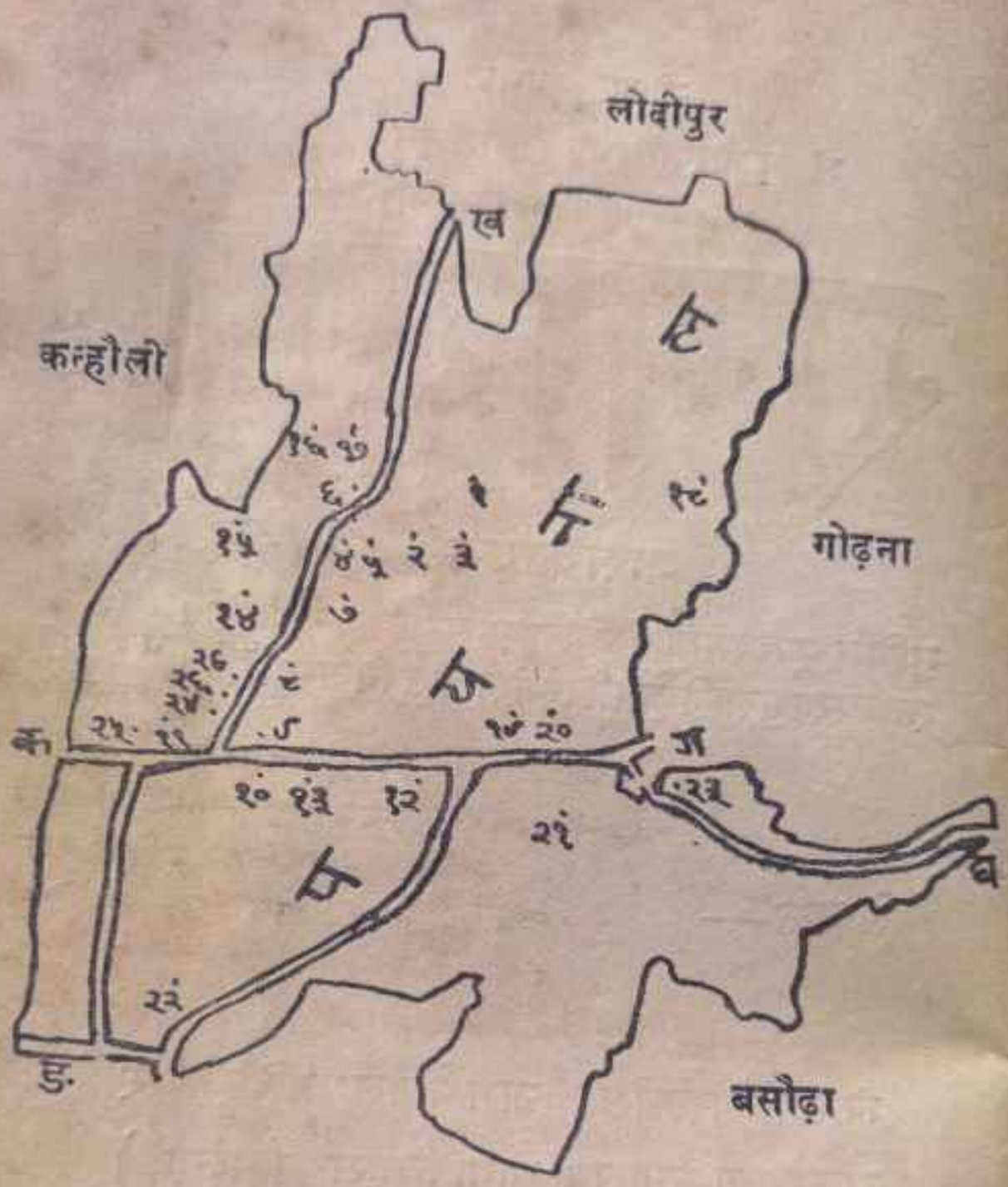

१. ठाकुरवाड़ी २. देवीस्थान ३. भैरवस्थान ४. ठाकुरवाड़ी ५. शिवालय ६. श्री गोपालजी राधाकृष्ण मंदिर ७. फलीनाथ महादेव ८. शिवालय ९. शिवालय १०. पतकट्टी-वटवृक्ष ११ गोरैया स्थान १२. महेश ब्रह्म १३. गोपी ब्रह्म १४. सती चउरा १५. जंगली महादेव १६. शंकर ब्रह्म १७. रूप चउरा १८. देवी स्थान १९. देवी स्थान २० शिवालय २१. देवी स्थान २२. देवी स्थान २३ तीन पिपरा २४. उच्च विद्यालय २५. प्राचीन पतकट्टी २६. पशु औषधालय २७. पंचायत भवन।

(क) बिहटा से (ख) लोदीपुर से (ग) दानापुर को (घ) बाँकीपुर को (ङ) सदीसोपुर को।

'अ'

१. (क) पूज्यास्पद पूर्वज-द्वय स्वर्गीय श्री गंगा प्रसाद तथा श्री शिवनन्दन सिंह जी की स्मृति में—

सन् १९३६ ई० की बात है। उस समय स्वराज्य आन्दोलन बहुत तेज रफ्तार से चल रहा था। हमारे गाँव के एक प्रमुख व्यक्ति, जिनका नाम द्वारिका प्रसाद सिंह था, इस आन्दोलन में बहुत दिलचस्पी रखते थे। आप नन-मैट्रिक थे। घर के सुखी—सम्पन्न तथा कर्मठ थे। हमारे यहाँ स्वराज्य-आन्दोलन का सूत्रपात उन्हींके द्वारा हुआ था। उन्होंने ग्राम-वासियों को बुलाकर एक महती सभा की, जिसमें सभी जातियाँ सम्मिलित हुईं। हरेक रविवार को गोष्ठी का विधान बनाया गया। गोष्ठी सुन्दर ढंग से चलने लगी। ऊँच-नीच बातों का विचार, आपसी झगड़ा झंझटों का निपटारा न्यायोचित रूप से होने लगा। सभी जातियाँ प्रसन्न थीं, मानों सभी एक सूत्र में गुँथ गई हों। इसके सभापति बाबू गंगा प्रसाद सिंह (नन-मैट्रिक) बनाये गये। प्रमुख व्यक्तियों में गंगा प्रसाद सिंह, भुवनेश्वर प्रसाद सिंह, द्वारिका प्रसाद सिंह, शिवनन्दन सिंह (मुंशी—पुलिस विभाग), मंगल प्रसाद सिंह, राम केवल सिंह, प्रदीप सिंह आदि थे। सभा में लिखा-पढ़ी का काम मैं (इस पुस्तक का लेखक) ही करता था। पढ़ा-लिखा तो नामभात्र का ही था, सिर्फ मिड्ल वर्न्यूलर परीक्षोत्तीर्ण था, परन्तु लिखा-पढ़ी में मेरा मन खूब लगता था। उसी समय बाबा गंगा प्रसाद सिंह और बाबा शिवनन्दन सिंह मुझ से कहा शरण! तुम ग्राम की वंशावली लिखो। इसमें हमलोग पूर्ण सहयोग देंगे। मैं सहर्ष आज्ञा-शिरोधार्य की और तत्क्षण शुभ कार्य में जुट गया। दोनों व्यक्तियों बहुत परिश्रम कर ग्रामीण जनता से मिल-जुल कर पुराने कागजातों को निकलवा-निकलवा कर वंशावली तैयार करवा डाली। बहुत से कागजात तो बाबा के पास ही थे। कहीं-कहीं कुछ मिटा मिला। वह स्थान रिक्त रहा। वंशावली तो तैयार हो चुकी, लेकिन सिर्फ सावर्णियाँ ब्राह्मणों की ही। अब कुछ इतिहास लिखना अनिवार्य समझा गया। बहुत सी बातें वे लोग जानते थे, जिन्हें परम्परा से सुनते आ रहे थे। उस समय पता चला कि अमहरा (बड़का

गाँव) की वंशावली लिखी गई है और छप भी चुकी है । विचार हुआ कि वहाँ से इसकी एक प्रति मंगाई जाय और अवलोकन के पश्चात् हमलोग भी अपने इतिहास का मुद्रण करवा सकें। अमहरा भी पुरानी बस्ती है और वहाँ के निवासी हमलोगों के गोतिया हैं। पुस्तक की प्रति वहाँ से आ भी गई, परन्तु स्वराज्य आन्दोलन में फँस जाने के कारण इतिहास नहीं लिखा जा सका। इसी बीच दोनों व्यक्ति परमधाम सिधार कर गये, काम स्थगित हो गया। कुछ लिखी हुई सामग्रियाँ गंगा प्रसाद सिंह के यहाँ रह गईं। गंगा प्रसाद सिंह को पुत्र नहीं था सिर्फ दो लड़कियाँ थीं—महासुन्दर देवी और सुन्दर देवी। शोहर क्रमशः बाबू इन्द्रदेव नारायण सिंह और बाबू महेन्द्र नारायण सिंह। इनका घर चौरवाँ, ब्राह्मण द्रुम टिकार, गोत्र भरद्वाज है। गंगा प्रसाद सिंह अपनी सारी सम्पति दोनों पुत्रियों के नाम लिख दी। फलतः बाबू इन्द्रदेव नारायण सिंह और बाबू महेन्द्र नारायण सिंह सपरिवार पयनाल में ही रहने लगे और गृहस्थी का कार्य खुद अपनी देख-रेख में करने लगे। इन लोगों के कुछ दिन बसने के बाद पुनः मेरा ध्यान वंशावली की ओर आकृष्ट हुआ। मैं पूर्वलिखित सामग्रियों की खोज की, लेकिन मिल न सकी। बाबू इन्द्रदेव नारायण सिंह बोले कि सामग्रियाँ तो थीं, लेकिन रामभजु सिंह हमसे मांग कर किसी मुकदमे में पेश करने के लिए ले गये। जब उनसे मैंने मांगा तब वे बोले कि सामग्रियाँ पयनाल निवासी तपसी सिंह को दी गई हैं। वे ही मेरे मुकदमे की देख-भाल करते हैं। तपसी सिंह ने लापरवाही से सामग्रियाँ खो दीं। उसकी नकल रामयत्न शर्मा ने की थी, लेकिन उनसे भी प्रति न मिली। निराश मन बैठ जाना पड़ा। जो सामग्री मैंने तैयार की थी वह भी खोजने पर न मिली। ये सारी बातें मेरे दिल में बराबर खटकती रही, परन्तु कर ही क्या सकता था ?

सन् १९७५ ई० के आश्विन महीने में मैंने कागजातों को निकाल कर धूप दिखा रहा था। रजिस्टर के तौर पर एक अजिल्द कॉपी थी, जिसमें कुछ लिखा हुआ था और वह जीर्णावस्था में थी। पन्ने-पन्ने उलट-पुलट कर देखने लगा तो अचानक वंशावली का एक रफ कागज उसीमें चिपका हुआ नजर आया। इसे देखकर मैं फूला न समाया। फिर से वंश-वृक्ष तैयार किया और पूज्य बाबा श्री कृष्ण सिंह (मुनि जी) को इसकी सूचना दी और चाचा कृष्ण मुरारि सिंह (पिता पूज्य बाबा बजरंगी सिंह) जी को स्वलिखित वंशावली दिखाई। ये लोग बहुत प्रसन्न हुए। मैंने कुछ लोगों से यह अभिप्राय व्यक्त किया कि यह छप जाती तो अच्छी बात थी। ऐसा न हो कि यह फिर गायब ही हो जाय। वे लोग बोले कि

ठीक है, एक दिन ग्रामवासियों की सभा बुलायी जाय और इस विषय पर विचार किया जाय। बाबा मुनि जी बोले की इसके साथ-साथ कुछ इतिहास भी लिखना आवश्यक है। लोगों को उनकी बात अच्छी लगी। मैं भी यही चाहता था। मुरारि चाचा ने इसमें पूर्णरूपेण सहयोग देने का वचन दिया। इससे मेरा बल बहुत बढ़ गया। वंशावली सिर्फ भूमिहार ब्राह्मणों की ही तैयार की गई थी। इसलिए भूमिहार ब्राह्मणों को ही आज की बैठक में सूचना भी दी गई थी।

दिनांक ६-११-७५ को सभा पूर्वाह्न ११ बजे श्री कृष्ण सिंह (मुनि जी) की अध्यक्षता में 'दीन हितैषी नन्दन पुस्तकालय' के प्रांगण में हुई। इसमें निम्नलिखित व्यक्ति उपस्थित थे - श्री भोला प्रसाद सिंह, सिरताज सिंह, रामाश्राय नारायण सिंह, सरयू सिंह, रामनिहोरा सिंह, राम अनूप शर्मा (आचारी जी), श्री कृष्ण सिंह, कृष्ण मुरारि सिंह, किशोरी शरण सिंह, ब्रज किशोर शर्मा, चन्द्रिका शर्मा (गांधीजी), कृष्ण नन्दन सिंह, परमानन्द सिंह, भुवनेश्वर शर्मा, चन्दू सिंह, अकलू सिंह, रामनन्दन सिंह, देवेन्द्र सिंह, बृजबिहारी सिंह, सत्यदेव सिंह, राम जी सिंह रामानुज सिंह, जनकधारी सिंह एवं कामता सिंह।

बैठक में निम्नाङ्कित कार्य सम्पन्न हुए—

(१) सर्वसम्मति से श्री कृष्ण सिंह सभापति चुने गये।

(२) किशोरी शरण सिंह ने प्रारम्भ में गाँव की वंशावली की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला एवं ऐसे कार्यों को करने की आवश्यकता पर बल दिया, जिसे वंशावली का अन्तिम रूप देकर उसे स्थायी रूप दिया जा सके।

(३) सभापति महोदय ने सुझाव दिया कि जब ग्राम का इतिहास कहा जायगा तब सिर्फ भूमिहार ब्राह्मणों का ही परिचय देने से पुस्तिका अधूरी रह जायगी। इसलिए इसमें हरेक जाति का समावेश होना अनिवार्य है। यह प्रस्ताव सर्वसम्पति से सहर्ष स्वीकार कर लिया गया (लेखक ने भी बहुत प्रसन्नता से इसे शिरोधार्य किया। सर्वसम्मति से प्रस्तावित हुआ कि आगामी बैठक से हरेक जातियों का सम्मेलन होगा।)

२. (क) ब्रह्म और शक्ति की एकता—

या श्रीः स्वयं सुकृतिनांभवनेष्व लक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयषु बुद्धिः।

श्रद्धासतां कुलजनं प्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्मपरिपालय देवि विश्वम् ॥

अनादि ब्रह्म — आद्या शक्ति
बन्दी — परमेश्वरी

परम + ईश्वर = परमेश्वर । परम + ईश्वरी = परमेश्वरी

आप अनादि ब्रह्म एवं आद्या शक्ति हैं। आपके दो रूप हैं—एक निर्गुण और दूसरा सगुण। निर्गुण और सगुण में कोई भेद नहीं हैं।

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा।
गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा ॥
अगुन अरूप अलख अज जोई।
भगत प्रेम बस सगुन सो होई ॥
जो गुण रहित सगुन सोइ कैसें।
जलु हिम उपल बिलग नहि जैसें ॥[२]

देवी! जगत् की सृष्टि करना आपका स्वभाव है। जब-जब आपकी इच्छा होती है, सृष्टि का विस्तार करती हैं और जब इच्छा होती है तब उसे अपने में समेट लेती हैं। आपही के अंश से ब्रह्मा, विष्णु और महेश—सृष्टि का सृजन, पालन और संहार करते हैं। आपही परमेश्वर और आपही परमेश्वरी हैं। आपही आद्या शक्ति और ब्रह्म हैं। दोनों एक दूसरे से अभिन्न हैं। भगवती देवी ने ब्रह्मा से वर्णन किया है—

सदेकत्वं न भेदोऽस्ति सर्वं देव ममास्य च।
योऽसौ साहमहं या सौभेदोऽस्ति मति विभ्रमात् ॥[३]

मैं और ब्रह्म एक ही हूँ। किंचिन्मात्र भी अन्तर नहीं। जो वे हैं वही मैं हूँ, जो मैं हूँ वही वे हैं। समझ में न आने से ही भेद मालूम होता है।

---

१ दुर्गा सप्तशती अध्याय ४, श्लोक ५, पृष्ठ १०९

२ गोस्वामी तुलसी दास श्री रामचरित्र मानस पृष्ठ ७९ (बा० का०)

३ देवीभागवत ३।६।२।३

संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना।
उपजहिं जासु अंस तें नाना।[४]
जासु अंश उपजहिं गुनखानी।
अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी॥[५]

श्रीमद् देवी भागवत में प्रतिपादन किया गया है कि भगवती देवी ही वह सनातन ब्रह्मतत्त्व हैं, जिसका वर्णन उपनिषद् में 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म (छान्दोग्य ३।१४।७) कह कर किया गया है। सृष्टि के आदि में एक देवी ही थीं। उन्होंने ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया। उसी परा शक्ति से ब्रह्मा, विष्णु और महेश का आविर्भाव हुआ। उस एक ही परात्म तत्त्व की निर्गुण, सगुण, निराकार, साकार, देव, देवी, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, शक्ति, राम, कृष्ण आदि अनेक नाम रूपों से भक्त लोग उपासना करते हैं।

अवतार लेने का कारण :

भगवती देवी ने स्वयं कहा है—

साधूनां रक्षणं कार्यं हन्तव्या येऽप्य साधवः।
वेद संरक्षणं कार्यमव तारैरननेकशः॥
युगे-युगे तानेवाहमवतारान् विभर्मिव[६]

गीता में भी श्रीकृष्ण भगवान ने ऐसा ही कहा है—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥[७]

---

४ रामचरित मानस पृष्ठ ९२ (बा० का०)

५ रामचरित मानस पृष्ठ ९४ बा० का०)

६ देवी भागवत ५। १५। २२। २३

७ श्रीमद्भगवतगीता ३२ (अध्याय ४)

जब जब होइ धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥[८]

अतः उस आद्या शक्ति को साक्षात् पूर्ण ब्रह्म परमात्मा समझ कर भक्ति पूर्वक चिरकाल से ही हमलोग उपासना करते आ रहे हैं।

हे देवी परमेश्वरी ! आपकी महिमा अपरम्पार अवर्णनीय हैं। आपके चरण कमलों में बास का कोटिशः नमस्कार है।

माता ! मैं आपके पयनाल ग्राम का इतिहास वंशावली सहित सभी गण्यमान्य लोगों के सहयोग से लिखना चाहता हूँ। यह सुकार्य आपही के आशीर्वाद पर निर्भर हैं।

जयमाता !

(ख) बन्दी-परमेश्वरी की आराधना—

वैवाहिक या यज्ञोपवीत-कार्य प्रारम्भ होने पर दो मूर्त्तियाँ बनायी जाती हैं—एक बन्दीपरमेश्वर की (जो गोली के आकार में गोल होती है। जिसे ठोसा कहते हैं) और दूसरी परमेश्वरी की (यह चिपटी ताबीज की तरह बनती हैं)। मूर्त्ति सोने या चांदी की बनायी जाती है। जब-जब वैवाहिक कार्य प्रारम्भ होता है, तब-तब दोनों मूर्त्तियाँ बनायी जातीं हैं और उसी धागे में गूँथ दी जाती हैं। इस तरह वह माला के तौर पर जब बहुत लम्बी हो जाती हैं तब उसे एक से अधिक संख्या में विभक्त कर दिया जाता है। बँटने का एक और यह कारण है कि परिवार के घरों की संख्या जब अधिक हो जाती है तब नियत समय पर कार्य होने में दिक्कत होती है। जैसे-जिसके यहाँ विवाह होता है, उसी के यहाँ सभी मूर्त्तियाँ रह जातीं हैं, जब तक कि दूसरे घर में विवाह न हो। दूसरे के यहाँ विवाह के समय ही वे जायेंगी। दूसरी बात-फगुआ में हरेक घर में इनकी पूजा होती है। बारी-बारी से हरेक घर घूमने में बहुत समय लग जाता है। किसी के यहाँ सबेरे हो जाता है तो किसी के यहाँ घूमते-घूमते शाम भी हो जाती

८ रामचरित मानस पृ० ८२ (बा० का०)

है। इन्हीं दिक्कतों से विभाजन कर लिया जाता है इससे सबों को नियत समय पर पूजा सम्पन्न करने का शुभ अवसर मिल पाता है।

विवाह के दिन से एक या दो दिन पूर्व देवार्चन (देवपूजी) होता है। प्रथम बन्दी-परमेश्वरी की पूजा तथा वैवाहिक कार्य सम्पन्न होने के बाद ग्राम-देवता, वन-देवता आदि की पूजा होती है।

बन्दी-परमेश्वरी के विवाह की विधि—

विवाह के एक या दो दिन पूर्व हरिद्रका-बन्दन के बाद देवपूजी का विधान है। पहले मण्डप-स्थल को गौ के गोबर से लीपें। लीपने के बाद सुन्दर चौक पूरें। कुमकुम, सेन्दूर आदि से रंगे। रंगने के बाद अपने परिवार को बुलावें। बाद में शुभ सगुन के मंगल गीत गावें।

सगुन के गीत

गायी के गोबर आंगन लिपुहे,
अहे गजमोती चउका पराउ मंगल सोठी नूनू।
सुवरन कलस पुरहर धरू हे,
अहे मानिक धीप बराउ मंगल सोठी नूनू।
तेहि चउके बइठले बन्दीय दुलहा हे,
अहे मोतियन अंजुरि भराउ मंगल सोठी नूनू।
ताहि चउके बइठले परमेश्वरी देई हे,
अहे सिन्दुरानि मांग भराउ मंगल सोठी नूनू।

बन्दी परमेश्वरी वाला पीढ़ा मंगा कर घी एवं सेन्दूर का टीका करके रंगीन वस्त्र बिछा कर गौरी-गणेश इत्यादि की पूजा के बाद माटी कोड़े।

माटी कोड़े के गीत—

कहवाँ के पीअर माटी कहाँ के कुदारी हे,
कहवाँ के सखी सब माटी कोड़े जाली रो।
जनकपुर के पीअर माटी अयोध्या के कुदारी हे,
पयनाल के सखी सब माटी कोड़े जाली रो।

हलदी कलशा—

कच्चा हलदी मंगावें। बढ़िया से पीसकर दूब से बन्दी-परमेश्वरी पर चढ़ावें।

गीत

आजु सुमंगल सुदिन लली जी के,
केसर हरदी चढ़ाउ गे माई।
चन्दन काठ के पिढ़वा बनवले,
बन्दी जी के ताहि पर बिठायो गे माई।
चन्दन काठ के पिढ़िया बनवले,
परमेसरी जी के ताहि पर बिठाये गे माई।

इसके बाद गंगाजल से स्नान कराकर पीला वस्त्र पहिनावें। फूल, सुगन्ध, मालादि चढ़ावें। कपूर से आरती करें। इसके बाद बिलउकी घुमावें—दो लड़के को बुलावें। एक बांस की छरी दोनों लड़कों को धरा दीजिये। पीले कपड़े की झोली बनाकर बन्दी परमेश्वरी को उसी में बैठावें। उस झोली को बांस की छरी में बान्ध दें और उसमें कसार रख दें। दोनों लड़के उस छरी को कन्धे पर रख कर पांच बार घूमें और बिलउकी के गीत गावें।

बिलउकी घुमाने के बाद परिछन करें। गीत गावें। जल गिरावें। जल गिरा कर उतार लें और पीढा पर बैठावें। विधिपूर्वक सुमंगली करके सिन्दूर दान के गीत गावें। भाँवर फिरा कर विवाह के गीत गावें—

गीत

बाबा के दुलारी बेटी गे परमेश्वरी बेटी,
फुलवा लोढ़ले गइले फुलवारी रे ललनमा।
फुलवा लोढ़िये लोढ़ी भरोले चँगेलिया,
अरे आइ गइले बन्दी दुलहा रखवार रे ललनमा।

प्रार्थना

रउरहि चउरवा बन्दीय देव हे,
लागी गेल हरिअर जाल तो ओहि के विलास।
ओही बाँसे बिनबों डाला डुली हे,
भरबों चँगेलिया केरा फूल, तो ओही के विलास।
ले आये गोचरू बन्दीय देव हे,
अब देव पुरवहु आस, तो ओही के विलास।
बाहर देवउ रे भगता दूध पूत हे,
भीतर लछमी सहाय, तो ओही के विलास।

(२)

आजु बन्दीय देव गवनहो चलले,
रंथ चढ़ले देव गरजत आवले।
बसबे के बसबों ब्राह्मण देव अंगना,
पठवा के सबदो न लागले हमरा।
बसे के तो बसबों अहीरवा के अंगना,
घीव के गमको न लागले हमरा।
बसबे के तो बसबों सिन्दुरिया के अंगना,
सिन्दुरा के गमको न लागले हमरा।

(3)

मांगु मांगु वर मांगु रे भगता,
तोहि पर होखों परसन्न।
दूध मांग ले पूत मांग ले,
खांड़ मांगले बहुत।
एक वर हम मांगिले बन्दीय देव,
दुसमन होय जरि खाक।

(४)

देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ।।[९]
कामेश्वरी जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरी ।।[१०]

नोट—देवार्चन की विधि सुयोग्य ब्राह्मणी द्वारा ही सम्पन्न होती है।

उपर्युक्त गीतों की प्राप्ति पं० दुग्धेश्वर मिश्र के आत्मज श्री काशीना मिश्र की सुपुत्री प्रभावती मिश्र एवं स्वर्गीय नन्दकुमार मिश्र की कन्या र मिश्र से हुई।

३. हमारे आदि पुरुष का कब, कहाँ से और कैसे आगमन हुआ

सन् १५२६ ई० में भारत पर मुगल-वंश का शासन कायम हो चुका था। इ के पहले (तेरहवीं सदी से १५२६ ई० तक) पाँच मुसलमान वंशों का शासन रहा- गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी वंश का। इन वंशों ने अप शासन-काल में बहुत अत्याचार किये। हिन्दुओं को बहुत सताये; परन्तु मुग वंश के राजाओं ने हिन्दू-धर्म पर आक्षेप तथा किसी प्रकार के अत्याचा नहीं किये। हिन्दुओं को आदर की दृष्टि से देखते रहे और ऊँचे-ऊँचे पदों प भी नियुक्त किये। उसी समय राय बहादुर, खां इत्यादि की उपाधियाँ मिलने लगी और उसी उपाधि से लोग अपने को प्रतिष्ठित समझने लगे। मालिकों औ रैयतों के बीच 'सलाम, आदाब' जैसे शब्द इस्तेमाल होने लगे। जमीन्दारी खतम होने तक रैयत और मालिकों में यही 'सलाम' शब्द व्यवहार होते आया, अभी भी पुराने रैयत सलाम ही करते हैं। रैयत लोग सलाम करते थे, तो इधर से मालिक लोग भी आशीर्वाद न कह कर 'सलाम' ही बोलते थे। 'सलाम मुसलमानी शब्द है। 'इसलाम' से 'सलाम' हो गया है। इस्लाम धर्म मुसलानी धर्म है। जिस प्रकार हिन्दुओं में जय राम, जय गोपाल जी आदि शब्दों द्वारा प्रणाम का बोध होता है, उसी प्रकार 'इस्लाम' शब्द प्रयोग होने लगा, जो मुसलमानी राज्य में आज तक चलता आया।

---

९ दुर्गासप्तशती पृ० १७७ (ग्यारहवाँ अध्याय) श्लोक—३
१० दुर्गासप्तशती पृ० २३६ (क्षमा प्रार्थना) श्लोक—७

जिस समय बाबर ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की, उस समय भारत की दशा बहुत शोचनीय थी। उस समय इब्राहीम लोदी दिल्ली के तख्त पर था, इब्राहीम लोदी का शासन अच्छा नहीं रहा। प्रजा उससे असन्तुष्ट रहने लगी इसी कारण देश कई हिस्सों में बट गया। जहाँ-तहाँ राजपूतों का बोल-बाला होने लगा। इब्राहीम लोदी इस परिस्थिति को सम्हालने में असमर्थ रहा। ऐसा मौका देख कर बाबर भारत पर आक्रमण कर बैठा और सन् १५२६ ई० में मुगल साम्राज्य की स्थापना की। मुसलमानों के अत्याचार से हिन्दू लोग अपना-अपना सुपास देख कर जहाँ के तहाँ जा बसे।

इसी आपत्काल में हमारे पूर्वज सर्वश्री राम्पे ठाकुर ने वैद्यनाथ धाम की तीर्थ-यात्रा की। उनके साथ पुरोहित, वैद्य, रसोइया इत्यादि का लश्कर साथ था। 'पयनाल' ग्राम से दक्षिण की पक्की सड़क जो उस समय कच्ची रही होगी से होकर पयान कर रहे थे। महमदपुर टोला (जो पयनाल के ही अन्तर्गत है) से पुरब 'तीन पिपरा' के पास गये तो एक शृगाल रास्ता काट कर निकल गया। उस जगह पीपल के तीन दरख्त थे। इसी से वह स्थान 'तीन पिपरा' कहलाता था। आज भी उस जगह को 'तीन पिपरा' ही कहते हैं। जब शृगाल रास्ता काट दिया तब श्री ठाकुर ज्योतिषी से शकुन करवाये। पण्डित जी बोले कि यहाँ पर आपको 'राज' लिखता है। अब हम यह नहीं कह सकते कि यहीं रुक गये या वैद्यनाथ धाम से लौटकर रुके। विश्वास है कि यदि वे वैद्यनाथ धाम का संकल्प कर चुके होंगे तो वहाँ से लौटकर ही यहाँ ठहरे होंगे। मेरा अनुमान है कि मुसलमानों के अत्याचार से ही तीर्थ के बहाने निकले होंगे—'एक पंथ दुई काज'। तीर्थ का तीर्थ भी और कहीं रहने का सुपास मिला तो वहाँ बसने का प्रयत्न भी करेंगे और ऐसा ही हुआ भी। उनका आना 'अलमोरा' से बताया जाता है। अलमोरा यू० पी० के उत्तरी भाग में है। यह लिखना अप्रासंगिक न होगा कि महाकवि सुमित्रानन्दन पन्त का भी निवास-स्थान वही अलमोरा है।

हिसाब लगाने से मालूम होता है कि वे इब्राहीम लोदी के ही शासन-काल में यहाँ आये। वंशावली का हिसाब एक पुश्त का २५ से २८ वर्ष का औसत बताया गया है। हम लोगों का १९वाँ पुश्त हो रहा है। यदि २५ का हिसाब लेता हूँ तो ४९५ वर्ष; २८ का हिसाब लेता हूँ तो ५३२ वर्ष आते है। मैं २५ और २८ को छोड़ कर मध्य का हिसाब लेता हूं तो ५०३ ½ वर्ष आते है। यानी हमारे पूर्वज आज से ५०० वर्ष पहले आये। आज सन् १९७९ ई० है।

१९७९ में ५०० वर्ष घंटा देने से १४७९ आता है। इसी के आस पास हमा
पूर्वज यहाँ आये।

पयनाल ग्राम के ऋतुवर्ण सिंह की हस्तलिखित तुलसीकृत रामाय
लक्ष्मण सिंह के पास अभी वर्त्तमान है। यह पुस्तक विक्रम संवत् १८२४ कै
शुक्ल ९ को लिखि हुई है। उस समय दिल्ली का बादशाह शाहआलम था
इस समय २०३६ बीत रहा है। अर्थात् आज से २१२ वर्ष पूर्व लिखी गई
ऋतुवर्ण सिंह से इधर ८ कुरसी हुई है। २१२ में ८ का भाग देने से लगभ
२६ वर्ष की एक कुरसी हुई। इनसे पहले ११ कुरसी बीत चुकी थी। २
में ११ से गुणा करने से २८६ हुआ। २८६ और २१२ को जोड़ देने से ४९
वर्ष हुआ। इस हिसाब से भी लगभग ५०० वर्ष आ जाता है। हाँ, जब तीन
पिपरा ठहर गये तो पयनाल के लोग वहाँ आने-जाने लगे; क्योंकि कोई आगन्तु
आता है तो उसके पास प्रायः लोग आने-जाने लगते है। आने-जाने से बहुत
से सम्पर्क हो गया। एक महीना तक ठहरे रहने पर मालिक को कुछ संदेह उत्पन्न
होने लगा। तब वहाँ से हट जाने का हुक्म भेजा। हमारे पूर्वज मुसलमानों
के अत्याचार का वर्णन करते हुए, थोड़े दिन और ठहरने की इजाजत ली।

उनको तो हटना था नहीं, यहाँ पर रहने का उपाय सोचना था। वे
भीतर-भीतर षड्यन्त्र रच रहे थे। यहाँ के पुरोहित और रसोइया (जो
बरइयाँ ब्राह्मण थे) को मोहित कर उन्होंने यहाँ की सभी गुप्त बातों का पता
लगा लिया। दो महीने और ठहर गये। इस बीच उन्होंने कौन-सा षड्यन्त्र
रचा भगवान जानें; लेकिन मेरा अनुमान है कि इतने दिनों के अन्तर्गत उन्होंने
यहाँ के राजा की त्रुटियों को देखकर अपना सैनिक बल बढ़ाने का प्रयत्न किया
होगा। हो सकता है, अपने पूर्व स्थान से यहाँ का समाचार भेज कर वहाँ की
सहायता से युद्ध का संगठन किये होंगें क्योंकि जब अन्तिम बार यहाँ के राजा ने
उनको हटने का आदेश भेजा तो उन्होंने साफ शब्दों में कह दिया कि अब वे
यहाँ से नहीं जा सकते। एतदर्थ संग्राम छिड़ गया राजा को मालूम हो गया
कि हमारे पुरोहित और रसोइया शत्रु से मिल गये हैं। घमासान लड़ाई छिड़
गई।

पयनाल एक पुराना गढ़ था। किले के चारों तरफ चहारदीवारी थी
और उसमें फाटक लगे थे। चारों तरफ शत्रुओं के आक्रमण से बचने के लिए
गड्ढे नदी के रूप में बने थे। वह नदी आज भी बहुत मात्रा में आबाद है।

गाव से पश्चिम नकटा बरसाती नदी है, जो दक्षिण-पश्चिम से होती हुई उत्तरी भाग को स्पर्श करती पूरब तक चली गई है। फिर दक्षिण से महमदपुर, चन्दा होती हुई राजपुर के पास मद्धुपुर होती हुई निकल गई है।

संग्राम में भूतपूर्व नरेश हार खाते गए। किले की चहारदीवारी तोड़ दी गई और उस पर कब्जा कर लिया गया। परिवार के अधिकांश सदस्य मारे गये। शेष इधर- उधर भाग गये। चलते-चलते उन्होंने रसोइया और पुरोहित को श्राप दे दिया कि तुम लोगों ने मेरे साथ नमकहरामी की। अतः तुम लोगों की बहोत्तरी नहीं होगी।

बरइयाँ ब्राह्मण आज तक पाँच घर के अन्दर ही रह गये। पुरोहित अहियापुर टोले, जो पयनाल के अन्तर्गत है, के थे। वे भी आज तक एक घर के एक ही घर हैं। उस घर में आज राजेन्द्र मिश्र वर्त्तमान् हैं। अहियापुर के वयो-वृद्ध व्यक्ति बाबू काली सिंह ने बताया कि "राजेन्द्र" भी उनके वंशज नहीं हैं। उनके संतानहीन हो जाने पर कुटुम्ब रामेश्वर मिश्र उन्हीं के वंशज हैं। राजेन्द्र मिश्र के पिता पूर्णानन्द मिश्र थे। रामेश्वर मिश्र 'बाली (जल्ला) के रहने वाले थे—ऐसा काली सिंह से ज्ञात हुआ है'। पयनाल मौजे का रकबा ४४८४ बीघे का था और इसके अन्तर्गत ५ छोटे-छोटे टोले थे– मिलकीचक, अहियापुर, महमदपुर, भगवतीपुर और समस्तीपुर। गोबिन्दपुर सुहेला उर्फ बेला गाँव के अधिकांश भाग पयनाल में ही थे। चार टोले अभी भी हैं। समस्तीपुर यहाँ से हट कर अन्यत्र जा बसा। क्यों हट गया, इसका वर्णन आगे करूँगा।

वयोवृद्ध भवानी प्रसाद मिश्र ने हमसे इस प्रकार बताया—"पहले यहाँ भूमिहार ब्राह्मण 'चेरिया' का राज्य था। यह बात तो यहाँ के सभी लोग कहते हैं कि यहाँ पहले चेरिया का राज था। चेरिया राजा के मूल पुरुष 'कोकिला सिंह' थे। उनके अधिकांश सदस्यों को मार देने के बाद बचे-खुचे बच्चे यहाँ से अन्यत्र भाग गये। उनमें से एक पाठक मिलकी, थाना विक्रम के पास जाकर बस गये। आज भी उनके वंशज वहाँ मौजूद हैं। उनके समय के कई कुएँ इधर मिले हैं। जैसे — भुरहा, मीठा इनार इत्यादि। यहाँ की राजधानी समस्तीपुर थी। वहाँ भुरहा इनार है। भुरहा और मीठा इनार बहुत चौड़े व्यास के पुराने बने हुए हैं। मीठा इनार गढ़ के पास ही था और वह आज भी है। उसका जीर्णोद्धार पारसनाथ ने किया है। आगे इसका वर्णन मिलेगा। भवानी प्रसाद मिश्र—"अपने यजमान के प्रतिद्वन्द्वी (आगन्तुक भूमिहार वंश के आक्रमण) की ओर मिल जाने के कारण के अधिकांश

वंशजों का निधन हुआ और उन्हीं के (हृदय के उद्गार) श्राप के कारण एक ही घ
के रूप में शेष बचे। उस पुरोहित का आगे अधिक संख्या में विकास नहीं हुआ
उनके रसोइया भूमिहार ब्राह्मण बरइयाँ थे। ये लोग भी आक्रमणकारी भूमिहा
ब्राह्मण के साथ मिल गये थे। इसलिए इनके स्वामी ने हृदय से श्राप दिया कि तुम
लोगों का भी विकास नहीं होगा"। फलस्वरूप आज भी चार ही घर हैं।

ब्राह्मण-समाज के मूल रूप में आज बरइयाँ ब्राह्मण लोग मौजूद हैं। कहा
जाता है कि यही लोग यहाँ के मूल बासिन्दा है किंवदन्ती यह भी है कि इन्हीं लोगों
के सहयोग और छिपे रहस्य को बताने के कारण हमारे पूर्वज यहाँ के अधिपति
बने। यह भी सुनने में आता है कि हमलोगों को सहयोग देने के कारण ही अ
अधिपति ने रुष्ट होकर इन्हें श्राप दे दिया, परन्तु यह तो राजनैतिक रहस्य था,
जिसे इनलोगों ने बताया और जहाँ राजनीति चलती है वहाँ श्राप का रहस्य ही
क्या ?

लेखक की हैसियत से इनके विकास तथा उन्नत्ति की शुभ कामना करता हूँ।

पयनाल से दक्षिण लगभग ६ मील की दूरी पर अरापै (अराप) बसती है,
वहाँ भी 'चेर' (चेरिया) राजा का राज था। इसका जिक्र प्रो० रामनाथ शर्मा
'अमहरा' ने किया है। अरापै भी गढ़ था। पयनाल और अरापै बहुत पुरानी बस्ती
हैं। यहाँ और अरापै गढ़ के बुर्ज (गुम्बज) पर रात को मशाल जलायी जाती थी।
पयनाल भी चेर राजा का और अरापै भी चेर राजा का राज कहलाता था। मेरा
अनुमान है कि ये दोनों गाँव चेर राजा के ही दो टुकड़े थे। हमारे यहाँ के प्राय:
सभी लोग ऐसा कहते हैं कि यहाँ 'चेरिया' का राज था। पयनाल के बाद अरापै
राजा से भी लड़ाई छिड़ गई: परन्तु वहाँ से सन्धि हो गई और सुनते हैं कुछ दिनों
बाद (यहाँ की लड़की से वहाँ के लड़के के साथ) वैवाहिक सम्बन्ध हो गया यहाँ
से कुछ लोग अरापै भी जाकर बस गये। जब वैवाहिक सम्बन्ध हो गया तब वे
लोग वहाँ रहना निषेध समझकर 'यहाँ न उचित असन असनाना' यानी लड़की के
यहाँ का अन्न-जल नहीं ग्रहण करना चाहिये। कुछ लोग कंचनपुर और अन्यत्र जा
बसे। खैर, चाहे जो कुछ हो, यह तो सिद्ध है कि यहाँ का राज्य हमारे पूर्वज ने
तलवार के जोर से ही हासिल किये और 'श्री पराधर शाहु, जो मधुकरपुर तिनेरी
गये, ने भी तलवार के जोर से ही वहाँ का राज्य हस्तगत किये। तिनेरी की विशेष
कहानी आगे लिखूँगा।

कुछ लोग कहा करते हैं कि चेरिया आदिवासी था, लेकिन यह कल्पित रूप
मनगढ़त बात है, क्योंकि यदि चेरिया आदिवासी रहता तो (बरइयाँ) ब्राह्मण उसके

यहाँ चाकरी भले ही करते, लेकिन रसोइया का काम हरगिज नहीं करते न पुरोहिती ही। कारण-कि ब्राह्मण जाति उस जमाने में ऐसा नहीं कर सकती थी।

दूसरी बात—जब पयनाल और अरापै में वैवाहिक सम्बन्ध हो गया तो एक आदिवासी के यहाँ एक कुलीन ब्राह्मण अपनी लड़की का विवाह कैसे कर सकता था? उस समय के लिये यह बिलकुल असम्भव और असंगत बात थी। तीसरी बात यह कि पाठक मिलकी के १०८ वर्षीय बाबू राम दास सिंह का कहना है कि "हमारे पूर्वज पयनाल से ही भाग कर इधर आये। वहाँ राजा से युद्ध हुआ और हमारे पूर्वज सपरिवार मारे गये, सिर्फ दो ही बचे। उसमें से एक तिरहुत चले गये दूसरे जो हमारे पूर्वज हुए खपुरा अपने नानिहाल आकर रहे। वहाँ से पाठक मिलकी आये। पाठक मिलकी वाली बात हमारे यहाँ के लोग भी कहते ही हैं। इसका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ।

पाठक मिलकी की विशेष बातें—ता० ६-७-१९७६ ई०, भौमवार को हम पाठक मिलकी गये। बाबू रामदास सिंह मकान पर ही थे (हमारे पूर्वज कहते आये हैं कि पाठक मिलकी के भूमिहार ब्राह्मण यहीं के बासिन्दा हैं। इस विषय में मैंने उनसे पूछ-ताछ की।) उनसे हमारी बातें हुईं उन्होंने कहा—"हमलोग अपने बड़े लोगों से सुनते आ रहे हैं कि हमारे पूर्वज पयनाल में थे। राजा से लड़ाई में हमलोगों के सभी परिवार मारे गये। सिर्फ दो आदमी बच गये। एक तिरहुत चले गये और दूसरे वहाँ से भाग कर अपने मामा के यहाँ खपुरा चले आये। खपुरा पाली के पास है। खपुरा के लड़के के मामा भरतपूरा बाबू के यहाँ रहते थे। पाठक मिलकी पहले कोई गाँव नहीं था। पनसुही के पाठक लोगों की सिर्फ जागीर थी। रकबा तीन सौ बीघे का था। यहाँ पर वे लोग घर बनाकर नहीं रहते थे। भरतपूरा के बाबू ने पाठक ब्राह्मणों से कहकर हमारे पूर्वज को पाठक मिलकी में घर बनवा दिये। पाठक मिलकी 'बेलखरा' के बाबू का मौजा था। हमारे पूर्वज जब यहाँ घर बना लिये तो धीरे धीरे सम्पत्ति भी बढ़ाने लगे। ठीक ही कहा गया है कि जब भाग्य चलता है तो मिट्टी छूते सोना हो जाता है। हमारे पूर्वजों की दिनानुदिन उन्नति होने लगी। उन्होंने बहुत सी जमीन खरीद ली और यहाँ अहीरों को भी बसाये। क्रमशः अन्य जातियाँ भी बस गईं। मैंने पूछा कि किस राजा से कब और कैसे लड़ाई हुई थी? वे बोले—"बहुत जमाने की बात है। बीसों पीढ़ियों से भी अधिक समय हो सकता है, जब आपलोगों के पूर्वज वहाँ आकर बसे तो उनके द्वारा ही लड़ाई में 'हमारे पूर्वज मारे गये' मैंने

पूछा कि जब बहुत जमाने की बात कह रहे हैं तो आप आज तक एक ही क्यों हैं? वंश की वृद्धि क्यों नहीं हुई? रामदास सिंह ने कहा कि भा की बात है। उधर हमलोगों की संख्या अधिक थी। इस समय तो कि मैं और मेरा एक भतीजा है। मैं अकेला हूँ। मेरी स्त्री भी मर गई। कोई सन्तान भी नहीं हुई। भतीजा के भी सिर्फ दो लड़के हैं। पोता अ तक सिर्फ एक ही है। उनके पोता को मैंने देखा था। करीब १२-१३ सा का होगा। "बोले कि मेरे यहाँ मर्दों की इतनी ही संख्या है। सदस्यों का अभाव है। हमारे बस जाने पर पाठक ने भी यहाँ पर घर बनाये। ये भी एक ही घर है।" रामदास सिंह भारथुहार ब्राह्मण हैं। गोत्र भारद्वाज है। पयनाल के बासिन्दा हैं।

अभी जीवित बाबू रामदास सिंह जब स्पष्ट शब्दों में कह रहे हैं कि पयनाल के आदि बासिन्दा हम ही हैं तब फिर चेरिया राजा ब्राह्मण मानने इससे अधिक प्रमाण क्या मिल सकता है? यहि चेरिया के नाम से विख्यात थे। अतः चेरिया राजा ब्राह्मण था न कि अन्य जाति। जिसके ही वंशज आ पाठक मिलकी के भूमिहार ब्राह्मण हैं। अब यहीं पर तिनेरी का भी वृत्तान्त संक्षेप में सुन लीजिये। ७-७-१९७६ ई० दिन बुधवार को मैं पाठक मिलकी से तिनेरी पहुँचा। ग्राम से पश्चिम एक प्राइवेट ट्यूबवेल था। वहाँ पर नन्द किशोर शर्मा नाम के एक नवयुवक खाट पर लेटा हुआ था। वह कुछ नीन्द में था। गर्मी अधिक थी। मुझे प्यास भी लगी थी। उसी खाट के पास जमीन पर मैं बैठ गया। आहट मिलने पर वह जगा। मेरा पता पूछ कर उसने मुझे खाट पर बैठा लिया और अपना गोतिया समझ कर विशेष प्रेम दर्शाया। साथ ही वहाँ पहुँचने का कारण भी पूछा। मैंने अपनी सारी राम-कहानी कह सुनाई तब उसने मुझे श्री जगदीश सिंह अथवा श्री सीताराम सिंह सेवा निवृत शिक्षक से मिलने की सलाह दी। मैं श्री जगदीश सिंह मास्टर के दरवाजे पर पहुँचा। वे खाट पर पड़े थे। नौकर द्वारा जगाने पर मैंने उन्हें प्रणाम किया और पूछने पर अपना पता बताया। पयनाल का नाम सुन कर वे बहुत प्रसन्न हुए, लेकिन घाव के कारण बेचारे थे काफी दर्द में। नौकर से शर्बत मंगवाये। स्वागत सत्कार के पश्चात् उन्होंने मुझसे वहाँ पहुँचने का कारण पूछा। मैंने कहा कि इस वक्त तो एक प्रयोजन से आना हुआ है, लेकिन बहुत दिनों से यह लालसा थी कि एक बार तिनेरी चल कर अपने गोतिया लोगों के, जो हमारे ही यहाँ से जा कर वहाँ बस गये हैं, दर्शन करूँ। मास्टर साहब बोले कि धन्य भाग्य जो मैं

आज अपने गोतिया से बातचीत कर रहा हूँ। मैंने उनसे वही बातें कहीं जो नन्द किशोर शर्मा से कही थीं। मास्टर साहब बोले कि यहाँ पर विशेष बात बताने वाला कोई नहीं है, सिर्फ हमलोग यही सुनते आ रहे हैं कि यहाँ पर 'वरीन चौधरी' आये थे। मैंने पूछा कि पहले का कोई कागजात है? वे बोले कि कुछ नहीं। मैंने पयनाल की आद्योपान्त वंशावली उन्हें दिखायी और कहा कि यहाँ पर 'वरीन चौधरी नहीं बल्कि पराधर शाही आये थे। देखिये, हमारी वंशावली में सर्वप्रथम हमारे पूर्वज 'श्री राम्पे ठाकुर' आये हैं। उनके लड़के टेका शाही हुये। टेकाशाही के दो लड़के थे—जीवधर शाही और पराधर शाही। पराधर शाही तिनेरी आ बसे। देखिये, हमारी वंशावली में यही बात है। जीवधर शाही के लड़के चौधरी गोपाल सिंह हुए। मास्टर साहब बोले कि तब हमलोग 'वरीन चौधरी' को कैसे जपते आ रहे हैं? मैंने कहा कि मेरी वंशावली की चौथी पुश्त में चौधरी गोपाल सिंह आते हैं। राम्पे ठाकुर को न जप कर मेरे यहाँ का बच्चा-बच्चा चौधरी गोपाल बाबा का नाम जपता है। वंश में जिसकी ख्याति अधिक हो जाती है, उसी का नाम चल पड़ता है। दुष्यन्त राजा के पहले भी भारत में राजा हुए हैं, लेकिन दुष्यन्त के लड़के भरत के नाम से आज भारतवर्ष विख्यात है। इसी तरह 'राम्पे ठाकुर' को न जान कर 'गोपाल चौधरी' को हम लोग जानते हैं। इसी तरह आपलोग भी 'पराधर शाही' को न जानकर 'वरीन चौधरी' को जान रहे हैं। चौधरी की उपाधि गोपाल बाबा की थी जो पराधर शाही के भतीजा हुए। हो सकता पराधर शाही के लड़के 'वरीन चौधरी' हुए हों; क्योंकि चौधरी की उपाधि गोपाल बाबा की हुई। तब वरीन बाबा भी, गोपाल चौधरी के चचेरे भाई के नाते उसी चौधरी की उपाधि से जाने गये हों। मेरा तो यही अनुमान है। जिस तरह हमलोग गोपाल चौधरी को भजते आ रहे हैं उसी तरह आप लोग 'वरीन चौधरी' को जपते आ रहे हैं। वहाँ के बहुत लोगों से मैंने यही बात कही। सबलोग मेरी बातों को सुनकर और पयनाल की पुरानी वंशावली को देखकर मेरी बातों से प्रभावित हुए तथा मेरी वंशावली की मान्यता दी। पुनः मास्टर साहब से मैंने पूछा कि इस समय आप के गाँव में सर्वाधिक वयोवृद्ध व्यक्ति कौन हैं? उन्होंने नारायण सिंह का नाम बताया। मैंने मास्टर साहब से जाने की आज्ञा मांगी। वे बोले कि बड़े भाग्य की बात है कि आप अनायास मेरे द्वार पर आये हैं। मैं जाने को कैसे कहूँ; परन्तु कार्योन्मुख आदमी को रोकने से कार्य में बाधा पहुँचती है, इसलिए मैं रोकने से लाचार हूँ। फिर वे नारायण सिंह के पास जाने का रास्ता बता दिये। मास्टर साहब का मकान

गाँव के उत्तर तरफ है, और नारायण सिंह का एकदम दक्षिण। नारायण सिं
दरवाजे पर ही थे। मैंने प्रणाम किया और अपना पता बताया। नारायण सिं
पयनाल कई बार आ चुके थे। अब वे थक गये हैं। आयु ८५-८६ की है। आँखे
की रोशनी कम हो गई है, लेकिन अभी कुछ घूम फिर लेते हैं। मेरा नाम पढ़के
से भी वे जानते थे। अतः बहुत प्रेम से समाचार पूछते हुए अपने को धन्य-धन्य
मानने लगे। मैं रात भर उनके यहाँ ठहरा। इस विषय में पूछ-ताछ की। उन्होंने
भी कुछ अधिक नहीं बताया। सिर्फ थोड़ी सी बातें इस प्रकार बतायीं—"हमारे
पूर्वज पहले पयनाल से आकर 'सेवनन गढ़' पर रहे। सेवनन नवाब का मौजा था।
नवाबके बराहिल के साथ मार-पीट हो गई। वहाँ से वे 'मधुकरपुर तिनेरी' आ
यह बस्ती मधुकरपुर तिनेरी कहलाती है। पहले यहाँ पर मधुकर नाम
के कोई कायस्थ राजा थे। उन्हींके नाम पर यहाँ का नाम मधुकर
पुर तिनेरी पड़ा। मधुकरपुर तिनेरी का रकबा १४०० चौदह सौ बिघे का
था। हमारे पूर्वज मधुकर को खत्म करके सारी सम्पत्ति के अधिपति
बन गये"। नारायण सिंह भी वरीन चौधरी का ही नाम बताते हैं।

हमारे यहाँ के भवानी प्रसाद मिश्र ने तिनेरी जाने का कारण यह बताया
कि "वे दो भाई थे। छोटे भाई यानी पराधर शाही ने अपने बड़े भाई की स्त्री
से कहलवाया कि भइया यहाँ की जमीन में उन्हें हिस्सा देंगे या नहीं? इस पर
उन्होंने कहा कि यहाँ तुमको हिस्सा नहीं मिलेगा; क्योंकि यहाँ के सर्वप्रथम
निवासी को खून-दान कर तलवार के जरिये अधिकार में किया गया है। कोई
अधिक शक्तिशाली व्यक्ति आकर मुझसे भी इस जमीन को छीन ले सकता है।
यह सुनकर उनके छोटे भाई परिवार सहित यहाँ से दक्षिण की ओर बढ़े और
तिनेरी गोपाल पुर के आदि निवासियों को मार कर वहाँ का राज्य दखल किया।
वहाँ आज भी उनके वंशज अधिक संख्या में मौजूद हैं।

पयनाल के लोग कहते हैं कि पयनाल और अरापै (अराप) से श्री पराधर
शाही की मदद के लिए सैनिक गया था।

४. 'पयनाल' नामकरण का परिवेक्ष्य एवं सार्थकता—

पयः + नाल = पयनाल।

'पय' का अर्थ—दूध और 'नाल' का अर्थ नाला या धारा। पयनाल का
अर्थ हुआ—जहाँ दूध की धारा बहती हो। गढ़ के नौकरानों के लड़के दूध के
कुल्ले किया करते थे। सुना जाता है कि रंगलाल राम (जो गढ़ की हवेली का

नौकर था) अपने बच्चों को दूध पिलाता था और वे उसे बाहर फेंक देते थे। देवास (दशहरा) में जगदीश मिश्र 'महेश ब्रह्म' के पास कन्टर-के-कन्टर घी जला देते थे, यह मेरी आंखों देखी बात है। अधिक दिन नहीं ४०-५० ही वर्षों की बात है। इसके अलावे गाँव में और भी कई जगह देवास होते थे। उसमें भी घी का हवन होता था। जब उस समय घी भरमार थी तो जिस समय इस गाँव का नामकरण हुआ होगा, उस समय दूध को कौन पूछे; घी की कितनी अधिकता रही होगी। उस समय जो इसका नाम 'पयनाल' रक्खा गया, वह सार्थक जँचता है।

पयनाल बिहार प्रान्त के पटना जिलान्तर्गत दानापुर सब-डिवीजन में है। इसका परगना और पुराना थाना मनेर हुआ। अब थाना बिहटा हो गया है। यह गाँव पटना जंकशन से १३ माइल एवं दानापुर (खगौल) से ८ माइल पश्चिम है। सदीसोपुर स्टेशन यहाँ से डेढ़ माइल दक्षिण है। गाँव से स्टेशन पर जाने के लिए अब पक्की सड़क बन गई है। पतित पावनी गंगा यहाँ से ७ माइल उत्तर, पश्चिम से पूरब की ओर बहती हैं। सोन नदी यहाँ से ५-६ माइल पश्चिम है। बिहटा यहाँ से चार माइल दक्षिण पश्चिम कोण पर है। फाल्गुन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी को यहाँ भारी मेला लगता है। दूर-दूर से व्यापारी लोग समान बेचने आते हैं। हरेक सप्ताह में मंगल और शुक्रवार को गल्ला और सब्जी की बिक्री होती है। दक्षिण से गाड़ी पर लाद कर व्यापारी लोग चावल ले आते हैं। चावल और सब्जी की खूब खपत होती है। गुड़ भी खूब आता है। यहाँ स्टेशन पर प्रायः अधिकांश रेलगाड़ियाँ ठहरती हैं। साथ ही चीनी-मिल, कौलेज, कोल्डस्टोरेज, ब्लॉक, गौरक्षणी, श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित सीतारामाश्रम आदि भी हैं। यहाँ बिहटेश्वर नाथ महादेव का एक विशाल मन्दिर भी है। व्यापार में यह गाँव बहुत तरक्की पर है।

डा० बुकानन अपने भ्रमण के क्रम में २४ फरवरी १८११ को पैनाल पहुँचे जिसका वर्णन उन्होंने Journal of Francis Buchanan 1811–1812 के पृष्ठ 165 पर यों किया है—'The boundry between Gaya and Patna at Purnal (PAINAL) is about Seven miles north from Raph. From there the bank of Ganga is about four and a half miles.

पटना और गया की सीमा के बीच ग्राम पैनाल अराप से करीब ७ मील उत्तर और गंगा नदी वहाँ से ४॥ मील उत्तर है।"

प्रायः 'पैनाल' (पयनाल) इस तरह ही लिखा मिलता है तथा प्रयोग भी प्रचलित है किन्तु यह शब्द 'पयनाल' का अपभ्रंश रूप है। मैं 'पयनाल' सभी दृष्टियों से सही एवं सार्थक मानता हूँ। इसकी सार्थकता का उल्लेख इसी संदर्भ में पहले किया है। मैं 'पैनाल' न लिखकर 'पयनाल' का ही प्रयोग सम्पूर्ण इतिहास में करूँगा।

५. (क) प्राचीन गढ़—

प्राचीन गढ़ गाँव के दक्षिण भाग में बहुत दूर तक फैला दिखाई देता है इसे आज लोग 'ढिबरा पर' कहते हैं। १८-२० बीघे में इसका हाता होगा आज यह ढीवर-सा है और उस पर छोटे-छोटे मकान भी बने हुए हैं। गढ़ दाबे में अभी भी ईंटे मौजूद हैं। खोदने पर मिलती हैं। कई पत्थर भी मि हैं। एक ऐसा पत्थर भी मिला है जिसमें चार गोड़िये लगे हैं। पत्थर की चौड़ ७¾ ईंच, लम्बाई १५¾ ईंच, ऊँचाई ८¾ ईंच; ऊपर की मोटाई ३ ईंच, गो की ऊँचाई ५¾ ईंच और गोड़ों की मोटाई २½ एवं २ ईंच हैं। यह गायदुम कार है। यह पत्थर आज भी रामचन्द्र वर्मा के घर है। उनके घर की स्त्रि (सिलवट बनाये हुई हैं और) उसपर मशाला पीसती हैं। घिसते-घिसते बीच में दब गया है। अनुमान किया जाता है कि यह किसी देवता का सिंहास रहा होगा। और भी कुछ पत्थर मिले हैं जो देवलगन महतो के यहाँ है। छोटी छोटी मूर्त्तियाँ भी घिसी हुई मिली थी जो भागवत मिश्र के पास के पीपल के दरख के पास थीं। अब लापता हैं। इधर हाल ही में कपिलदेव सिंह अपने घर आँगन में कूआँ खोद रहे थे। उसमें भी कई मूर्त्तियाँ मिलीं। उसको वे ताक प सजाकर रखे हुए हैं। परशुराम सिंह कहते हैं कि हमारे यहाँ मिट्टी के नीचे एक पुरानी तलवार जंग लगी निकली थी। हाल तक थी, लेकिन बाद में कहीं फेंक दी गई।

हमारे पूर्वजों के वंश की जब वृद्धि होने लगी तो प्राचीन गढ़ से धीरे-धीरे लोग पूरब, पश्चिम और उत्तर की ओर बढ़ने लगे। हमारे आदि पूर्वज 'श्री रामे ठाकुर' से चौथी कुरसी में चौधरी गोपाल सिंह होते हैं। चौधरी गोपाल सिंह के बाद पांच पट्टियाँ कायम हुईं—१-महमदपुर पयनाल २-गोपालपुर पयनाल ३-खास पयनाल ४-श्रीपालपुर पयनाल और ५-मिन जुमला पयनाल। मिनजुमला का तो माने हुआ सब से मिला हुआ। खास पयनाल तो पयनाल था ही, परन्तु महमदपुर पयनाल, गोपालपुर पयनाल और श्रीपालपुर पयनाल नाम क्यों

पड़ा; हम ठीक नहीं बता सकते। पूछने पर भी किसी से सन्तोषजनक उत्तर न मिला। खैर, पांच पट्टियां कायम हुई। श्री राम्पे ठाकुर के लड़के टेकाशाही हुए। टेकाशाही के दो लड़के—जीवधर शाही और पराधर शाही। पराधर शाही मधुकर तिनेरी जा बसे। जीवधर शाही से चौधरी गोपाल सिंह हुए। चौधरी गोपाल सिंह के दो लड़के हुए—अनु सिंह और रतन सिंह। दोनों अलग हो गये। अनु सिंह अपना आधा हिस्सा (आठ-आना) लेकर महमदपुर पट्टी कायम किये, रतन सिंह के चार लड़के हुए—१-बीरबल सिंह २-अधिवरन सिंह ३-गिरिधर सिंह और ४-पूरण सिंह। बीरबल सिंह और अधिवरन सिंह चार आने के हिस्सेदार बनकर खास पबनाल पट्टी में रहे। बाकी चार आने बच गये। इसमें दो आने का हिस्सेदार होकर गिरिधर सिंह ने गोपालपुर पट्टी कायम की। बाकी दो आने बच गये। वे पूरण सिंह को हुये। इन्होंने श्रीपालपुर पट्टी कायम की। श्री पालपुर पट्टी से ही मिन-जुमला पट्टी कायम हुई 'और श्रीपालपुर से ही एक टुकड़ा निकल कर खास पयनाल में जा मिला। यह टुकड़ा लोहानी बाबा से बिलग हुआ।

(ख) टोले समस्तीपुर एवं हाजो ढीवर

यह बस्ती आज नहीं है, लेकिन जिस जगह पर थी उसे आज भी समस्तीपुर ही कहते हैं। इसके पश्चिम दक्षिण सटे हुए हाजी ढीवर है। यह बस्ती पयनाल के अन्तर्गत थी। हाईस्कूल इसी क्षेत्र में बना है। यह बस्ती ऊँची जगह पर थी। वहाँ बरसात में आज भी पानी नहीं लगता है। लोग कहते हैं कि पहले पयनाल की राजधानी समस्तीपुर ही थी। वहाँ पहले का बना हुआ कुआँ आज भी वर्त्तमान् है, वह भुरहा इनार कहलाता है। समस्तीपुर के कुछ लोग अहियापुर जाकर बस गये। अहियापुर के बाबू बुद्धन सिंह कहते थे कि हमलोग समस्तीपुर के बासिन्दा हैं। ता० १८ सितम्बर १९७६ को मैं अहियापुर गया। श्री बुद्धन सिंह स्वर्गवास हो गये। उनके भतीजा रामानन्द से भेंट हुई। रामानन्द के पिता का नाम बाबू बन्धु सिंह था। रामानन्द बोले—"हमारे पूर्वज समस्तीपुर (पयनाल) से ही आये थे। कब आये थे नहीं बता सकता। एक घर अहियापुर एक घर कालापुर, एक घर मनेर और एक घर जगमाल बीघा बस गये। जगमाल बीघा हरिदास स्टेशन के पास है। हमारे घर का विकास नहीं हुआ मैं सिर्फ एक ही घर हूँ। जगमाल बिघा इस समय एक घर से ८०-८५ घर हो गये हैं।" मैंने पूछा कि आपको यह कैसे मालूम है? वे बोले—"वहाँ से आना-जाना हम लोगों का बना हुआ है। वहाँ के लोग आते हैं तो कभी-कभी समस्तीपुर जाकर उस भूमि को स्पर्श कर आते हैं और कहते हैं कि समस्तीपुर गौरेया बाबा (देवता)

का स्थान है, जिनकी अराधना पूजा-पाठ हमारे पूर्वज करते थे"। बात सही
गोरैया बाबा का स्थान आज भी वर्त्तमान है। नीम के एक विशाल वृक्ष
सघन छाया में उनका स्थान बहुत लम्बा-चौड़ा चबूतरा का बना हुआ है, जि
कोर ईंट के बने हुए हैं। इधर बाबू सरयू सिंह ने उसे मरम्मत करवा दिया
वही गोरैया बाबा हैं, जिनका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ। समस्तीपुर के
वाले कौशिक ब्राह्मण हैं। उनका गोत्र कमंडल है।

रामानन्द बोले—"हमारे पूर्वज जो अहियापुर आये, उनका नाम उम
राय था और जो जगमाल बीघा गये उनका बुद्धन राय"। अहियापुर में
वृद्ध पुरुष बाबू काली सिंह ८५-८६ की आयु वाले हैं। उनके समक्ष सारी
हुई। वे सभी बातें जानते थे। वे एक पद भी बोले—

"बड़ हर चले बलराय राय के,
छोट हर चले किरपाल राय के।
अगरी चढ़े कउआ टाँव-टाँव करे,
तब हर खुले उमराँव राय के"॥

रामानन्द से मैंने पूछा कि अच्छा, आप यह बता सकते हैं—कि आप
पूर्वज समस्तीपुर से क्यों हटे? वे बोले—"लोग कहते थे कि पयनाल के मालि
की पगड़ी धोबी धोकर पसारे हुए था। समस्तीपुर वालों ने उस पर घोड़ा दौ
दिये। धोबी ने उस कपड़े को फिर साफ नहीं किया और ज्यों के त्यों उसे दरबार
ले गया और सारी बातें कह सुनाई। मालिक उनलोगों की शरारत पर क्रु
हो गये और सबों को घर से निकलवा कर घर में आग लगवा दी। बस्ती
गई। उस दिन गाँव के लोग बारात गये हुए थे। जब बारात से लौटे तो
कर जहाँ-के-तहाँ भाग गये"।

●

'आ'-६

वंश-विस्तर

सर्वश्री राम्पे ठाकुर

टेका शाही

जीवधर शाही — पराधर शाही A

चौधरी गोपाल सिंह

अनु सिंह — रतन सिंह

रूप राय, लच्छी राय, भेली राय, जय सिंह राय

अनु सिंह से महमदपुर पट्टी कायम हुई।

वीरबल सिंह, अधिवरण सिंह, गिरधर सिंह, पूरण सिंह

वीरबल सिंह और अधिदरन सिंह से खास पयनाल गिरिधर सिंह से गोपाल पुर पयनाल, पूरण सिंह से श्री पालपुर पयनाल और श्रीपालपुर से ही मिन जुमले पट्टी कायम हुई। श्री पालपुर से ही लोहानी बाबा अपना हिस्सा (एक टुकड़ा) लेकर पयनाल पट्टी में मिल गये। यानी श्रीपालपुर पट्टी से दो टुकड़े हो गये, जिसमें से एक टुकड़ा मिलजुमले पट्टी कायम किया, जो वंशावली के देखने से पता चलेगा।

A—पराधर शाही मधुकरपुर तिनेरी जा बसे, पोस्ट—नादौल (पटना)

नोट—जिस नाम के आगे × ऐसा चिन्ह है, उसे नावल्द समझना चाहिए। बहुत से पुराने नामों के आगे × ऐसा चिन्ह नहीं भी है। हो सकता है कि बेनावल्द हों या कहीं अन्यत्र चले गये हों।

अब मैं पहले अनु सिंह की पट्टी की वंशावली अद्योपान्त लिखकर तब रतन सिंह की पट्टी की वंशावली लिखूँगा।

महमदपुर पयनाल

रूप राय की पट्टी

- शिव राज राय
  - खेमी राय
    - दलेल राय
      - शिवसहाय सिंह
        - चेता सिंह
          - हिआवल सिंह
            - अजगेबी सिंह ×
            - रामदेनी सिंह
              - श्रीकृष्ण सिंह (मुनिजी)
                - हरि शंकर सिंह
                - उमा शंकर सिंह
                - रवि कान्त
                - रमा शंकर सिंह
            - त्रिवेणी सिंह (३ में)
            - शिवदेनी सिंह ×
        - धरीछन सिंह ×
        - भरौसी सिंह ×
        - बदर सिंह ×
      - जीता सिंह (३ में)
    - हिमांचल राय ×
    - धीना राय ×
  - राजदेव राय ×
- फूल राय (पृष्ट ४ में)

संकेत —वंशावली में जिस नाम के आगे पृष्ठ १० या १२ या १५ इत्यादि के आगे 'में' ऐसा लिखा हुआ है उससे समझना चाहिए कि उस नाम की साखा पृष्ट १० या १२ या १५ इत्यादि में आगे गई है और जिस नाम के आगे पृष्ठ १० या १२ या १५ इत्यादि के आगे 'का' ऐसा लिखा हुआ हैं, उससे समझना चाहिए कि पहले के पृष्ठ का शेषांश है। यहाँ से किताब में नीचे भी १ नं० से पृष्ठ नं० शुरू किया गया है। नाम के आगे जो पृष्ठ संख्या लिखी हुई है, उसका सम्बन्ध नीचे के नम्बर से है, न कि ऊपर के सिलसिलेवार नं० से।

त्रिबेणी सिंह (पृष्ठ २ का)

द्वीपनाथ सिंह

रामकर्ण सिंह

श्री राम सिंह | बलिराम सिंह | राम नारायण सिंह | मनोज सिंह

जीता सिंह (२ का)

खूबा सिंह × शरण सिंह × नन्दलाल सिंह | दीना सिंह | टेनी सिंह (४ में)

गुंजा सिंह × छेदी सिंह | मन बहाल सिंह × दरावत सिंह × नखीद सिंह

करमू सिंह × गंगा प्र० सिंह | यमुना प्र० सिंह | बेणी प्र० सिंह (४ में)

महा सुन्दर देवी A | मुन्दर देवी B | बजरंगी सिंह

श्री राम सिंह | कामता सिंह | विद्यानन्द सिंह | सूर्यदेव सिंह

भोला सिंह

कृष्ण मुरारि सिंह

कमलेश सिंह

मणीश राज

A महासुन्दर देवी जोजे श्री इन्द्रदेव नारायण सिंह, ग्राम–चौरमा (पटना)

B मुन्दर देवी जोजे श्री महेन्द्र नारायण सिंह नालन्दा

त्रिबेणी सिंह (पृष्ठ २ का)

द्वीपनाथ सिंह

रामकर्ण सिंह

श्री राम सिंह | बलिराम सिंह | राम नारायण सिंह | मनोज सिंह

जीता सिंह (२ का)

खूबा सिंह × शरण सिंह × नन्दलाल सिंह | दीना सिंह | टेनी सिंह (४ में)

गुंजा सिंह × छेदी सिंह | मन बहाल सिंह × दरावत सिंह × नखीद सिंह

करमू सिंह × गंगा प्र० सिंह | यमुना प्र० सिंह | बेणी प्र० सिंह (४ में)

महा सुन्दर देवी A | मुन्दर देवी B | बजरंगी सिंह

श्री राम सिंह | कामता सिंह | विद्यानन्द सिंह | सूर्यदेव सिंह

भोला सिंह

कृष्ण मुरारि सिंह

कमलेश सिंह

मणीश राज

A महासुन्दर देवी जौजे श्री इन्द्रदेव नारायण सिंह, ग्राम–चौरमा (पटना)

B मुन्दर देवी जौजे श्री महेन्द्र नारायण सिंह नालन्दा

बेणी प्रसाद सिंह (३ का)

- इन्दर सिंह
  - कामदेव सिंह
    - भूषण सिंह
    - सुखारी सिंह
- कुम्हा सिंह ×
- रामदेव सिंह
  - अनील सिंह
  - सुनील सिंह
  - सुधीर सिंह

टेनी सिंह (३ का)

- किशन सिंह
  - कालिका सिंह
    - कृपाल सिंह
      - परशुराम सिंह
        - अरुण
        - संजय
        - रणजीत
- चीरी सिंह ×
- डोमा सिंह
  - जगत सिंह
    - रामाश्रय सिंह
      - नरेश सिंह
      - गणेश सिंह
        - सुबाश
        - सुवंष
      - रामजी सिंह
        - शिव कुमार
      - लछुमन सिंह
- रकटू सिंह
  - हरिहर सिंह ×

फूल राय (२ का)

- जोरावर सिंह
  - हरकी सिंह ×
  - राजी सिंह ×
  - कारू सिंह ×
  - जेहल सिंह ×
- रगन सिंह ×
- लाल शाही राय (५ में)

लाल शाही राय (४ का)

- अजमेरी सिंह
  - मनु सिंह
    - भेखा सिंह ×
    - जगू सिंह
      - चम्बल सिंह
        - प्रताप सिंह ×
      - भवन सिंह
        - नायक सिंह
          - बुलकन सिंह
            - रामचन्द्र सिंह
              - रामलीला सिंह
              - विनोद विहारी सिंह
                - सच्चिदानन्द
                - सहजानन्द
                - सत्यानन्द
              - श्याम विहारी सिंह
                - सत्यदेव सिंह
              - वृज विहारी सिंह
                - उदयनन्दन
    - हरलच्छन सिंह
      - राम्भित सिंह
        - विष्णु सहाय सिंह ×
        - चूल्हन सिंह
      - गिरिधारी सिंह ×
    - जीवलाल सिंह ×
- चन्द्रमणि सिंह
  - दरिआव सिंह ×
- भरत सिंह (६ में)

भरत सिंह (५ का)

- फकीरा सिंह
  - रामदयाल सिंह
    - छत्रधारी सिंह ×
    - शिवनन्दन सिंह
      - चमन सिंह
        - बदरी सिंह
          - राजदेव सिंह के भगिना
            - अम्बिका सिंह
            - चन्द्रिका सिंह ×
              - श्यामधारी सिंह × मंगल सिंह × रामईश्वर सिंह × रामपदार्थ सिं
                - रणधीर
                - रणजीत
                - देवेन्द्र कुमार
                - सुनील कुमार
                - कुमार सिंह
        - वृजनन्दन सिंह ×
        - आदित सिंह
          - दीप सिंह ×
        - रघुनन्दन सिंह
          - खोभारी सिंह
          - जगदम्ब सिंह ×
    - तिताई सिंह (८ में)
  - बेरादर सिंह ×
- निरधिन सिंह (६ में)

राजदेव की बहिन का नाम सोनामति थी।

निर्धिन सिंह (६ का)

- गोखुल सिंह
  - कुलदीप सिंह (७ में)
  - सकलदीप सिंह (७ में)
  - जगदी सिंह (७ में)
  - रामखेलावन सिंह (७ में)
- नौरंगी सिंह (९ में)

(६ का) कुलदीप सिह सकलदीप सिह जगदीप सिह रामखेलावन सिह

गंगा सागर सिह रामलगन सिह × तिलेगा सिह × खदेरन सिह × व्यास सिह

राजा सिह रामयतन सिह फूलपति देवी A रामसखी देवी B

लाल बाबू सिह सहजानन्द ज्योतिष कुमार पूर्णन्दु कु० सुभाषचंद्र अरविन्द

सुशील अरुण सुवील नीरज धीरज

A—फूलपति देवी जौजे श्री विनोद बिहारी सिह–ग्राम गोरखरा, सरवरिया ब्राह्मण, गोत्र सतैव।

B—राम सखी देवी जौजे श्री गुप्तेश्वर सिह ग्राम महजपुरा, अथरब ब्राह्मण, गोत्र कौंडिन्य।

तिताई सिंह (६ का)

- दसई सिंह
  - रामभजन सिंह ×
  - छेदी सिंह
    - बहादुर सिंह
    - नथुनी सिंह ×
      - बैजू सिंह
        - रामअनूप सिंह
          - सुदेश्वर सिंह
            - अंजनी कुमार
        - चन्द्रदेव सिंह
          - मधेश्वर
          - अवधेश
      - भोला सिंह
      - रामकेश्वर सिंह ×
        - सिद्धनाथ सिंह
        - रामनरेश सिंह
          - संजय कुमार
          - अजय कुमार
      - नन्दकेश्वर सिं
        - श्रीकान्त
- कान्हा सिंह (८ में)

कान्हा सिंह (८का)

- जीमूत वाहन सिंह (९ में)
- गोवर्द्धन सिंह
  - दिलकेश्वर सिंह
    - सिया राम
      - मनोज
  - विशुन सिंह ×
  - भीम सिंह
    - मुरारि सिंह
      - अजय
      - संजय
      - सुकेश
  - ढोंढ़ा सिंह
  - अकरू सिंह
- दाता सिंह
  - विश्राम सिंह
    - शिवजी
    - पवन कुमार

नौरंगी सिंह (६ का)

- शिवगुलाम सिंह
  - ब्यादर सिंह ×
  - केदार सिंह ×
- रामलाल सिंह
  - वैकुंठ सिंह
    - नविन्द सिंह
      - श्री भगवान सिंह
    - परमा सिंह
      - नरेन्द्र कु०
    - मुनेश्वर सिंह
    - इन्द्रदेव सिंह (९ में)
      - रामनारायण
      - राम विजय
      - राम उदय
      - शर्मा
      - वीरेन्द्र कुमार
    - देवबालक सिंह
  - जयकुंठ सिंह ×
  - पोखराज सिंह ×

इन्द्रदेव सिंह (९ का)

- सुरेन्द्र

जीमूत वाहन सिंह (८ का)

- चोई सिंह ×
- घूना सिंह (ढुनमुन सिंह)
  - राजकेश्वर सिंह
    - रामअनुज सिंह
  - राजचन्द्र सिंह ×
  - राजबलभ सिंह ×

रूप राय की पट्टी समाप्त।

लच्छो राय की पट्टी (पृष्ठ १ का)

- बेआलू राय ×
- बाबू राय ×
- भालू राय ×
- केआलू राय × महा राय
  - हरि राय
    - तेजन सिंह
      - सूचित सिंह
        - चित्रजीत सिंह
          - शिवचरण सिंह
          - नेतलाल सिंह ×
          - रामलोचन सिंह
            - रामकेवल सिंह
              - सत्यनारायण सिंह
                - अशोक कुमार
              - जगन्नाथ सिंह
                - बालेश्वर सिंह
              - सत्यदेव सिंह
                - घनश्याम
              - रामजी सिंह
              - शिव केवल सिं
              - अर्जुन सिं
                - संजय
    - कमल नयन सिंह
      - दुर्विजय सिंह
        - गरीबा सिंह ×
        - रामनाथ सिंह
          - शिव टहल सिंह × राजकुमार सिं
            - भिखारी सिंह
              - दीपन सिंह (१० में)
              - खुदबुद्दी सिंह (१० में)
                - दुर्जन सिंह
                - मथुरा सिं
            - सुखारी सिंह
      - छकौड़ी सिंह
        - नरकू सिंह
  - बदल राय ×
  - चरम राय (११

दीपन सिंह (१० का)

- सोहराई सिंह × सरयू सिंह ×

खुदबुद्दीन सिंह (१० का)

- बिजुली सिंह × १०
- भरत सिंह × चतुर्भुज सिंह

चरम राय (१० का)

- होरिल सिंह
  - गोदौरी सिंह
    - भैरो सिंह
      - भीषम सिंह
        - जौहरी सिंह
          - गुल्लम सिंह
            - कन्हाई सिंह ×
        - भगवान सिंह
          - जुलुमधारी सिंह
            - प्रहलाद सिंह
          - कलटू सिंह
            - रामदेव सिंह की बहिन अधिकारी कुअँर A
              - सुरेश
              - रामनिवास
              - मदन
    - मनबोध सिंह ×
    - तालेश्वर सिंह
  - शीलधारी सिंह
    - झगरू सिंह
      - बलदेव सिंह
        - जगल सिंह ×
        - बेचन सिंह
- त्रिभुवन सिंह (११ में)

A अधिकारी कुअँर के सोहर श्री गंगा दयाल सिंह (हिरामनपुर)

त्रिभुवन सिंह (११ का)

- वीरन सिंह
  - टीका सिंह (१२ में)
  - बीजा सिंह ×
  - जय सिंह (१२ में)
- गन्धर्व सिंह
  - कृष्णा सिंह

टीका सिंह (११ का)
- खिरकू सिंह ×

जय सिंह (११ का)
- धूपा सिंह
  - खेदू सिंह ×
- रौदी सिंह
  - बीटेश्वर सिंह ×

लक्छो राय की पट्टी समाप्त ।

भेलीराय की पट्टी (पृष्ठ १ का)

- दुर्गा राय
  - हीरा शाही ×
- बालक राय
  - केसरी सिंह
    - भीलन सिंह
      - अचल सिंह
        - राधो सिंह
          - शिवटहल सिंह
            - बेआदर सिंह A (५९ क में)
          - उदित सिंह ×
          - रामनारायण सिंह
            - बैजनाथ सहाय ×
            - भगवान सहाय (१३ में
        - बहोरी सिंह
          - सनमत सिंह (१३ में

A बेआदर सिंह टेंगरइला जा बसे। इनकी वंशावली पृष्ठ नं० ५९ में चला गया।

भगवान सहाय (१२ का)

- सीताराम सिंह ×
- अवध बिहारी सिंह ×
- वृज बिहारी सिंह
  - प्रीतम सिंह
    - हरनन्दन सिंह
      - संजय कु० अजय कु०
    - राजेश्वर सिंह
      - सुशील कुमार
        - रणजीत कुमार (पिन्टू) रिन्टू कुमार
  - चन्द्रिका सिंह
    - तारकेश्वर सिंह
  - कपिलदेव सिंह
    - शैलेश कु०
    - अखिलेश कु०
    - मिथिलेश कुमार

सनमत सिंह (१२ का)

- नथनी सिंह ×
- हरिनन्दन सिंह ×
- शिवनन्दन सिंह ×
- रघुनन्दन सिंह
  - राम लषण सिंह
    - राम अनुप सिंह
      - दीनानाथ शर्मा
      - दशरथ सिंह
    - राम बचन सिंह
      - सच्चिदा नन्द
      - रामानन्द
    - शिव बचन सिंह
      - बालमिकि
      - रंगी खदेरन

भेलीराय की पट्टी समाप्त

जय सिंह राय की पट्टी (१ का)

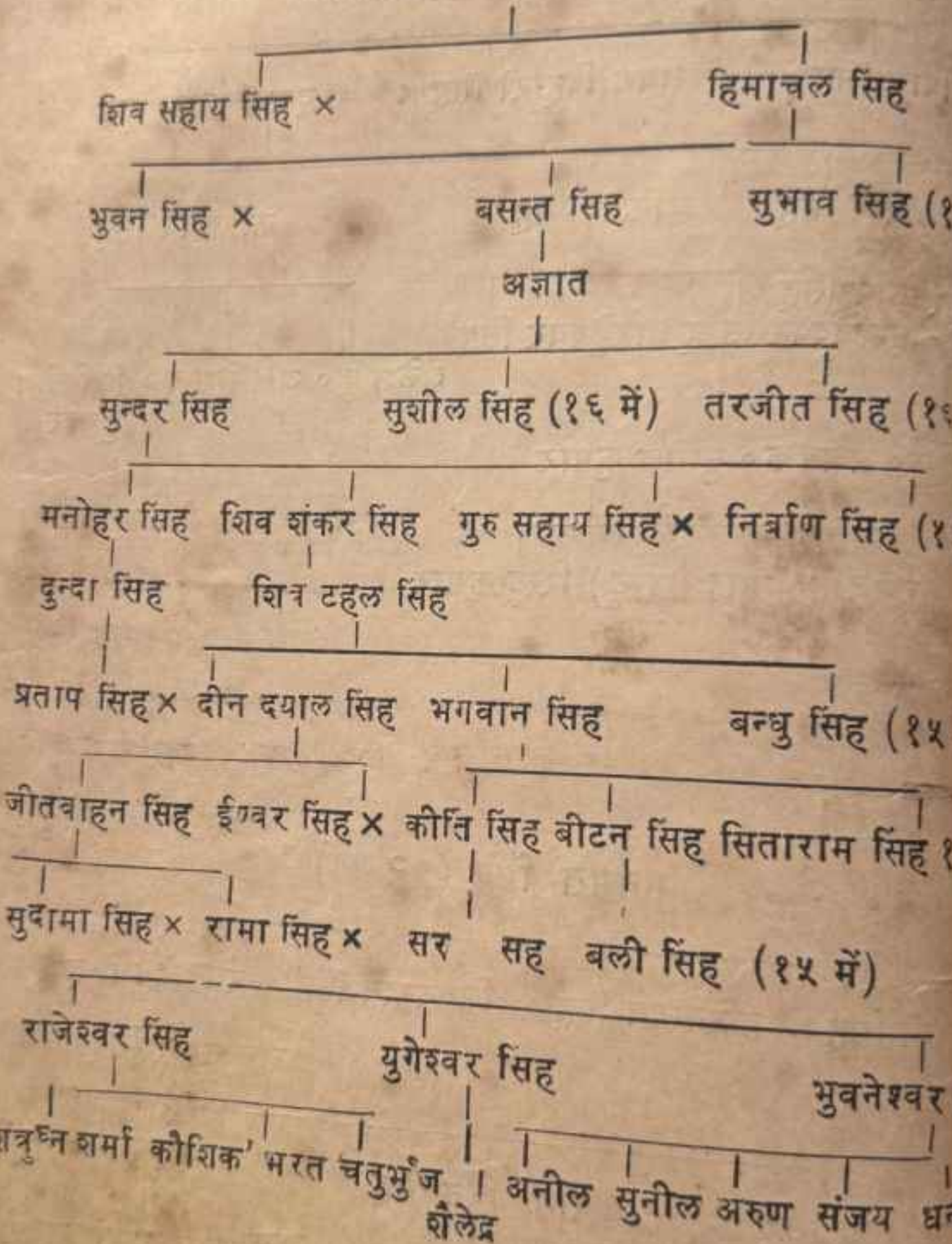

बली सिंह (१४ का)

- रामदत्त सिंह
  - सुरेश
- देवदत्त सिंह
  - उमेश
  - महेश
- शिवदत्त सिंह
- धर्मदत्त सिंह
  - उपेन्द्र कुमार

सीताराम सिंह (१४ का)

- चन्दू सिंह
  - कामेश्वर सिंह
    - अशोक
    - अनन्द
    - प्रसन्न
  - रामेश्वर सिंह
    - विनोद
    - वीरेन्द्र
  - सत्येन्द्र
  - विद्याभूषण
  - देवकृष्ण
- रामनन्दन सिंह
  - पलटन
    - सुबोध

बन्धु सिंह (१४ का)

- खंडी सिंह ×

निर्वाण सिंह (१४ का)

- महाबल सिंह ×
- बीटेश्वर सिंह ×

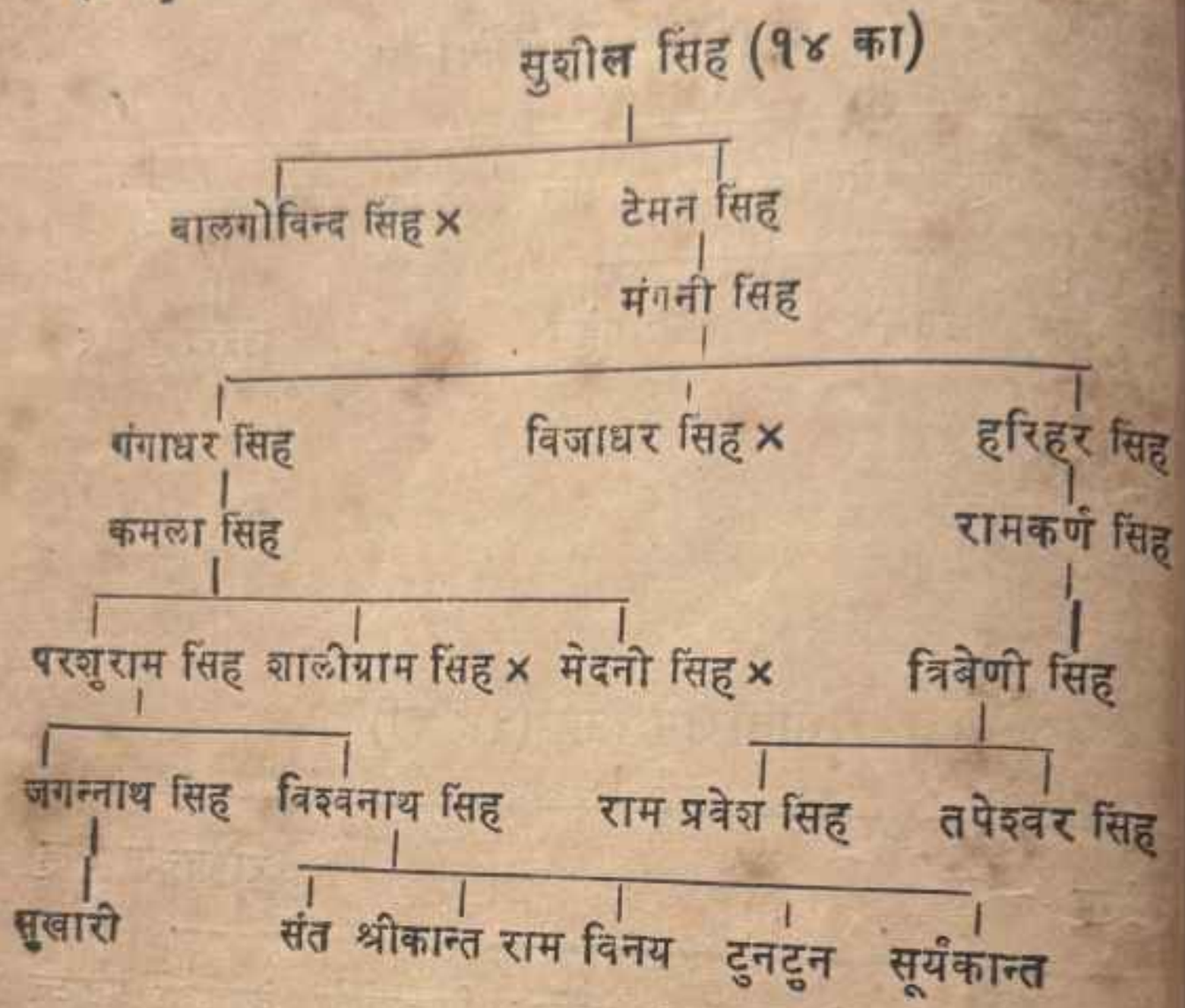
सुशील सिंह (१४ का)
बालगोविन्द सिंह ×
टेमन सिंह
मंगनी सिंह
गंगाधर सिंह
विजाधर सिंह ×
हरिहर सिंह
कमला सिंह
रामकर्ण सिंह
परशुराम सिंह
शालीग्राम सिंह ×
मेदनी सिंह ×
त्रिबेणी सिंह
जगन्नाथ सिंह
विश्वनाथ सिंह
राम प्रवेश सिंह
तपेश्वर सिंह
सुखारी
संत
श्रीकान्त
राम विनय
टुनटुन
सूर्यकान्त

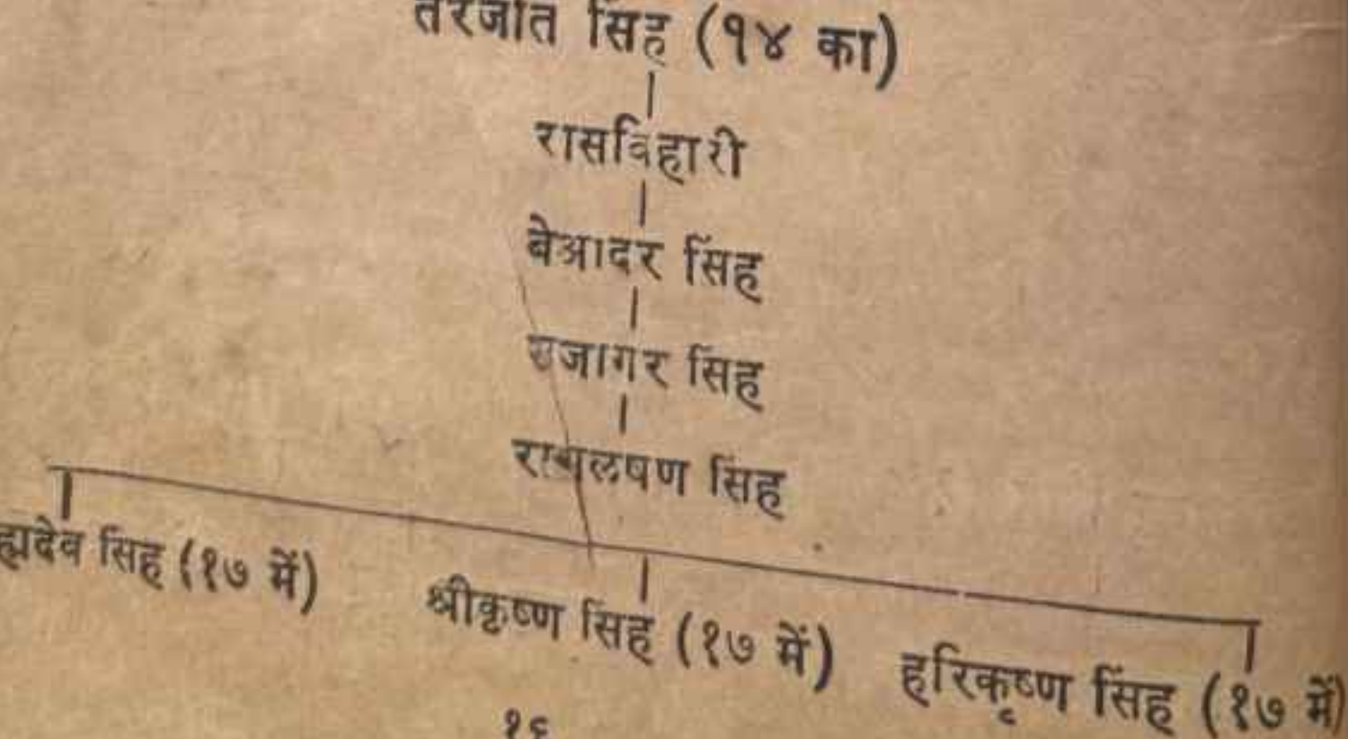
तरजोत सिंह (१४ का)
रासविहारी
बेआदर सिंह
उजागर सिंह
रामलषण सिंह
ब्रह्मदेव सिंह (१७ में)
श्रीकृष्ण सिंह (१७ में)
हरिकृष्ण सिंह (१७ में)

ब्रह्मदेव सिंह (१६ का) श्रीकृष्ण सिंह हरिकृष्ण सिंह

सत्यदेव सिंह मिथिलेश रमेश शकुन्तला देवी A

रामाज्ञा उदय शंकर जयशंकर मनोज कु० सुजीत राजेश रत्नेश सुरेश

A—शकुन्तला देवी जोजे श्री राम नरेश सिंह ग्राम सराय (हथिया कान्ध, पटना)

अजित कुमार

सुभाव सिंह (१४ का)

अज्ञात

सुफल सिंह खेड़ सिंह (१९ में) गिरिजा सिंह (१९ में) बेचू सिंह (२० में)

अजायब सिंह हलखोरी सिंह (१८ में) काशी सिंह (१८ में) हलवंत सिंह १८ में

अभय सिंह महावीर सिंह × शालिक सिंह ×

गनौरी सिंह रामखेलावन सिंह

हरी सिंह रामस्वरूप सिंह × श्याम ना० सिंह लक्ष्मीसिंह × ध्रुव सिंह ×

कैलाश सिंह रामभगवान शंभु सिंह रामप्यारे नन्दलाल सिंह

मदन सदन अरुण सुनील अनील

हलखोरी सिंह (१७ का)

हरष सिंह

देवकी सिंह — रघुनन्दन सिंह (खैरा जा बसे)

मल्लू सिंह ×

आर्शीवाद सिंह ×

काशी सिंह (१७ का)

अज्ञात

केश्वर सिंह — रघुनन्दन सिंह — गोबिन्द सिंह ×

जागेश्वर सिंह

जगेश्वर सिंह (१८ का)

रामधनी सिंह ×

शिवधनी सिंह ×

शिव सिंह

रामश्रृंगार सिंह — करोमन

झूलन सिंह — अनील

ललन सिंह

हलवंत सिंह (१७ का)

रामेश्वर सिंह ×

परमेश्वर सिंह — देव वंश सिंह ×

खेदू सिंह (१७ का)

बस्ती सिंह

जगधारी सिंह × ध्यान सिंह × शिव नारायण सिंह

बीजन सिंह — विष्णु सिंह — गुल्ली सिंह × — रामायण सिंह ×

रामचरित्र सिंह × श्यामविहारी सिंह × श्यामचरित्र सिंह दसई सिंह (१९में)

रामलषण सिंह — नबल विहारी सिंह

रामजन्म सिंह — वंशीधारी सिंह — सिद्धनाथ सिंह

रणजीत — कृष्णनन्दन — अशोक कुमार अनोल कुमार सुनील कुमार

दसई सिंह (१९ का)

अकलू सिंह — राम नरेश सिंह — उमेश सिंह

राजेन्द्र कुमार अंजनी कुमार — उदय शंकर

गिरिजा सिंह (१७ का)

नौरंगी सिंह — नरकू सिंह (२०में)

कारू सिंह ×

नरकू सिंह (१६ का)

सौदागर सिंह नरसिंह सिंह × जगनारायण सिंह (२० में) रछपाल सिंह (२० में) जीवन (२०

धनुष सिंह × राजा सिंह देवनाथ सिंह × प्रगाश सिंह

श्याम नारायण सिंह (फत्तेपुर जा बसे) भिखारी सिंह

लछुमन ×

जगनारायण सिंह (२० का) रछपाल सिंह (२० का) सजीवन सिंह (२०

विश्वंभर सिंह × रामशरण सिंह × दरबारी सिंह × सूबा सिंह × नामजद

शिवपूजन सिंह

बेचू सिंह (१७ का)

फुलधारी सिंह जानकी सिंह (२१ में

गंगा विष्णु सिंह

राम अवतार सिंह मुखी सिंह (२१ में)

सीता सिंह (२१ में) मिथिला सिंह × राजनाथ सिंह

रामानन्द सिंह

सीता सिंह (२० का)

हरदेव सिंह × बालदेव सिंह

बलिष्ठ सिंह

लाल बाबू

प्रविन्द शर्मा

मुखी सिंह (२० का)

नन्द कुमार × टीपन सिंह × द्वारिका सिंह A

विश्वनाथ

रघुनाथ

देवेन्द्र

A द्वारिका सिंह श्रीबर गोपालपुर जा बसे।

जानकी सिंह (२० का)

नेमधारी सिंह ×

तिलकधारी सिंह

छट्टू सिंह ×

जगदेव सिंह ×

दीलावर सिंह ×

महमदपुर पयनाल पट्टी सम्पूर्ण समाप्त

खास पयनाल

वीरबल सिंह की पट्टी (पृष्ठ १ का)

अमर सिंह

प्रेमन सिंह

धीरज सिंह — कीर्त्ति

मनरंजन सिंह — ज्येष्ठ सिंह (२३ में) — मीलन सिंह (२३में) — शिवशंकर सिंह (२४ में) — धूपन (२४

अज्ञात — दिलराज सिंह

दशरथ सिंह × — हरिहर सिंह — जगजीवन

प्रताप सिंह — शिवध्यान सिंह × — रामध्यान सिं

बलदेव सिंह × — वासुदेव सिंह × — जगदेव सिंह

शिव प्रसाद सिंह (बेंगा सिंह)

कन्हैया सिंह

रामानन्द — मंगा

ज्येष्ठ सिंह (२२ का)

- रामदेव सिंह
  - ईश्वर सिंह
    - कुलदपी सिंह
    - जगदीप सिंह ×
    - ब्रह्मदेव सिंह
      - भागवत सिंह
        - लोकनाथ सिंह ×
      - शुकदेव सिंह
        - सियाराम सिंह
          - मधुकर
        - गोरीशंकर सिंह
        - रामानुज सिंह
  - निरसू सिंह
    - किशुन सिंह

मीलन सिंह (२० का)

- उमराव सिंह
  - अधीन सिंह
    - डोमन सिंह ×
    - पृथ्वी सिंह ×
  - सावर्ण्य सिंह
    - नेतलाल सिंह ×
    - खूबलाल सिंह ×
  - अनन्त सिंह
    - टेकन सिंह ×
    - गोखुल सिंह
      - मेघनाद सिंह
        - अयोध्या सिंह
          - राम सनेही सिंह

शिवशंकर सिंह (२२ का)

अज्ञात

- बृजमोहन सिंह
  - राजनन्दन सिंह
    - बन्धु सिंह ×
  - रामनन्दन सिंह ×
  - शिवनन्दन सिंह
    - श्यामनारायण सिंह
    - जगत सिंह
    - हृदय सिंह
    - जगदम्ब सिंह
      - चन्द्रेश्वर सिंह
        - विद्यानन्द
        - श्रवण
      - कैलास सिंह
        - राजेश्वर
  - देवनन्दन सिंह
    - अवधविहारी सिंह ×
- जगमोहन सिंह (२४

जगमोहन सिंह (२४ का)

- गौरी सिंह ×
- हरिहर सिंह ×
- रूचा सिंह ×

घूपन सिंह (२२ का)

रघुवीर सिंह

- फकीरा सिंह
  - रामवृक्ष सिंह ×
  - आदित सिंह
    - भगेलू सिंह
- रामफल सिंह
  - दुर्गा सिंह ×
  - रामखेलावन सिंह ×

वीरबल सिंह की पट्टी समाप्त।

अधिवरन सिंह की पट्टी (पृष्ठ १ का)

- रामकृष्ण सिंह
  - सन्तोषी सिंह
    - भजन सिंह
      - रामप्रसाद सिंह
        - अज्ञात
          - चमरू सिंह
            - अचम्भित सिंह
              - नौरंगी सिंह × रूपन सिंह दिलावन सिंह
                - हरनन्दन सिंह × पारस सिंह ×
                - दीप नारायण सिंह
                - राजदेव सिंह
                - विद्या
                - अविद्या
                - अंजय
                - चन्द्रिका सिंह
                - कामेश्वर सिंह
          - मनराज सिंह
            - नेकनाम सिंह
              - सहदेव सिंह
              - सुदामा (२५ में)
      - गंगा राम
        - अत्मा राम (२६ में)
        - हरागो ×
        - ऋतुवर्ण सिंह (२६ में)
  - केहरि सिंह ×
  - बुनियाद सिंह ×
  - धिनावन सिंह (२६ में)
- राजाराम राय (२८ में)
- आधार राय (३५ में)

आत्मा राम (२५ का)

भृगु सिंह

पलट सिंह

ऋतुवर्ण सिंह (२५

तप्पू सिंह

कृष्णदेव सिंह × जगदेव सिंह × विष्णुदेव सिंह रामेश्वर

उजैनी सिंह लाल विहार जगू सिंह

छेदी सिंह × चदू सिंह × बीजन सिंह × देवचरण सिंह

सिद्धेश्वर सिंह द्वारिका सिंह

रामबालक सिंह लक्ष्मण सिंह गौरीशंकर सिंह

राजेन्द्र अभय कुमार

सुबोध

घिनावन सिंह (२५ का)

मीत नारायण सिंह × अजमेरी सिंह

गजराज सिंह

बहोरन सिंह गौरीशंकर सिंह (२७

जीवनारायण सिंह (२७ में) शिवनारायण सिंह (२७ में) मेघन सिंह × हेमन्त सि (२७

जीव नारायण सिंह (२६ का)

प्रताप सिंह × हरिहर सिंह रघुनी सिंह ×

रामकेवल सिंह त्रिवेणी सिंह

राघो सिंह नारायण सिंह फूलदेव सिंह × बलिष्ठ सिंह × आनन्द सिंह

राम उजियार रघुराज सिंह

सियाराम सिंह रामअसीस सिंह रामअधार

सन्तोषकुमार राजीव कुमार संजीव कुमार

शिवनारायण सिंह (२६ का)

सुग्रीम सिंह

राम सेवक सिंह नूनू सिंह जलेश्वर सिंह ×

बैजनाथ केदारनाथ सत्येन्द्र

मनोज

हेमन्त सिंह (२६ का)

निरंजन सिंह रामेश्वर सिंह रामअवतार सिंह A

घिनावन सिंह × रामदेव सिंह × रामचक सिंह

A राम अवतार सिंह की भार्या फली कुअँर द्वारा फलीनाथ महादेव का मन्दिर।

गौरी ंकर सिंह (२६ का)

हरनाम सिंह

दिगम्बर सिंह

भगवान सहाय (२८ में) शिवगुलाम सिंह (२८ में) रामगुलाम सिंह (२८ में)

भगवान सहाय (२७का) शिव गुलाम सिंह (२७का) रामगुलाम सिंह(२७

भंगी सिंह × बेचन सिंह × गोपी सिंह × देवकी सिंह

जुग्गी सिंह

बिन्दा सिंह × राम प्रसाद सिंह व्यास सि

बैजनाथ सिंह राम आसरे बृजनन्

अंजनी कुमार अमरेन्दु कुमार

राजा राम राय (२५ का)

अज्ञात

राजमन राय अज्ञात (३० में) बालचन राय (३२ में

रणजीत सिंह

हरलाल सिंह

रटन सिंह रघुवर सिंह ×

राम नेवाज सिंह × अयोध्या सिंह × रामेश्वर सिंह (२९में) रामभजन सिंह (२९

रामेश्वर सिंह (२८ का)

प्रदीप सिंह

- रामवृक्ष सिंह
  - चन्द्रदेव सिंह
    - जगन्नाथ
  - धरोछन सिंह
    - उदय
    - अभय
- शिवलाल सिंह
  - बैजू सिंह
    - रंगनाथ
    - जगन्नाथ
    - विनय
    - विपिन
  - अवधेश
  - नरेश
  - सुरेश
  - उमेश

अवधेश
- बब्बन

नरेश
- प्रियनाथ
- प्रेमनाथ

सुरेश
- शंभु
- शंकर
- छोटन

उमेश
- सभाजीत

राम भजन सिंह (२८ का)

- पलक सिंह
  - बहादुर सिंह
    - जीतेन्द्र सिंह
      - कृष्णनन्दन
      - राजनन्दन
      - जयनन्दन
      - सुधीर
        - अलोक कुमार
- गणपति सिंह ☒
- जीतबाहन सिंह ☒

अज्ञात (२८ का)

अज्ञात

- मोहन सिंह
- महादेव दत्त सिंह (३० में)
- राम सहाय सिंह × नीलाम्बर सिं
  - जदु सिंह
    - बीलट सिंह × विक्रमादित्य सिंह
      - राम चरित्र सिंह ×
      - हरिचरण सिंह ×
  - बुझावन सिंह
    - जटन सिंह
      - शिवचरण सिंह ×
      - देवचरण सिंह
    - शिवचरण सिंह

महादेव दत्त सिंह (३० का)

- सभाजीत सिंह
  - दसई सिंह
    - रामलीला सिंह
      - मिथिला शरण सिंह
        - राम सुरेश सिंह
          - अरविन्द
          - रत्नेश
          - रमाकान्त
        - राम सुजान सिंह
          - राम सुभग
          - प्रदीप कुमार
- बीटेश्वर सिंह (३१ में)
- राम अनुप सिंह
  - प्रहलाद सिंह
    - बैजनाथ
    - जयशंकर
  - दीनेश्वर सिं
    - राम कृष्ण

बीटेश्वर सिंह (३० का)

- राम पक्ष सिंह
  - मटुर सिंह ×
  - बेआदर सिंह ×
- रघुनन्दन सिंह (३१ में)
  - अम्बिका सिंह ×
  - कमला सिंह
    - रामअनुराग सिंह (टेंगरइला जा बसे) (३१ में)
      - प्रेम सिंह
      - रामकुमार सिंह
    - रामप्यारे सिंह
      - चन्द्रदेव सिंह
        - उपेन्द्र
        - धनवेन्द्र
      - कपिल देव सिंह
      - शुक्ल देव सिंह
        - रामनन्दन (पप्पू कुमार)

रघुनन्दन सिंह (३१ का)

- राज किशुन सिंह
  - अलख नारायण सिंह
    - नन्द कमार सिंह
      - बैजू सिंह
      - सरयू सिंह
        - विश्वकर्मा
        - विष्णुदेव
      - अर्जुन सिंह
      - राधेश्याम
        - सन्तोष कुमार
      - रामगति
        - सिद्धनाथ
  - हरवंश सिंह ×
  - श्लोक सिंह
    - तपसी सिंह
      - नन्दकिशोर

रामअनुराग सिंह

- प्रेमनाथ
  - कामेश्वर
  - महेन्द्र
- रामकुमार
  - दिवाकर शर्मा
  - मन्नु कुमार

बालचन राय (२८ का)

- उमरावँ सिह
  - भिच्छुक सिह
    - अध्यान सिह
      - जगनारायण सिह
        - देवकी × सिह
        - शुकदेव × सिह
        - रामदेव × सिह
      - हरदेआली सिह
        - रामपुकार × सिह
        - छट्ठू सिह ×
        - रामदहिन सि
      - शिवदेआली सि
- अज्ञात
  - भइया राम सिह (३२ में)
- अज्ञात
  - मनन सिह (३

भइया राम सिह (३२ का)

- भिन्नक सिह
  - प्रयाग सिह
    - विश्वम्भरसिह
      - रामवृक्ष सिह
        - कामता सिह
          - नन्दलाल
          - मदन
          - साकेत विहारी
            - गोपाल
            - मुकेश
      - रामदहिन सिह ×
    - पलकधारीसिह ×
    - शिवभजनसिह ×
    - रछेलासिह ×
    - हरषसिह ×
  - बसावन सिह ×

मनन सिंह (३२)

मनरूप सिंह — जगरूप सिंह (३४ में)

बखोरी सिंह — परशुराम सिंह (३४ में)

तिलक सिंह — बालगोबिन्द सिंह (३३ में)

हरिहर सिंह × — प्रताप सिंह — रामदीन सिंह — नाथ सिंह

रामलषण सिंह — काली सिंह — जलेश्वर सिंह ×

त्रिभुवन सिंह — रघुवीर सिंह × — चन्द्रिका सिंह × — कपिलदेव सिंह

शिवपूजन सिंह — सियारामसिंह — देवपूजन — रामनारायण — रामअनुज — रामयतन

रमाकान्त — श्रीकान्त — हरिकान्त — विजय — उदय — सदय — शंकर

बालगोविन्द सिंह (३३ का)

जदु सिंह — शिवनन्दन सिंह — गोपाल सिंह — जगधारी सिंह ×

गुद्दर सिंह — कुलदीप सिंह × — मीता सिंह — सीता सिंह ×

राम बरन × — सहदेव सिंह × — गनौरी सिंह × — वासुदेव सिंह

रामनन्दन सिंह — देवनन्दन — श्यामनन्दन — कमलेश — दीनेश

राधेश्याम — वीरेन्द्र — विजय — अनील — विमलेश

परशुराम सिंह (३३ का)

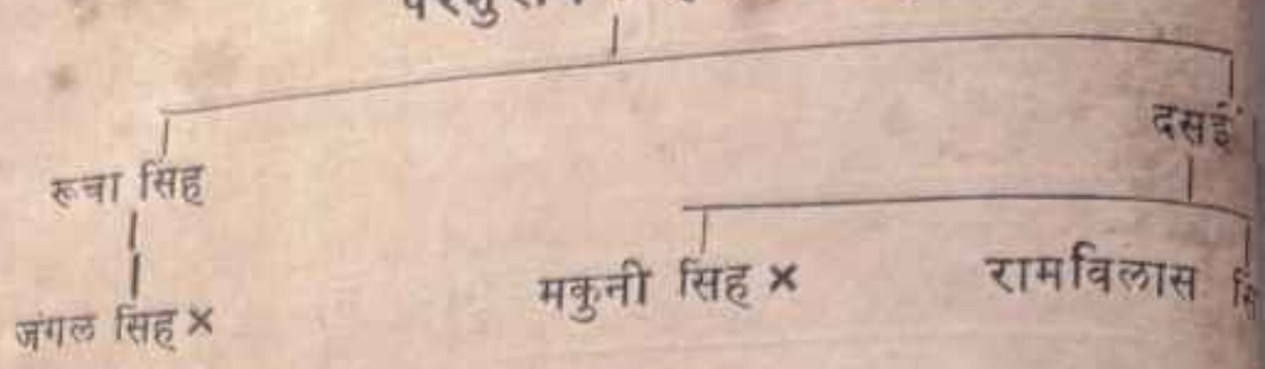

जगरूप सिंह (३३ का)

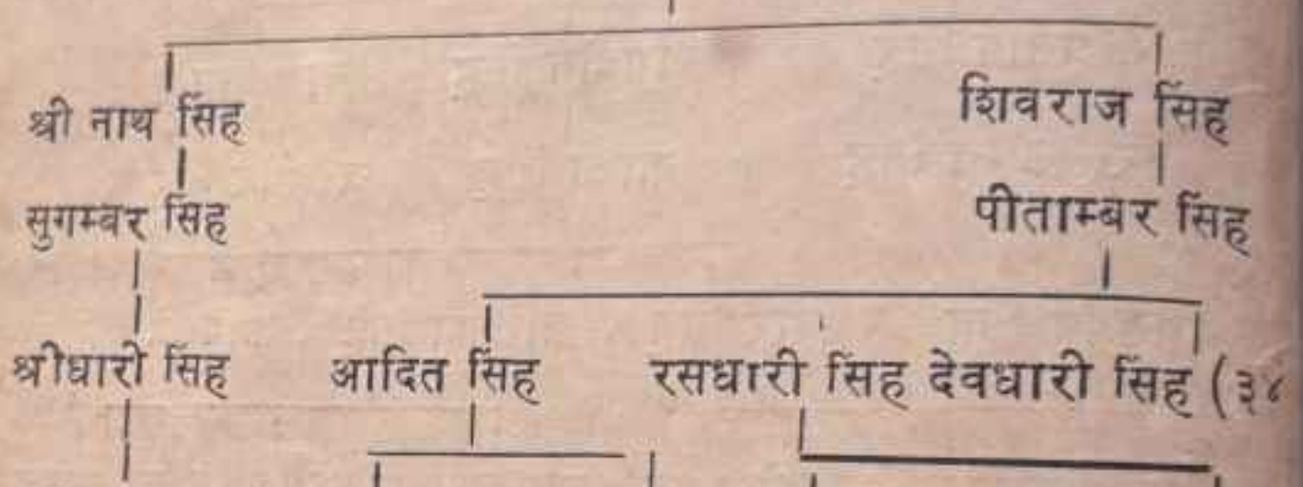

देवधारी सिंह (३४ का)

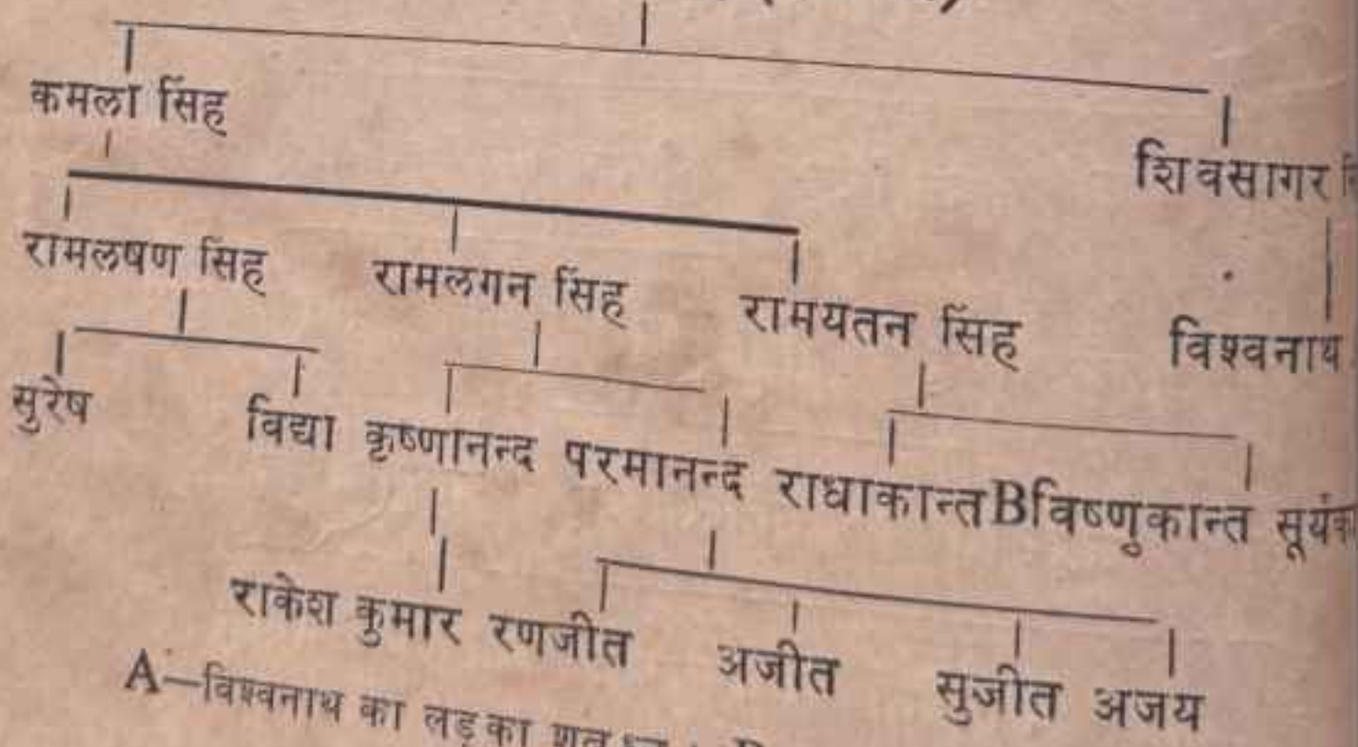

A—विश्वनाथ का लड़का शत्रुघ्न। B—राधाकान्त का लड़का अशोक।

रामविजय सिंह (३४ का)

नीलकंठ सिंह

सिंह कीर्ति सिंह

जगतसिंह पहलवानसिंह (३५ में) जीवनाथसिंह (३६ में) छकौड़ी सिंह (३७में)

शंकर सिंह — विष्णुदत्त सिंह

देवदत्त सिंह — दुर्विजय सिंह — उजागर सिंह × — जंगम सिंह

रकटू सिंह — मनबहाल सिंह × — अनमोल सिंह — सूचितसिंह × — उदितसिंह ×

राम टहलसिंह × — राधेकृष्णगुंजासिंह × — मधुसिंह × — रामकर्णसिंह × — रछेलासिंह ×

कन्हाई सिंह × — भिरखू सिंह ×

पहलवान सिंह (३५ का)

श्यामनारायण सिंह

तिलक सिंह × — सुखलाल सिंह × — रामनारायण सिंह

रघुनाथ सिंह (३६ में) — सीता सिंह (३६ में)

रघुनाथ सिंह (३५ का) [illegible] (३३ का)

- शीतल सिंह
  - रामनिहोरा सिंह
    - हरिद्वार सिंह
      - त्रिभुवनसिंह
    - गंगोत्री सिंह
      - ललन
    - हरिहरनाथ सिंह
      - सुधांशु
      - हिमांशु
  - श्रीकृष्ण सिंह
    - मंगल सिंह
    - पृथ्वी सिंह
      - रामप्रमोद
      - कु० शर्मा
      - रामसाकेत
      - विहारी
    - रामवचन शर्मा
    - पुनदव
  - चन्द्रिका सिंह
  - चन्द्रदेव सिंह
  - विश्वनाथ सिंह
  - दसई सिंह

चन्द्रिका सिंह

- किशोरी सिंह
  - रामकुमार
- रामविनय सिंह

विश्वनाथ सिंह

- रामअनुज
- ओंप्रकाश
- दिल

जीवनाथ सिंह (३५ का)

- कुंजविहारीसिंह × रामूसिंह × बुलाकीसिंह × नेमाधारीसिंह रामविहारीसिं (३७
  - लोचन सिंह
    - नारायण सिंह
      - रामदयाल सिंह
  - राजकुमार सिंह ×
  - भातू सिंह
    - विश्वम्भर सिंह
      - चन्दर सिंह
    - प्रहलाद सिंह

रामविहारी सिंह (३६ का)

धनुषधारीसिंह × रामेआदसिंह सकलदीपसिंह कुलदीप सिंह × जगदीप सिंह

परमेश्वरसिंह × रामपतिसिंह जुगलसिंह × रामस्वरूपसिंह × रामवरनसिंह

सिद्धेश्वरसिंह × हृदयसिंह कामतासिंह × सूर्यसिंह × जयमंगल सिंह जयजयसिंह

रामप्रभुसिंह देवप्रभु सिंह ओमप्रकाश भोला शिवकुमार टुनटुन मदन

संजय कुमार अजय कुमार

अरूण पवनकुमार शिवेन्द्र अमरेन्द्र

छकौरी सिंह (३५ का)

जगधारी सिंह

राजवंशी सिंह

भूमी सिंह धर्मलाल सिंह

रामलगन सिंह × गंगा सिंह × झांझू सिंह आदित सिंह

अयोध्या सिंह विशुनदेव सिंह × भुवनेश्वर सिंह × धिनेश्वर सिंह ×

कपिलदेव सिंह रामजन्म सिंह

अधिवरन सिंह की पट्टी समाप्त

लोहानी बाबा की पट्टी—ये श्री पालपुर पट्टी में जोधन सिंह के भा
अपना हिस्सा लेकर 'खास पयनाल पट्टी' में आकर मिल गये। इसलिए
वंशावली खास पयनाल पट्टी में ही लिख रहा हूँ।

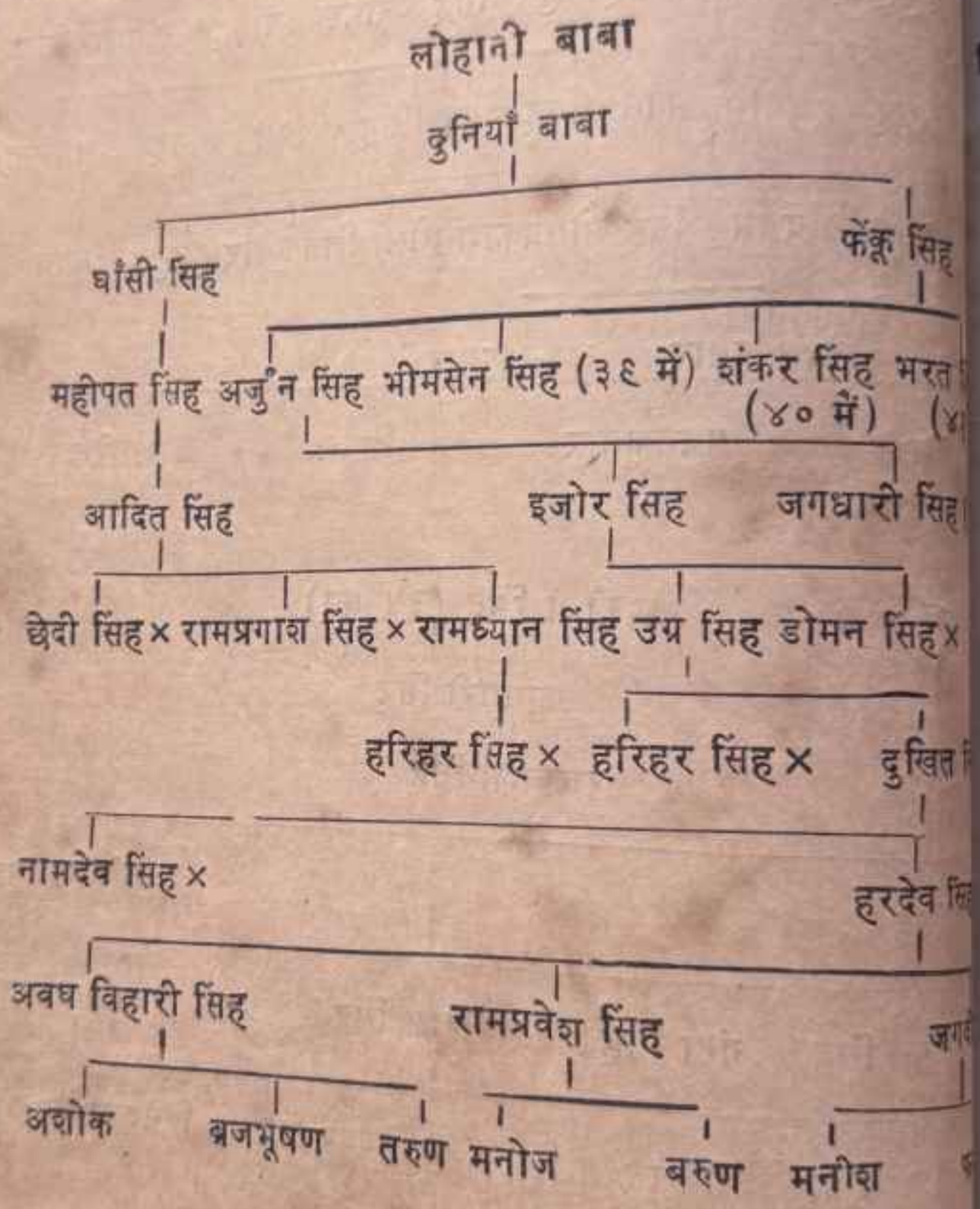

लोहानी बाबा की पट्टी—ये श्री पालपुर पट्टी में जोधन सिंह के भा
अपना हिस्सा लेकर 'खास पयनाल पट्टी' में आकर मिल गये। इसलिए
वंशावली खास पयनाल पट्टी में ही लिख रहा हूँ।

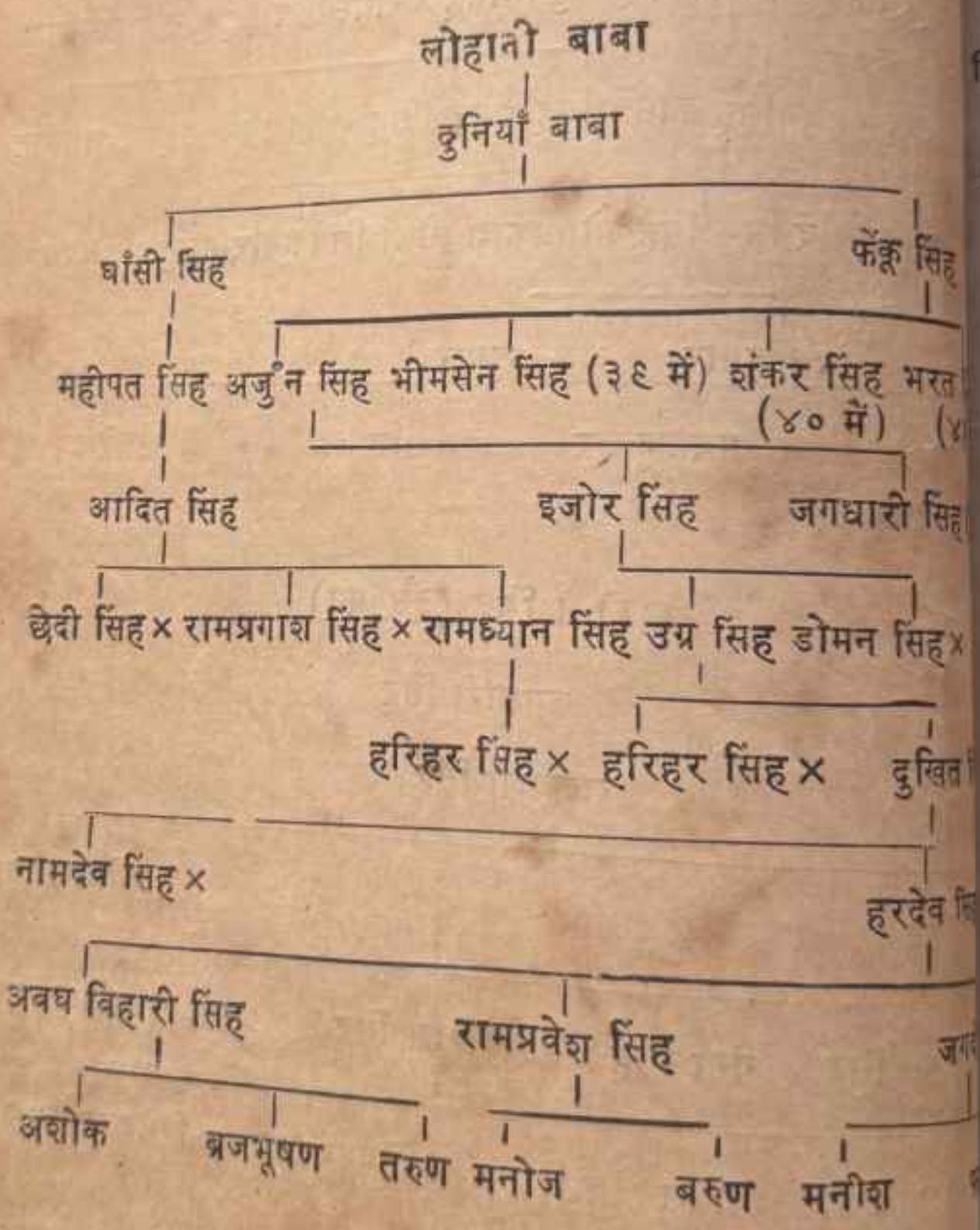

जगधारी सिंह (३८ का)

- नौरंगी सिंह
  - हितनारायण सिंह ×
  - नथुनी सिंह
  - नान्हु सिंह ×
  - रामवृक्ष सिंह ×
  - किशोरी शरण सिंह
    - रामस्वरूप सिंह
      - कौशल
      - व्रजेश
    - कृष्णमुरारि सिंह
      - राकेश
      - सर्वेश
      - टुनटुन
      - झुनझुन
- रामकृष्ण सिंह
  - आदित सिंह ×
  - भुवनेश्वर सिंह ×
    - शचीन्द्र कुमार
      - रत्नेश
      - टुनटुन
    - बालमुकुन्द
      - प्रियरंजन
      - अनु रंजन
    - पवनाली
- रामधनी सिंह
  - प्रदीप सिंह ×

भीमसेन सिंह (३८ का)

- धज्जू सिंह
  - गुलम सिंह
    - चितबहाल सिंह
      - रामवरन सिंह ×
      - खड़गधारी सिंह
        - रामचन्द्र सिंह ×
        - महेन्द्र सिंह
          - सच्चिदानन्द
            - ललन
            - पलन
          - राम
            - सुरेश
            - मुखलाल
  - ३
  - ऋतु राज सिंह
    - महावीर सिंह
      - बिहारी सिंह (४० में)
        - नथुन सिंह
          - विनय
            - नन्दा
            - जयेन्द्र कु०
            - अरुण कु०
            - ऋषि कु०
      - हरनन्दन सिंह ×
        - राजदेव सिंह (भदई)
          - पंचानन

राम बिहारी सिंह (३९ का)

द्वारिका सिंह × | बूटन सिंह ×

शंकर सिंह (३८ का)

भिच्छुक सिंह

बैजन सिंह (४१में) | शिवनारायण सिंह × | हरषू सिंह (४०में) | देवनारायण

यदुवंश सिंह | रामा सिंह

कामेश्वरसिंह | चन्देश्वरसिंह × | राम | अनूप सिंह | नसीवसिंह | छंगसिंह | रामकेश

ललन बाबू | रामबलिष्ठ सिंह | रामभवन | देवदत्त | योगेन्द्र

विजय | अजय | संजय

रामा सिंह

बेनी माधव | मोहन

अनील | संजय

हरषू सिंह (४० का)

नखीद सिंह

विश्वनाथ सिंह | शालिग्राम सिंह

देवेन्द्र | राम कुंडल | रवीन्द्र | रामउदय | चन्द्रभूष

शत्रुंजय | रवीन

४०

बैजन सिंह (४० का)

- जगदेव सिंह ×
- कुलदीप सिंह ×
- देवनन्दन सिंह
- शीतल सिंह
  - जनकधारी सिंह ×

भरत सिंह (३८ का)

- जूठी सिंह
  - बृजलाल सिंह
    - रामदीनसिंह
      - जंगल सिंह
        - शिवप्रसाद सिंह
          - कृष्णदेव
            - रामआधार
            - ओंप्रकाश
          - सूर्यदेव
          - संजय
    - बुलाकीसिंह ×
  - बृजमोहन सिंह
- हुमेल सिंह
  - रघुवर सिंह
    - फकीरा सिंह ×
- लछुमन सिंह (४१ में)
  - जीतन सिंह ×
  - विशुनी सिंह
    - रकटू सिंह ×
  - रामफलसिंह ×
- नूनू सिंह ×

लछुमन सिंह (४१ का)

- रामलाल सिंह
  - कैलाश सिंह ×
- स्वारथ सिंह
  - महावीर सिंह
    - जंगो सिंह ×
      - खास पयनाल पट्टी समाप्त
    - श्रीकृष्ण सिंह (वकील) ×

गोपालपुर पयनाल गिरिधर सिंह की पट्टी (पृष्ठ १ का)

- मेहरबान सिंह
  - दरब सिंह
    - फेंकू सिंह
      - कुअर सिंह
      - शिवसहाय सिंह ×
      - शिवचरण सिंह ×
      - श्रीनाथ सिंह ×
      - प्रभु सिंह (४३ में)
      - बलखंडी सिंह ४४ में)
      - उदव
      - गिरधारी सिंह
      - दीहल सिंह (४२ में)
      - दिरपाल सिंह (४३ में)
      - मनोरथ (४
        - प्रगाश सिंह
        - जगनारायण सिंह ×
        - राजरूप सिंह
        - रामलगन सिंह ×
        - पालकनाथ सिंह
          - नूनू सिंह ×
        - रामरूप सिंह
        - सूर्यनाथ सिंह
    - नेहाल सिंह (४५ में)
    - फत्ते सिंह (४८

दीहल सिंह (४२ का)

- केवलपति सिंह
  - श्यामलाल ×
  - गुरुप्रसाद सिंह ×
- विभीषण सिंह ×
- दुर्गा सिंह
  - देनी सिंह ×
  - भुलोटन सिंह

दिरपाल सिंह (४२ का)

रामटहल सिंह

द्वारिका सिंह × सौदागर सिंह

रामअवतार सिंह × लूटन सिंह

बेचू सिंह

रामनसीब शर्मा महीपत

ब्रजकिशोर

मनोरथ सिंह (४२ का)

छट्टू सिंह (४३ में) विहारी सिंह नागा सिंह रामभजन सिंह × (४१ में)

कूकुर सिंह कन्हाई सिंह × पदारथ सिंह ×

बैकुंठ सिंह कामेवर सिंह मोहन सिंह कामदेव सिंह

विद्याभूषण ईश्वरचन्द्र रजनीकान्त

शिवशंकर दयाशंकर विजय शंकर

मोहन सिंह

प्रभु सिंह काशी रणविजय

अरविन्द अनील संजय रमाशंकर

कामदेव सिंह प्रभु सिंह (४२ का)

शारंगधारी सिंह शिवचरण सिंह

नेमधारी सिंह

रामेश्वर सिंह तप्पू सिंह ×

शिव प्रसाद सिंह × अम्बिका सिंह × अगंध सिंह हनुमान सिंह महँगू सिंह

राघो सिंह (४४ में) राम सिंह (४४में)

नागा सिंह (४३का)

अनमोल सिंह × रोशन सिंह

बासगीत सिंह ×

छट्टू सिंह (४३ का)

फकीरा सिंह × बूटन सिंह ×

राघो सिंह की बहिन
सीता कुमारी जोजे कैलास सिंह

काशपरी कुमारी
बैजनाथ
लव कुश

राम सिंह (४३ का)
तृपित नारायण
गजेन्द्र शा
पवन कुमार

बलखंडी सिंह (४२ का)

रामू सिंह
रंगलाल सिंह × नन्दू सिंह
गोबर्द्धन सिंह
सुग्रीम सिंह × जुदागी सिंह × गुल्ली सिंह × लाल बहादुर सि

काशी सिंह
बुलाकी सिंह
अभिलाख सिंह (४
रूपन सिंह
हरष सिंह × टीपन सिंह × रामना

अभिलाख सिंह (४४ का)

आदित सिंह
प्रसीद सिंह
शीतल सिंह
इन्द्रदेव सिंह
चन्द्रदेव
अखिलेश
विमलेश
शेरू
श्रीभगवान
अवधेश
रामरेखा
सुदेश्वर
दीनानाथ
अरुण
अयोध्या सिंह ×
सूचित सिंह ×
उदित सिंह
महादेव सिंह ×
रामखेलावन सि
अर्जुन
बीटेश्वर सि
श्रीनाथ
सुनील
अनील
४४

उदवंत सिंह (४२ का)

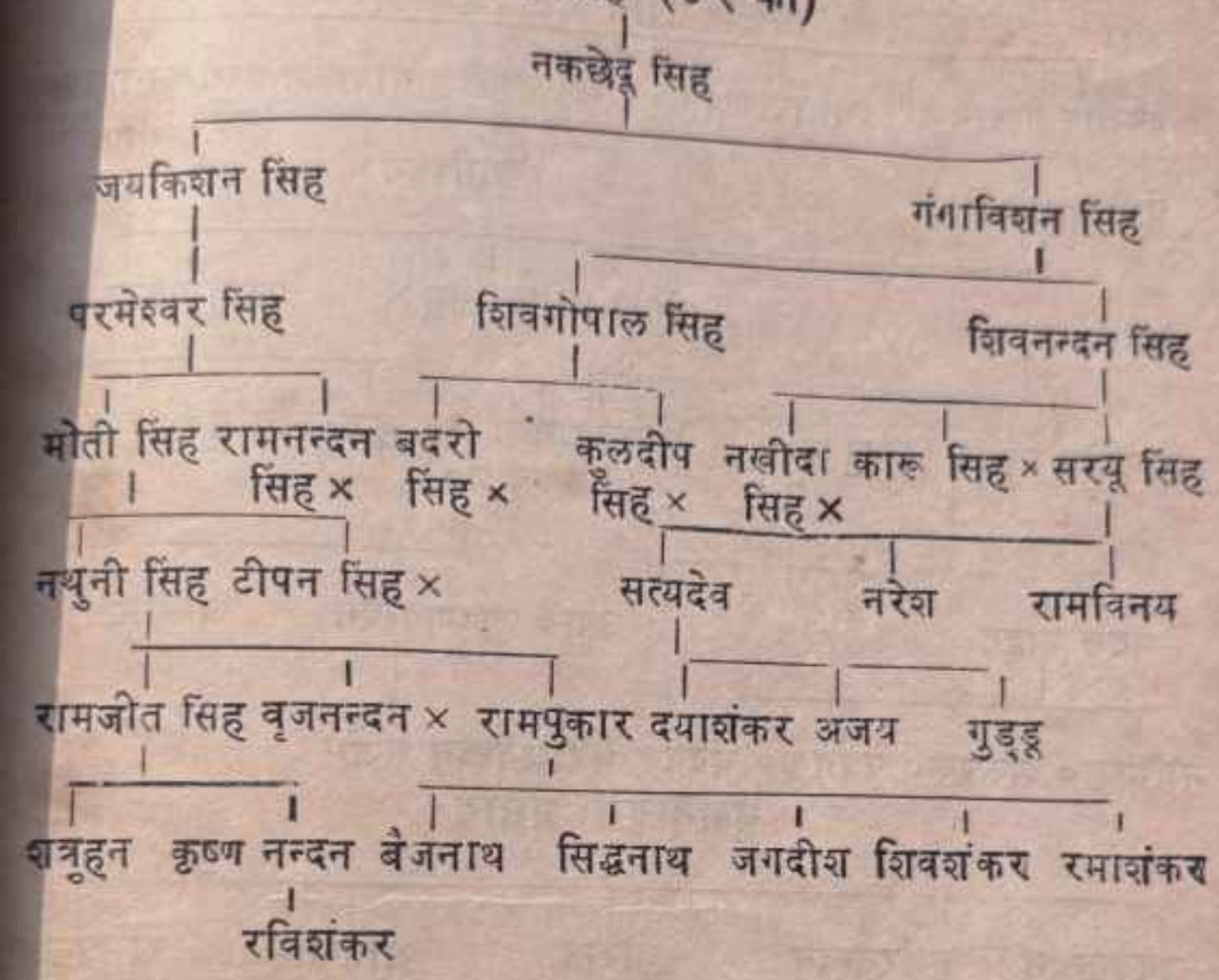

नेहाल सिंह (४२ का)

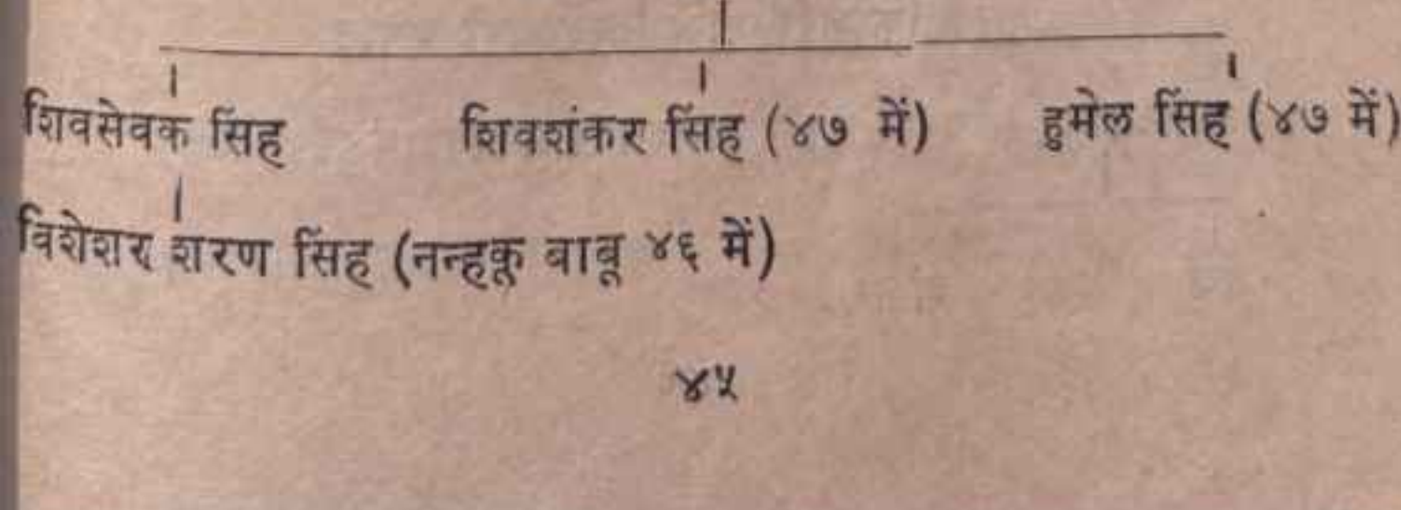

विशेशर शरण सिंह (नन्हकू बाबू) (४५ का)

- शमशेर नारायण
  - देवी प्रसाद सिंह
- देवनारायण (४६ में)
- ब्रह्मदेव नारायण
- हरदेव ना (उदय नार
- कामेश्वर ×
  - मंगल प्रसाद सिंह
    - रणजीत प्रसाद (बच्चु प्र०)
      - मदन मोहन
        - नवीनकु०
        - शंकरकु०
        - पवनकु०
        - चंदनकु०
      - उपेन्द्र
        - राजनन्दन
        - संजय
    - सच्चिदानन्द प्र० (सच्चू प्र०)
  - जंगल प्रसाद सिंह ×
  - पृथ्वी प्रसाद
    - वृजनन्दन प्र० अवध
      - कृष्णनन्दन
      - जयनन्दन

वृजनन्दन प्रसाद

- उदयनन्दन
  - अरुण
  - अशोक
- कुअँरनन्दन
- वीरेन्द्र
- ओंप्रकाश
- रामप्र

अवध प्रसाद

- बलिराम
- बलदेव
- जटाशंकर
- उमाशंर
- अभिमन्यु

देवनारायण सिंह (४६ का)

- जनक किशोरी जौजे बिन्देश्वरी प्रसाद
  - कमलेश्वरी (बच्ची) जौजे राजेश्वरी प्रसाद (पंडुई चले गये)
    - बैजू
    - शंकर

गोपालपुर पयनाल (४५ का)

शिवशंकर सिंह
|
रामशरण सिंह
|
अधिकारी कुँअर जीजे गोपाल शरण सिंह
|
बैजू प्रसाद
|
राजदेव नारायण (शिव जी)
|
राघो प्रसाद — नन्हकू बाबू (परसा चले गये)

हुमेल सिंह (४५ का)

- रामअधीन सिंह ×
- राम अनुग्रह सिंह
  - ठाकुर प्रसाद सिंह
    - युगेश्वर प्रसाद सिंह
      - द्वारिका प्रसाद सिंह
        - भोला प्रसाद
          - सत्यदेव
          - रामजन्म
          - रणधीर
        - माधो प्रसाद
          - योगीन्द्र
            - अखिलेश
            - विमलेश
            - नरेश
            - अनील
            - रत्नेश
          - देवेन्द्र
            - अरबिन्द
            - गोबिन्द
          - निजरंन
            - रमेशचन्द्र
      - सूर्यदेव प्रसाद सिंह (४८ में)
    - बनेश्वर प्रसाद सिंह ×
    - दीनेश्वर प्रसाद सिंह ×

सूर्यदेव प्रसाद सिह (४७ का)

- गणेश प्रसाद
  - राजेश्वर
  - रघुवीर
  - सहजानन्द
    - सुधीर
- मिथिला प्रसाद
  - पारस नाथ
    - राधिका रमन

फत्तै सिह (४२ का)

- भरोसी सिह
  - जगलाल सिह
    - विशुन सहाय सिह
      - नन्दकेश्वरसिह ×
      - युगलकेश्वरसिह भागवत प्रसाद (४९ में)
        - हरवंशनारायण
          - कमला प्रसाद ×
        - यदुवंश नारायण
          - मथुरा प्रसाद ×
        - नरसिह नारायण
          - शिवधर प्रसाद
            - शंभु प्रसाद
              - अमरेन्द्र कुमार
            - कैलाश प्रसाद
              - बबलू
              - डबलू
- खेमन सिह
  - रामोआद सिह
    - रघुवंश सहाय
    - रघुनाथ सहाय (४९ में)
  - रामदवर सिह (४९

भागवत प्रसाद सिंह (४८ का)

यमुना प्रसाद — हुलास प्रसाद

रामकुमारी देवीA — पशुपतिनाथ

दिवाकर — अशोक

रघुनाथ सहाय (४८ का)

विन्देश्वरी प्रसाद

राजेन्द्र प्रसाद

शतीश कुमार — गिरीश कुमार

गुड्डू

A—रामकुमारी देवी जौजे विजय प्रकाश नारायण सिह घर पंडुई, जिला गया विजय प्रकाश के लड़के—रविप्रकाश और सुधीर प्रकाश

रामदवर सिंह (४८ का)

बैजनाथ प्रसाद सिह

भुवनेश्दर प्रसाद सिह

राजा प्रसाद — चन्द्रेश्वर प्रसाद — महेश प्रसाद — ललन प्रसाद

जयेन्द्रप्रसाद — वीरेन्द्रप्रसाद — सुरेश — सत्येन्द्र — जयप्रकाश — लल्लू

दिनेश — उमेश

पुष्पेश — हरिकान्त — विष्णुकान्त — [illegible]

ललन प्रसाद

नरेन्द्र — साधुशरण — छोटन

गोपाल पुर पट्टी समाप्त

पूरण सिंह की पट्टी (पृष्ठ १ का)

- अज्ञात
  - अज्ञात
    - जोधन सिंह
      - बेचू सिंह
        - गोबिन्द सिंह
          - सहदेवसिंह
            - बदरीसिंह ×
            - वेनीसिंह
              - मथुरा सिंह
                - कामता सिंह ×
                - कामेश्वर सिंह
                - चन्द्रेश्वर
                - मुरारी
                - रामबाबू
                - रामभगवान
                - श्रीसिंह
                - अरुण
                - श्रीकान्त
      - डंबर सिंह
        - हिच्छासिंह (५१ में)
        - जिन्दासिंह (५२ में)
        - लीलासिंह (५२ में)
        - ऋतुसिंह (५४ में)
        - न्याजसिंह (५४ में)
        - अज्ञात
        - अज्ञात (५५
        - मेवा सिंह ×
        - मनोगी सिंह
          - बुझावन सिंह × (५१ में)
            - राजेश्वर सिंह (भाला सिंह)
              - अर्जुन सिंह
                - बैजनाथ
                - अंजय
                - संजय
            - हरवंश सि
            - राजनारायण सि
            - सुदर्शन
            - देवप्रसाद
            - रामप्रसा
          - खेलावनसिंह
          - शिवधनी सिंह ×
          - रामाश्रय सि
        - भरोसी सिंह ×
    - लोहानी सिंह (खास पयनाल पट्टी के पृष्ठ ३८ में देखि

A—यही से मिनजुमले पट्टी कायम हुई (पृष्ठ ५५ में देखिये।)

खेलावन सिंह (५० का)

शिव बरन सिंह

केदार सिंह — बेचन सिंह

द्वारिका सिंह

धर्म देव सिंह

रामदेव सिंह

मनोज — फिरोज × — रुनू ×

जिन्दा सिंह (५० का) — संजय — उत्पलकान्त

रामप्रसाद सिंह — कल्याण सिंह — जनक धारी सिंह — शिवदेव सिंह — नागेश्वर, रघुनाथ — कुन्दन, कमलदेव, नारायण

रोशन सिंह A ×

रीशाल सिंह — रामधनी सिंह — गोपाल सिंह — रामकृष्ण, रामानुज, रामयश

नन्दलाल सिंह (५१ में)

नथुनी सिंह — कन्हैया सिंह ×

नन्दलाल सिंह (५१ का)

राजकुमार सिंह — जालिम सिंह ×

खेदन सिंह ×

महावीर सिंह ×

शिवदयाल सिंह — मथुरा सिंह — व्यास सिंह

लोकी सिंह — जदुसिंह (५२ में), अंगद सिंह

A—अयोध्या जाकर साधु हो गये। इन का विशेष विवरण किताब में आगे मिलेगा।

जदु सिंह (५१ का)

राघो सिंह, रामदयाल, श्यामदयाल, दीन दयाल, देवीदयाल, दुर्गादयाल

अनील कुमार, पंचानन, अरविन्द

लीला सिंह (५० का)

अवधूत सिंह, रामदत्त सिंह ×, भेषधारी सिंह ×, राघो सिंह

रामदयाल सिंह, सुग्रीम सिंह ×

भागवत सिंह, भगवान सिंह, सुखारी सिंह ×, भिखारी सिंह ×

कमला सिंह, नवलाखसिंह ×, दुखितसिंह ×, राजकिशुनसिंह ×, वासुदेवसिंह

रामवृक्ष सिंह, प्रहलाद सिंह, भरत सिंह, शत्रुघ्न सिंह

धर्मनाथ, प्रेमनाथ, महेश्वर, रामेश्वर

चन्द्रेश्वर, उमेश, तपेश्वर, रंगनाथ

अजय, अजीत, रिन्टू, भुटानी

ऋतु सिंह (५० का)

गुलाल सिंह, नकछेद्रसिंह (५३में), मोतीसिंह (५३में), जीवलालसिंह (५४में)

अज्ञात

रामचरणसिंह (५३में), पलकधारीसिंह (५३में), श्याम लाल सिंह ×, दसई सिंह

५२

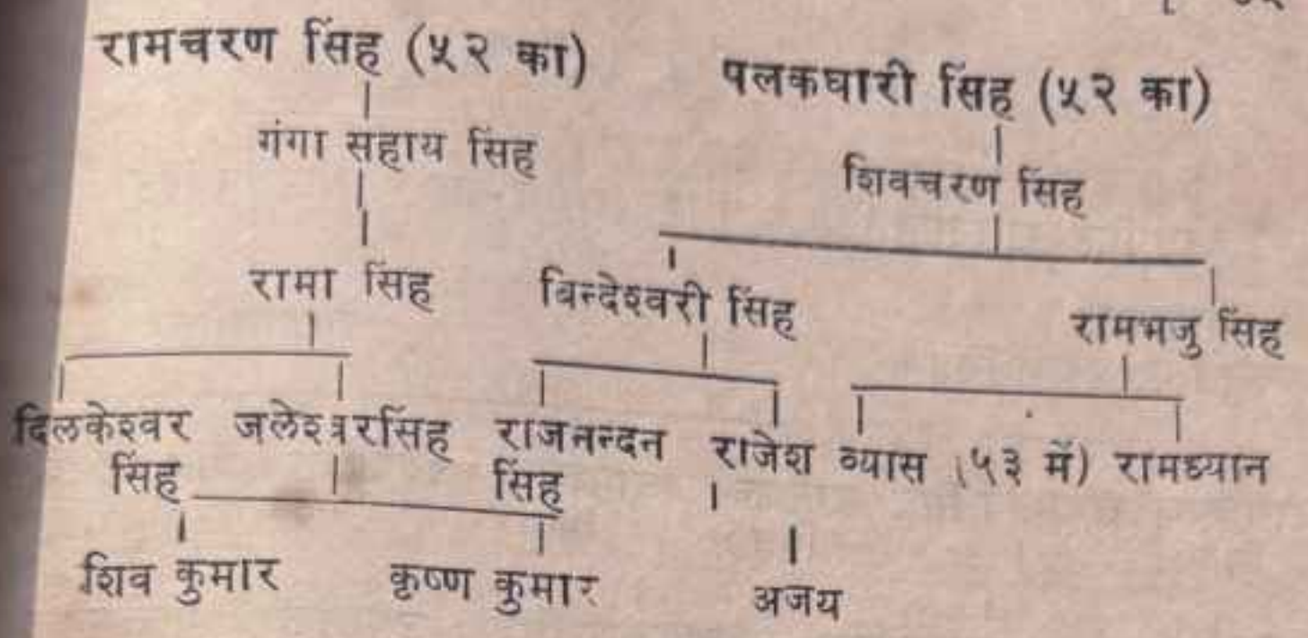
रामचरण सिंह (५२ का)
गंगा सहाय सिंह
रामा सिंह
दिलकेश्वर सिंह
जलेश्वरसिंह
शिव कुमार
कृष्ण कुमार
पलकधारी सिंह (५२ का)
शिवचरण सिंह
बिन्देश्वरी सिंह
रामभजु सिंह
राजनन्दन सिंह
राजेश
अजय
व्यास (५३ में)
रामध्यान

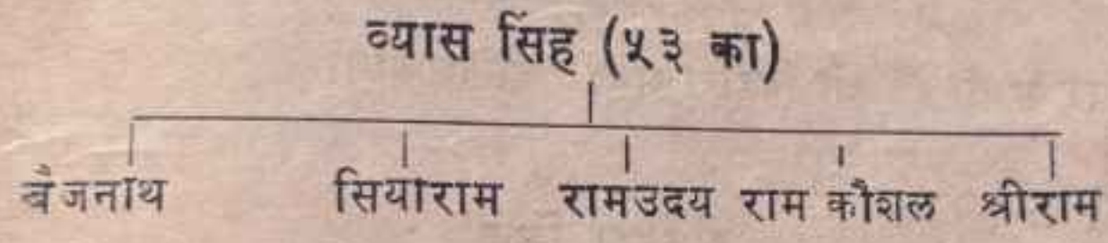
व्यास सिंह (५३ का)
बैजनाथ
सियाराम
रामउदय
राम कौशल
श्रीराम

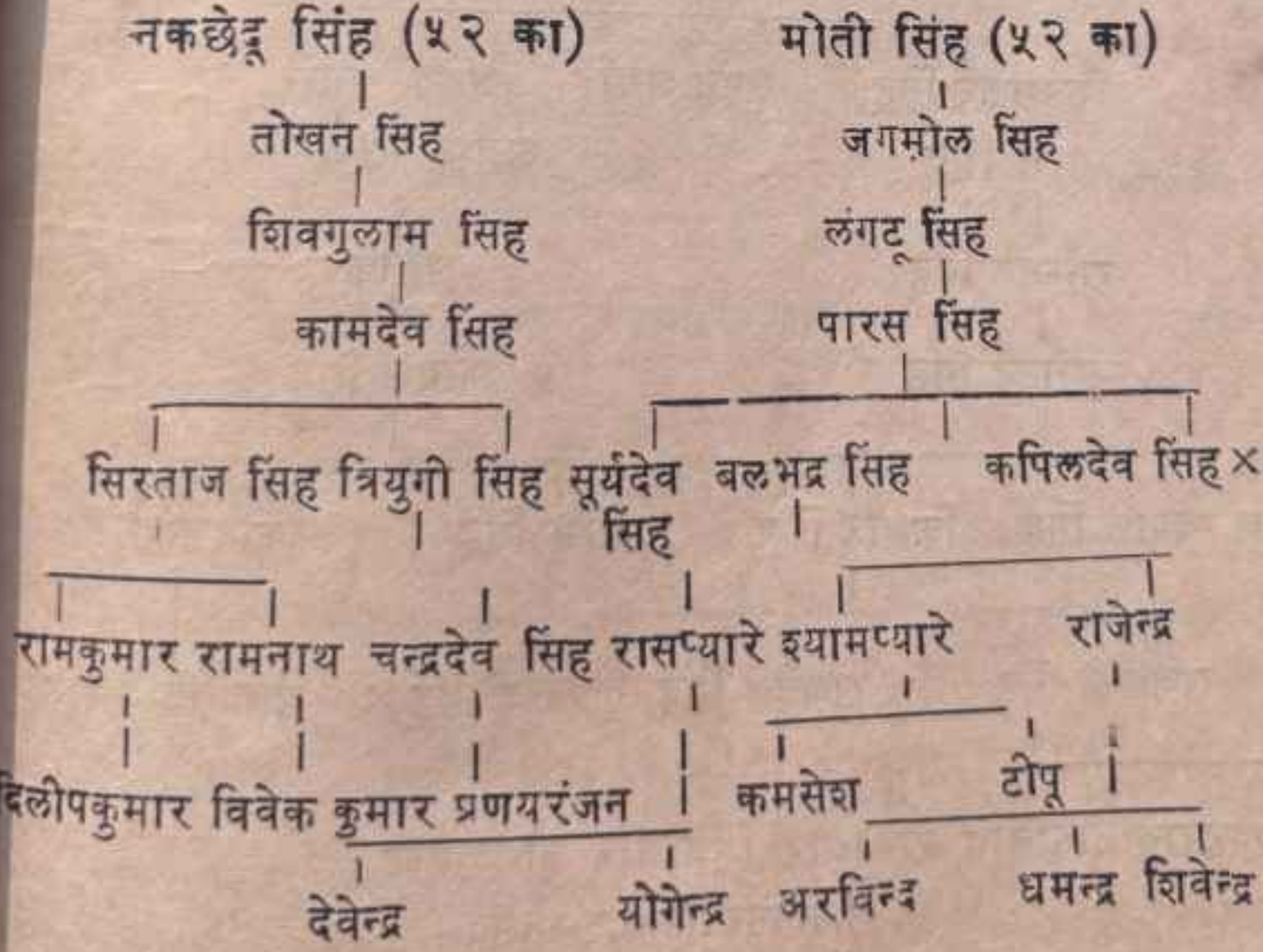
नकछेदू सिंह (५२ का)
तोखन सिंह
शिवगुलाम सिंह
कामदेव सिंह
सिरताज सिंह
त्रियुगी सिंह
रामकुमार
रामनाथ
दिलीपकुमार
विवेक कुमार
प्रणयरंजन
देवेन्द्र
योगेन्द्र
चन्द्रदेव सिंह
मोती सिंह (५२ का)
जगमोल सिंह
लंगटू सिंह
पारस सिंह
सूर्यदेव सिंह
बलभद्र सिंह
कपिलदेव सिंह ×
रासप्यारे
श्यामप्यारे
राजेन्द्र
कमसेश
टीपू
अरविन्द
धमन्द्र
शिवेन्द्र

जीवलाल सिंह (५२ का)

- सरब सिंह
  - भगेलु सिंह
  - प्रगाश सिंह ×
- रामउग्रह सिंह ×
- शिवनारायण सिंह ×
- गोबर्द्धन सिंह
  - देवनाथ सिंह
    - रामलषण सिंह ×
      - चन्द्रिका शर्मा
        - शशिशेषर शर्मा
          - रविशंकर शर्मा
    - रामयतन सिंह
      - रामस्वरूप सिंह
    - रामजन्म सिंह ×
      - सुरेन्द्रकुमार सिंह
        - श्री बिहारी शर्मा
        - राकेश शर्मा
    - रामलगन सिंह ×
    - लक्ष्मी ना० सिंह
      - उमाशंकर
      - गोरीशंकर
    - लक्ष्मण सिंह

लक्ष्मण सिंह

- शिवशंकर सिंह
  - न्याज सिंह
    - राम्भित सिंह
      - भुलोटन सिंह
        - ठाकुरदयाल सिंह ×
        - किशोर सिंह
          - राजवली सिंह
            - ईश्वरनाथ
            - दीनानाथ
          - राजदेव सिंह
            - रामाधार
            - शिवाधार
            - रामकुमार
- सुमन शर्मा
- अरुण कुमार
  - अज्ञात (५० का)
    - अज्ञाक
      - कोमल सिंह
        - झांभु सिंह
          - गुलबन्द सिंह ×
        - फकीरचन्द सिंह
          - घीनावन सिंह ×

श्रीपालपुर पयनाल समाप्त।

मिनजुमले पयनाल

मिनजुमले पयनाल अज्ञात A—(पृष्ठ ५० का)

- जई सिंह
  - बसावन सिंह
    - जुगल सिंह
      - बीटन सिंह
        - महेन्द्र सिंह
        - बालेश्वर सिंह
          - संजय
          - अजय
        - राजेश
        - वंशरोपन
        - ईश्वर दयाल
        - महामाया
        - गंगा दयाल
        - अमीरचन्द्र
      - सत्य नारायण सिंह
        - रामनन्दन सिंह
          - मुरारि
          - सिद्धनाथ
          - सुरेश
            - मनोज
- उदवंत सिंह (५५ का)
- प्रेमन सिंह (५६ में)
- जुलुम सिंह ×

उदवंत सिंह (५५ का)

- विष्णुदत्त सिंह
  - रूचा सिंह ×
- मकुआर सिंह
  - दलसिंगार सिंह
    - रामानन्द सिंह
      - सीताराम सिंह ×
  - रामदास सिंह
    - बकसीस सिंह ×
    - प्रदीप सिंह ×
- अकल सिंह
  - पचकौरी सिंह
    - शीतल सिंह
      - कमला सिंह ×
      - सुग्रीम सिंह
        - परशुराम सिंह
          - जयराम
        - मोहन सिंह
          - शशि शेखर

A—ये श्री पालपुर पट्टी से विलग होकर मिनजुमले पट्टी कायम किये।

प्रेमन सिंह (५५ का)

हलखोरी सिंह

बखोरी सिंह

लालधारी सिंह

गणेश सिंह

पत्ती सिंह — राम अनच्छा सिं

मंगल सिंह × — चन्द्रिका सिंह × — माधो सिंह — जंगल सिंह (५६ मे

राम नरेश सिंह

अभय कुमार — ब्रजेश

जंगल सिंह — श्री रामरक्षा सिंह A

हरदेव सिंह × — बलिष्ठ सिंह — टुनटुन — रामगढ़ी — हरिकृष्ण सिंह — रामशरण सिंह — अचरज सिंह

अरबिन्द — अरुण — बबलू — बुधलाल सिंह — सुखराम सिंह

मिनजुमले पट्टी समाप्त

रामसकल सिंह — रामाश्रय नारायण सिंह — रामानुग्रह सिंह

बालेन्दू — विपिन विहारी — मुकेश

A—ये टोले महमदपुर (जो पयनाल के ही अन्तर्गत है) से आकर पयनाल में बस गये। ये भी सरवणियाँ ब्राह्मण हैं।

बरइयाँ ब्राह्मण

इन लोगों के पास कोई पुरानी कागजातें नहीं पाई गई। जहाँ तक पता लगा लिखा जा रहा है।

श्री नेमन सिंह

- विभीषण सिंह
  - नन्दकेश्वर सिंह ×
  - दिलकेश्वर सिंह
    - बैजनाथ
    - रघुनाथ
      - विजय
    - दीनानाथ
    - शिवनाथ
    - अवधेश
    - सुरेश
    - रमेश
  - छंगू सिंह ×

सुखारी सिंह

- गनौरी सिंह
  - जगदेव सिंह × हीरा लाल सिंह
    - रामनाथ
      - अजय
        - मुखराम सिंह ×
        - सुखराम सिंह ×
        - सुखदेव सिंह ×
  - जनकधारी सिंह
    - नरेश
    - उमेद
    - दीनेश
  - मटुक सिंह ×
- रछेआ सिंह
  - लाल बिहारी सिंह
    - वीरेन्द्र कुमार
    - जयद्रथ
    - भूपन

बहादुर सिंह

अधीन सिंह — ध्यान सिंह — तिलक सिंह

रामकिशुन सिंह हरिहर सिंह × सूर्यनाथ सिंह × हरष सिंह × देवनाथ सिंह

रूप नारायण सिंह × — देव नारायण सिंह

राजेश्वर सिंह

वीर कुँअर

बरइयाँ ब्राह्मण वंशावली समाप्त

केसियार ब्राह्मण—

श्री गोपाल सिंह

शिव शरण सिंह × — रामकर्ण सिंह × — खूबलाल सिंह

देवकी सिंह

शिवधर सिंह

कपिलदेव सिंह

रमेश — महेश — दीनेश

शशिकान्त

केसियार ब्राह्मण वंशावली समाप्त

श्री बेआदर सिंह (१२ का)

- लाल नारायण सिंह
  - रामायण सिंह
    - नवलकिशोर शर्मा
      - विमल कुमार
- भुवनेश्वर सिंह (५९क में)
  - सियाराम शर्मा
    - अरविन्द कुमार दिवाकर
    - अमरेन्दु कुमार दिवाकर
  - सुभाष शर्मा (५९ क में)
- विपत नारायण सिंह (५९क में)
  - भुषण कुमार

सुभाष शर्मा (५९ कऽ का)

- अजय कुमार
- मृत्युञ्जय कुमार
- शत्रुञ्जय कुमार

भुवनेश्वर शर्मा (५९ कऽ का)

- डॉ व्यास शर्मा
  - संजय कुमार
  - दीपक कुमार

विपत नारायण सिंह (५९ कऽ का)

- जयराम शर्मा
  - सुबोध कुमार
  - विनोद कुमार
  - शंभु कुमार

५९ क

शाक द्वीपी ब्राह्मण वंशावली

आदि पुरुष श्री जगन्नाथ मिश्र

- श्रीनाथ मिश्र A
- देवनारायण मिश्र B
- देवकी मिश्र
  - अज्ञात
    - अज्ञात
      - अज्ञात
        - तुला मिश्र
          - दुख हरण मिश्र
            - तेजमन मिश्र
              - गोवर्द्धन मिश्र
                - काली मिश्र
                - अज्ञात
                - भोला मिश्र
                - वृजनन्दन मिश्र
                - अच्युता नन्द मिश्र
                - सर्वानन्द मिश्र
                - बाँके विहारी
                - युगलानन्द
                - केशव मिश्र
                - प्रयाग मिश्र
                - रघुनाथ मिश्र ×
                - शालिग्राम मिश्र (६० में)
                - ठाकुर मिश्र
                - नित्यानन्द मिश्र ६० में
                - जीमूतवाहन मिश्र ६० में
                - विश्वनाथ ६० में मिश्र
                - रमन मिश्र (६० में)
                - शिवचरण मिश्र (६० में)
              - विश्वनाथ मिश्र (६० में)
              - रामा मिश्र (६२ में)
              - प्रीतम मिश्र (६३ में)
          - खेमजी मिश्र (६३ में)

A—पैनाठी चले गये।

B—बाजिदपुर चले गये।

नित्यानन्द मिश्र (५९ ख का) जीमूत वाहन मिश्र (५९ ख का)

तीर्थानन्द मिश्र झूलन विहारीमिश्र राधेश्याम मिश्र रामानुज मिश्र

भाष्करानन्द मिश्र शिवराम रामकिशोर

विश्वनाथ मिश्र (५९ ख का) शालिग्राम मिश्र (५९ ख का)

महेशानन्द मिश्र बैजू मिश्र

सच्चिनन्द रमेशचन्द जयानन्द शिवानन्द शतीश श्यामा

मनीश कल्लू आश्विनी कुमार ज्योतिष कुमार प्रभाश कुमार डबलू

रमन मिश्र (५९ ख का) शिवचरण मिश्र (५९ ख का)

सहदेव मिश्र × बीटेश्वर मिश्र ×

विश्वनाथ मिश्र (५९ ख का)

भैरव मिश्र

दमरो मिश्र (६१ में) धर्मनाथ मिश्र (६१ में) भिक्षुक मिश्रा (६१ में)

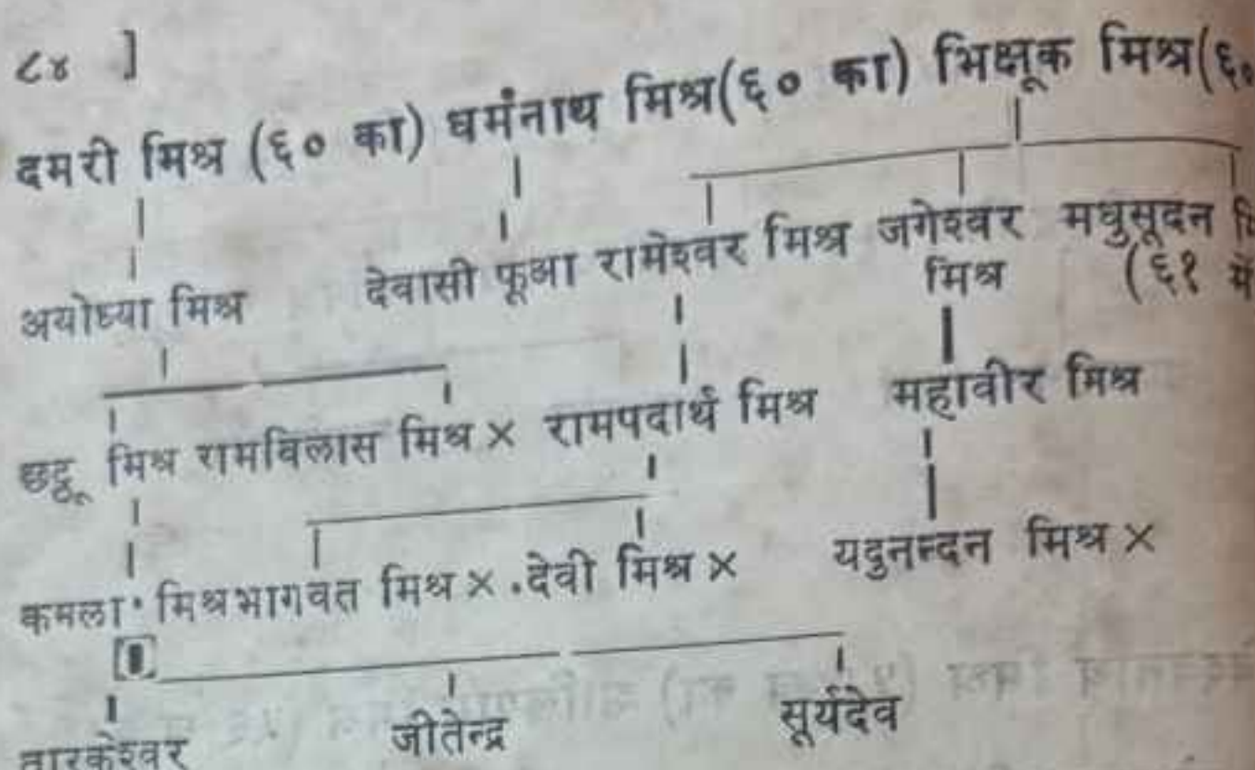
दमरी मिश्र (६० का)
धर्मनाथ मिश्र(६० का)
भिक्षूक मिश्र(६०
अयोध्या मिश्र
देवासी फूआ
रामेश्वर मिश्र
जगेश्वर मिश्र
मधुसूदन मि
(६१ में)
छट्ठू मिश्र
रामविलास मिश्र ×
रामपदार्थ मिश्र
महावीर मिश्र
कमला मिश्र
भागवत मिश्र ×
देवी मिश्र ×
यदुनन्दन मिश्र ×
तारकेश्वर
जीतेन्द्र
सूर्यदेव

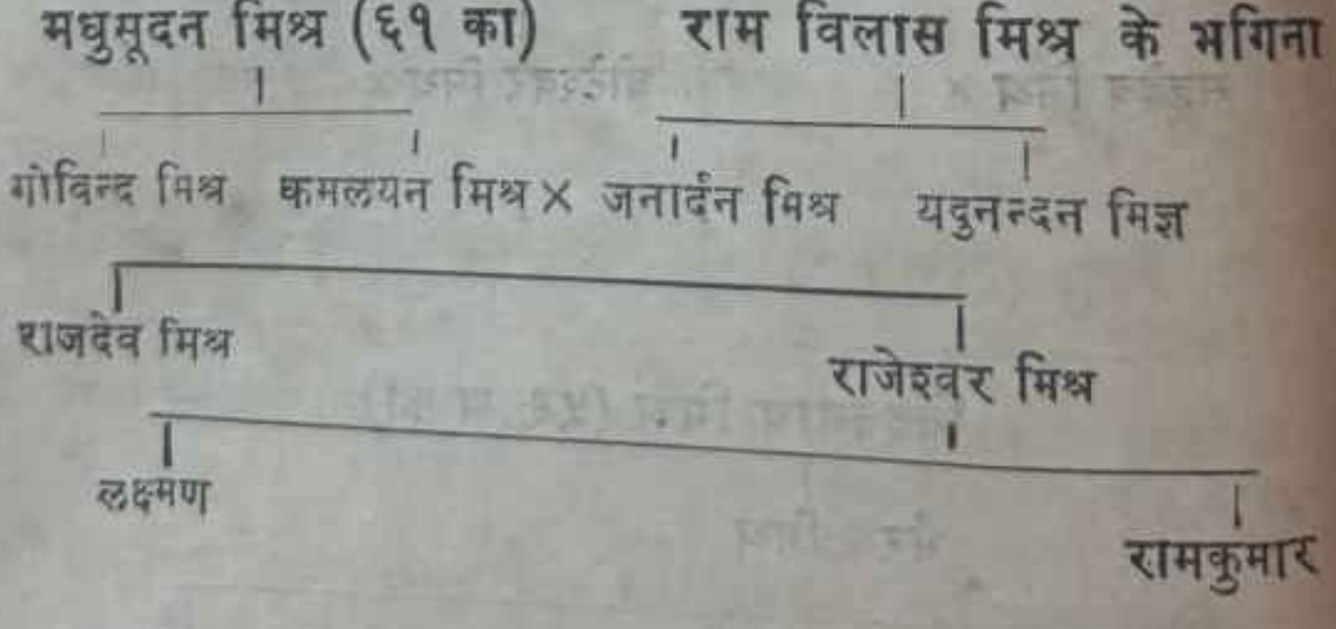
मधुसूदन मिश्र (६१ का)
राम विलास मिश्र के भगिना
गोविन्द मिश्र
कमलयन मिश्र ×
जनार्दन मिश्र
यदुनन्दन मिश्र
राजदेव मिश्र
राजेश्वर मिश्र
लक्ष्मण
रामकुमार

रामामिश्र (५९ ख का) लक्ष्मण मिश्र (६२ का)

नन्दराम मिश्र विद्या मिश्र शिवा मिश्रा × लक्ष्मी मिश्र (६३ में)

नारायण मिश्र रघुवंश मिश्र जगदीश मिश्र ×

लक्ष्मणसिंह (६२में) पीताम्बर मिश्र श्रीभगवान मिश्र (६२में) रामभगवानमिश्र

राजेश्वरमिश्र × राजदेव मिश्र देवेन्द्र मिश्र नागेन्द्र मिश्र सुरेन्द्र मिश्र शास्त्री

अनील विजय अजय संजय अभयकुमार विनयकुमार

श्रीभगवान मिश्र (६२ का) विप्या मिश्र के भगीना (६२ का)

राजेन्द्र मिश्र योगेन्द्र मिश्र रामचन्द्र मिश्र A

नन्दकिशोर सुभाष मनोजकुमार बलभद्र मिश्र देवकर्ण मिश्र जयकृष्ण मिश्र
(६२ में) (६२ में) (६२ में)

बलभद्र मिश्र जयकृष्ण मिश्र देवकर्ण मिश्र

राधा मिश्र अन्तर्यामी ओंप्रकाश त्रियुगी मिश्र

रामप्रतापमिश्र रामस्वरूपमिश्र रामकिशोरमिश्र रमाकान्त प्रणय

अभय कुमार

A—रामचन्द्र मिश्र ग्राम बतरउली, जिला छपरा से आये।

लक्ष्मी मिश्र (६२ का)
|
हरिहरनाथ मिश्र के भगिना
|
ब्रह्मानन्द मिश्र
|
जीवानन्द मिश्र
|
मोहन (बादीपुर चले गये) — देवनारायण

प्रीतम मिश्र (५९ ख का)
|
बेद्र मिश्र
|
देवीदत्त मिश्र
|
रामा मिश्र
|
श्याया मिश्र

कैलाश मिश्र
|
राम पदार्थ मिश्र — देदनन्दन मिश्र x

मदन मोहन मिश्र — कृष्ण मोहन मिश्र

गिरजानन्द — चक्रपाणि — भूदेव — वृजविहारी मिश्र

बीजेन्द्र — उपेन्द्र — सत्येन्द्र — गजेन्द्र — भोला — नागेन्द्र

खेमी मिश्र (५९ ख का)
|
जयजय मिश्र

वसन्त मिश्र — कृष्णानन्द मिश्र A — हेमन्त मिश्र

हुलास मिश्र (६४ में) — देवनारायण मिश्र (६४ में)

A—कृष्णानन्द मिश्र की भार्या श्रीमति राधिका देवी सती हो गईं।

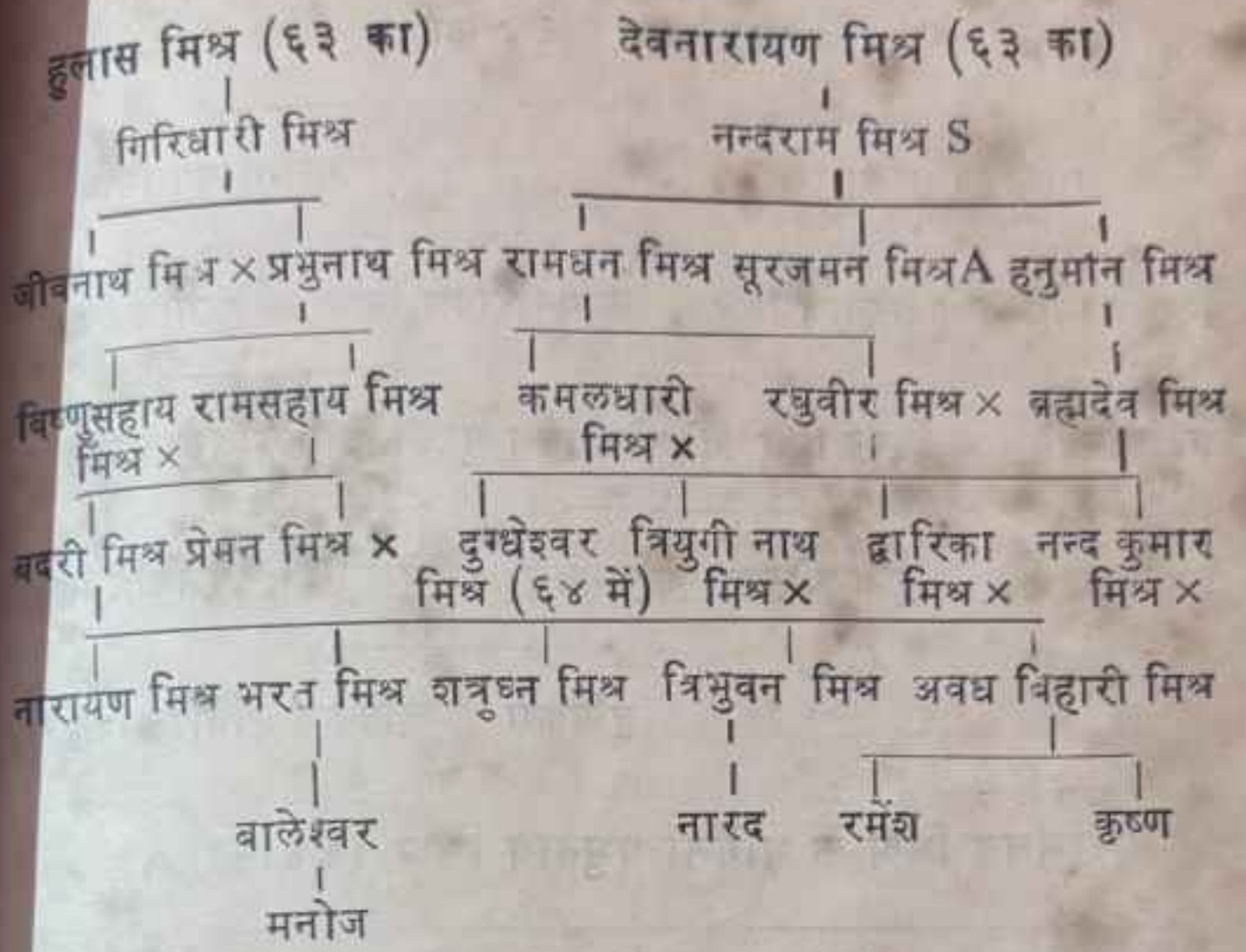

A सूरज मन मिश्र के लड़का मुखलाल मिश्र कांको में जा बसे।

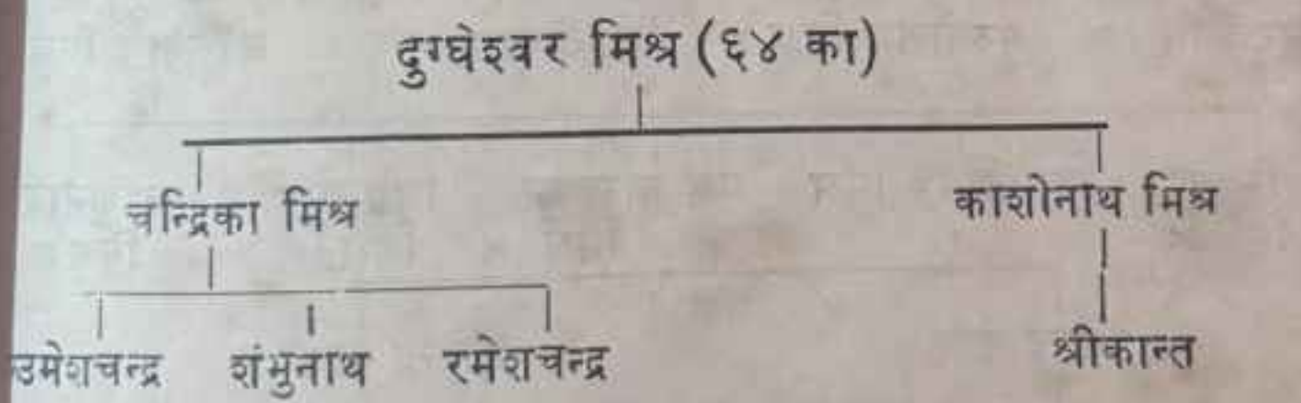

S नन्दराम मिश्र के भगिना नकछेदू मिश्र B

कोमल मिश्र (६५ में)

B नकछेदू मिश्र ग्राम नदहरी कदहरी, जिला गया से आये।

कोमल मिश्र (६४ का)

- आदित्य मिश्र
  - युगेश्वर मिश्र ×
  - केदारनाथ मिश्र ×
- रामखेलावन मिश्र
  - सत्यनारायण मिश्र
    - चन्द्रशेषर मिश्र ×
    - ईश्वर मिश्र
      - मुन्ना
      - गोरख
    - कपिलदेव मिश्र
      - शशिभूषण
    - मुरलीधर मिश्र
      - अवधेश मिश्र
        - हृषिकेश
        - ऋषिकेश
      - पशुपति मिश्र
        - विपिन बिहारी
  - हरनाथ मिश्र
    - आप्या मिश्र

रामधन मिश्र के भगिना प्रभुनाथ मिश्र (६४ का) A

- सनाथ मिश्र ×
- बंगाली मिश्र ×
- बनवारी मिश्र
  - सूरज मिश्र ×
  - पुरुषोत्तम मिश्र ×
  - त्रिकुटीनाथ मिश्र ×
  - लोकनाथ मिश्र
    - अम्बिका मिश्र ×
    - भवानी प्र० मिश्र
      - रवीन्द्र नाथ
        - फनीन्द्र नाथ
        - दिव्येन्द्र नाथ
        - मत्स्येन्द्र नाथ
    - यज्ञ नारायण मिश्र ×
    - शिव कु० मिश्र ×
      - धीरेन्द्र नाथ ×
    - नन्दकुमार मिश्र ×

A—प्रभु नाथ मिश्र ग्राम चैनपुर, थाना फुलवारी सदर पटना से आये।

शाकद्वीयी ब्राह्मण वंशावली समाप्त

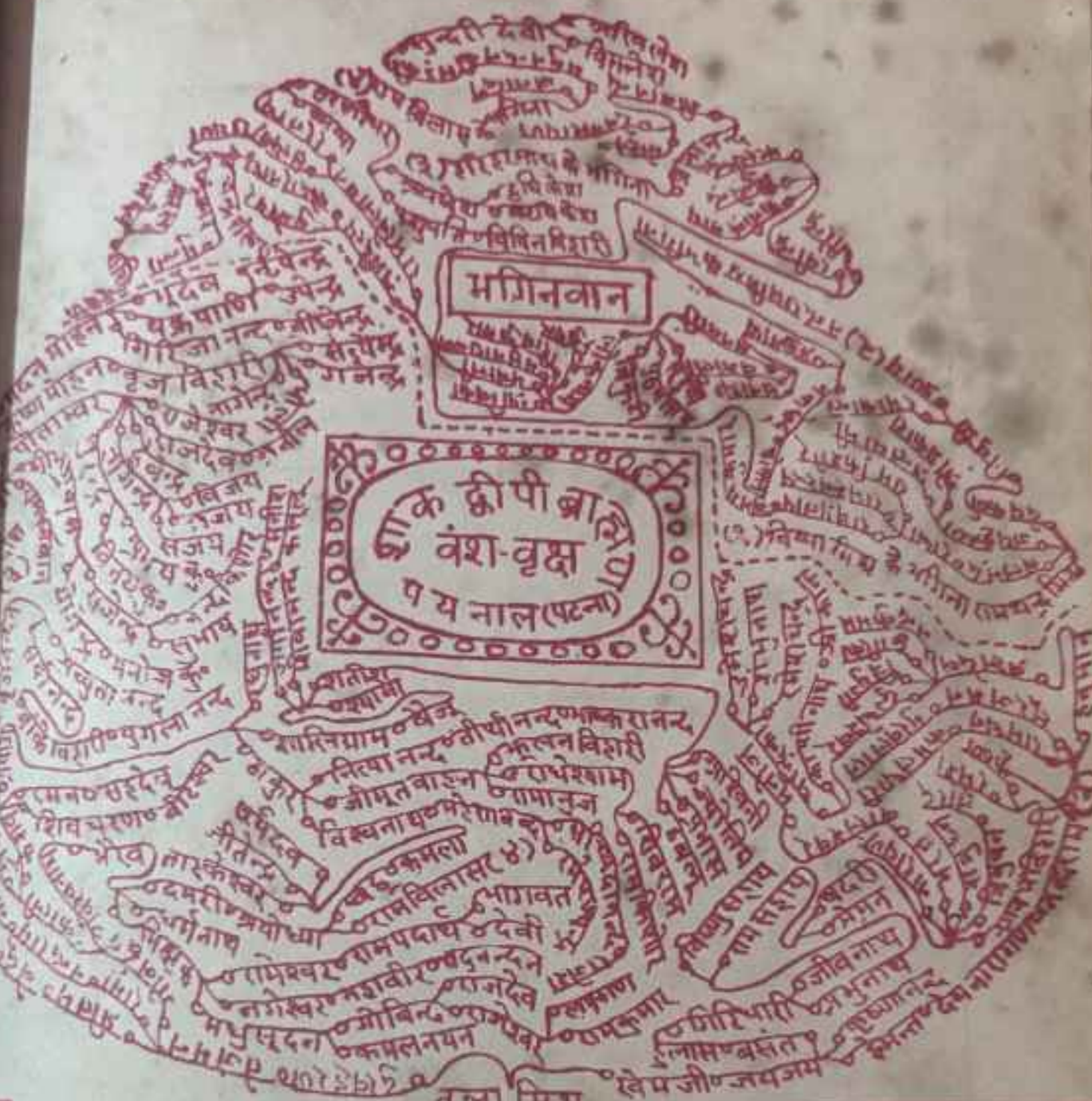

प्रणेता-
किशोरी शरण सिंह
पयनाल (पटना)

तुला मिश्र
प्रशान्त
प्रशान्त
प्रशान्त

A श्री नाथ मिश्र पैनाठी और
B देवनारायण मिश्र धाजिदपुर
चलेगये

श्री नाथ मिश्र A देवनारायण मिश्र B देवकी मिश्र

आदि पुरुष श्री जगन्नाथ मिश्र

कोइरी (कुशवाहा)

पुराने लोगों की उपाधि 'महतो' की थी या है। अब बदलकर 'वर्मा' और सिंह' में आ गई है। जिन नवयुवकों के नाम के आगे कोई उपाधि नहीं लिखी गई, उनकी उपाधि 'वर्मा' या सिंह समझेंगे।

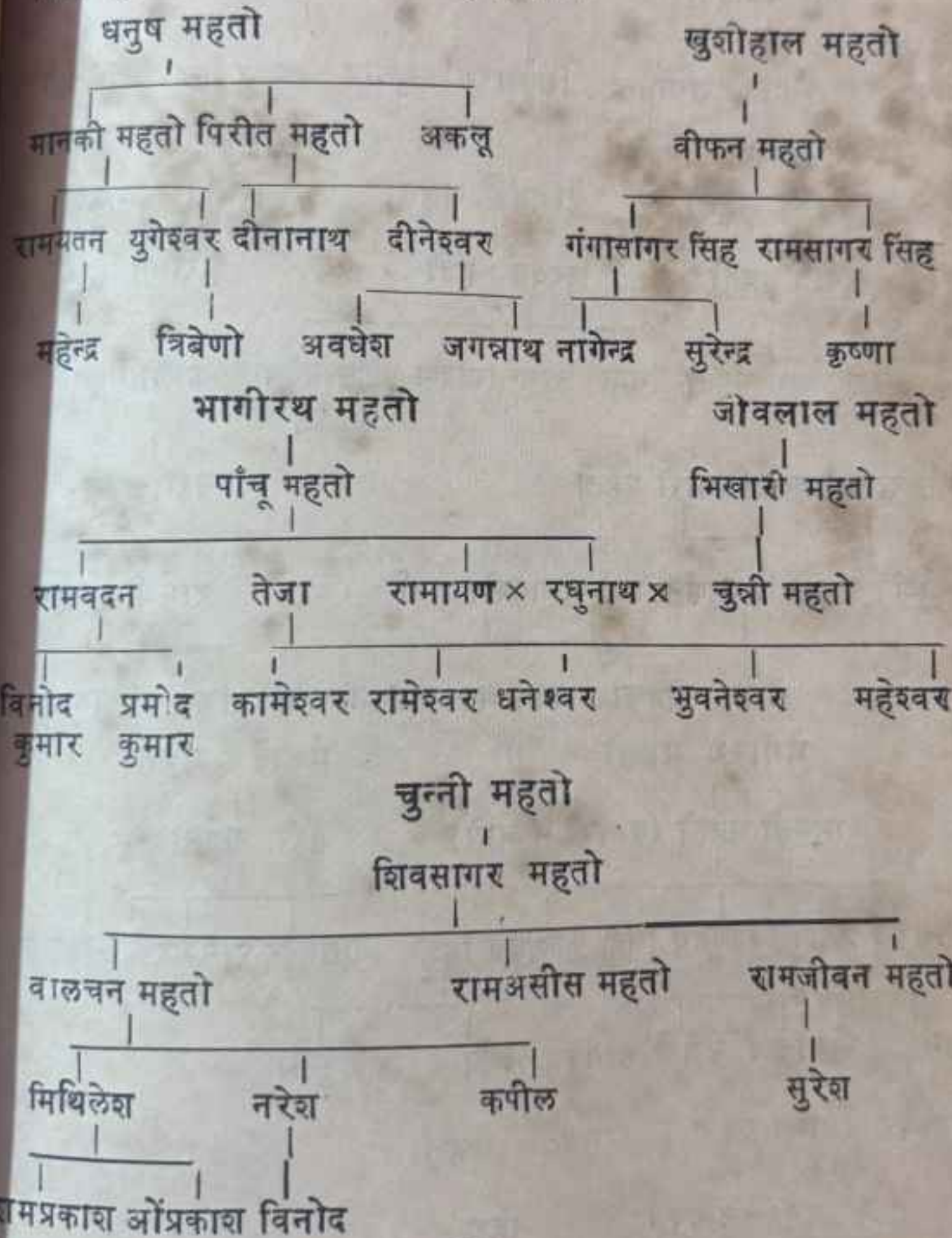

सुगम्बर महतो
- खेलावन महतो
  - गोविन्द महतो
    - दीपा
    - टीपनA
    - दसई
    - रामानन्द
      - कामेश्वर
      - ओंप्रकाश

लालबिहारी महतो की लड़की—
- मनझरिया जोजे भगेरू महतो (जलपुरा से आये)
  - रामभजन
    - शिवचरण
  - शिवभजन
    - सुलेन्द्र
    - रवीन्द्र
  - हरिभजन

बुलाकी महतो
- पुनीत महतो
  - लोकनाथ महतो
    - रामरतन महतो
      - सुदर्शन महतो
    - किशोरी महतो
      - शिवपर्शन वर्मा
        - राजेन्द्र
        - सुरेन्द्र
      - रामदर्शन वर्मा
        - ओंप्रकाश
        - अरुण प्र०
        - अजय प्रकाश

हरिवंश महतो
- हरदेव महतो
  - गया
  - रामनारायण
  - सत्यदेव

हीरिल महतो
- चुरामन महतो
  - काली महतो
    - दमरी महतो
      - रामजीत महतो
        - संजय
        - श्यामसुन्दर

भगीरथ महतो
- रामपती महतो (दनारा से आये)
  - चन्द्रदेव सिंह
    - कमलेश
      - धर्मेन्दर
    - रामानन्द
      - साधुशरण
    - उमेश
  - विष्णुदेव सिंह
    - सत्यदेव
  - कृष्णदेव सिंह
    - उपन्द्र
    - राजकुमार

महादेव महतो
- सुरीठ महतो
  - एतवार
  - रामशरण
  - शिवशरण

सुखदेव महतो
- महेश

A पटना चले गये।

प्रसाद महतो

आदित महतो जोगा महतो

शिवउग्रह रामजन्म बिरिजा बिरोगा

तपेश्वर दुख हरण सिनेश्वर कृष्णनन्दन अरुण

काशी महतो

रामेआद महतो

रामवृक्ष महतो

ईश्वर दयाल

मुन्द्रिका मुन्द्रिका

भवानी महतो

दिलीप महतो

प्रताप महतो नवरतन महतो नखीद महतो

आक्षयवर महतो

रामदास महतो हरिनन्दन महतो रामवृक्ष महतो A

रामनाथ महतो

घुटनी जौजेमन्दराज रामलगन × देवलगन

रामचन्द्र वर्मा

सुशील जौजे सत्यनारायण बुदनी जौजे रघुनाथ

राजेन्द्र वीजेन्द्र गजेन्द्र

A—रामवृक्ष महतो की लड़की सनझरिमा जौजे करमू महतो (दरियापुर से आये)

दिलीप महतो

बुधलाल महतो रूपधारी महतो रामधारी महतो रुपलाल महतो

केश्वरमहतो तपसी

देवशरण B

मोहित दुखदेवन महतो अनिरुद्ध महतो (६९ में)

शिवपूजन शिव कुमार नाथूS रानजन्म बूटन जगदीश

सहदेवCरामानुजH

रवीन्द्र रघुवर दयाल लोटरी

केदार अनिल कमता

B. C. H. S.—क्रमसः जैंतीपुर, कालापुर और पटना चले गये।

अनिरुद्ध महतो (६८ का)

लालधर महतो शिव बचन महतो

राजेश्वर परमानन्द सुलेन्द्र

भोला महतो

झगरू महतो

राम पूजन हरिचरण महतो (कराई से आ

राजा राम महतो

जनकदेव प्रसाद चन्द्रशेखर प्रसाद शारदा प्रसाद अशोक प्रसाद

अनील कुमार सुनील कु० शिव शंकर गौरी शंकर टुनटुन मुनमुन

चोआ महतो

भुवन महतो

राम सेवक महतो केवलधारी महतो ×

जगन्नाथ महतो

रामगति वर्मा × राम उग्रह वर्मा रामचन्द्र वर्मा × राम बालक वर्मा शत्रुघ्न वर्मा (६९ में)

विजय कुमार रामाधार विमल कुमार सूर्यदेव सत्येन्द्र

अरविन्द कुमार अजीत कुमार

शत्रुघ्न वर्मा

अशोक कुमार केशव वृज किशोर नन्द किशोर

यादव

सचीवन राय

सौदागर राय

भोनू राय — भवानी राय (७० में)

भगेलू राय — खदेरू राय — जुदागी राय

कालक राय — राम दयाल — राम नगीना — शिवप्रसाद — नन्दलाल

बृजनन्दन — वकील — कृष्णनन्दन — कौलेश्वर — राम विनय

भवानी राय (७० का) — राम सागर राय—कोदई नगर से आये

अनन्त राय — मूरत राय — रूचा

सूर्यकुमार — बलिराम — हरेराम — कृष्णदेव — हरिचरण × — गौरी चरण ×

डोमा राउत (एकवना सोनपार से आये)

सिराज राय × — खिरोधर राय — मनोगी राय

रामअसीस × — श्यामलाल राय — बालकृष्ण राय × — लालकेश्वर राय ×

रामजन्म राय — रामयतन राय

बैजनाथ — बैजूनाथ — जगनारायण — सत्यनारायण — रामजीत — श्यामजीत

शंकर भगत

मलू भगत (हलदी छपरा से आये)

रामवरन भगत छेदी भगत × बाबूलाल भगत रामजोधी भगत धनधारी भ

परमेश्वरA बुलाकी मिसरी छत्रपति भगत सहदेव भगत × चतुरी × देवकी भगत(७१ वे

राजनन्दन सरयू × नेतराम भगत × जानकी भगत यदुनन्दन भ

प्रवेश

दिलीप

शिव नारायण

लाल बाबू देव बाबू

कुंजी भगत (हल्दी छपरा से आये)

शोभी भगत

राजा भगत राम लाल भगत ×

मेघा भगत भोगा भगत तेजा भगत

तुलसी राम राम सेवक देवचन भवचन रामईश्वर राम अवतार

सुशील अर्जुन मंगरू बलिराम

देवकी भगत

अक्षय लाल श्रीकृष्ण हरिकृष्ण

राम अनूप रामलगन जयनाथ

राम सेवक

A—परमेश्वर, बुलाकी और मिसरी भगत धरायचकचले गये।

७१

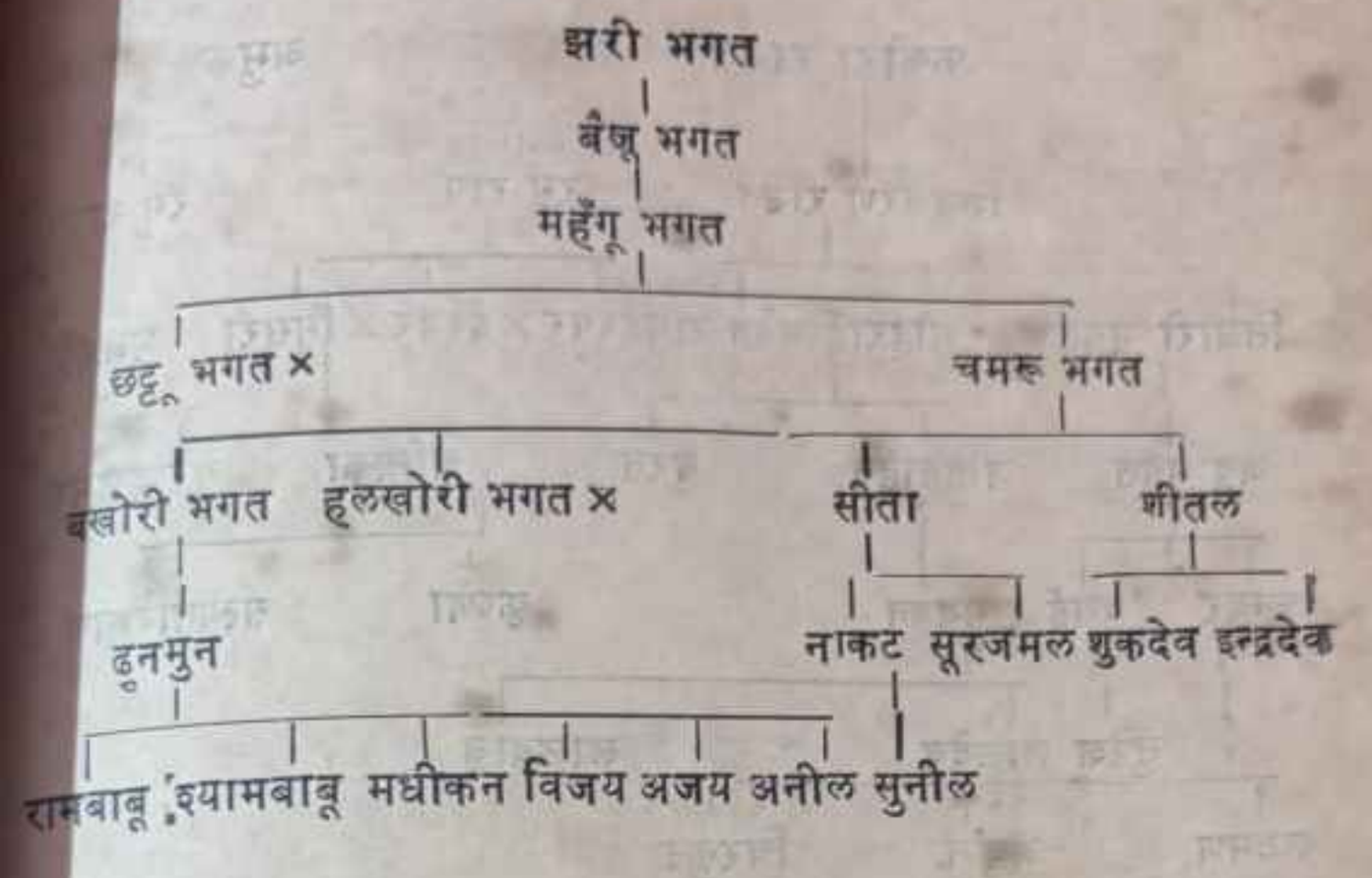

अलौदी राउत (कालापुर से आये)

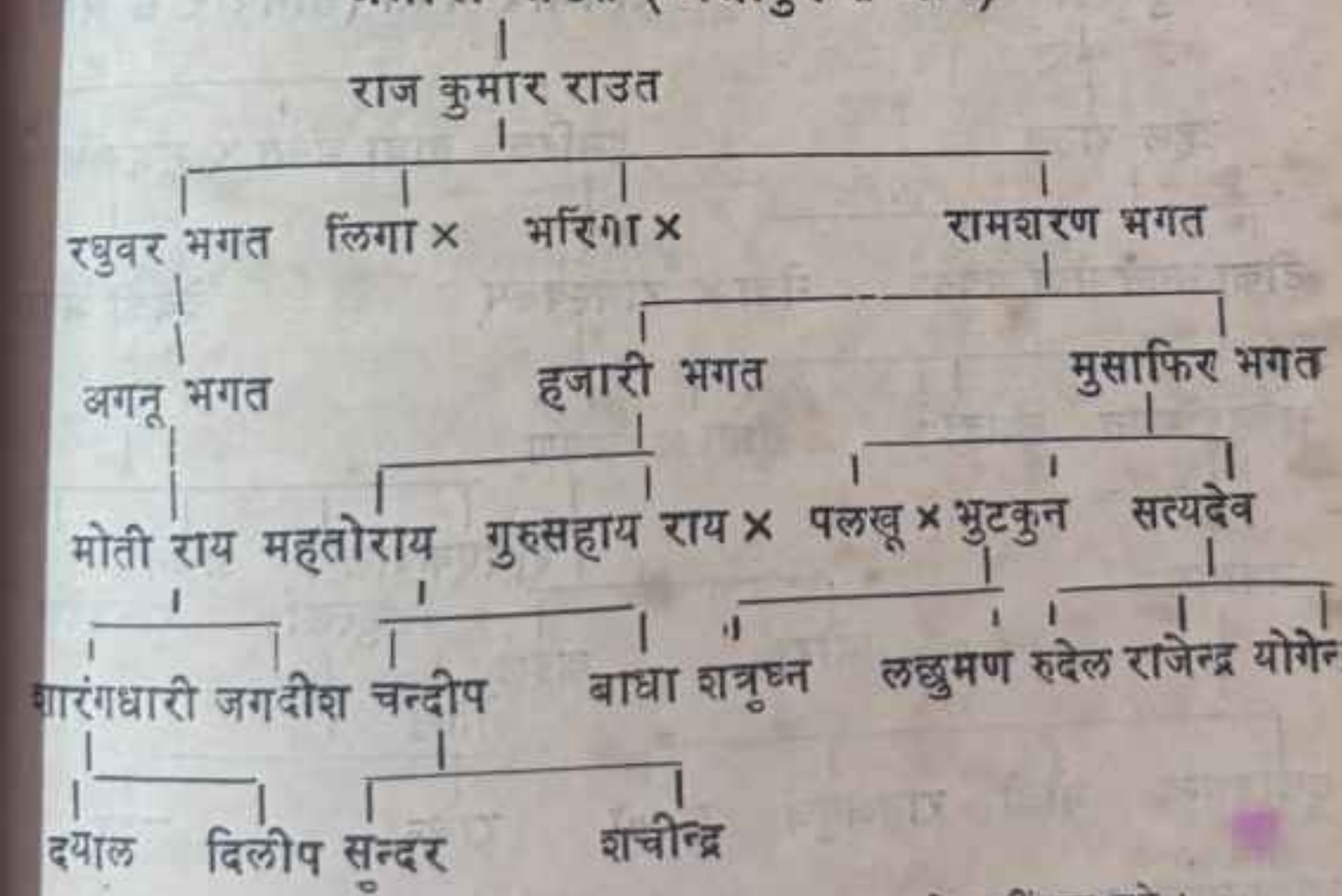

मुसाफिर भगत के नाती-दीनानाथ मौली नगर के यहीं रह गये।

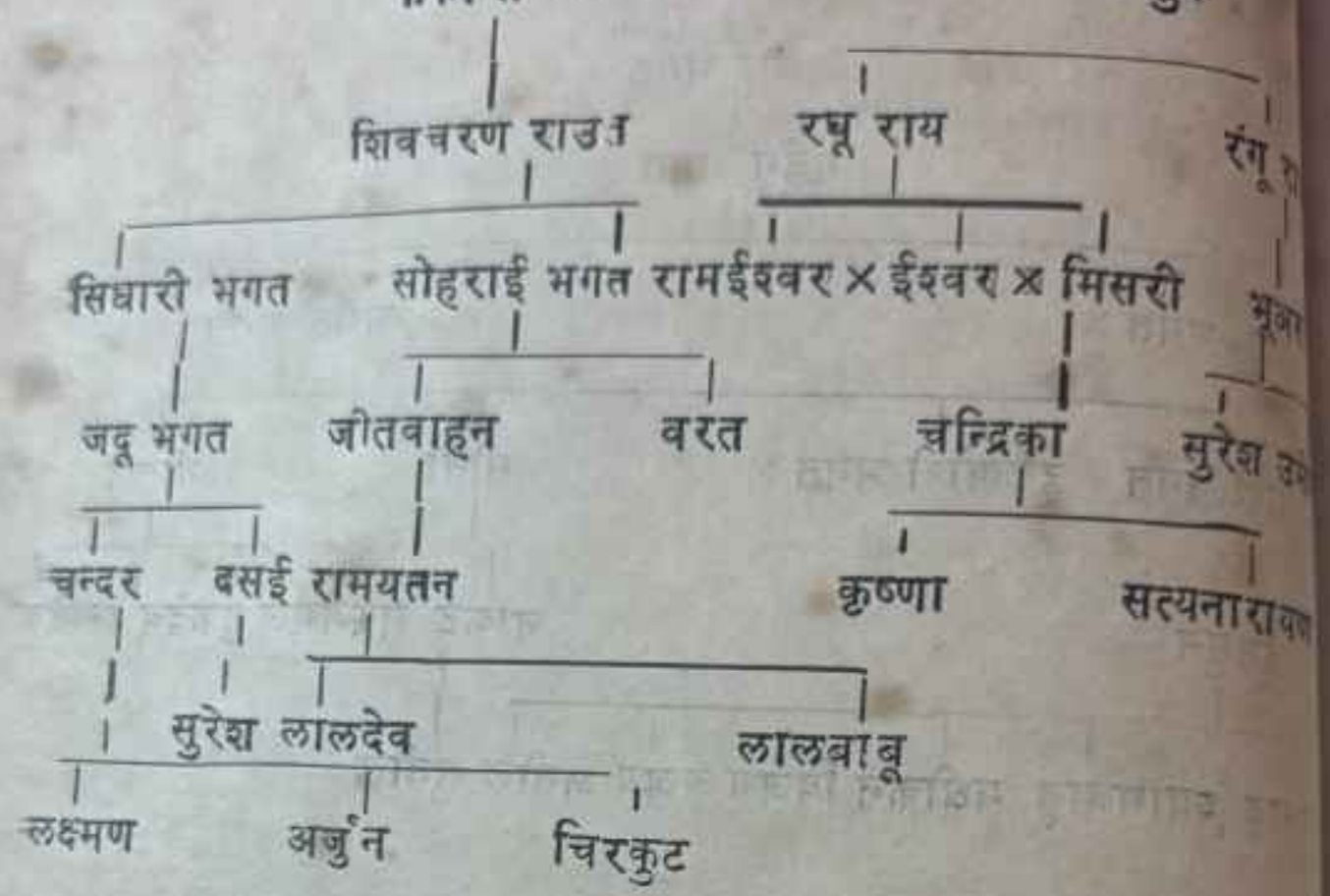
फकीरा राउत
अमुक
शिवचरण राउत
रघू राय
रंगू
सिधारी भगत
सोहराई भगत
रामईश्वर × ईश्वर × मिसरी
जदू भगत
जीतवाहन
वरत
चन्द्रिका
सुरेश
चन्दर
दसई
रामयतन
कृष्णा
सत्यनारायण
सुरेश
लालदेव
लालबाबू
लक्ष्मण
अर्जुन
चिरकुट

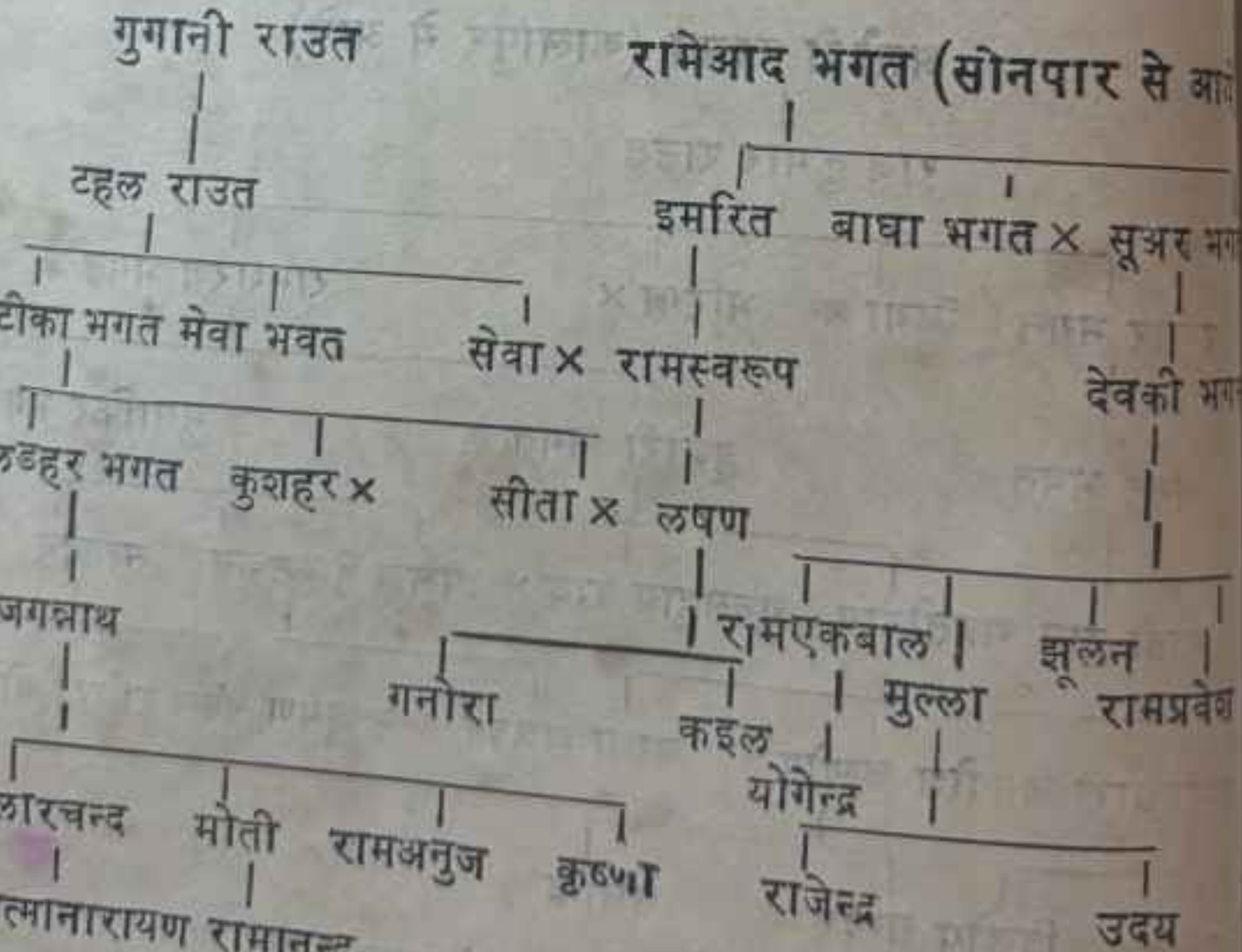
गुगानी राउत
रामेआद भगत (सोनपार से आ
टहल राउत
इमरित
बाघा भगत ×
सूअर भग
टीका भगत
मेवा भवत
सेवा ×
रामस्वरूप
देवकी भग
लड्हर भगत
कुशहर ×
सीता ×
लषण
जगन्नाथ
रामएकबाल
झूलन
गनौरा
कइल
मुल्ला
रामप्रवेश
योगेन्द्र
दुलारचन्द
मोती
रामअनुज
कृष्णा
राजेन्द्र
उदय
आत्मानारायण
रामानन्द

लेखा राउत–पूटर राय ×

रामदास भगते

अनूपिया शुकनी

[अनुपिया अपना ससुराल में और शुकनी (जौजे सुदामा राय ग्राम नगवाँ) अपनी मैके में यहीं रह गई।]

भदई राउत

मित लाल राउत

शालिक राउत बामन मालिक

डोमन राउत बदरी यादव (७४ में)

रामबालक यादव कैलास यादव रामध्यान यादव

उमा बुच्चू सुरेन्द्र उदय सुनील

सुदामा राय

राम प्रसाद शिव प्रसाद लछुमन

बबलू गोपाल

बदरी यादव

राम प्रभु यादव

रमेश

कान्दू

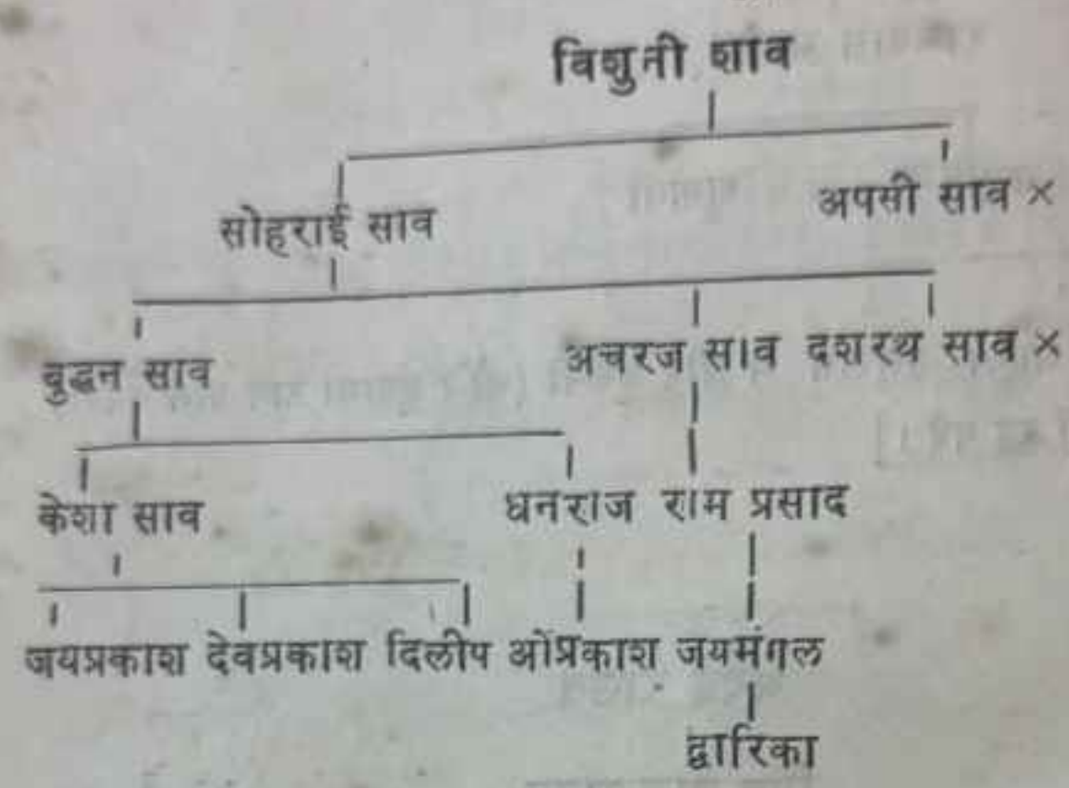
विशुनी साव
सोहराई साव
अपसी साव ×
बुद्धन साव
अचरज साव
दशरथ साव ×
केशा साव
धनराज
राम प्रसाद
जयप्रकाश
देवप्रकाश
दिलीप
ओंप्रकाश
जयमंगल
द्वारिका

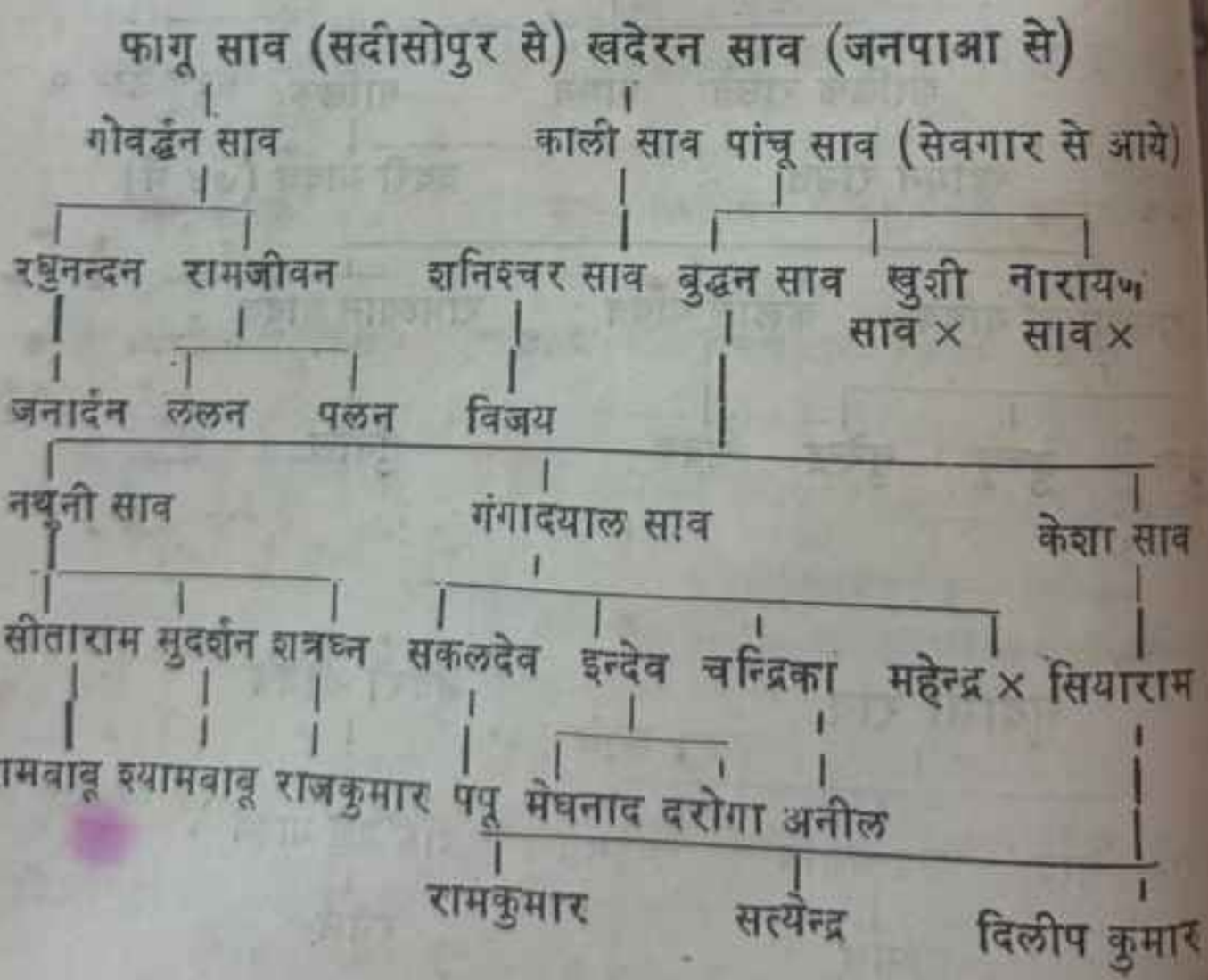
फागू साव (सर्दीसोपुर से)
खदेरन साव (जनपाआ से)
गोवर्द्धन साव
काली साव
पांचू साव (सेवगार से आये)
रघुनन्दन
रामजीवन
शनिश्चर साव
बुद्धन साव
खुशी साव ×
नारायण साव ×
जनार्दन
ललन
पलन
विजय
नथुनी साव
गंगादयाल साव
केशा साव
सीताराम
सुदर्शन
शत्रघ्न
सकलदेव
इन्देव
चन्द्रिका
महेन्द्र ×
सियाराम
रामबाबू
श्यामबाबू
राजकुमार
पपू
मेघनाद
दरोगा
अनील
रामकुमार
सत्येन्द्र
दिलीप कुमार

कुनकुन साव (सवलपुर से)

पलकधारी साव

एकबाली साव — चन्द्रदीप — गुलाबचन्द

संत, वसंत, सीता — शंकर, मोहर, जवाहर, छोटन

कृष्ण मुरारि

राजेन्द्र, गजेन्द्र

अमुक

रुकटू साव — नाटा साव (७६ में)

भगल साव — गुदरी साव — मँहगु साव ×

धनमा जौजे मीठू साव — राम लषण साव — शिव लषण

लोंहरी साव — रामरतन — देवशरण — रामवचन — रामअसीस

मेघ नाथ, शोभानाथ — गिरिजा — काशी — बड़का

अनील, सुनील, सुशील

नूनू, अखिलेश, उपेन्द्र, छोटन, महावीर

नाटा साव (७६ का

झींगुर साव — जुदागी साव — महँगू साव × — रामबुझु साव ×

किसुन साव (७७में), खखून साव (७७ में), चनुरी साव (७७ में)

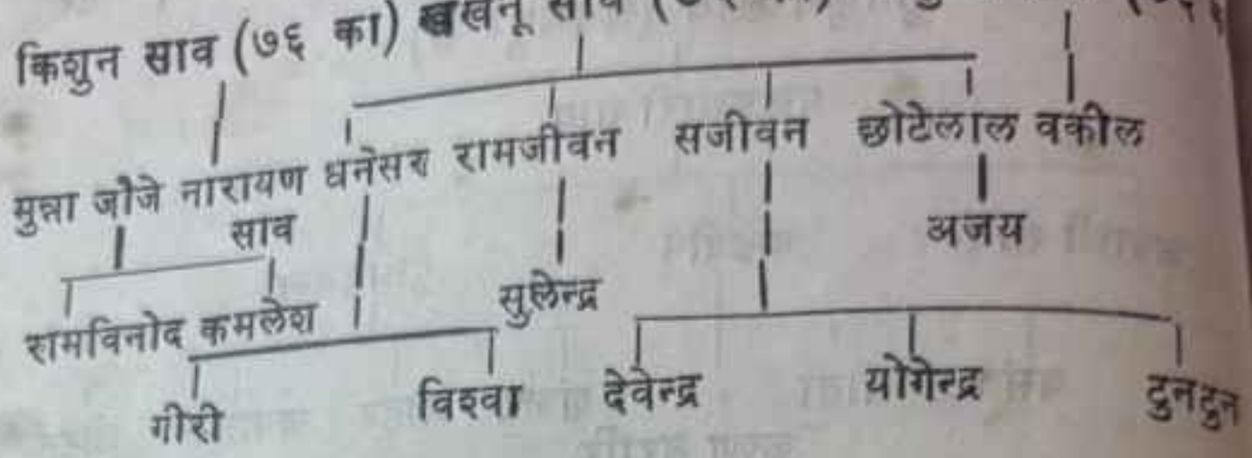
किशुन साव (७६ का)
खखनू साव (७६ का)
चतुरी साव (७६
मुन्ना
जौजे नारायण साव
धनेसर
रामजीवन
सजीवन
छोटेलाल वकील
अजय
रामविनोद
कमलेश
सुलेन्द्र
गीरी
विश्वा
देवेन्द्र
योगेन्द्र
टुनटुन

लछुमन साव

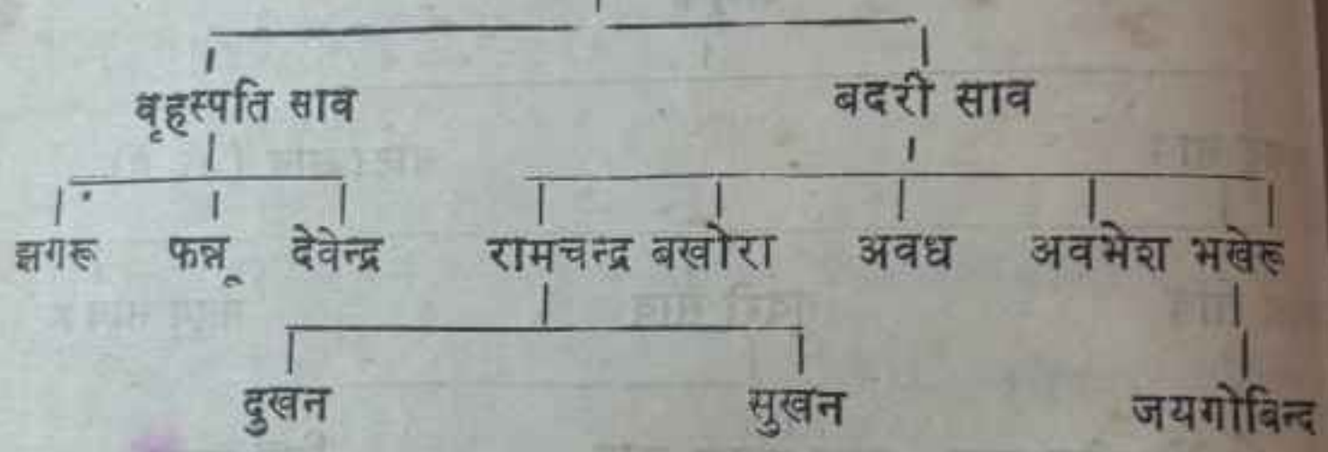
वृहस्पति साव
बदरी साव
झगरू
फन्नू
देवेन्द्र
रामचन्द्र
बखोरा
अवध
अवभेश
भखेरू
दुखन
सुखन
जयगोविन्द

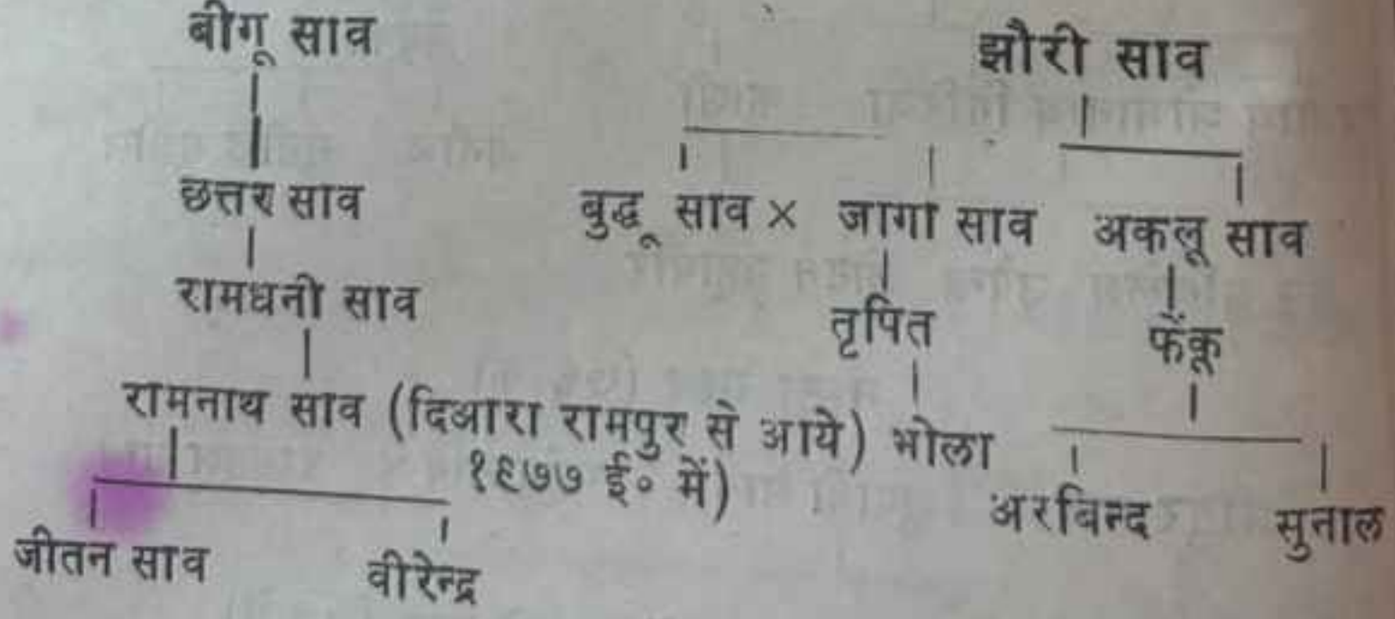
बीगू साव
छत्तर साव
रामधनी साव
रामनाथ साव (दिआरा रामपुर से आये) १९७७ ई० में)
जीतन साव
वीरेन्द्र
झौरी साव
बुद्धू साव ×
जागा साव
अकलू साव
तृपित
भोला
फेंकू
अरविन्द
सुनाल

कहार

गोबिन्द राम (श्रीचन्दपुर से आये)
- महावीर राम
  - लालबहादुर राम
    - रामजन्म
      - राजेश्वर
    - रामईश्वर
      - अजीतकुमार
  - बासगीतराम
    - बैकुंठ
    - रामप्रवेश (कलकत्ता गये)
    - सुरेश
  - मुन्नीलाल

खदेरू राम
- गनौरी राम
  - गमरू राम
    - मथुरा
    - बब्बन
    - ललन

रीतू राम
- छेदीराम ×
- देवधारी ×
- बहादुर
  - धरीछन
    - नथुनी
      - अलबेला
      - करीमन
      - बलिराम
      - अरबिन्द
      - पप्पू
    - रामईश्वर
- लुटकन

रामधनी राम (गोढ़ना से)
- जंगबहादुर ×
- काली
- गुलाबचन्द ×
  - बंशी ×
  - फुदेना
    - बाबूलाल
      - केशो
      - छोटे लाल
      - मोहन

सखीराम (अभरन चक से,
- ज्ञानी राम
  - तीजू
  - छोटन
  - लुच्चु

हरिहरराम (कल्याणपुर से)
- शिवआधार
- रामआधार

जदुनन्दन की बहिन अलोधन
जौजे हरिहरराम

सौदागर राम

रंगलाल राम

जीत बाहन — शिववाहन

राम सनेही

रामअनुज — चुनचुन — अवधेश

दमरी राम

मोहन राम

आदित राम

जदुनन्दन राम — बुद्धि

रकटू — दुखू

सुरयू महरा

फागू महरा

बुज्जू — छोटू — दमोदर — महोदर — देवलाल

मंगरू

कुलेजन — वीटेश्वर

भुवनेश्वर

महोदर

बिन्दु — राजेन्द्र

देवलाल

बब्बन — पुन्ना

जदुनन्दन साढ़ू के बेटा लाल विहारी को पोसपुत रखे।

अमुक—(दतिआना से)

कलटू राम

रामचरण राम

विश्वनाथ — मुसाफिर — ज्ञानी — मुनारिक

राज कुमार

गनौरा

रामईश्वर — केश्वर — रज्जन

विजय

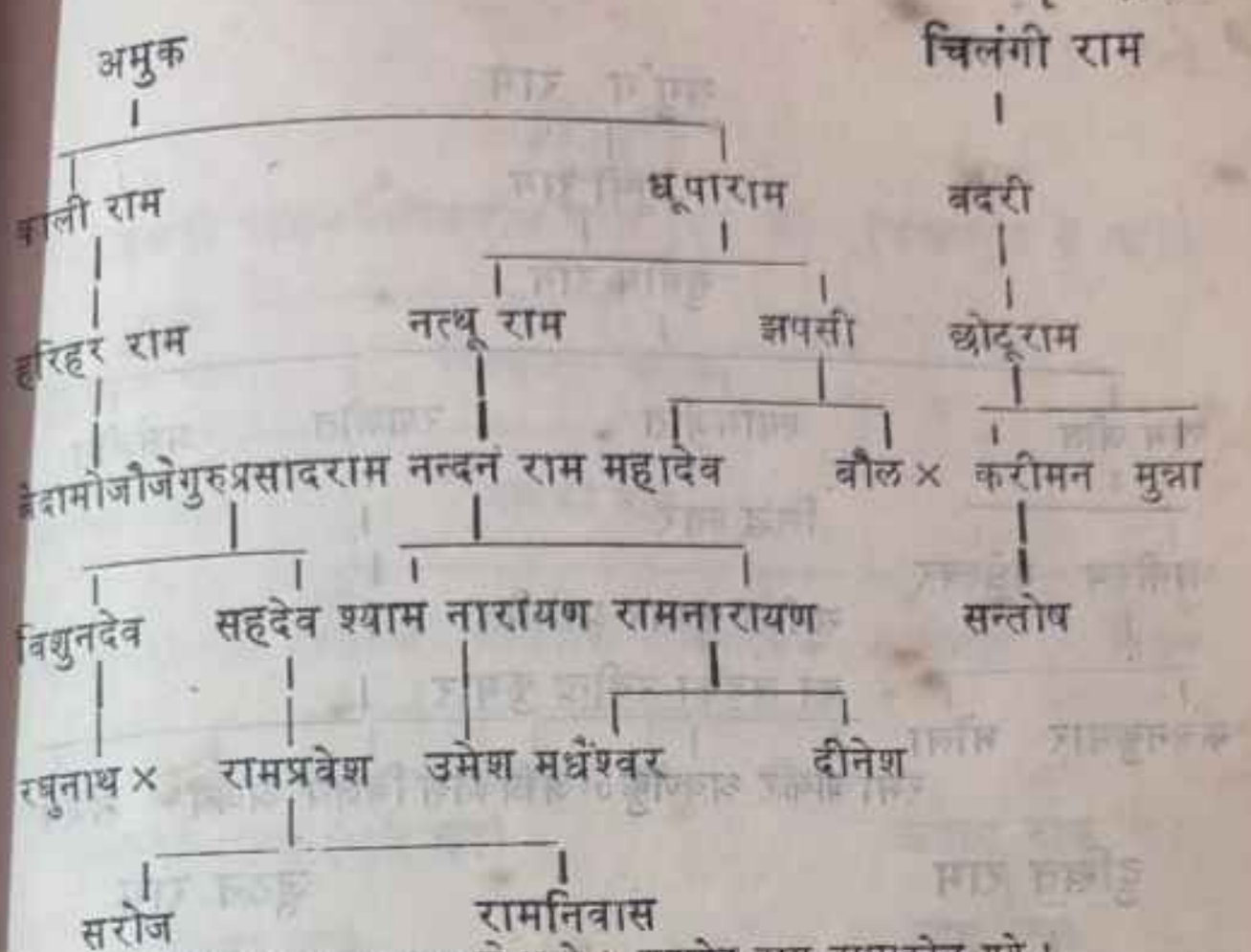

गुरूप्रसाद राम सदरबह से आये। महादेव राम बाघाकोल गये।

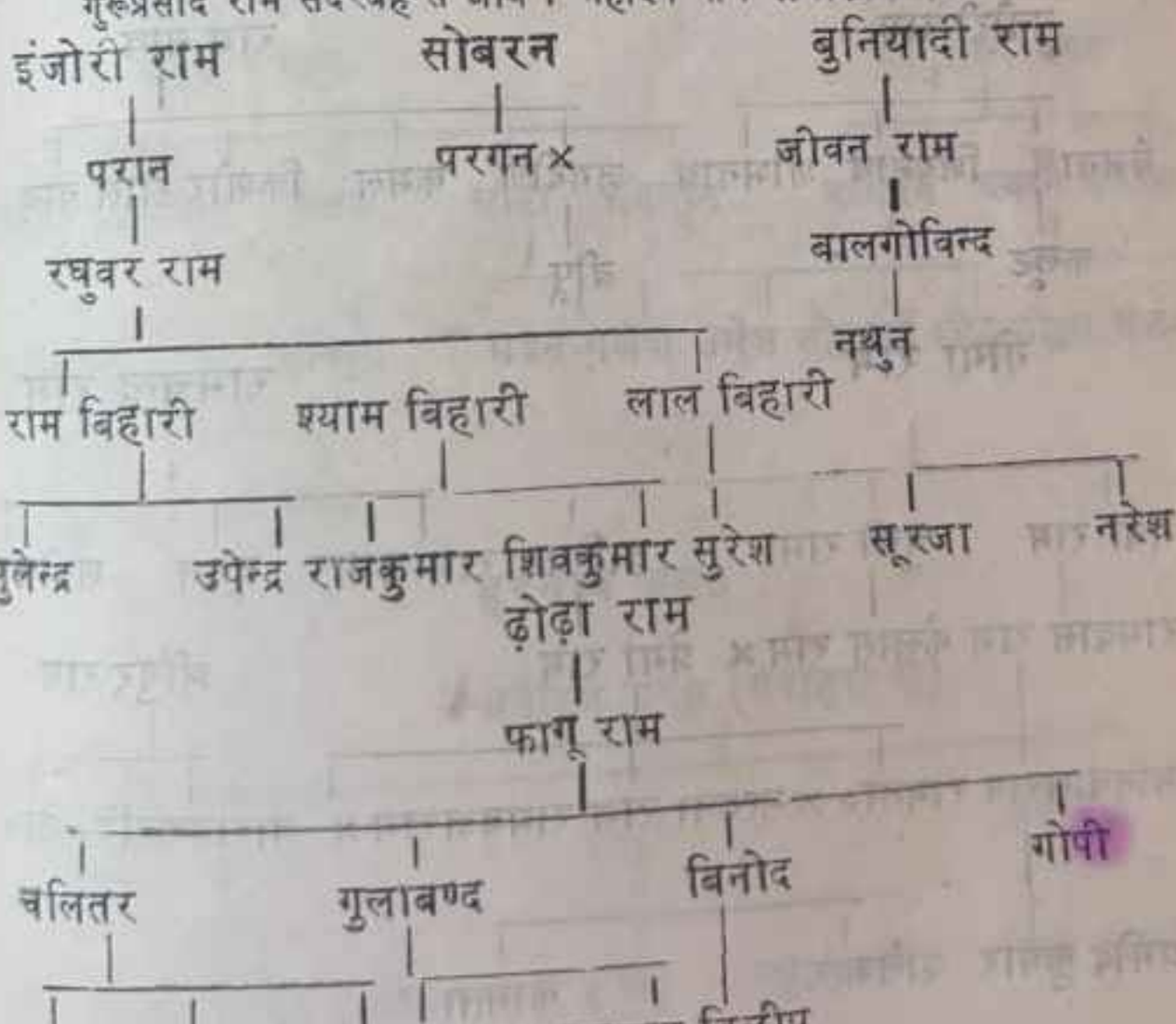

सगुन राम

गुनी राम

सुग्रीम राम

राम जीत — श्यामजीत — रणजीत — प्रसंजीत

भागीरथ — मधेश्वर

सिद्धेश्वर

सुनील कुमार प्रसंजीत का लड़का रवीन्द्र कुमार

कंचनकुमार — भोला

रमा शंकर — श्रवणकु० — ओंप्रकाश — विजय — अजय — संजय

दुखित राम

गनौरी राम

बैजनाथ — शिवनाथ — शोभनाथ

कलूट

जूठन राम

राम नाथ

जगदीश — कमल — किशोर लाल बाबू

बीपू

गोगा राम

मेवा राम — चुन्नी राम

रामदास राम — कैलास राम ×

रामनिवासराम — रामना० × सत्यना राम

प्रमोद कुमार

रामचन्द्र राम

द्वारिका राम — सागर — बूटन — शनीचर

प्रेमा राम

रामवृक्षराम ×

वालेश्वर

कामता

झींगुर राम

नारायणहरि० — ना०

गँरेड़ी

दमरी राय—जीवनाथ राय (८२ में) (कंचनपुर से आये)

- हिरामन राय
  - जानकी राय
    - सकलदीप राय
      - राजेन्द्र
      - योगेन्द्र
  - मानकी राय
    - शिवधर
      - रामउदार
      - रामानन्द
      - साधु
      - गोरख
    - गिरिधारी
    - शनीचर
    - किशुन
    - विशुन
- चिन्तामन राय ×
  - जीवनाथ राय (८२ का)
    - रामेआद राय
      - जवाहर राय
        - रघुनी
          - चन्द्रदीप
            - चन्दु
            - साधु
        - योधा
        - तेतर
        - सीरी
          - योगेन्द्र
        - भगवान
          - मदन
          - गणेश
  - प्रयाग राय
    - साधु भगत
      - दुख हरन भगत
        - रामदेव
          - उमेश
          - सोहराई
          - छोटू
        - श्याम दयाल
          - भोला
          - संजय

हरनाथ भगत

- भगीरथ भगत (गंगाहरा से)
  - चिरकुट
    - सोमनाथ (८३ में)
    - लोकनाथ (८३ में)
    - रघु (८३में)
  - महेन्द्र
    - वीपत (८३में)

शोभ नाथ (८२ का) — लोकनाथ (८२ का)

रामाप्यारे राम कृपाल राम प्र० शिव प्रसाद देव प्रसाद ब्रह्मदेव रोशन

रघु भगत (८२ का) — (वीपत ८२ का)

कारू — अगनू — ललन — सुरेश — अनी

कालीचरण भगत

खेखर भगत

लक्ष्मी नारायण — रामकृष्ण — नारायण (दीघा गये)

दीनदयाल रामप्रवेश — जुदगी नाथुन — परमानन्द

ब्रह्मभट्ट (भाँट)

लोचन महाराज

हरषू महाराज

राम अवतार महाराज — फौदार महाराज

फौदार महाराज के भगिना राम नारायण महाराज उर्फ मुसाफिर महाराज का ससुराल चौरी था। वहाँ से येबदरी महाराज को बुलाये। मदन महाराज (बेकहल) बदरी महाराज को अपने साथ रख कर गान विद्या सिखाये। बदरी यहीं बस गये आज ये संगीत कला में बहुत आगे बढ़ गये हैं। इनको दो लड़के हैं—राजीव नन्दन और चन्द्र प्रकाश। मदन महराज के पिता का नाम लुटकुन महाराज था।

बढ़ई

जीत बाहन मिस्त्री — रामेआद मिस्त्री (दोघड़ा से आये)

विशुनदयाल मिस्त्री — सौदागर मिस्त्री × — भवसागर — सागर प्रहलाद मिस्त्री

तुलसी मिस्त्री — जगलाल मिस्त्री — गंगा मिस्त्री

रामनन्दन — राजदेव — सूर्यनाथ — रामबाबू — श्यामबाबू

प्रभु — सुरेश दिलीप — अशोक

विनय — राजेश

[रामचन्द्र मिस्त्री के दो लड़के चलित्तर और चण्द्रिका ताराचक गये।]

सिन्दुरिया

चुल्हाई दास

लाल विहारी दास — रामधनी दास × — रामचरित्र दास ×

शिबलाल१ — बैजनाथ२ — शिवपूजन लाल३ — शिव शंकर लाल४

लाल बाबू लाल

(१+२+३+४) माहिनामा चले गये।

सुग्रीम दास — कस्तूरी दास ×

मूसलचन्द × — फागू दास ८५ में) — प्रहलाद दास (८५ में)

८४

फागू दास (८४ का) — प्रह्लाद दास (८४ का)

नथुनी दास × — चुगुल दास — लक्ष्मी दास — भुखलू दास (सकरहया गये)

जनक देवी जौजे रामचन्द्र लाल

उमाशंकर — भोलालाल — मंटूलाल — अजय

नाथ — कौशल — फुतुंग लाल × — फून लाल — रघुनाथ लाल — रघुवीर लाल

चमचम — दिलीप कुमार — राम ईश्वर

बनियाँ

बाबूराम (तारा नगर से) — रामनाथ साव

मिश्री साव — बासू साव

सीताराम — मंगल साव — हीरा साव — मुकुन्द — शिवशंकर

अखिलेश — सुनील — ठाकुर — तिलक — गुलाब — रामचन्द्र — हरिहर — रघुनाथ

धीरेन्द्र कु० — वीरेन्द्र कु० — उपेन्द्र — सत्येन्द्र — विश्वनाथ — राजेन्द्र — नागेन्द्र — करीमन

(गुलाब और रामचन्द्र लछमनपुर चले गये)

जीतन साव — छवी ना साव

खेआली साव — वैजनाथी साव

मोजी — सोखी × — मँहगूसाव (८६में) — छटुसाव (८६में) — बुलकन साव — मूरत साव

ज्ञानी

रामगति (दनापुर गये — देवनाथ — नाथ

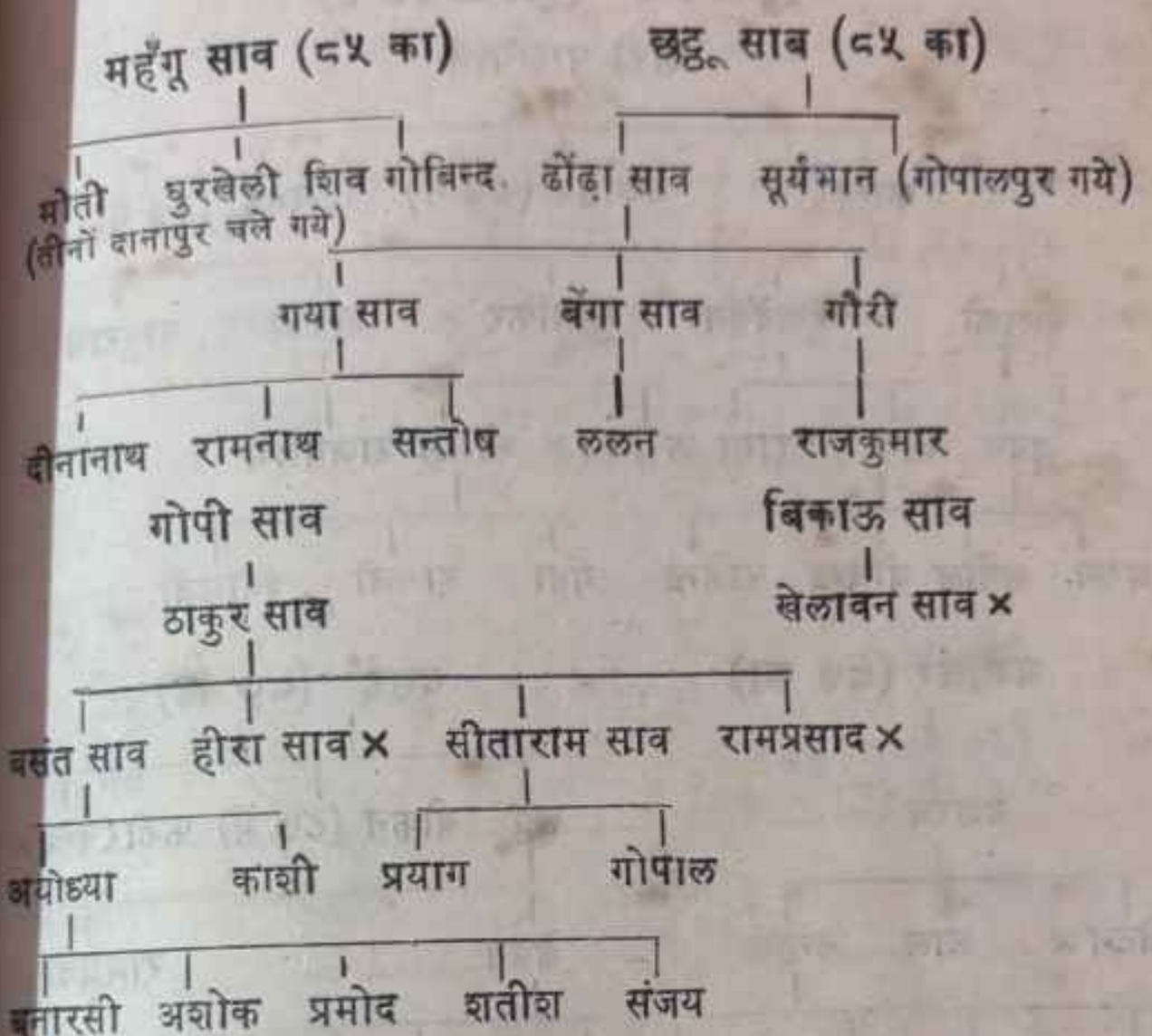

मुसलमान

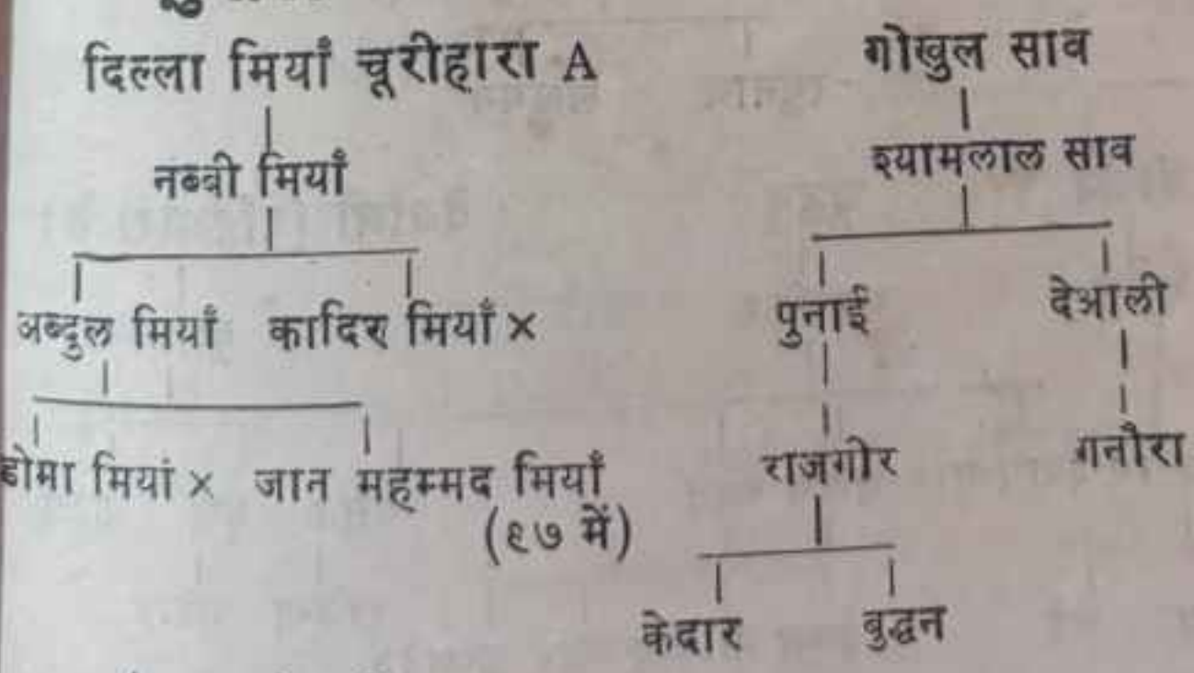

A बबुरा से आये।

दुसाध (पाशवान)

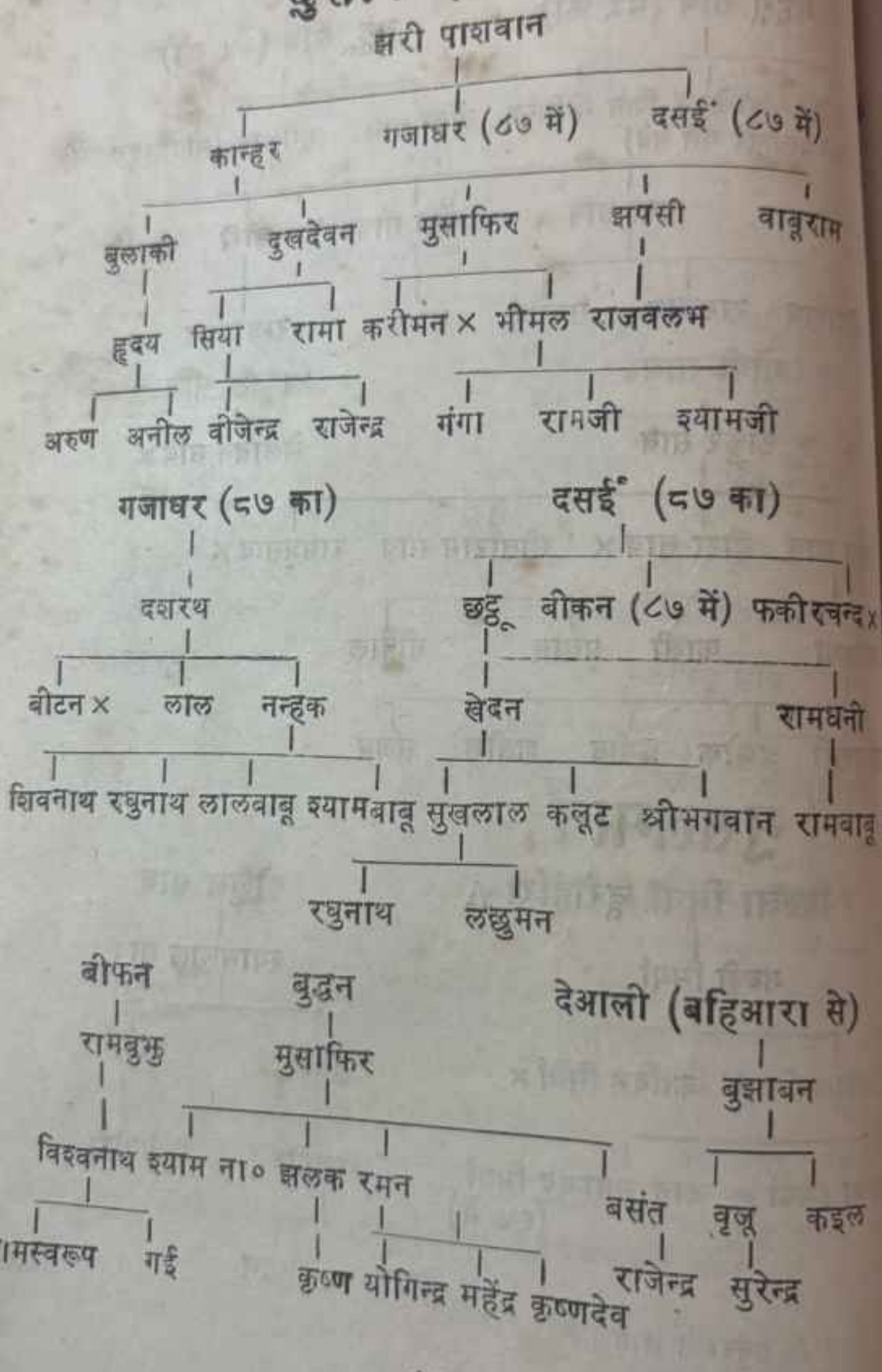
झरी पाशवान
कान्हर
गजाधर (८७ में)
दसई (८७ में)
बुलाकी
दुखदेवन
मुसाफिर
झपसी
बाबूराम
हृदय
सिया
रामा
करीमन ×
भीमल
राजवलभ
अरुण
अनील
वीजेन्द्र
राजेन्द्र
गंगा
रामजी
श्यामजी
गजाधर (८७ का)
दसई (८७ का)
दशरथ
छट्टू
बीकन (८७ में)
फकीरचन्द ×
बीटन ×
लाल
नन्हक
खेदन
रामधनी
शिवनाथ
रघुनाथ
लालबाबू
श्यामबाबू
सुखलाल
कलूट
श्रीभगवान
रामबाबू
रघुनाथ
लछुमन
बीफन
बुद्धन
देआली (बहिआरा से)
रामबुझु
मुसाफिर
बुझाबन
विश्वनाथ
श्याम
ना०
झलक
रमन
बसंत
वृजू
कइल
रामस्वरूप
गई
कृष्ण
योगिन्द्र
महेंद्र
कृष्णदेव
राजेन्द्र
सुरेन्द्र

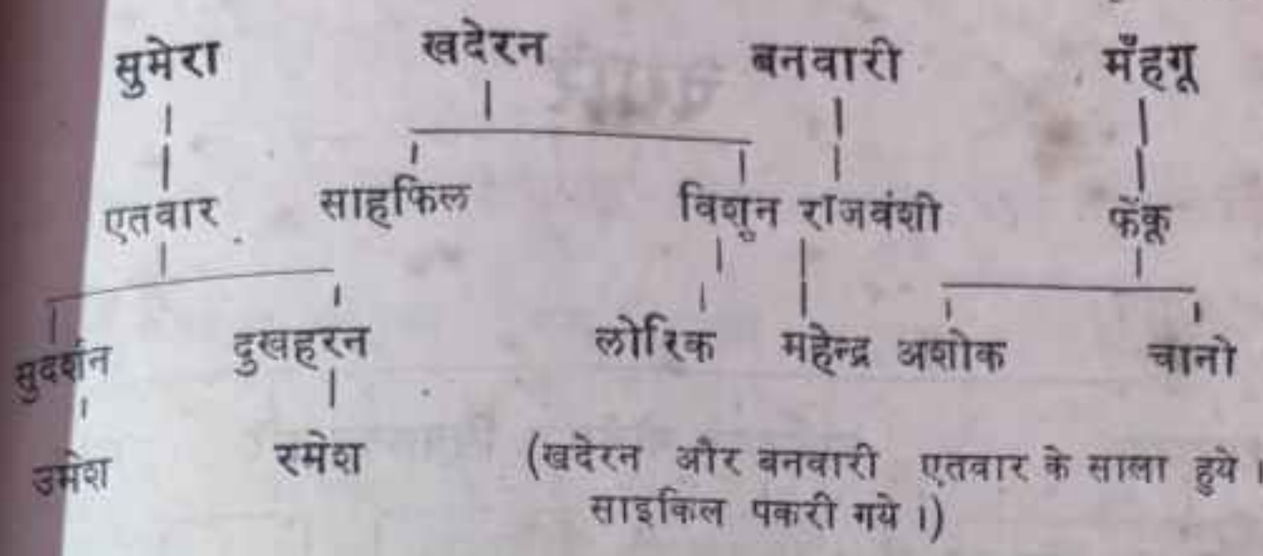

(खदेरन और बनवारी एतवार के साला हुये। साइकिल पकरी गये।)

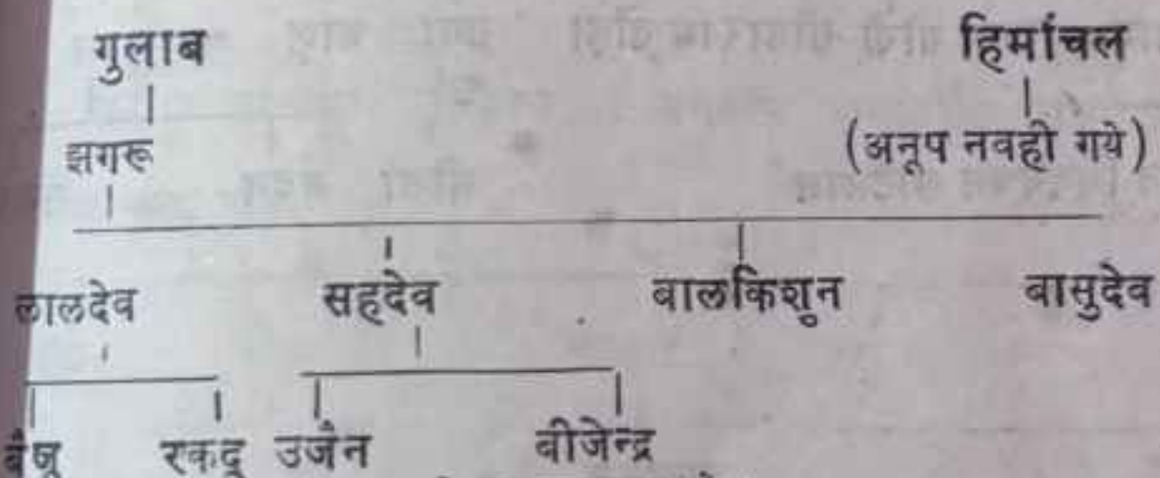

बालकिशुन और बासुदेव जक्कनपुर गये।

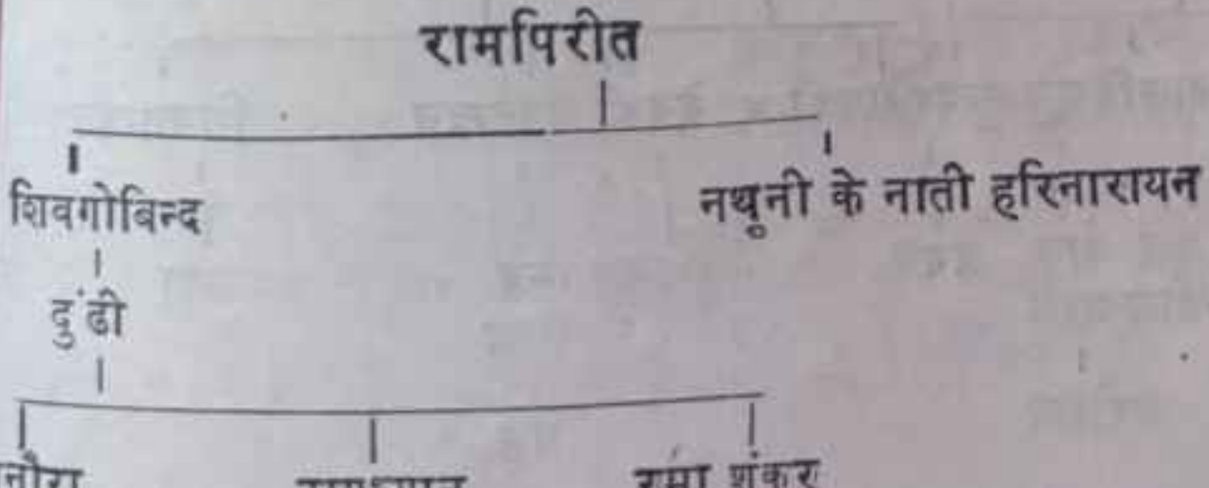

चमार

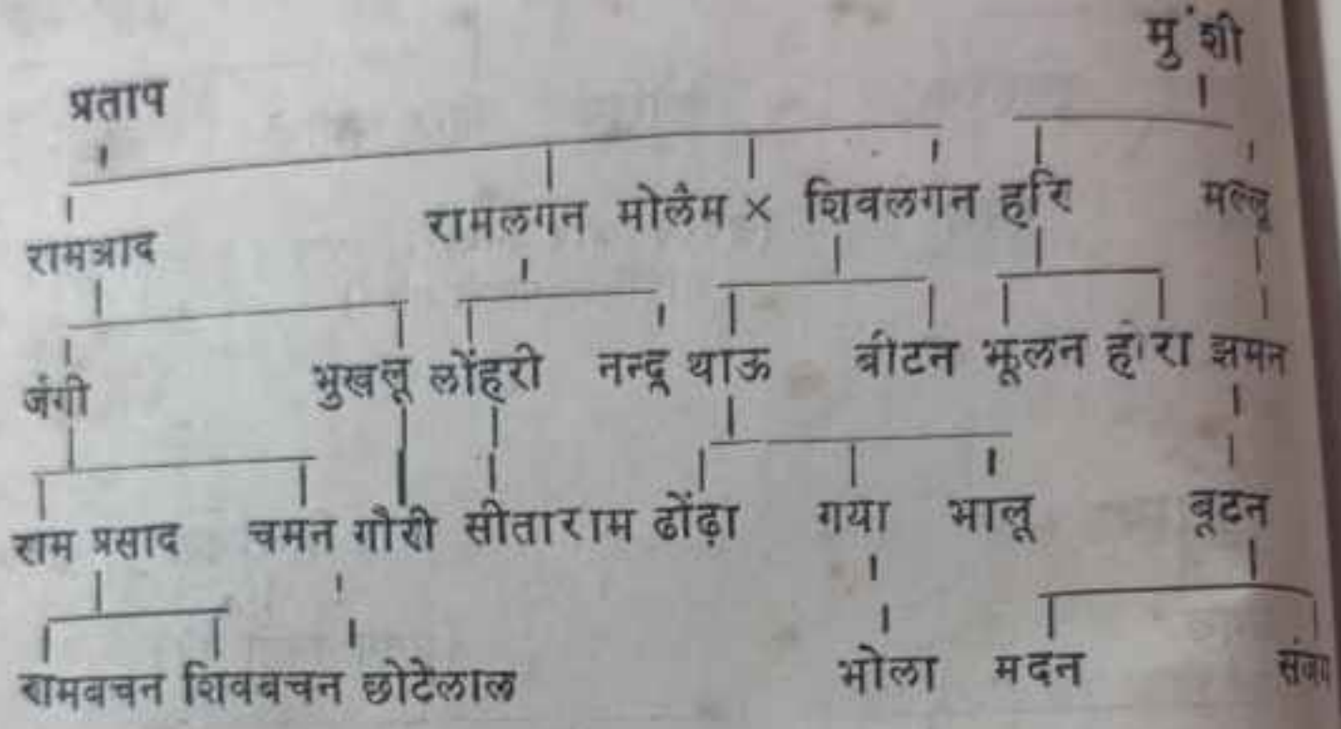
मुंशी
प्रताप
रामआद
रामलगन
मोलैम ×
शिवलगन
हरि
मल्लू
जंगी
भुखलू
लोंहरी
नन्दू
थाऊ
बीटन
भूलन
हीरा
झमन
राम प्रसाद
चमन
गौरी
सीताराम
ढोंढ़ा
गया
भालू
बूटन
रामबचन
शिवबचन
छोटेलाल
भोला
मदन

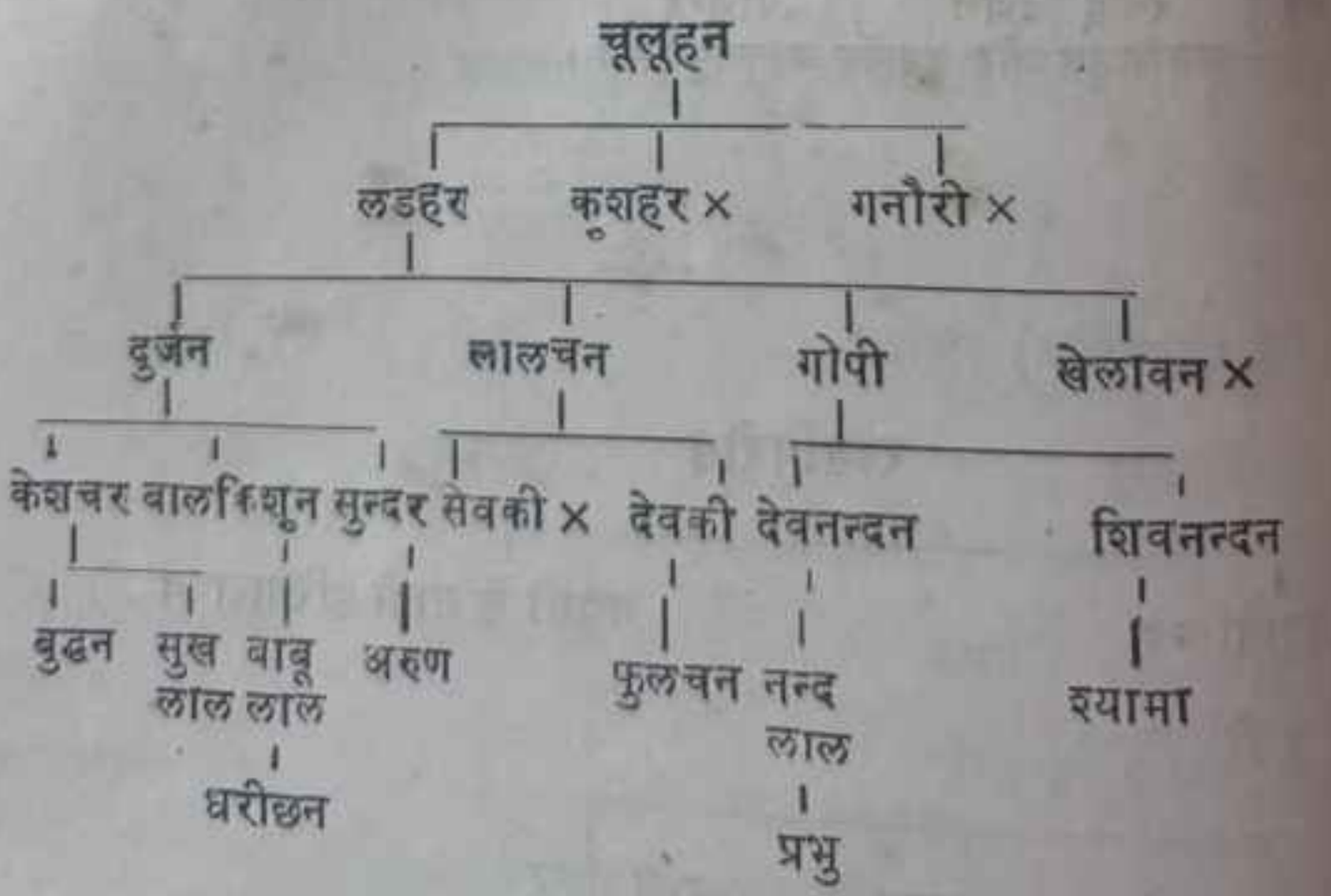
चूलूहन
लडहर
कुशहर ×
गनौरी ×
दुर्जन
लालचन
गोपी
खेलावन ×
केशचर
बालकिशुन
सुन्दर
सेवकी ×
देवकी
देवनन्दन
शिवनन्दन
बुद्धन
सुख लाल
बाबू लाल
अरुण
फुलचन
नन्द लाल
श्यामा
धरीछन
प्रभु

बाबू राम (मसौढ़ा से आये)

रामचन्द्र — पूजन (गोपालपुर गये)

द्वारिका, मुन्द्रिका, अमिका, परमा, वर्मा

एतवार

दुदिन (बाली पांकर से)

बूटन — सीताराम

नथुन

मनीराम — बासगीत की लड़की ६ में दो यहीं बस गई

जगन राम — मरछिया जीजे भुवनेश्वर — नगीना जीजे यमुना

विहारी, चन्द्रिका, मुन्द्रिका, मधेश्वर, रामअसीस, संजय, ढोलवा

बासगीत राम

संत — डोमन — कन्हाई

जगदीश — सकल दीप राम सागर — सरयू — सुरेन्द्र

युगेश्वर

संतजक्कनपुर, डोमन और कन्हाई नखरौल तथा लखीचन्द्र दरितापुर गये।

ढोंढा — शंकर — बिटंडी

मिचाई — जीतबाहन × — रछेआ के नाती हरगोबिन्द — शिवगोबिन्द

घूरन — वृजनन्दन (दियर गये) — महेशा (९१में) — ढख देवन (बभनपूरा गये) — योधा ×

घूरी

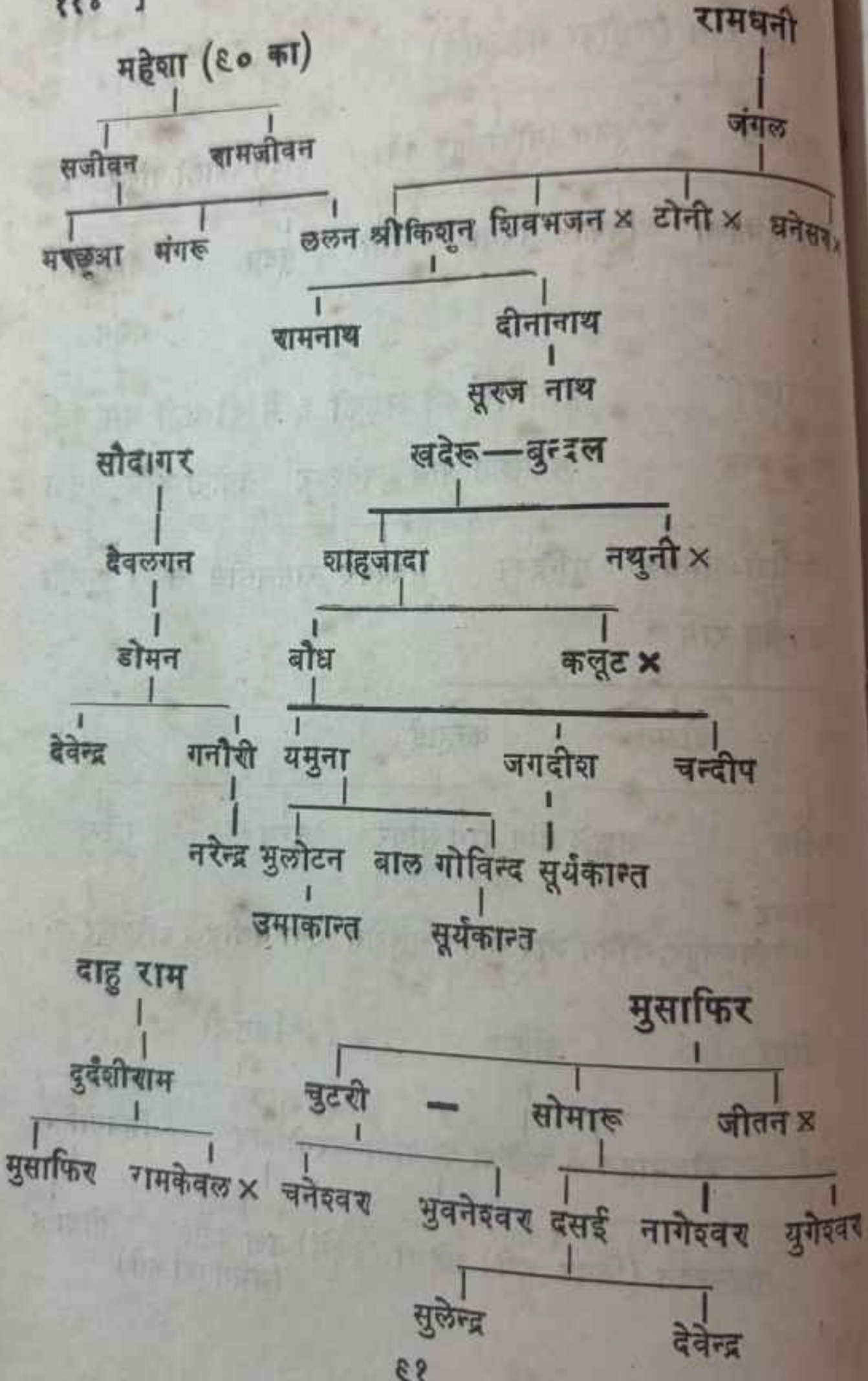
महेशा (९० का)
सजीवन
रामजीवन
मछूआ
मंगरू
ललन
रामधनी
जंगल
श्रीकिशुन
शिवभजन ×
टोनी ×
धनेसर ×
रामनाथ
दीनानाथ
सूरज नाथ
सौदागर
खदेरू—बुन्दल
देवलगन
शाहजादा
नथुनी ×
डोमन
बोध
कलूट ×
देवेन्द्र
गनौरी
यमुना
जगदीश
चन्दीप
नरेन्द्र
भुलोटन
बाल गोविन्द
सूर्यकान्त
उमाकान्त
सूर्यकान्त
दाहु राम
मुसाफिर
दुर्दशीराम
चुटरी
सोमारू
जीतन ×
मुसाफिर
रामकेवल ×
चनेश्वर
भुवनेश्वर
दसई
नागेश्वर
युगेश्वर
सुलेन्द्र
देवेन्द्र

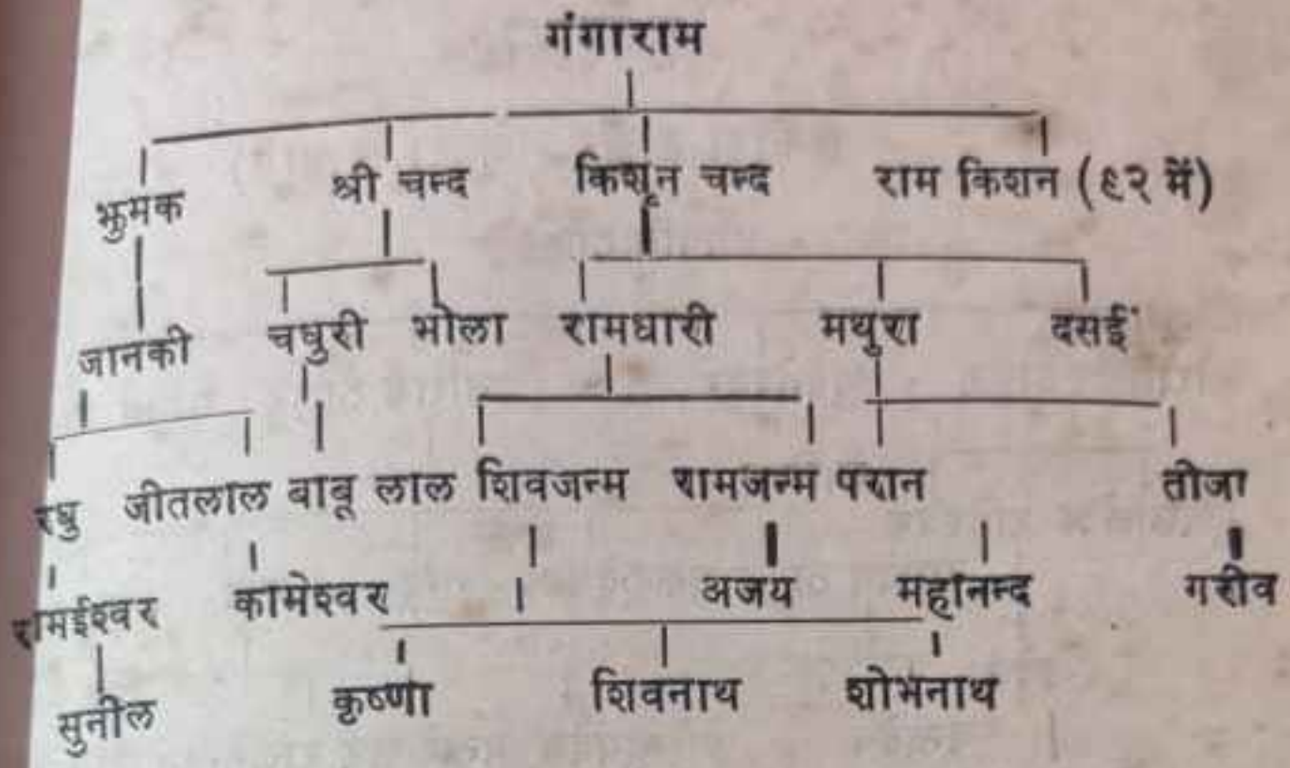
गंगाराम
भुमक
श्री चन्द
किशुन चन्द
राम किशन (९२ में)
जानकी
चघुरी
भोला
रामधारी
मथुरा
दसई
रघु
जीतलाल
बाबू लाल
शिवजन्म
रामजन्म
परान
तीजा
रामईश्वर
कामेश्वर
अजय
महानन्द
गरीब
सुनील
कृष्णा
शिवनाथ
शोभनाथ

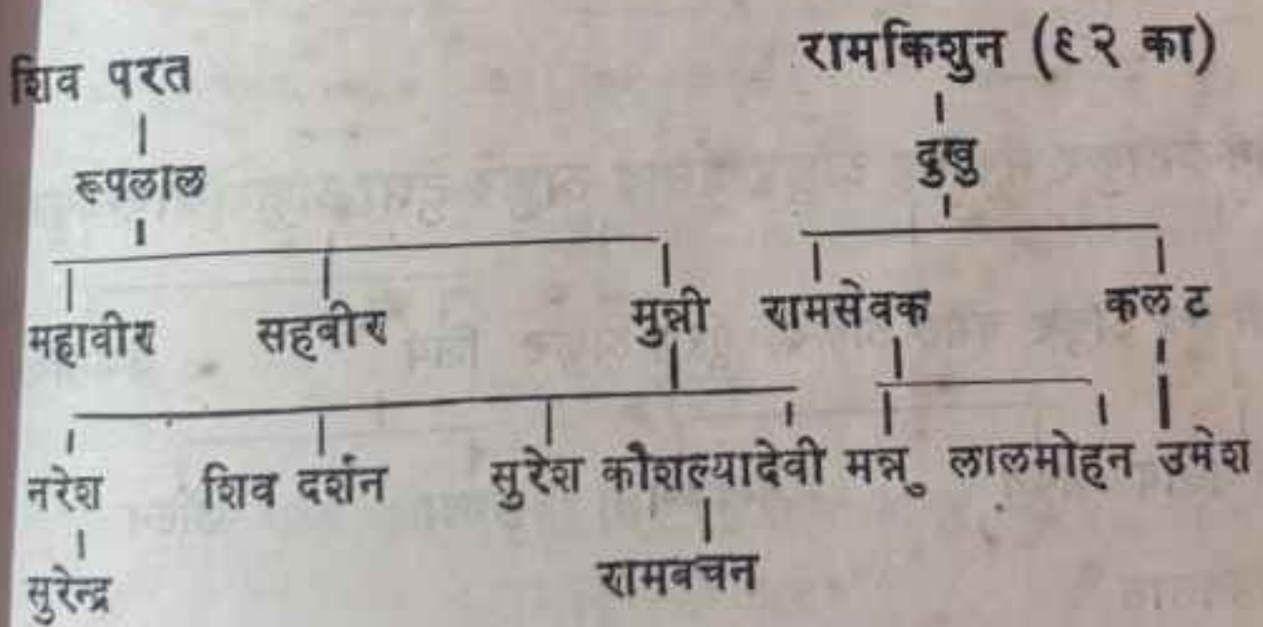
शिव परत
रूपलाल
महावीर
सहवीर
मुन्नी
नरेश
सुरेन्द्र
शिव दर्शन
सुरेश
कौशल्यादेवी
रामबचन
रामकिशुन (९२ का)
दुखु
रामसेवक
कलट
मन्नू
लालमोहन
उमेश

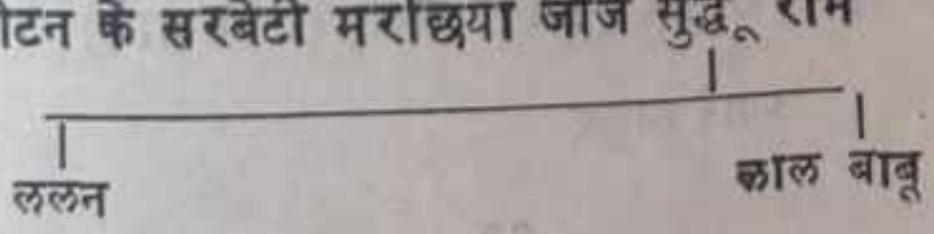
बीटन के सरबेटी मरछिया जीजे सुद्धू राम
ललन
लाल बाबू

हजाम

फकीरा ठाकुर (चिहुटा से आये)

- धनपति ठाकुर
  - गौरीशंकर ठाकुर
    - मुखलाल ×
    - रामेश्वर
      - इन्द्रदेव
        - शारंगधारी
  - भुवनेश्वर
    - शालिक ×
      - रामदेव ठाकुर
        - चन्द्रदेव
      - सकलदेव ×
      - सूर्यदेव
  - उत्तिम ठाकुर
    - नन्दू
      - चन्द्रशेखर
    - जग्गा
      - राजनन्दन
      - अखिलेश
    - जगेश्वर
  - सुत्तिम ठाकुर

गोनर ठाकुर नरसिंह ठाकुर प्रसाद ठाकुर टुन्ना ठाकुर(श्रीचन्दपुरसे)

- गोनर ठाकुर
  - सखीचन्द्र ठाकुर
    - राम प्रसाद
      - राम विलास
- नरसिंह ठाकुर
  - चमरू ठाकुर
    - मदन
    - नन्द लाल
- प्रसाद ठाकुर
  - पूरण ठाकुर
- टुन्ना ठाकुर
  - शिव
    - कृष्णा
    - छोटन
  - बैजनाथ

रामकृष्ण ठाकुर (डुमरा शेखपुरा से आये)

- प्यारे ठाकुर

तेली

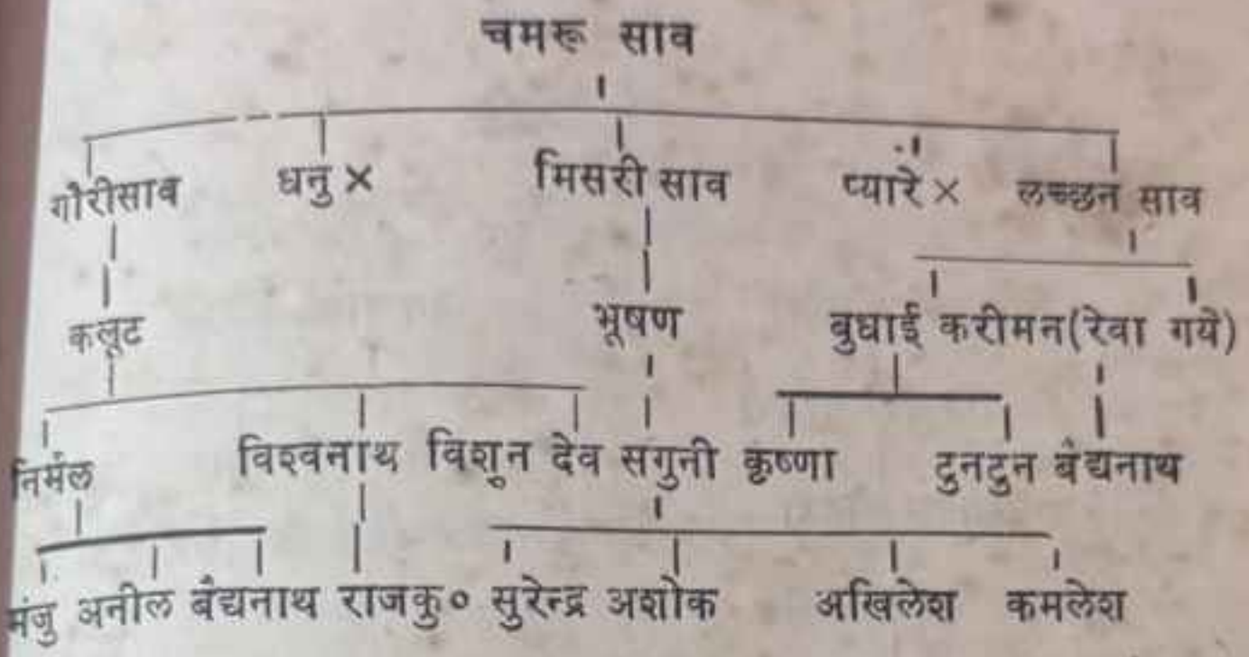

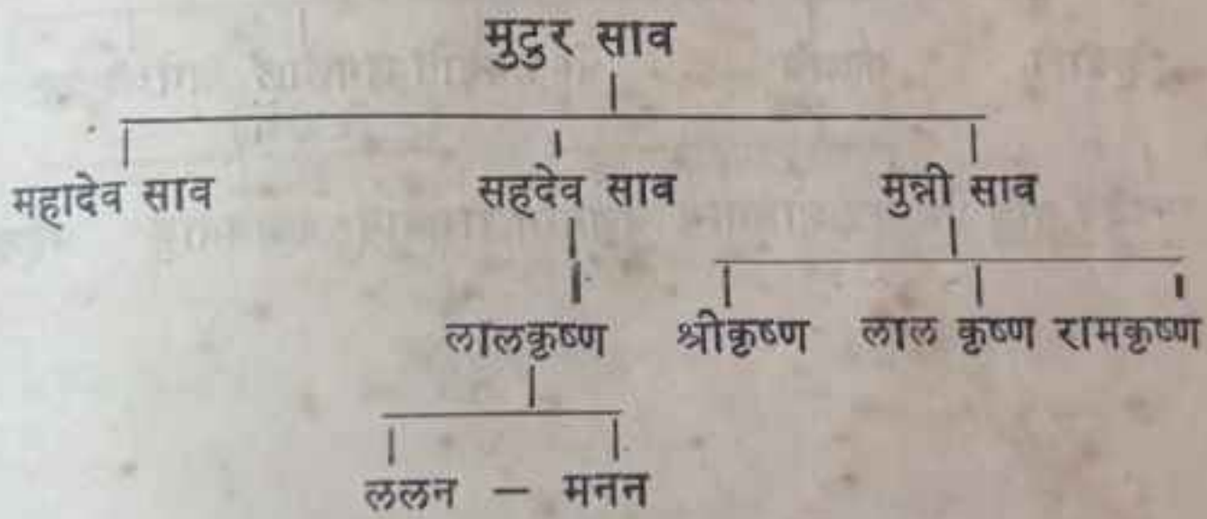

झरी साव की लड़कीं बिलरी जीजे लाल विहारी साव (राधोपुर से आये)

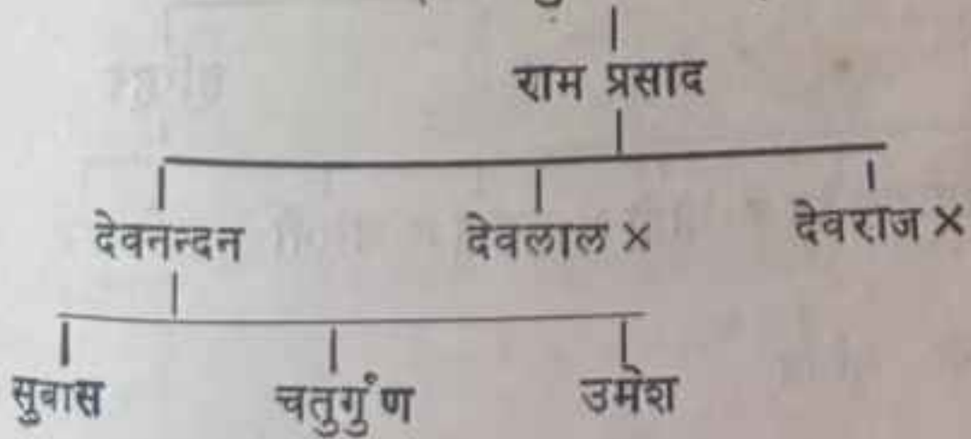

पासी

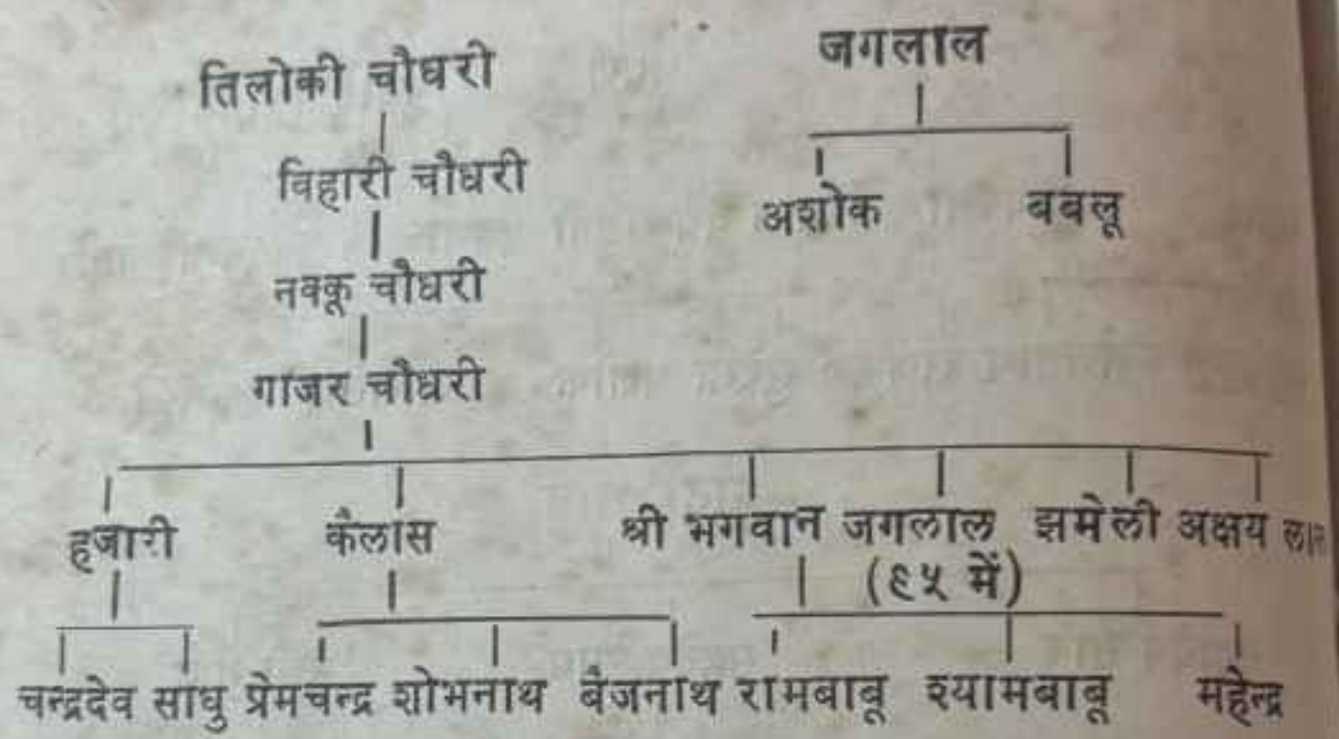
तिलोकी चौधरी
विहारी चौधरी
नक्कू चौधरी
गाजर चौधरी
जगलाल
अशोक
बबलू
हजारी
कैलास
श्री भगवान
जगलाल (९५ में)
झमेली
अक्षय
चन्द्रदेव
साधु
प्रेमचन्द्र
शोभनाथ
बैजनाथ
रामबाबू
श्यामबाबू
महेन्द्र

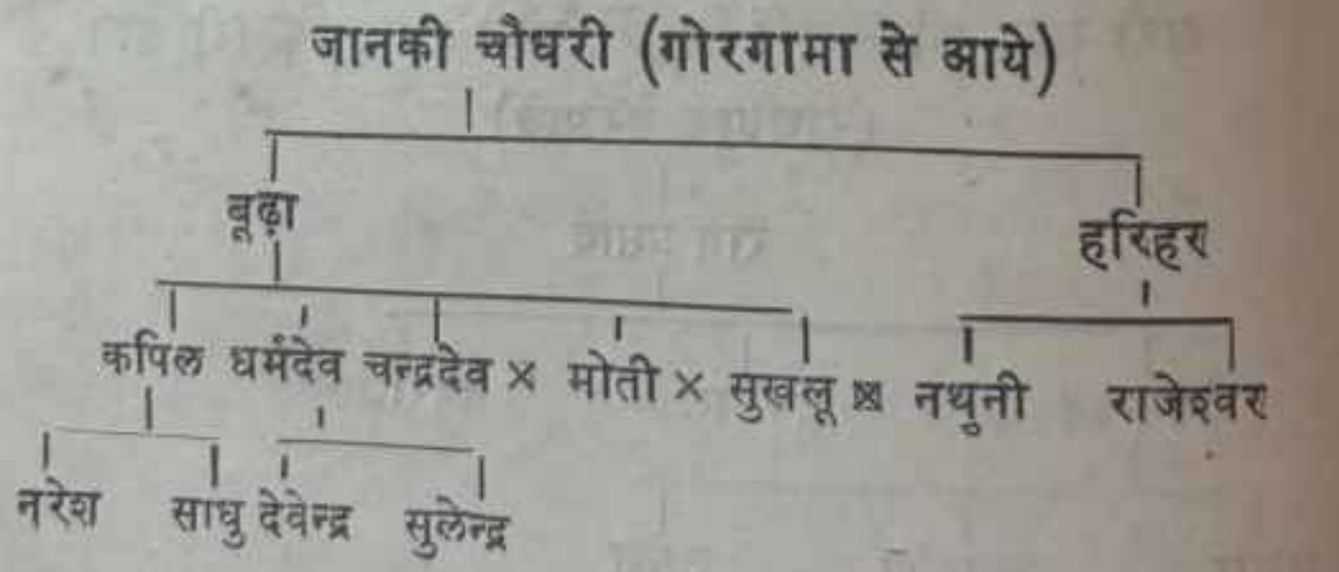
जानकी चौधरी (गोरगामा से आये)
बूढ़ा
हरिहर
कपिल
धर्मदेव
चन्द्रदेव ×
मोती ×
सुखलू ×
नथुनी
राजेश्वर
नरेश
साधु
देवेन्द्र
सुलेन्द्र

रजक (धोबी)

बुलाकी धोबी

सोवरण

कूकुर — पलंग — विलायती — व्यास

दीनानाथ — रामध्यान

अमरेन्द्र, अजीत, सुनील, दया

विलायती के बाद सब परिवार व्यापुर चले गये)।

देवचरण धोबी की बेटी रजिया जौजे बसंत (नरही पिरही से आये)

रघुवर — जय राम

अरुण, मुन्ना, मंटु, तारकेश्वर

कुम्हार

अकलू पंडित — कूकुर पंडित — काली पंडित

कुंजल, मेघू × — बरत, नन्हक × — रूपा पंडित

मोती पं०, रामाज्ञा, लछुमन, श्रवण ×, शत्रघ्न × — चन्द्रमणि पंडित

भुचेंगन पं०, उपेन्द्र, महेन्द्र, संजय — बंशी, मदन, सोहन, अकलू

राम नारायण, राम दयाल — मधेश्वर — बेदा, लुज्जू — ढोंढ़ा, भूखल

राम सज्जन

भदई पंडित
चुन्नी पंडित
राम शरण देव शरण
कृष्णा अकलू
लाल मोहन

बंगाली पंडित
सुरेश
विजय

मुसलमान (८६ पृष्ठ का शेशांष)

जान महम्मद मियाँ (चूरी हारा)

जंगी रजाक काशी बेंगा हासिम
अजीज मंजर सतार शलीम लड्डूआ शौकत अली नजामुद्दीन

जाफर मियाँ (धुनियाँ)

जमदल्ली मियाँ सुरमल्ली मियाँ ×
वली महम्मद रमजान शाहेब जान
शरीफ ऊमर महम्मद नूरमियाँ बखोरी यूसुफ उशमान सुलेमान लुकमान
महमुद्दीन चमन समसुद्दीन इसलाम

काशी नेऊरा, यूलुफ फुलवारी ऊमर बिहटा तथा नूरमियाँ टाटा रहते हैं।

मुसहर

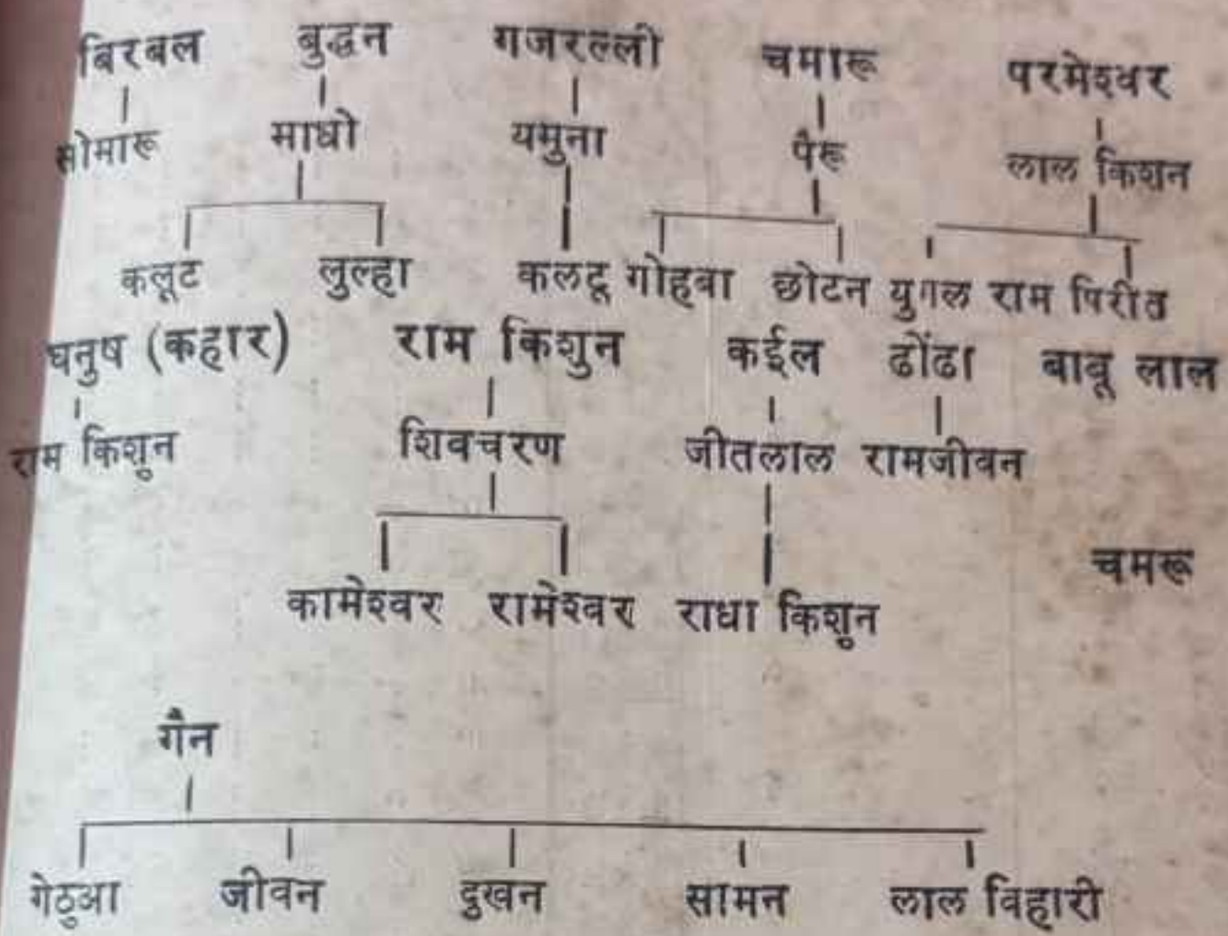
बिरबल
बुद्धन
गजरल्ली
चमारू
परमेश्वर
सोमारू
माधो
यमुना
पैरू
लाल किशन
कलूट
लुल्हा
कलदू
गोहबा
छोटन
युगल राम
पिरीत
धनुष (कहार)
राम किशुन
कईल
ढोंढा
बाबू लाल
राम किशुन
शिवचरण
जीतलाल
रामजीवन
कामेश्वर
रामेश्वर
राधा किशुन
चमरू

गैन
गेठुआ
जीवन
दुखन
सामन
लाल विहारी

डोम

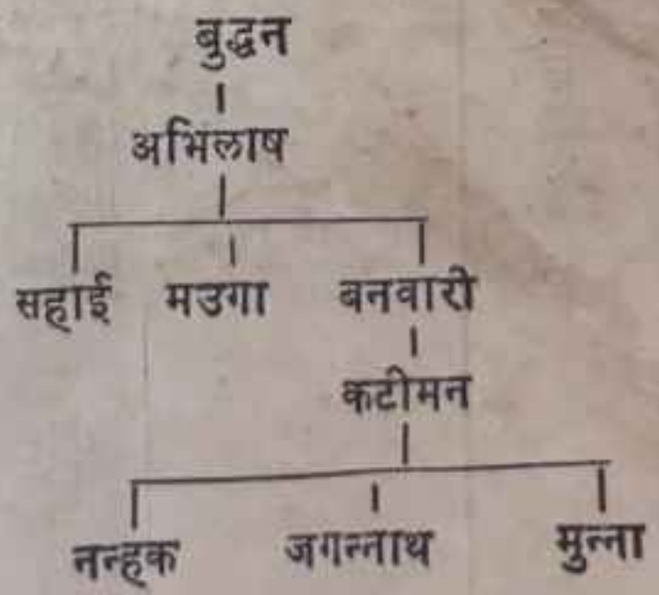
बुद्धन
अभिलाष
सहाई
मउगा
बनवारी
कटीमन
नन्हक
जगन्नाथ
मुन्ना

'इ'—७. (क) विद्यार्थियों की संख्या एवं मर्दुमशुमारी—

पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या—२६८ दो सौ अड़सठ, ३१ दिसम्बर १९७५

जाति	पहला वर्ग		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		बी० ए० नं० १	बी० ए० सी० नं० १	आइ० ए० सी० नं० २	आइ० ए० सी० नं० ५
	लड़का	लड़की	लड़का	लड़की	लड़का	लड़की	लड़का	लड़की	लड़का	लड़की	लड़का	लड़की	लड़का	लड़की	लड़का	लड़की	लड़का	लड़की	लड़का	लड़की	लड़का	लड़की				
१. भूमिहार ब्राह्मण	१८	१३	८	७	६	८	१३	५	१६	८	१४	३	८	४	११	२	७	३	९	१	११	१	३	१	१	१
२. शाकद्वीप ब्राह्मण	...	...	...	२	...	...	५	...	...	...	२	...	१	...	२	१	...	...	...	—	२	...				
३. ब्रह्म भट्ट	...	...	...	—	...	...	—	...	...	...	...	...	१	...	...	१	...	...	...	...	...	...				
४, यादव	२	...	...	...	१	...	...	...	३	...	...	...	...	...	१	१	...	...	१	...	...	...				
५. कोइरी	४	२	...	...	...	...	३	...	४	...	१	...	...	...	...	१	२	...	...	...	...	...				
६. कहार	...	...	१	...	१	...	...	...	...	...	...	...	...	..	...	...	—	...	...	...	...	...				
७. बढ़ई	१	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	—	—	—	—	...	—				

| | | |

जाति	गृहसंख्या	चूल्हा	मर्द	साक्षर	औरत	साक्षर	औ० म० जोड़	गाय	दूध किलो	भैंस	दूध	बाछा	बाछी	पाड़ा	पाड़ी
१ भूमिहार ब्राह्मण	१८३	२०२	७५६	५५६	६६७	२३२	१४२३	५४	७८॥.	७६	२४५	२०	४१	४२	४८
२—शाकद्वीपी ब्राह्मण	१५	२५	९३	७२	६८	३४	१५१	७	३॥.	१	×	४	×	×	×
३ ब्रह्मभट्ट	२	२	३	३	२	१	५	×	×	×	×	×	×	×	×
४ यादव	२८	३७	११६	३३	१०२	३	२१८	३	×	२७	२७	२	४	४	२४
५ कोइरी	४३	४३	११७	५३	१०३	३	२२०	६	२	११	×	६	×	२	६
६ कहार	२८	३७	१०९	३०	१०४	२	२१३	७	६	१९	१०	१	६	४	६
७ बढ़ई	३	४	१३	६	१४	१	२७	१	×	१	×	×	२	×	×
८ कान्दू	२१	३३	९४	३३	७५	४	१६५	३	×	२	×	४	४	×	×
९ गरेड़ी	११	१४	३८	१	२७	२	५८	१	×	+	×	३	२	२	५
१० बनियाँ	९	१२	३९	१५	१९	२	५८	१	×	×	×	[illegible]	[illegible]	×	×

१२	हजाम	४	४	२०	८	१५	३	३५	×	×	×	×	×	१	×	१
१३	पासी	२	४	२१	८	१५	३	३६	१	×	५	×	×	×	×	२
१४	तेली	७	९	३२	१०	१६	×	४८	२	×	१	×	×	२	×	×
१५	कुम्हार	६	१०	३०	१०	२७	×	५७	×	×	३	×	×	×	×	३
१६	चमार	३५	४९	९४	३	९२	×	१८६	३	३	६	×	३	×	१	×
१७	दुसाद	२६	१७	६२	५	५९	×	१२१	×	×	८	×	×	१	×	×
१८	धोबी	२	३	१२	६	१४	२	२६	×	×	×	×	×	१	×	×
१९	मुसहर	१२	१२	२२	×	२९	×	५१	×	×	×	×	×	×	×	×
२०	मुसलमान	२	९	२५	२	१६	×	४१	१	×	५	×	×	×	१	३
२१	डोम	१	१	४	×	४	×	८	×	×	×	+	×	×	×	×
		↑५४७	↑५६३	↑१७१२	↑८५८	↑१४८१	↑२१०	↑३१९३	↑९१	↑९३	↑१७०	↑२८२	↑५२	↑६५	↑३६	↑९८

विवाहित लड़कियों को छोड़ कर अविवाहित लड़कियों की गिनती स्त्री के खाने में ली गई है

	बैल	बकड़ा	बकरी	पालतू कुत्ता	तोता	मुर्गा	मुर्गी	सूअर	कुर्सी	जनानी कुर्सी	घड़ी	साइकिल	रेडियो	बन्दूक		
१ भूमिहार ब्राह्मण	१९८	१३	८	२२	११	×	×	×	९७	८६	१५२	१०५	५२	२	ट्रक	३
२ शाकद्वीपी ब्राह्मण	८	×	×	×	×	×	×	×	३	८	२५	९	११	×	आँटा चक्की	३
३ ब्रह्मभट्ट	×	×	×	×	×	×	×	×	×	१	१	×	×	×	आयलई जिन	६
४ यादव	२२	×	×	१	×	×	×	×	७	×	५	३	५	×	पावर टीलर	२
५ कोइरी	२६	×	×	×	×	×	×	×	२	३	५	४	१	×	सिलाई मशीन	६
६ कहार	४	४	५	×	×	×	×	×	×	१	७	२	१	×	बिजली पंखा	८
७ बढ़ई	५	×	×	×	×	×	×	×	×	१	×	×	×	×	ट्रक्टर	४
८ कान्दू	११	१	१४	×	×	×	×	×	२	×	४	१	×	×	धानमशीन	८
९ गँरेड़ी	४	३	३	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	गेहूँ मशीन	९
१० बनियाँ	×	×	×	×	×	×	×	×	×	२	८	३	४	×	टेक्सी प्राइवेट	१
११ सिंदुरिया	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	मोटरसाइकिल	२
१२ हजाम	१	×	×	×	१	×	×	×	१	×	×	×	×	×	[illegible]	[illegible]

१३	पासी	×	×	×	×	×	×	×	×	१	×	४	३	२	×	[illegible]	[illegible]
१४	तेली	४	×	×	×	×	×	×	×	×	×	१	२	⊠	×	रेहट	२
१५	कुम्हार	२	×	१	१	×	×	×	×	१	×	१	१	१	×	दूध मशीन	३
१६	चमार	१	×	१६	×	×	२१	१९	×	×	×	×	×	×	×	नलकूप-प्राइवेट	१९
१७	दुसाध	३	८	२०	२	×	२	३	×	×	×	×	×	×	×	नलकूप सरकारी	७
१८	धोबी	१	×	×	×	×	+	×	×	⊠	×	×	×	×	×	धान मशीन पैडीथ्रेयर	२
१९	मुसहर	×	१	२	१२	×	६	२२	५८	×	×	×	×	×	×	टायर गाड़ी	२
२०	मुसलमान	×	२	२	×	×	⊠	१	×	×	१	×	×	×	×	बैलगाड़ी	२१
२१	डोम	×	×	×	१	×	३	५	×	⊠	×	⊠	×	×	×	कुट्टी मशीन ऊख मशीन	११० १४
		२९०	३२	७१	३९	१२	३२	५०	५८	११४	१०३	२१३	१३३	७७	२		

(ख) सर्वेक्षण-नाप के अनुसार 'पयनाल' की जमीन का क्षेत्रफल एवं अन्तर-भेद—

		ए०	डि०	
नगदी	जोतवाला जमीन	९२०	५५	नगदी—७९३९ रु० ९ पैसा
	बिना जोत	१६	११	
भावली	जोत	१२४	१८	
	बिना जोत		३१	
बिना मालगुजारी अन्यकिसिम का	जोत	१०१	७९	
	बिना जोत		७५	
	जोतवाला	७३९	४६	
गैरमजरुआ	बिना जोत	१७३	६१	
		२०७६ –	७६	

पयनाल के हरेक मौजे का कुल रकबा ४४८४ बीघे का लोग बताते हैं। २०७६ एकड़ ७६ डि० का ४१०९ बीघा १६ कट्ठा ६ धूर होता है। मौजा बेला भी इसके अन्तर्गत था। हो सकता है, उसको मिलाकर ही ४४८४ बीघा होगा।

गाँव के बसगित जमीन का क्षेत्रफल लगभग ६०-६१ एकड़ है।

पयनाल मौजा के अन्तर्गत छः और छोटी-छोटी बस्तियाँ थीं—१—मिलकोचक २—अहियापुर ३—महमदपुर ४—भगवतीपुर ५—समस्तीपुर एवं ६—हाजी डीवर। समस्तीपुर और हाजी डीवर अब नहीं है।

८. (क) नवीन गढ़ तथा उसकी बनावट—

अब मैं नवीन गढ़ के सम्बन्ध में लिखना चाहता हूँ। पहले लिख चुका हूँ कि जब वंश की वृद्धि होने लगी तब प्राचीन गढ़ से धीरे-धीरे लोग पूरब, पश्चिम और उत्तर की ओर बढ़ने लगे। अभी मैं जिनका इतिहास लिख रहा हूँ वे पूरब की ओर बढ़े। वहाँ से फिर नेहाल सिंह एवं फत्ते सिंह उत्तर की ओर बढ़े और आज हुलास प्रसाद और साधु शरण जिस मकान में रह रहे हैं; उसी में आकर बसे। फत्ते सिंह के वंशज हैं आज जयेन्द्र प्रसाद, शतीश कुमार, हुलास प्रसाद, शंभु प्रसाद तथा रणजीत प्रसाद सिंह, सच्चू प्रसाद (सच्चिदा नन्द), बृजनन्दन प्रसाद, भोला प्रसाद सिंह वगैरह नेहाल बाबा के। फत्ते सिंह, नेहाल सिंह और फेंकू सिंह सहोदर भाई थे। फेंकू सिंह के वंशज आज तृपित नारायण इन्द्रदेव सिंह, रामपुकार सिंह, मोहन सिंह, ईश्वर चन्द्र वगैरह हैं। नेहाल सिंह के वंशज शिव सेवक सिंह

शिव शंकर सिंह और हुमेल सिंह सहोदर भाई हुए। शिव सेवक सिंह के लड़के विशेशर सिंह (नन्हकू बाबू) हुए। विशेशर सिंह के चार लड़के हुए। वंशावली में स्पष्ट देखें। पुराना गढ़ से पहली उड़ान बेंगा सिंह के पास। दूसरी उड़ान में शिव सेवक सिंह उस मकान में आये जिसमें आज साधु शरण रह रहे हैं। यहाँ तक तो लोग शामिल रहे। बाद में शिव सेवक सिंह उस मकान में आकर रहे जिसमें आज यज्ञ नारायण मिश्र एवं रवीन्द्र मिश्र बसे हुये हैं। उसका प्लौट न० ४७५२ है। साधु शरण के किला से हुमेल सिंह यज्ञ नारायण मिश्र से उत्तर घर बनाकर रहे। इसमें इस समय भोला प्रसाद वगैरह रह रहे हैं। शिव शंकर सिंह साधु शरण वाले किला में से निकल कर नया गढ़ के दक्षिण आये। शिव शंकर सिंह के लड़के राम शरण सिंह हुए। राम शरण सिंह की बेटी अधिकारी कुँअर हुई। अधिकारी कुँअर के शौहर का नाम गोपाल शरण सिंह था। ये परसा गढ़, जिला छपरा के रहने वाले थे। गोपाल शरण सिंह के लड़के बैजू प्रसाद हुए। बैजू प्रसाद के लड़के राज देव नारायण (शिवजी) हुए। शिव जी के दो लड़के हुए—राधो प्रसाद सिंह और श्यामा प्रसाद सिंह। ये दोनों भाई यहाँ की सम्पत्ति खत्म कर के परसा चले गये। इनके किले का नाम 'बिचली हवेली' था। हुमेल सिंह वाला किला 'नइकी हवेली' कहलाया। जिस समय शिव सेवक सिंह और शिव शंकर सिंह नये गढ़ में आये उस समय वर्त्तमान् शंभु प्रसाद और कैलास प्रसाद के पूर्वज 'बथानी' में आये।

शिवसेवक सिंह
|
विशेशर नारायण सिंह (नन्हकू बाबू)
|
शमशेर ना० सिंह | देव ना० सिंह | ब्रह्मदेव ना० सिंह | हरदेव (उदय) ना० सिंह ×
|
देवी प्रसाद | जनककिशोरी | कामेश्वर ना० सिंह ×
|
मंगल प्रसाद | पृथ्वी प्रसाद | कमलेश्वरी (बच्ची)

शिव सेवक सिंह की स्त्री का नाम था फूल कुँअर। पिता के मर जाने के बाद खजाने के १५०० रुपयों को तीनों भाइयों ने आपसमें बराबर-बराबर

बाँट लिया। नेहाल बाबा के लड़के शिव सेवक सिंह हुए। इन्होंने ही गढ़ का निर्माण किया।

नये गढ़ की बनावट :—गढ़ आयताकार था उत्तर दक्षिण लम्बा था। ज्योतिषियों से शोधवा कर उसमें नींव पड़ी थी। पहले वह जमीन परती थी। उसमें जौ बोया गया। जब वह कुछ बड़ा हुआ तब मंगल-[illegible] की दृष्टि से उसे गौओं से चरवाया गया। गढ़ के आहाते के चारों [illegible] फिटिन के आने-जाने भर चौड़ा रास्ता था। दक्षिण से लेकर कुछ पूरब, 'नई हवेली' तक तो सरकारी ही सड़क थी। गढ़ तो ढह गया, लेकिन आंगन और आंगन से ओसारे पर जाने वाली सीढ़ी, तुलसी-चबूतरा आदि ठीक ही हैं। [illegible] की ईंटें भी घर के सतह तक अभी लगी हुई हैं। आंगन की सतह से अभी भी स्पष्ट है कि यह रास्ते की सतह से एक पोरसा ऊँची रही होगी। जब हम सी० बी० क्लास में पढ़ते थे तब यह गढ़ आबाद था। गढ़ के सिरिस्ते के फाटक पर ही पढ़ाई होती थी। उसी समय उसका उपयोग बैठक के रूप में हो गया था। हम गढ़ के अन्दर कभी नहीं गये। हाँ, शिवजी के किते में होकर पढ़ने के लिये आते-जाते थे। उस किते से एक रास्ता दूर तक निकला हुआ था जो छावनी के अन्दर-ही-अन्दर था। हमलोग उसमें प्रवेश करते थे और जब बम-बम बोलते थे तब उसमें से भी बम-बम की आवाज निकलती थी। गाँव में एक वयो-वृद्ध व्यक्ति पं० दुग्धेश्वर मिश्र हैं। उनसे मेरा अधिक सम्पर्क रहता है। एक दिन बात के सिलसिले में गढ़की चर्चा चली उनसे मैंने कहा कि गढ़ का इतिहास लिखना चाहता हूँ, परन्तु उसकी जानकारी मुझे अधिक नहीं है। पण्डित जी बोले कि गढ़ तो खत्म हो गया। मैं अपने पिता के साथ गढ़ में जाया करता था; क्योंकि मेरे पिता जी (पं० ब्रह्मदेव मिश्र व्याकरणाचार्य) वहाँ के आचार्य और पुजारी थे। उनके पास व्याकरण पढ़ने के लिए दूर-दूर से विद्यार्थी आया करते थे। गढ़ के उत्सव वगैरह मेरे देखे हुए हैं और उनकी यादगारी अभी तक भी बनी हुई है। चलिये, वहाँ पर निरीक्षण कीजिये। गढ़ का नक़्शा आदि मैं बता दूँगा"। बस क्या था; मैं तो आनन्द-विभोर हो गया और तत्क्षण वहाँ पहुँच गया। वहाँ पहुँचने पर अन्य सहहोगी भी मिल गये। एक तो गढ़ के ही खानदान के रणजीत प्रसाद सिंह (बच्चू बाबू) और दूसरे ध्रुव बाबा, जो अपने को लगभग १०० वर्ष की आयु के बताते हैं, मिले। ध्रुव बाबा का मकान गढ़ के पश्चिमि रास्ते के सटे पश्चिम तरफ है। अभी वे चलते-फिरते हैं। किसी तरह उनको भी ढहे हुए गढ़ पर चढाया गया और बच्च

साथ भी साथ लग गये। ध्रुव बाबा को तो बहुत सी बातों की जानकारी थी ही, बच्चू बाबू भी बोले कि "गढ़ की हिस्ट्री हमें बहुत मालूम है। हमारे बाबू जी यहाँ की सारी कहानियाँ कहते थे। मुझे बहुत बातें याद हैं"। अब इन लोगों के सहयोग से मुझे बहुत बल मिल गया। बच्चू बाबू बोले कि "कुछ पुरानी कागज़ातें भी मेरे पास मौजूद हैं। मैं उसे आपको दिखलाऊँगा"। पण्डित जी तो यहाँ से दिखाने के लिये बड़े उमंग से गये, लेकिन जाकर वहाँ के दृश्य वर्णन करते-करते रो पड़े। हाँ, जहाँ इन्द्रासन-तुल्य भवन और नन्दन वन-सी फुलवारी (वाटिका) थी, वहाँ आज कांटा-कुश उपजे हुए हैं। यह पद कहने लगे-'वसुधा ! तू काहू की न भई' इत्यादि।

मकान के पश्चिम से लगायत दक्षिण, जहाँ गढ़ था वहाँ चौड़ी फुलवारी थी और नैऋत्य कोण में पाखाना था। गढ़ के किते से दक्षिण फुलवारी में जाने की एक ऐसी खिड़की बनी थी कि फुलवारी में टहलने वालों को गढ़ के भीतर का भाग नजर न आये। गढ़ में प्रवेश करने का प्रधान फाटक पश्चिम तरफ था। तीन ड्योढ़ी पार करके ओसारे में पहुँचते थे। फाटक से प्रवेश करने पर फुलवारी वाला हिस्सा मिलता था। दूसरी ड्योढ़ी पार करने पर मकान का सिलसिला मिलता था दूसरी ड्योरी ले दक्षिण तरफ सामान रखने का घर उसके बाद ठाकुर जी का घर तथा एक घर और था। इसमें पूजा-पाठ की सामग्री रहती थी। अनन्तर दक्षिण से लेकर पूरब तक एक बड़ा हॉल था। इसमें दर्शक लोग बैठते थे। उसी हॉल में पश्चिम तरफ ठाकुर जी की मूर्त्ति सजाकर श्रावण मास में झूला होती थी। जहाँ झूला झूलने के लिये ठाकुर जी का स्थान बना था, उससे उत्तर वाले घर से होकर स्त्रियाँ पूजा करने जाती थीं। अन्य भाग में घर-ओसारे थे। आंगन के वायव्य कोण में तुलसी जी का चबूतरा आज भी एकदम ठीक है। सिर्फ रंग फीका पड़ गया है। उसमें तुलसी जी के हरे पौधे भी देखे। उसी आंगन में अभी पहले का बना हुआ एक कुँआ भी है। मालूम होता है, बच्चू बाबू के घर के लोग उस कुँएँ पर स्नान कर के तुलसी जी में जल दिया करते हैं। बच्चू बाबू के जनानी किते का निकास पश्चिम तरफ ही गढ़ के आंगन में है। गढ़ तीन महला था। गढ़ की दीवार में सखुए की लकड़ी को एक-एक या डेढ़-डेढ़ हाथ पर पट औ चित्त कर लोहे की कील से कसा गया था। १५ जनवरी १९३४ ई० को २ बज कर १५ मिनट पर जो भूकम्प हुआ था, उसमें कहीं दीवार फटी नहीं थी। छावनी तो खपड़े की ही थी लेकिन पाटन बिलकुल सखुए की लकड़ी की थी। ओलती के किनारे टोंटिया और टोंटिये के नीचे चारों तरफ सभी

ओरियों में लकड़ी के मुहब्बत रंगीन करके जड़े गये थे। मुहब्बत में सभी जगह ओरियों में जोड़े-जोड़े शीशे के ग्लास रंग-बिरंग के बैठाये गये थे। वे शीशे के ग्लास रखने के लिए उससे भी कुछ बड़े साइज के ग्लास पीतल के तार से जालीदार बना कर लगे रहते थे ताकि उसमें शीशे के ग्लास चाहें, रख दें या निकाल लें। ग्लास में मोमबत्ती जलाई जाती थी। उससे रंग-बिरंग के प्रकाश निकलते थे। मोम बत्ती रोज जलाने के लिए खास नौकर थे। जहाँ-तहाँ घर और ओसारे में झाड़ फानूस तथा तरह-तरह के रंगों के शीशों के बने कूंड़े लटके रहते थे। मुझे भी याद है कि जब गढ़ के फाटक पर पढ़ते थे तब सिरिस्ते, जहाँ रैयतों की झंझटों के फैसले होते थे झाड़ फानूस और कूंड़े में लगे हुए शीशे की झालरें टूट-टूट कर गिर जाती थीं और हम लड़के जब एक आँख बन्द करके उन्हें देखते थे तब उनमें इन्द्रधनुष-सा आनन्द मिलता था। एक-एक अंगुल के कई पहल की झालरें रहती थीं। इस बैठक में बिन्देश्वरी प्रसाद (बिन्दा प्रसाद) बैठते थे। ये देव नारायण सिंह के दामाद थे जनक किशोरी के शौहर। इनका घर करनौती, जिला मुजफ्फरपुर, स्टेशन-शाहपुर पटोरी, थाना महनार था। यह बैठक जनानी किते से पूरब थी। वहाँ से जनानी किता में जाने के लिये घूम कर जाना पड़ता था। बिन्देश्वरी प्रसाद जलपान करने या खाने के समय एक छोटी सी हथिनी पर चढ़ कर गढ़ की बड़ी फुलवारी के उत्तर वाले रास्ते से होकर गढ़ के पछिआरी फाटक से महल में पहुँचते थे। सिरिस्ता वाला किता भी बड़ा था। दक्षिण सिरिस्ता था और पूरब साइड में पच्छिम से पूरब तरफ ओसारे थे। उसी ओसारे के भीतर एक हाथीखाना था। उसमें हथिनियाँ रहती थी रमना में फूल-पत्ती, नीबू इत्यादि लगे थे। वायव्य कोण में पाखाना था। देवी प्रसाद को पढ़ने के लिये ले जाने वाली जो हथिनी थी, उसका घर फुलवारी के वायव्य कोण पर था और उस का नाम था 'पवन प्यारी'। एक दिन कुछ लोगों ने इस प्रकार मजाक किये— जब बिन्देश्वरी प्रसाद हथिनी पर चढ़ कर महल जा रहे थे तब एक आदमी 'पवन प्यारी' के घर के पास ही घोड़ी जमाने लगे। हथिनियाँ घोड़ी से बहुत भड़कती थी। वह घोड़ी को देखकर भाग चली। बिन्देश्वरी प्रसाद बड़े सीधे स्वभाव के थे। वे बहुत डर गये और उस दिन से अब पैदल ही महल जाने लगे। उस रास्ता को छोड़ कर अब शिवजी वाला रास्ता से जाने लगे, क्योंकि यह रास्ता नजदीक पड़ता था। नौकर हनुमान उनको छाता लगा कर ले जाता था ध्रुव बाबा कहते हैं कि "गढ़ का फाटक और मेरा दरवाजा आमने-सामने पड़ता

ऊपर जनक किशोरी मचिया पर बैठी हुई गुड़गुड़ी पीती रहतीं थी और नीचे हमारी माँ। दोनों की आपस में बातचीत होती रहती थी।

(ख) बड़ी फुलवारी एवं बाग

गढ़ और सिरिस्ते से उत्तर-पश्चिम वाले रास्ते से पूरब वाले रास्ते तक बहुत बड़ा बाग और बाटिका थी। उसी बाग के अग्नि कोण में मोती प्रसाद नामक हाथी का हाथीखाना था। अन्दाज लगाया जाता है कि वह बाटिका एवं फुलवाड़ी दो बीघे से ज्यादा में थी। आज वह खेत है। उसमें सिलसिलेवार पौधे और फूल लगाये गये थे। श्री फल (बेल), कमरख (तिनफेंकिया) लीची, आम, आँवला, हरपरउरी इत्यादि के वृक्ष क्रमानुसार कतार-के-कतार लगे थे। बेल की कतार जो उत्तर साइड में पश्चिम से पूरब तक चली गयी थी, अभी १०-१५ वर्ष ही हुए हैं; आबाद थी। बाटिका दो हिस्से में विभक्त थी। दोनों हिस्से में उत्तर तरफ बाग़ और दक्षिण तरफ फुलवाड़ी थी। पूरब वाला हिस्सा मर्दानी था और पश्चिम वाला जनानी। जनानी-फुलवाड़ी में जाने के लिए जनानी किता से ही मार्ग बना हुआ था। वह फुलवाड़ी जनानी मकान से ठीक उत्तर पड़ती थी। मिट्टी की चहारदीवारी से घिरी थी और उस पर खपड़े की छावनी थी। रंग- बिरंग के फूलों के पौधे लगाये गये थे। बैठने के लिये बीच में चबूतरा बना था। पुरबारी बाग़ के अन्दर ही पूरब तरफ 'महारानी दुर्गाजी' का मन्दिर था। इस फुलवाड़ी से पूरब आगे तक आज मकान बन गए। इसलिये गाँव से कुछ दूर पर नन्हकू सिंह ने एक दूसरा मन्दिर बनवा कर उसमें महारानी जी की स्थापना कर दी; क्योंकि गांव से पूरब तरफ ही महारानी जी का मन्दिर रहना लोग अच्छा समझते हैं। देवीं जी के लगे पूरब 'चकरा' (पानी का खजाना) है। उसमें लोग हाथ-पैर धोकर पूजा करने जाते हैं। इसी चकरा में पूरब तरफ 'गोपाल घाट' है। भादो मास में भगवान के दधिकाँदो होने वहीं जाता था। रास्ते में लोग दही-हलदी का छिड़काव करते जाते थे। वहीं गोपाल जी को स्नान कराया जाता था। आज भी वह घाट 'गोपाल घाट' कहलाता है। यह दूसरा मन्दिर भी मिट्टी का ही खपरैल था। अब पक्का बन गया है। गढ़ की फुलवारी की रक्षा और सिंचाई के लिए माली नियुक्त थे। बीच बाग़ में कुँआ था। मालिक की ओर से यह घोषणा कर दी गई थी कि माली के बिना हुक्म के कोई फूल या पत्ता नहीं तोड़ सकता है। बाग़ और फुलवाड़ी इस ढंग से लगाये गये थे कि नवागन्तुक उसको देखने जाते थे।

अमरसेन मजिस्ट्रेट दानापुर आठ रोज पर नन्हकू बाबू के बंगले पर आते। यह क्रम कुछ दिनों तक चला। वे भी फुलवारी घूम लिया करते थे। इसका विस्तृत वर्णन मैं आगे चलकर करूँगा।

शिव सेवक सिंह के रहते ही विशेशर सिंह (नन्हकू बाबू) खजाने से १२०० पन्द्रह सौ रुपये लेकर पटना चले गए। वहाँ एक सदराला के यहाँ रहने लगे और जितना मौजा नीलाम हो, उसे खरीदने लगे। पहले एक पैसा भी माल बकाया रहने पर समूचा स्टेट नीलाम हो जाता था। इस तरह उपयुक्त पैसे में ये ३३ मौजे नीलाम ले चुके। मौजे की आमदनी से, सूद बढ़ाते-बढ़ाते, एक लाख छत्तीस हजार रुपये जमा कर लिए। शिव सेवक सिंह और विशेशर सिंह ने मिलकर निम्नाङ्कित नामों से नीलाम खरीदे—

(ग) गढ़ ने कहाँ-कहाँ, कब और कितने मौजे की खरीद की—

	तारीख	मौजा	किससे	खरीदनेवाला
१.	१-३-३४	मोस्तफापुर मौजा	रामा सिंह	
२.	१८-९-६२	,,	आनन्द लाल	
३.	२८-८-६३	,,	गिरधारी सिंह	
४.	२-६-५९	बराह खास	—	शिवसेवक सिंह
५.	६-१०-३९	,,	—	,,
६.	७-७-७१	,,	—	शमशेर नारायण सिंह
७.	१६-६-६९	मौजा महमदपुर	—	विशेशर नारायण सिंह
८.	२३-५-७०	,,	—	नव लाख कुँवर
९.	६-१०-४७	,,	—	शिव सेवक सिंह
१०.	२-५-१८७०	,,	—	नव लाख कुँअर
११.	१८-८-१८५७	,,	—	मो० फूल कुँअर
१२.	११-७-४४	,,	—	शिव सेवक सिंह
१३.	२०-१०-३३	,,	—	राम शरण सिंह
१४.	९-४-३९	,,	—	शिव सेवक सिंह
१५.	३१-१२-६९	लछुमनपुर	—	विशेशर सिंह

	तारीख	मौजा	किससे	खरीदनेवाला
१६.	२-१-६६	लछुमनपुर बेला	—	विशेशर नारायण सिंह
१७.	१-४-६२	,,	—	,,
१८.	५-७-१८६२	गौसपुर रेवा	—	शिव सेवक सिंह
१९.	५-२-५७	निजामपुर कोरावां	—	मो० फूल कुँअर
२०.	२२-१२-४५	,,	—	त्रिभुवन सिंह
२१.	२-७-६६	,,	—	नकछेद सिंह
२२.	१३-११-६२	इब्राहिमपुर परसा	—	विशेशर सिंह
२३.	२६-७-६९	जयसिंहपुर हिरामन	—	विशेशर सिंह
२४.	५-८-७९	,,	—	शमशेर सिंह
२५.	१६-१२-५५	,,	मिलकी चक	शिव सेवक सिंह
२६.	१६-१२-५५	,,	—	,,
२७.	१६-१२-५५	,,	—	,,
२८.	२४-१२-५५	,,	—	,,
२९.	५-७-६१	जयपुर हथिया कान्ड	—	शमशेर नारायण
३०.	२९-४-६७	परमानन्दपुर ईसर	—	विशेशर सिंह
३१.	२९अषाढ़ सन् १२७२ फसली	मौजा पयनाल खास	—	फूल कुँअर
३२.	५जून १८६६	मौजा बराह खास	—	फूल कुँअर

५२६१ रु० में १४ आना ५ पाई

३३. मौजा महादेवपुर (उर्फ माधोपुर, परगना कसमर, जिला सारण में झमन लाल, रतन लाल, कुंज बिहारी लाल और राजबली सिंह का मौजा था। इस मौजा में से आठ आने हिस्सा की खरीद शिव सेवक सिंह की भार्या फूल कुँअर ने २४६७५ (चौबीस हजार छब सौ पचहत्तर) रुपये में ३० सितम्बर १८५८ ई० को की : उपयुक्त राशि मोती प्रसाद नामक हाथी पर लाद कर छपरा-कचहरी भेजी गई थी। हाथी चिराग-बत्ती के वक्त कचहरी में पहुँचा था। हाकिम (सदराला साहब) कचहरी में वर्त्तमान थे; क्योंकि यहाँ से जुगल सिंह पहले ही वहाँ जाकर

सदराला साहब से निवेदन कर चुके थे कि सरकार ! रुपये आ रहे हैं। महारानी जी ने विनय की हैं कि हाकिम साहब कृपा कर कुछ नाश्ता भी होने पर ठहरने का कष्ट करेंगे; क्योंकि नदी पार की बात है, कोई विलम्ब होना संभव है। हाथी उक्त समय पर पहुँचा। हाथी बड़ा गरमाया हुआ था। अतः बैठता नहीं था। छद्दू मियाँ ने उसके एक गज बाँक मारा। मोती प्रसाद विशाल हाथी था। इतना चीखा से चिघाड़ा कि उसकी भयानक आवाज से कुर्सी छोड़ कर लोग भाग गये। फिर हाथी बैठा। रुपये उतारे गये और भुगतान हुआ। चाँदी के रुपये थे। ८० रु० का एक सेर होता था। इस तरह २४६७५ रु० का वजन-सात मन पाँच पसेरी तीन सेर सात छटाँक होता है।

(घ) गढ़-मालिकों के सम्बन्ध-विस्तार के सम्बन्ध में –

विशेशर सिंह का पहला विवाह कुरमुरी (शाहाबाद) हुआ, लेकिन वहाँ से कोई सन्तान नहीं हुई। स्त्री भी मर गई। दूसरा विवाह बनियाँ बसाढ़, (वैशाली) जिला मुजफ्फरपुर थाना लालगंज में हुआ। वहीं से नन्हकू बाबू को चार लड़के हुए, जिनकी चर्चा कर चुका हूँ। नन्हकू बाबू के बड़े लड़के शमशेर नारायण का विवाह आजमगढ़ जिले के थाना परगना घोषी, ग्राम सूरजपुर के श्रीजगत नारायण सिंह की पुत्री से हुआ। नन्हकू बाबू की मृत्यु सन् १२७७ फसली मुताबिक १८६९-७० ई० में हुई। इनकी स्त्री का नाम नवलाख कुँअर था।

(ङ) श्रद्धेय श्री नन्हकू बाबू की मृत्यु से सम्बद्ध विचित्र घटना का विवरण-

परसा से गोपाल बाबू को वंश नहीं चलता था। वे यहाँ के दामाद थे। शमशेर सिंह ने पुत्र-प्राप्ति के लिए एक तांत्रिक को बुलाया। उस समय यहाँ एक या दो घर ततवाँ भी रहते थे, अब नहीं है। उसमें भी एक कुछ तन्त्र-मंत्र जानता था। एक दिन रात को दोनों ने मिलकर तंत्र-मंत्र का प्रयोग किये। काम खत्म होने पर अख्तियारपुर वाला तांत्रिक ने यहां के तांत्रिक को कहा कि इस योग-टोन किये हुए पात्र को किसी ऐसे स्थान पर रख आओ, जहाँ चिड़िया की नजर पड़े परन्तु किसी मनुष्य की नजर पहले पहल नहीं पड़ने पावे। गोपाल बाबू इसका मतलब समझ गये। उन्होंने यहाँ वाले तांत्रिक को कुछ प्रलोभन देकर कहा कि इस योग-टोन वाले पात्र को नन्हकू बाबू के निकलने वाले फाटक के सामने रख आओ। उसने ऐसा ही किया। नन्हकू बाबू नित्य लगभग चार बजे भोर में ही बाहर निकल कर टहला करते थे। सबेरे उठे और टहलने चले गये। जब उधर से लौटे तो उस टोटका किये हुए पात्र पर नजर पड़ गयी, टोटका पीपर के पत्ते

र किया गया था। नजर पड़ते ही उनके शरीर के खून सूख गये। शरीर से पसीना निकलने लगा। घर जाकर खाट पर पड़ गये। बस, एक दो घंटे में उनका प्रशान्त हो गया, यह एक अजीब घटना हुई। गोपाल बाबू का प्रयास सफल हुआ। उनके घर लड़का पैदा हुआ। वह बैजू प्रसाद के नाम से विख्यात हुआ।

शमशेर नारायण को दो बहनें थीं। बड़ी बहन की शादी मौजा सोंधी, जिला मुंगेर, स्टेशन लखीसराय के चौधरी नीलकंठ प्रसाद सिंह से हुई। रुखसती में उधर से डोली के साथ ३६ दासियाँ आई थीं। उन सबों को रहने के लिए खास एक किता मकान दिया गया था। दूसरी बहन का विवाह चैनपुर बगौड़ा, जिला छपरा में फुदेना बाबू उर्फ जटहा बाबू से हुआ। कुछ दिनों के बाद शमशेर नारायण चारों भाई जुदा हो गये। इन लोगों में बंटवारा कराने के लिए शमशेर नारायण के श्वशुर जगत नारायण सिंह (मौजा सूरजपुर) आये थे। उनके साथ ५० लस्कर थे उस समय सदीसोपुर स्टेशन नहीं था। अतः वे गंगा पारकर शेरपुर घाट उतर टाँघन पर आये थे। वे मांसहारी थे। उनके साथ शिकारी, वैद्य, रसोंईया; पंडित, पयादा, खानसामा वगैरह साथ आये थे। उनका खान-पान बिलकुल अलग अलग रहता था। उन्होंने आकर चारों भाइयों से अंगूठे के निशान लिये और सभीं ने यह लिख दिया कि श्वशुर जी जो फैसला करेंगे, वह हमलोगों को मान्य होगा। नखीद सिंह इनलोगो के आम मोखतार थे। अतः उनके और नन्द केश्वर सिंह के बहकाने पर ये लोग पंचायती से इनकार कर गये। तब जगत नारायण सिंह रुष्ट हो कर अपने गांव की ओर चल पड़े फिर उनलोगों ने शेरपुर जाते-जाते उनको लौटाया और क्षमा माँगी। वे पुनः पंचायती करके लौट गये।

जब समय बनने लगता है तो मिट्टी छूने पर सोना बन जाती है और जब बिगड़ने लगता हैं तो सोना मिट्टी हो जाता है। आपस में मतभेद हो गया। जैसे-तैसे नगदी रुपये सब डूब गये या किसी तरह खत्म हो गये।

(च) 'मोती प्रसाद हाथी' और 'छट्टू मियाँ महावत' की अद्भुत एवं रोमांचकारी घटना का वर्णन : मोती प्रसाद हाथी कितने लार प्यार के साथ रखा गया था। शाम के शाम रोज उसको मिठाई मिलती थी। मनमाना भोजन मिलते था। पूरा मस्त रहता था और भारी बदमाश था; लेकिन छट्टू मियाँ महावत उसको खूब खिलाता था। इसलिए वह उसकी बात मानता था। मोती प्रसाद के दाँत बाँकपन लिये इतने बड़ बड़े और मोटे थे कि उस पर छट्टू मियाँ पड़ जाता था और कहता था कि बेटा ! झूला झुलाओ। उसके कहने पर वह प्रेम पूर्वक उसे झुलाने लगता था।

समय एक-सा नहीं रहता। जो मोती प्रसाद छट्टू मियाँ को इतना प्यार था, उसकी अन्त में दुर्गति हुई। आपस में बँटवारा हो जाने और मतभेद हो जाने से मोती प्रसाद के खान-पान में कमी हो गई। शाम के शाम मिठाई मिलती थी वह बन्द हो गई। उसके भोजन में भी कमी हो गई। अब वह पहले-सा हृष्ट-पुष्ट और खुशहाल नहीं रहा। वह बराह मौजा पर भेज दिया गया। अभी कोई मौजा इजमाल में था। वहाँ चार हजार रुपये की आमदनी थी। हाथी को वहाँ भी खुराक की कमी ही रही। छट्टू मियाँ महावत (कालापुर का) एक दिन सोन में धोने के लिये उसे ले गया। वहाँ पर कुछ बदमाशी करने पर छट्टू मियाँ ने उसको बरछी से मारा। हाथी तो अब पहले-सा छट्टू मियाँ पर वश नहीं रहता था उसने बरछी को पकड़ कर तोड़ डाला। टूटी हुई बरछी को लेकर छट्टू मियाँ फिर उसके पास पहुँचा; परन्तु मोती प्रसाद ने छट्टू को अपने सूँड़ से लपेट कर और पैरों तले दबाकर उसका काम तमाम कर दिया। हाथी एकदम बिगड़ा हुआ था। अब छट्टू मियाँ की लाश को छोड़कर न हटता ही था और न किसी को उस जगह जाने ही देता था। कलक्टर साहब के यहाँ से गोली मारने का ऑर्डर हो गया परन्तु गोली नहीं मारी गई। बनारस के महाराजजी यहाँ खबर गई, उसको शान्त करने के लिए। वहाँ से हरतल्ली मियाँ नामक महावत आया। ४०-५० पीलवान पर एक महावत होता है। हरतल्ली मियाँ ने एक बड़ा गढ़ा खुदवा कर धोखे से मोती प्रसाद को उसमें गिरा दिया। कुछ दिन वह उसी गढ़े में रहा और बहुत कमजोर हो गया फिर किसी तरह गढ़े से निकाला गया; परन्तु बाहर आते ही उसके प्राण पखेरु उड़ गये। ठीक है 'करम गति टारे नाहि टरे'। मोती प्रसाद कितना सुख और लाड़-प्यार से पला था और अन्त में उसे कितना दुःख भोगना पड़ा।

लोग कहते हैं कि मोती प्रसाद बड़ा लछनमान था। उसके मरते ही पतन का अंकुर जम गया। मोती प्रसाद बच्चा में १५०० सौ रुपये में हरिहर क्षेत्र से आया था। अब मैं पहले शमशेर नारायण के पुत्र देवी प्रसाद की कहानी लिखकर तब शमशेर नारायण का वृतान्त लिखूँगा।

(ङ) श्रद्धेय श्री देवी प्रसादजी की नटखटता—ये बहुत सुन्दर बालक थे। कद न ज्यादा लम्बा, न ज्यादा छोटा। केसर के फूल सा चेहरे का रंग; शरीर गठीला, न ज्यादा मोटा, न पतला। उनकी सुन्दरता को देखकर लोग मुग्ध हो जाते थे; परन्तु वे जितने सुन्दर थे, उतने ही नटखट भी थे। घोड़े के पूरे शौकीन थे। मरने के वक्त तक उनका घोड़ा मौजूद था। उनके घोड़े

को बाल सिखाने के लिए काले खाँ और चमन खाँ दोनों भाई नियुक्त थे तथा पढ़ाने के लिए बड़े-बड़े मौलवी-मुल्ला रखे गये थे। वे पढ़ना तो चाहते नहीं थे। अतः मन भी नहीं लगता था। धड़ पकड़ के बल पर थोड़ा पढ़ लिया करते थे। उन्होंने मौलवी को तंग करना शुरु कर दिया ताकि वह किसी तरह यहाँ से चला जाय। एक दिन रात में सोते वक्त मौलवी के कान में पेशाब करके भाग चले। मौलवी साहब अकबका कर उठे और तोबा-तोबा करने लगे। उनके पास जो गुड़गुड़ी रक्खी थी, लुढ़का गई। उस जगह ओसारे में गुंजा सिंह भी सोते थे। वे बोले कि मौलवी साहब! पेशाब कौन करेगा? गुड़गुड़ी गिर गई। उसीका पानी समा गया होगा। मौलवी साहब बोले कि नहीं बाबा, यह पेशाब है। मेरे मुँह तक चला आया। खरछाइन लग रहा है। हालाँकि इस वृतान्त को गुंजा सिंह जानते थे, पर बहाना के रूप में वैसा बोले थे। एक दिन मौलवी के बिछावन तले सुलगती टिकिया रख आये। धीरे-धीरे वह जलने लगा और कपड़े को छेद कर मौलवी साहब के चूतड़ तक जब गर्मी आई तब उनकी नीन्द टूटी। उनके चूतड़ में फोड़े भी निकल आये। मौलवी तंग होकर और यह कह कर कि जाओ रे नादान लड़के, तुमको विद्या नहीं हासिल होगी, चले गये। बाद में बहपुरा मदरसे में उनका नाम लिखवाया गया। वहाँ आने-जाने के लिए एक घोड़ी खरीदी गई। केशवर सिंह पहलवान उनके साथ बहपुरा आते-जाते थे। बहपुरा यहाँ से दो मील पर है। देवी प्रसाद उस टट्टू को रेंड़ीपुर बागीचे में जाकर चक्कर दिलवाने लगते थे। इस तरह से पाठशाला में शायद ही कभी ठीक समय पर पहुँचते थे। केशवर सिंह डाँट दबाव भी करते थे, पर कौन सुनता है। दोनों आदमी को टिफिन में जलपान करने के लिए हलवाई मोकर्रर कर दिया गया था। एक दिन जब दोनों आदमी जलपान पर बैठे थे मुर्गी का एक बच्चा उस जगह आ गया। देवी प्रसाद ने घोड़ी वाली हंटर से एक हंटर मार दी। वह मर गया। हलवाई बेचारा तो डर के मारे रोने-कलपने लगा। मदरसे तक खबर पहुँची। हलवाई भी रोते-कलपते वहाँ पहुँचा। मुर्गी के मालिक भी आ गये परन्तु क्या किया जाय? बच्चा समझ कर इनकी गलती पर ध्यान नहीं दिया गया। डरा-धमका कर छोड़ दिया गया। हलवाई बेचारा भी रिहा हो गया। खैर, उस बेचारे का दोष ही क्या था? अब वहाँ पढ़ने जाने के लिए एक हथिनी खरीदी गई। उस हथिनी का नाम 'पवन-प्यारी' था। केशवर सिंह भी उसी हथिनी पर बैठ कर आने-जाने लगे। अब रास्ते में विलम्ब का मौका ही नहीं मिलता। इतना होने पर भी वे नहीं पढ़ सके। इनका पढ़ना बन्द हो गया। मौलवी का कथन फलीभूत हुआ। उनकी हरकतों

की कथा कहाँ तक लिखी जाय ? संक्षेप में थोड़ी चर्चा और कर देता हूँ। जहाँ गाना-बजाना होते रहता था वहाँ खजुहट वाली धूल छींट देते थे। अब गाना बजाना वाले लोग गाते-बजाते क्या ? खुजलाते-खुजलाते परेशान हो जाते। बैठने वालों के पास जाकर बैठ जाते और धीरे-धीरे उनकी धोती को दरी में बाँध कर सी देते। जहाँ-तहाँ हरचिकार के काँटे-छींट देते थे।

जिस किता में मोती प्रसाद हाथी रहता था, उसमें पूरब की ओर छट्टू मियाँ के खाने-पकाने का चूल्हा था। एक दिन खिचड़ी बनाने के लिए उसने आग सुलगाई और मशाला लाने के लिए पास ही मोदी के पास चला गया। मोती प्रसाद के चारो पीलवान भी नहाने के लिए चले गये। एकान्त पाकर देवी प्रसाद चट उसके पूरब वाले फाटक से घुस कर वहाँ पहुँच गये। बरछी को आग में तपा कर मोती प्रसाद के सामते दिखाने लगे। मोती प्रसाद की यह आदत थी कि जब कोई चीज उसे दिखायी जाय तब वह उसे पकड़ने की कोशिश करता। जिस बरछी को देवी प्रसाद दिखा रहे थे उसे उसने पकड़ कर तोड़ डाली। बरछी की नोक गर्म थी। मोती प्रसाद का सूँड़ जल गया। वह जोड़ों से चिघाड़ उठा। देवी प्रसाद पश्चिम वाली खिड़की से भाग चले और माँ की गोद में जाकर चिपक गये। उसकी आवाज तो उतनी ही कड़ी थी। चारों पीलवान दौड़ते आये। छट्टू मियाँ भी आवाज सुनकर दौड़ा हुआ आ पहुँचा, क्या बात है ? देखता है कि बरछी टूटी हुई फेंकी है। उसे ताज्जुब हुआ। यह क्या ? उठाने पर बरछी गर्म मालूम हुई। हाथी छटपटा रहा था। सिकर को तोड़ना ही चाहता था। पुचकारते-पुचकारते छट्टू मियाँ पास गये और बोले—ओ बेटा ! क्या हुआ, क्या हुआ ? पोछ-पाछ करते पास गये। वह सूँड़ को मरोड़ रहा था, क्योंकि उसमें दर्द हो रहा था। कुछ फोड़े की भी निशानी आ गई थी, लेकिन महावत की कुछ समझ में नहीं आता था कि यह घटना कैसे घटी ? रंगलाल कहार कहने लगा कि "बउआजी के हम ई खिड़की से भागइत देखली हे"। छट्टू मियाँ ने कहा कि ठीक है; यह उन्हीं का नटखटपन है। खैर था कि बबुआ खिड़की के रास्ते भाग गये; नहीं तो आज ही उनका काम तमाम हो जाता। फोड़े का इलाज किया गया। हाथी बदमाश था और छट्टू मियाँ ने उसे और अधिक शोख बना रखा था। वह खाने वाली डाली को फेंक ही कर आने-जाने वालों को मारता था। छट्टू मियाँ को खाने-पीने, कपड़े-लते के अलावा १२) बारह रुपये महीना इसलिये मिलता था कि उसे बारात आदि से ऊपरी आमदनी नहीं थी।

देवी प्रसाद की बरात में जब मोती प्रसाद गया था तब उसके चारो पैरों में

बेड़ियाँ लगी हुई थीं। दाँतों में भी सिकर लगा दी गयी थी। उसके दाँतों में खूबसूरती के लिए सोने की चूड़ी मढ़ी गई थी। उनका विवाह जिला बनारस, मौजा रियासत निगुड़ा कोट, स्टेशन चन्दौली मकवार में हुआ था। देवी प्रसाद की बारात के लिए बनारस के महाराजाजी कुछ असबाब भी दिये थे और बोले थे कि बारात यहीं से सजनी चाहिए। मोती प्रसाद पाठा भी उस बारात में यहाँ से टहल ही गया था। बनारस-महाराज के यहाँ हाथी तो बहुत थे, लेकिन १२ हाथी सुन्दर-सुडौल थे। वे केवल दशहरा में ही एक दिन बाहर निकलते थे। उसपर काशी-नरेश चढ़कर निकलते थे। ऐसा हिसाब रहता था कि बारहो हाथी एक कतार में चलते थे और सभी के हौदे एक दूसरे से मिले मालूम होते थे। दर्शकों की भीड़ लग जाती थी। काशी नरेश के महावत ने जब मोती प्रसाद को देखा, तब महाराजा से कहा कि सरकार! मोती प्रसाद नामक हाथी, के टक्कर का कोई हाथी हमारे यहाँ नहीं है; पयनाल बाबू के यहाँ से आया है, देखने योग्य है। यहीं का महावत मोती प्रसाद को शान्त करने के लिए बराह गया था। बनारस महाराजा भी लड़की वाले के तरफ से बारात गये थे; परन्तु इनका डेरा गाँव के बाहर ही था। देव नारायण सिंह, जो शमशेर नारायण के भाई एवं देवी प्रसाद के चाचा थे पागल थे पर थे बहुत सीधे। जब उनका विवाह अहियापुर (टेकारी के पास गया जिला में) हो रहा था, तब मंडप में एक बिल्ली फांद कर एक तरफ से दूसरी तरफ जाने लगी। चट दुलहा (देव नारायण) बोला—'बुलाइ, बुलाइ, बुलाइ'। वे तुतला कर बोलते थे। सब लोग समझ गये कि लड़का पागल है। मंडप में हलचल मच गई। पुरोहित-नाई की धड़-पकड़ होने लगी। पहले राजे-महाराजे के पुरोहित ही वर खोजने के लिए जाते थे। उन्हींको यह भार दिया जाता था। पर, अब क्या किया जाय? सब लोगों ने सन्तोष करते हुए कहा कि जो भाग्य में बदा रहता है वही होता है। अब बारात लौटाने में बड़ी हँसी होगी। बच्ची पढ़ी-लिखीं और होशियार हैं। वह राज-काज चला लेंगी। विवाह कार्य सम्पन्न हो गया। उनके राजकाज-संचालन सम्बन्धी एक वृतान्त इस प्रकार है—अहियापुर वाली मामा ने राजकाज चलाने के नाम पर चारो भाइयों को आपस में लड़ा झगड़ा कर राज्य को चौपट कर दिया। समस्तीपुर में महुआ का एक पेड़ सूख गया था। उसकी लकड़ी को जाड़े में चौबे (पुरुषोत्तम मिश्रजी) जलाकर ताप गये। मामा को मालूम हुआ कि चौबेजी ने सब लकड़ी जला दी। मामा बोली कि चौबे! "सब लकड़िया जरा के ताप गेल"ऽ? चौबे बोले कि "चाची! तू समूचा राज ताप गेलऽ तन कुछ न आउ चौबे एक सुक्खल पेड़ के लकड़ी ताप गेलन तब बहुत ताप गेलन"? इस पर चाची चुप हो गई।

रामपुर दमोदर को जब नन्हकू बाबू ने लूट करवाया तब हाकिम को मालूम हो गया कि नन्हकू बाबू खूनी आदमी है। इसी की इन्क्वारी में अमर्सन साहब आठवाँ रोज नन्हकू बाबू की कोठी पर आते थे, जिसका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ। नन्हकू बाबू के पास कुछ-न-कुछ लोग बराबर रहा करते थे। राम लोभी सिंह, कारू सिंह और केसर सिंह नामी पहलवान थे। रामलोभी सिंह तीन-तीन मन वजन का बोझ सिर पर लेकर गढ़ के तीन महले कोठे पर चढ़ जाते थे। खजाने में जो रुपये रहते थे वे सुतरी के छोटे-छोटे बस्ते में भरकर और उसका मुँह बाँध कर छल्ली (थाक) लगा कर रखे रहते थे। हरेक बस्ते में पाँच सौ चाँदी के रुपये रहते थे। जब नन्हकू बाबू को मजिस्ट्रेट साहब के आने की सूचना मिली तो शीघ्राती-शीघ्र खजाने के रुपये को अन्यत्र छिपा दिये और सिपाही से बोले कि जाओ, मजिस्ट्रेट साहब को लिया लाओ! मजिस्ट्रेट साहब आये। उनका स्वागत किया गया। कुछ बातचीत हुई। ब्रह्मदेव नारायण का शरीर बहुत बलवान था। उनके चेहरे का रंग गुलाब के फूल-सा था। उनको देख देखकर अमर्सन साहब कहा करते थे कि ये सेमर के फूल के समान हैं। इनको पढ़ावें और सुबह शाम कम-से-कम एक मील नित्य पैदल टहलाया करें।

रामपुर दमोदर वाला लूट साबित नहीं हुआ और खारिज हो गया।

देवी प्रसाद का देहान्त फसली सन् १३३९ साल भाद्रपद मास अनन्त चतुर्दशी सोमवार को हुआ।

उदय नारायण (देव नारायण) का ससुराल बड़हिया, जिला मुंगेर था।

(ज) श्री शमशेर नारायण द्वारा सम्पत्ति का ह्रास तथा उनकी हृदय विदारक मृत्यु और श्री मंगल प्रसाद की निर्धनता का वर्णन—

शमशेर नारायण :—पयनाल में अकबर खाँ नाम का एक मुसलमान कहीं से आकर कुछ दिनों से रह रहा था। वह आँख में सुरमा लगाता था। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी थीं, जिससे सुरमा बार चाँद लगा देता था। वह शमशेर नारायण के पास आने-जाने लगा। शमशेर नारायण से उसकी घनिष्ठता हो गई। शमशेर नारायण देवी प्रसाद की बदचलनी से तो रुष्ट रहते ही थे, अपनी स्त्री से भी कुछ वाद-विवाद करके बोले कि अच्छा, अब मैं आग लगाने जा रहा हूँ। ऐसा कहकर गया के लिए प्रस्थान कर गए। अकबर खाँ ने उनको मोहित कर लिया था। वह बोला कि "चलिए मालिक, एक हाथी क्या; मैं मोती प्रसाद के ऐसा चार हाथी बन्धवा दूँगा।" उसने इनकी बुराई जान कर तो नहीं ही की पर जो भाग्य में बदा रहता है, वही होता है।

अकबर खाँ ने उन्हें वहाँ एक जंगल की ठेकेदारी के लिए पटना के लोदीकटरा

[illegible] के जज मिस्टर हाजी सैयद कमरुल हुदा से चार हजार रुपये कर्ज लिये गये। पयनाल से गया जाते समय उन्हें टीघन ने पटक दिया। हरदेयाली सिंह, [illegible] सिंह और केश्वर सिंह ने उनको मना किया, कहा कि यात्रा खराब है, मत जाइये। परन्तु भावी वश वे नहीं रुके। ठेकेदारी में घाटा लगा। बहुत नाजायज तरीके से भी धन व्यय करने लगे। जज साहब का कर्ज वसूल नहीं हुआ। उनको नालिश करनी पड़ी। डिगरी भी हो गई। जब जज साहब यहाँ के वातावरण से पूर्ण वाकिफ हुए तब उनको बहुत तरस आया। वे पयनाल आये। उन्होंने अपने विचार भी व्यक्त किये, परन्तु देवी प्रसाद ने उनका स्वागत न करके उनके साथ बयानी में दुर्व्यवहार किया और पैंतरेबाजी करने लगे। जज साहब बेचारे क्या करें, लौट गये। ठीक है 'विनाश काले विपरीति बुद्धिः। बाद में बची-खुची सम्पत्ति को भी जज साहब ने नीलाम कराकर अपने अधिकार में कर लिये। अब तो इन लोगों की सम्पत्ति का खातमा हो गया। शमशेर नारायण वहाँ रहकर अधिक-से अधिक पैसे नाजायज तरीके से खर्च कर चुके थे। शमशेर नारायण के पास कौड़ी छदाम भी नहीं रहा कि अपना खर्च चलावें। अब उनके हाथ में सिर्फ सोने की एक अँगूठी बची। खिदमत-गार रंगलाल कहार उनके साथ गया रहता था। शमशेर नारायण ने जहर खाकर अपने प्राण गँवा दिये। महमदपुर के जगलाल सिंह उनका दाह-संस्कार करके जब पयनाल आये तब लोगों को उपर्युक्त बातें मालूम हुईं। शमशेर नारायण कोई मूर्ख व्यक्ति नहीं थे। बहुत बुद्धिमान और विद्वान थे। वे अरबी, फारसी उर्दू और हिन्दी भाषा के अच्छे जानकार थे। रु-बकार वे अपने हाथों लिखते थे। वे बहुत रुआबदार थे।

श्याम नारायण सिंह और भिखारी सिंह के पूर्वज, बीच बस्ती से हट कर, देवी स्थान के पश्चिम घर उठाने लगे; परन्तु उनके गोतिया लोग उसमें बाधा डालने लगे। वे लोग शमशेर नारायण के पास गये और अपनी कहानी इस प्रकार कह सुनाई—गोतिया लोग घर नहीं उठाने दे रहे हैं। कहिये, मैं गाँव छोड़ कर चला जाऊ? शमशेर नारायण बोले—गाँव क्यों छोड़ियेगा आप क्या हमलोगों के खानदान के नहीं हैं? अच्छा, मैं वहाँ चलता हूँ। फिर नौकर झपसी कहार को यह आदेश मिला कि तुम मेरी चौकी को देवी स्थान के निकट वहाँ रख आओ जहाँ वे लोग घर बनाना चाहते हैं। झपसी उस चौकी को वहाँ रख आया। शमशेर नारायण ने दोनों भाइयों को काम लगवाने के लिए कहा। उनकी चौकी को देखकर गोतिया लोग डर गये और चू-चा कुछ न बोले। मकान का काम सुचारू रूप से चलने लगा। अब शमशेर नारायण को वहाँ जाने

की आवश्यकता ही क्या रही ? उनकी चौकी ने ही मकान को उठवा दिया। [illegible] नारायण का देहान्त १८८३ ई० में हुआ। अब देवी प्रसाद की हालत अति [illegible] नीय हो गई।

(झ) आपसी कलह के फलस्वरुप लन्दन तक मुकदमेबाजी, तत्पश्चात श्री मंगल प्रसाद को सम्पत्ति-वापसी का अधिकार :—

शमशेर नारायण के भाई ब्रह्मदेव नारायण २८ बैशाख १२९२ ई० फसली तदनुसार २७-४-१८८५ को मर गये। उनकी स्त्री जूही कुमारी का देहान्त ८-६ १९[illegible] को हुआ। ब्रह्मदेव नारायण को एक लड़का पैदा हुआ था। उसका नाम कामेश्वर नारायण रखा गया। उसका भी २५-६-१८८५ को देहान्त हो गया। ब्रह्मदेव नारायण के मर जाने पर उनकी स्त्री जूही कुमारी अधिकारिणी हुईं। जूही कुमारी का नैहर (खुदौरी-बौरी, थाना घोसी, परगना भेलावर, जिला गया था। उनके भाई का नाम भूपसेन सिंह था। वे गया के नामी वकील थे। जूही कुमारी के बाद, जनक किशोरी ने चाहा कि जूही कुमारी वाला हिस्सा भी हथिया लूं। देवी प्रसाद तो अब बिलकुल निर्धन हो गये। उनके लड़के मंगल प्रसाद अपने गोतिया भुवनेश्वर प्रसाद वगैरह के पास गये और बोले कि आप लोग जूही कुमारी वाला हिस्सा हमको दिलवा दीजिए। भुवनेश्वर प्रसाद सिंह, बीटन सिंह और एक-दो आदमी जनक किशोरी और उनकी माँ के पास गये। बोले कि आप तो आठ आने (हरदेव नारायण और देव नारायण वाले) हिस्से का मालिक हैं ही। ये चार आने देवी प्रसाद को दीजिए; क्योंकि उनकी हालत बहुत दयनीय हो गई है। भुवनेश्वर प्रसाद ने जनक किशोरी की माँ, जो उनकी चाची लगती थीं, के पैरों पर अपनी टोपी उतार कर रख दी। परन्तु उनकी माँ, जो मचिया पर बैठी थीं, ने टोपी को झटक कर फेंक दिया और बोलीं कि—"जा हो भुवनेश्वर, तोरे साहिबी भुलायल हे"। भुवनेश्वर प्रसाद ने उपर्युक्त बातों की जानकारी बाणेश्वर प्रसाद को कराई। बागेश्वर प्रसाद जो द्वारिका प्रसाद के चाचा थे, बोले कि अच्छा, एक बार मैं भी जाकर उनसे मिलूं। वे गये; परन्तु उनके साथ भी वही व्यवहार हुआ जो भुवनेश्वर प्रसाद के साथ हुआ था। उन लोगों को इस बरताव से बहुत क्रोध उत्पन्न हुआ। एक दिन भुवनेश्वर प्रसाद बाणेश्वर प्रसाद, जदुवंश नारायण, हरवंश नारायण और बुलकन सिंह की एक बैठक हुई। तय हुआ कि उनके ऊपर मुकदमा दायर किया जाय। तब देवी प्रसाद के बड़े लड़के मंगल प्रसाद को बुलाया गया और उनसे कहा गया। वे बोले कि आप लोग तो जान ही रहे हैं कि मैं किस सम्पत्ति से मुकदमा लड़ सकता हूँ। तब वे लोग पटना

वकील से राय लेने चले गये। वकील गंगाधर बाबू, पूर्णो बाबू और राजेन्द्र प्रसाद (जो हिन्दुस्तान के प्रथम राष्ट्रपति थे) बोले कि केस जिन्दा है। अतः भाई का हक भाई को ही होगा।

मंगल प्रसाद बोले कि आपलोग हमसे किसी शर्त पर शराकत-नामा लिखवा कर लड़ सकते हैं। दस आने और छः आने पर तय हुआ। केस जीत जाने पर मालिक को दस आने और शराकत लिखानेवाले को छः आने हिस्सा मिलेगा। साझीदार इस प्रकार हुए—

१. बाणेश्वर प्रसाद—साढ़े चार आने
२. गंगा प्रसाद सिंह—तीन पैसा
६. घसीटा लाल मोख्तार—तीन पैसा
} जोड़ छः आने

केस दायर हो गया। केस की स्थिति इस प्रकार है—

प्री वी कौंसिल लन्दन

केस कलकत्ता हाई कोर्ट से होते हुए लन्दन प्री वी कौंसिल तक चला गया था। (अपील की छपी प्रति १७ पृष्ठों में है। उसका अनुवाद, अन्य दो छपी कौपियों सारांश सहित, २८० पृष्ठों में है। कौपी श्री रणजीत प्रसाद के पास सुरक्षित है। दर्शनाभिलाषी सज्जन चाहें तो देख सकते हैं)।

मुख्य न्यायाधीश और सहयोगी न्यायाधीश प्री वी कौंसिल लन्दन

सादर निवेदन है —

१. बाबू शमशेर नारायण, देव नारायण, ब्रह्मदेव नारायण और उदय नारायण चार भाई थे।

२. कि पारिवारिक बँटवारा में शमशेर नारायण और उदय नारायण अलग हो गये और ब्रह्मदेव नारायण तथा देव नारायण संयुक्त परिवार के रूप में रहे।

३. कि २७ अप्रैल १८८५ को ब्रह्मदेव नारायण अपने पीछे अपनी पत्नी मुसमात जूही कुमारी और पुत्र कामेश्वर नारायण को छोड़कर मर गये। उसके बाद २५ जून, १८८५ को कामेश्वर नारायण भी मर गये।

४. इसके बाद (कामेश्वर नारायण की मौत के बाद) मु० जूही कुमारी ने हिन्दू-कानून के अनुसार स्टेट की मालकिन होने का दावा किया और अपने स्वर्गीय पति का वसीयतनामा भी (जो बाबू ब्रह्मदेव नारायण लिख गये थे) दाखिल

किया तथा मालकिन के रूप में काम करने के प्रमाण-पत्र की मांग, कानून २६/१८६० के अनुसार प्रस्तुत की।

५. कि देव नारायण ने आपत्ति की कि ब्रह्मदेव नारायण संयुक्त परिवार में रहते हुए मरे थे; इसलिये जूही कुमारी मालकिन होने की अधिकारिणी नहीं है। देव नारायण सिंह ही उस हिस्से के मालिक के रूप में रहेंगे।

६. कि जिला-जज ने १५ फरवरी, १८८६ को जूही कुमारी के आवेदन (कि स्टेट की मालकिन जूही कुमारी रहेंगी) को खारिज कर दिया, क्योंकि ब्रह्मदेव नारायण संयुक्त परिवार में रहते हुए मरे थे। माननीय न्यायधीश ने प्रमाण-पत्र देने से भी इन्कार कर दिया।

७. कि उपर्युक्त जिला-जज के आदेश के विरुद्ध जूही कुमारी ने कलकत्ता-हाईकोर्ट में अपील की। उसकी बहुत दिनों तक कोई सुनवाई नहीं हुई। इसी बीच पारिवारिक बँटवारे से मामला तय हो गया। साथ ही, जायदाद के सब झगड़े भी समाप्त हो गये।

८. उक्त पारिवारिक समझौते के अनुसार मु० जूही कुमारी अपनी जिन्दगी में अपने स्टेट की अधिकारिणी रहेंगी।

९. कि जूही कुमारी की मृत्यु के बाद उक्त स्टेट (जायदाद) देवनारायण सिंह और उनके वंश के लोगों को मिलेगा।

१० उक्त इकरारनामे के अनुसार हाईकोर्ट ने मुकदमे की सारी कारवाई बन्द कर दी।

११ कि बाबू देव नारायण ने एक लिखित पत्र के अनुसार १८ सितम्बर १९०० को उक्त जूही कुमारी की सारी सम्पत्ति मेरे नाम कर दी।

१२ उक्त बाबू देव नारायण २५ जनवरी, १९०२ को मर गये और अपने पीछे एक मात्र पुत्री यानी मुझे छोड़ गये।

१३ कि आवेदिका (जनक किशोरी) ने अपने स्टेट के अधिकार के लिये आवेदन किया, जिसका देवी प्रसाद ने विरोध किया और लन्दन में अपील की गयी। देवी प्रसाद और उनके लड़के का कहना है कि पूरे स्टेट की देख-भाल का अधिकार उन्हें ही है; क्योंकि जूही कुमारी के बाद उनका हक होता है।

१४ कि जूही कुमारी ८ जून, सन् १९१० ई० को मर गई और मुझे २५ जून, १९१० ई० को अपने स्टेट के अधिकारी होने का प्रमाण पत्र मिल गया।

१५ कि उक्त मुसमात के मरने के बाद (जूही कुमारी के मरने के बाद) देवी प्रसाद ने पूरे स्टेट के मालिक होने के लिए आवेदन किया। आवेदन इस आधार पर किया कि पूरे परिवार के संरक्षण का अधिकार उन्हें है। इसीसे उन्होंने इनका (जनक किशोरी का) विरोध किया।

१६ कि तब यह विवाद जिला-जज के यहाँ फैसले के लिये गया।

१७ कि विवाद का फैसला देवी प्रसाद के पक्ष में हो गया।

१८ कि तब मैंने कलकत्ता-हाई कोर्टमें अपील की, जो ७ फरवरी तक वहीं पड़ी रही।

१९ कि तब मैंने अपने हक के लिये पटना के सब-जज के यहाँ अपनी सम्पत्ति पर परिवारिक इकरारनामे के अनुसार मुकद्दमा किया।

२० कि तब देवी प्रसाद ने इसका विरोध किया और मुकद्दमा खारिज होने पर मैंने इंग्लैंड में अपील की।

२१ कि बयान सुनने पर सब-जज ने मेरा केस खारिज़ कर दिया।

२२ मैंने उक्त फैसले से क्षुब्ध होकर कलकत्ता हाईकोर्ट में अपील की; परन्तु केस खारिज़ हो गया।

२३ चूंकि केस में जायदाद का मूल्य ५५००० (पचपन हजार) रु० हैं; इस लिये यह केस प्री वी कौंसिल लन्दन (इंग्लैंड) में अपील के लायक है। अतः मैं अपील कर रही हूँ।

२४ कि मैं उक्त फैसले से क्षुब्ध होकर आप के यहाँ न्याय के लिये अपील कर रही हूँ।

अपील का कारण

१ कि पारिवारिक इकरारनामे के अनुसार सम्पत्ति का हकदार मैं हूँ।

२ कि हाईकोर्ट ने पूरे स्टेट की स्थिति पर फैसला दिया जिस में मेरे इकरार-नामे पर ध्यान नहीं दिया गया।

३ अतः कानूनन आपके यहाँ अपील करती हूँ।

४ कि इकरारनामे के अनुसार मुझे अपनी सम्पत्ति का अधिकार दिया जाय।

५ कि माननीय न्यायधीशों का फैसला बे-बुनियाद है। इसलिये अधिकार मुझे माना जाय।

६ इकरारनामे के अनुसार सम्पत्ति को सब कुछ करने का अधिकार मुझे दिया जाय; क्योंकि निर्वाह के लिये अपने हिस्से का अधिकार प्राप्त हो।

७ कि इकरारनामे के अनुसार हाईकोर्ट को चाहिए था कि जब देव नारायण को सब हक़ हासिल थे तब मु० जूही कुमारी को भी सब हक़ मिलने चाहिये थे, क्योंकि देव नारायण के मरने के बाद वही स्टेट का जायज़ हकदार है।

८ हाईकोर्ट को इस पर अवश्य ध्यान देना चाहिये था।

९ कि जूही कुमारी के समय जब देव नारायण और ब्रह्मदेव नारायण संयुक्त परिवार के रुप में रहे थे तब ब्रह्मदेव नारायण या उनकी मु० को यह सवाल उठाने का कोई प्रश्न ही नहीं था कि ब्रह्मदेव नारायण उनके पुत्र कामेश्वर और देव नारायण से अलग थे।

१० इसलिये हाईकोर्ट का यह फैसला कि ब्रह्मदेव नारायण, देव नारायण से अलग थे, गलत है।

११ हाईकोर्ट को मौलिक ओर लिखित गवाही के आधार पर यह मानना चाहिए था कि देव नारायण, ब्रह्मदेव नारायण और कामेश्वर संयुक्त परिवार के थे और देव नारायण को संयुक्त परिवार के मुखिया के रुप में मान्यता थी।

१२ लोअर-कोर्ट की गवाही से भी यह साबित नहीं होता कि परिवार के लोग अलग-अलग थे तथा यह सिद्ध नहीं होता कि देव नारायण और ब्रह्मदेव नारायण में बँटवारा हो गया था।

१३ इसलिये प्रतिपक्षी की बात, कि परिवार के लोग अगल-अगल रह रहे हैं, सिद्ध नहीं होता।

१४ लोअर कोर्ट ने पूरी बात पर ध्यान न देकर मात्र एक हिस्सा को मद्दे नज़र रखते हुये फैसला दे दिया है।

हाईकोर्ट कलकत्ता जज आई० एम० कर्क ३३
दफा ७६/१–१८७२ ई०

मुद्दई–फूल कुँअर–१–पार्टी–जौजे शिव सेवक सिंह
शमशेर नारायण सिंह–२ ,,

देव नारायण सिंह व
ब्रह्मदेव नारायण सिंह } –३ ,,

सम्पत्ति की लड़ाई

पयनाल में एक मकान खानदानी था। दूसरा मकान पटना के बाकर-गंज मुहल्ले में था। वह झखुरी तमोली से ८० रु० में निलाम लिया गया था। मकान टूटा-फूटा था। उसे फिर से बनवाया गया। इस पर दूसरी पार्टी का कब्जा था। मांग थी कि तीनों दलों में बँटवारा हो, पयनाल वाले मकान पर कब्जा था, विशेशर नारायण सिंह का इसमें भी तीनों की मांग थी। महमदपुर में एक फुलवारी थी। उस पर विशेशर सिंह (नन्हकू बाबू) का कब्जा था। इसमें भी तीनों की मांग थी। पयनाल में ईंट के दो मकान थे। मांग थी कि दाम लगाकर तीनों में बांट दिये जायें। दालान के खम्भे और पटरे, तीसरी पार्टी के कब्जे में थे। इस पर भी तीनों की मांग थी। पुराने मकान के सामने दो भागों में जमीन थी। उसमें आम वगैरह का बागीचा था। इस पर भी तीनों की मांग थी। एक किता मकान बेला में था और एक महमदपुर में जहाँ बागीचा था। उपर्युक्त सभी चीजों में तीनों की मांग थी।

शिकारपुर की जमीन्दारी बिक गई थी। उसे बेचने वाले ब्रह्मदेव नारायण सिंह थे और खरीदने वाले शमशेर नारायण सिंह। इसे भी बाँटने की मांग थी।

शमशेर नारायण के जिम्में मोती के दो कर्णफूल थे। उसे भी दाम लगा कर तीनों में बाँटने के लिये कहा जा रहा था। रामायण (सातों काण्ड) शमशेर नारायण के कब्जे में है। हिस्सा के मुताबिक बांट दी जाय। बागीचे की आमदनी १०००) (एक हजार रुपये सालाना) थी। नौकर वगैरह का मुशहरा २००) दो सौ रुपये थे।

हाईकोर्ट का फैसला

मोती के कर्णफूल के बारे में तीसरी पार्टी कोई सबूत न दे सकी। इसलिये उसपर विचार नहीं किया गया। खारिज कर दिया गया।

रामायण को रखने के बारे में भी कोई सबूत न मिल सका। इसलिये उसका दावा खारिज।

चूंकि एक ही खानदान की पूरी लड़ाई थी, इसलिये और चीजों का हिस्सा तो दिया जाता है, लेकिन सूद और हरजाना का कोई सवाल नहीं उठता।

उपर्युक्त फैसला तीनों को मानना होगा। मुकद्दमा का खर्च जिसको जैसा हुआ है, वैसा ही रहेगा। किसी को किसी से दिलवाया नहीं जायगा।

मौजा में तीनों की हिस्सेदारी रहेगी। रुपया-पैसा भी तीनों को हिस्सा अनुसार मिलेगा।

जो कागज जिससे सम्बन्धित है, उसी के पास रहेगा।

बागीचा, मकान और फुलवारी मेरे द्वारा बनाये गये नक्शे के अनुसार बाँट दिये जायँगे।

दालान के खम्भे और सतह तीसरी पार्टी के अधिकार में दिये जाते हैं। दूसरी पार्टी का उस पर कोई हक नहीं रहेगा।

जरपेशगी वाले रुपये का हकदार फूल कुँअर रहेगी। उस पर किसी का अधिकार नहीं रहेगा।

ईंट वगैरह के झगड़े में भी किसी को हरजाना नहीं मिलेगा, क्योंकि साबित नहीं हो सका।

बाकरगंज के मकान को फर्स्ट पार्टी ने खरीदा और जब वह मकान गिरने लगा तब दूसरी और तीसरी पार्टी से उसके मरम्मत का खर्च माँगा गया; लेकिन दोनों ने मरम्मत करने में हिस्सा नहीं दिये और न किसी प्रकार से हाथ बँटाया। इससे यह पता चलता है कि जान बूझकर वे लोग मकान

देना चाहते थे। मकान में उन लोगों की कोई दिलचस्पी नहीं थी। कस्टं पार्टी ने उसे बना लिया तब ये लोग उसमें हिस्सा मांगते हैं। पार्टी के कथनानुसार उसकी मरम्मत में १०००) एक हजार रुपये खर्च हैं, लेकिन दूसरी और तीसरी पार्टी कहती है कि खर्च कम लगा है।

जब मैंने उस मकान को देखा और चमरु कारीगर से गवाही ली, जिसने उसको दुबारे बनाया था, तो पता चला कि उसमें कम-से-कम ८००, आठ सौ रुपये खर्च हुए थे। पहले के सामानों की कीमत, जो मरम्मत में लगायी गयी, १०० रु० मानी गई। उसे घटा देने पर ७०० सात सौ रुपये खर्च हुए। इन कारणों से हम दूसरी और तीसरी पार्टी को तिहाई हिस्सा नहीं दे सकते। उन्हें ¼ चौथाई मिलेगा। लेकिन वह तभी मिलेगा जब किवे लोग दोनों आदमी मिल कर ३५०) रुपये उन्हें दे देंगें।

राग नट

भावी काहू सों न टरै।
कहँ यह राहु कहाँ रे रवि ससि आनि संयोग परै॥
भारत में भरुहीके अंडा घन्टा टूटि परै।
गुरु बसिष्ठ पंडित मुनि ग्यानी रुचि रुचि-लगन धरै॥
पिता मरन औ हरन सिया को वन में बिपति परै।
हरीश्चन्द्र से दानी राजा नीच की टहल करै॥
तीन लोक भावी के बस में सुर नर देह धरै।
'सूरदास' होनी से होइहें को पचि-पचि मरै॥

शिव सेवक सिंह की शादी मो० फूल कुँअर से हुई = मरे आश्विन १२८८ फसली h १६८-1 ३० या १८८०

विशेशर सिंह की शादी मो० नौलाख कुंअर से हुई = मरे १२७७ फसली h 42 R L 10 या १८६९-७०

शमशेर नारायण सिंह की मृत्यु १८८३	देव नारायण सिंह को मृत्यु २ माघ १३०९ फसली २५-१-१९०२	ब्रह्मदेव नारायण सिंह की मृत्यु २८ वैशाख १२९२ फसली	उदय नारायण सिंह
देवी प्रसाद सिंह प्रतिवादी मरे १३३९ फसली भाद्र पद अनन्त चतुर्दशी भौमवार	लड़की मो० जनक किशोरी कुंअर—बादी	शादी मो० जूही कुमारी से जो ८-६-१९१० को मर गई कामेश्वर नारायण सिंह मरे २५-६-१८८५ निःसन्तान	जिन्हें हरदेव नारायण सिंह भी कहा जाता था २३-७-१८८१ को मरे। इनकी शादी मो० राज कुंअर से हुई, जो जून १८९१ के पूर्व मर गई।

देवी स्थान

जंगली महादेव

श्री गोपाल जी राधा कृष्ण मंदिर

रूप चउरा

प्राचीन ठाकुरवाड़ी (मठिया पर)

६-देवस्थल

देवीजी का मंदिर पहले श्री शिव सेवक सिंह के बाग में था। अनन्तर, उस अधिक घर बन जाने पर, श्री सिंह ने उससे और पूरब हटकर बनाया। मंदिर खपड़पोस ही था। आज से १०-११ वर्ष पूर्व श्री नन्दकेश्वर सिंह (मुखिया) छत बनवा दिये। गाँव से भी कुछ पैसे लेकर दीवार को भी प्लास्टर कर दिया गया और उसके चबूतरे के कोर को भी। मंदिर के आगे बहुत लम्बा-चौड़ा चबूतरा बना है। चबूतरे के अन्दर ही एक विशाल नीम का वृक्ष है। जब साली पूजा श्रावण पूर्णिमा को होती है तब गाँव के लोग इकट्ठे हो जाते हैं। पूर्णिमा से ५-७ दिन पूर्व ही ढिंढोरा पिटवा दिया जाता है कि अमुक तारीख को महारानीजी की साली पूजा होगी। जिससे जो बन सके—नगद, चावल, घी, आटा, शाकल, दूध इत्यादि उसे वह पूजा के पूर्व ही पहुँचा दें। उस दिन तक सब लोग सामग्रियों को कार्यकर्त्ता के पास पहुँचा देते हैं। यह तो सामूहिक पूजा हुई, लेकिन व्यक्तिगत पूजा भी प्रायः पूर्णमासी तक ही कर ली जाती है। पूर्णमासी के दिन सामूहिक पूजा बड़ी धूम-धाम से होती है। पहले बकरे और कबूतर की भी बली दी जाती थी, लेकिन अब वह प्रथा समाप्त हो गई है। सिर्फ हवण की प्रथा रह गई है। पूजा के अन्त में खप्पर को लेकर जिसमें सुगंधित हवन का वास रहता है भगत उसे ग्राम के चारों तरफ दक्षिणावर्त्त परिक्रमा करते हैं। हाथ का खप्पर बराबर धूप से प्रज्वलित होता रहता है। ग्राम के वायव्य कोण पर एक नियत स्थान है। वहीं पर महारानी जी की एक ध्वजा खड़ी की जाती है। फिर वहाँ से मंदिर पर पहुँच जाते हैं। साथ में बहुत से लोग बाजे-गाजे के साथ महारानीजी की जय बोलते हुए भगत के पीछे-पीछे घूमते हैं। अन्त में पूर्णाहुति होती है और प्रसाद वितरण होता है। ग्राम के निमंत्रित ब्राह्मणों को खीर-पूरी का भोजन कराया जाता है। नीम के वृक्ष की साखाएँ इतनी घनी हैं कि सूर्य का प्रकाश भी छिप जाता है। गर्मी के दिनों में इतनी सुन्दर हवा लगती है कि वहाँ पर हर समय लोग इकट्ठे रहते हैं। देवीजी के मंदिर के बाहर अन्य देवताओं की भी मूर्त्तियाँ हैं। गाँव से दुसाध (पासवान) और चमार (रविदास) की स्त्रियाँ श्रावण शुक्लपक्ष में भीख माँग-माँग कर महारानी की पूजा करती हैं। उसमें एक भगतिन रहती है। वह ढकने में हुमाद जलाती हुई और नीम की एक डाली लिये हुई गाँव भर महारानीजी की गीत गाती (सखी सहेलियों के साथ) घूमती है। महारानीजी की कुछ लोकगीत यहाँ पर लिख देना मैं अच्छा समझता हूँ। गोटी निकलने या छपवाने पर भी यह

गीत गाया जाता है। गोटी निकलने या छपवाने पर अढ़ाई या पाँच दिन तक घर भर के लोग ब्रह्मचर्य रहते हैं और महारानीजी की ही आराधना, पूजापाठ हवन इत्यादि किया करते हैं।

गीत

निमियाँ के डाल मइया लागले हिंरोला कि ढुलि-ढुलऽ,
सातो बहिनी गाऽवले गीत कि ढुलि-ढुलऽ।
ढुलते-ढुलते मइया लगले पियास कि चली भेलऽऽऽ मइया
मलहेरिया अबास कि चली भेलऽ।
कने गेलऽ किये भेलऽ मालिन गे बिटिया कि चुलु एकऽ,
मोहि के पनियाँ पियाबऽ कि चुलु एकऽ।
कइसे मइया तोहरा पनियाँ पिआऊँ कि मोरा गोदऽ,
मइया बलका नदान कि मोरा गोदऽ।
गोदी के बलकबा गे मालिन भुंइयाँ ले सुताबहु कि चुलु एकऽ
मोहि के पनियाँ पिआबऽ कि चुलु एकऽ।
कथी के घइलवा हे मइया कथी के बसनमां कथिए डोरऽ,
मइया के भरब निरमल पनियाँ, कथिय डोरऽ।
सोने के घइलवा गे मालिन रूपे के बसनमां रेसम डोरऽ,
मइया के भरब निरमल पनियाँ रेसम डोरऽ।
एक चुलु पियलन हे मइया, दूसरे चूलू पियलन
तीसरे चूलू, मइया देलन असिरबाद तीसरे चूलू।
जइसे अगे मालिन तूं हमें के जुड़वलऽ ओइसने
तोरऽ, जईंयाँ जुड़ाबऽ कि ओइसने तोरऽ,
जुमइयाँ जुड़ाब कि ओइसने तोरऽ।

प्राचीन ठाकुरबाड़ी—(शिव सेवक सिंह द्वारा स्थापित) यह ठाकुरबाड़ी गोपालपुर पट्टी के वर्त्तमान रणजीत प्रसाद के पूर्वज की स्थापित की हुई है। पयनाल ग्राम के नैऋत्य कोण में यहाँ से दो मील की दूरी पर विष्णुपुरा नामक

ग्राम है। वहाँ पर राजपूत लोगों की संख्या अधिक है। वहाँ के एक कान्य-कुब्ज ब्राह्मण, जिनका नाम छेदी पाण्डेय था, 'जानकी प्रपंच' का साधु होकर अयोध्या चले गये। कुछ दिनों के बाद उन्होंने विष्णुपुरा में ही आकर कुटिया बनाई और उस जगह का नाम अयोध्यापुरी रखा। इस समय भी लोग उस जगह को अयोध्याजी ही कहते हैं। छेदी पाण्डेय विद्वान् भी थे। उनका नाम एवं ख्याति के सम्बन्ध में सुनकर पयनाल के शिव सेवक सिंह कुछ मानिन्द आदमियों को लेकर वहाँ गये और उन्होंने महात्माजी से बहुत आग्रहपूर्वक कहा कि आप पयनाल चल कर एक ठाकुरबाड़ी की स्थापना करें। उनलोंगो के बहुत अनुनय-विनय करने पर महात्माजी राजी हो गये। आकर उन्होंने ग्राम से पूरब शिवसेवक सिंह की ही जमीन में ठाकुरबाड़ी की नींव डाली। ठाकुरबाड़ी बनकर तैयार हो गई। इसमें ग्रामीणों का भी सहयोग था। छेदी पाण्डेय यहीं रह गये। मठिया में कुछ जमीन भी दी गई और प्रत्येक घर से चन्दा भी निर्धारित कर दिया गया। भदई, धान और रब्बी-इन तीन फसलों में हल पीछे एक-एक पसेरी चन्दा निर्धारित हुआ। ठाकुरबाड़ी में समय-समय पर बहुत साधु-महात्माओं के झुंड आया करते थे। उनलोगों के आगमन पर ठाकुरबाड़ी के पुजारी गाँव में सूचना दे देते थे। सूचना पाते ही कुछ योग्य व्यक्ति वहाँ पहुँच जाते थे और उनलोगों के आतिथ्य सत्कार के लिए सब सामान जुटा देते थे। उनलोगों की विदागी के वक्त कुछ पूजा (न्योछावर) भी दी जाती थी। आज भी उसमें बाहर से आये हुए साधुओं का स्वागत किया जाता है। छेदी पाण्डेय के स्वर्गवास के बाद उनके चेला जगेश्वर शरणजी मठाधीश हुये। जगेश्वर शरण के मरने के बाद आरा जिला, अकबरपुर के रामस्वरुप शरण कन्नौजिया ब्राह्मण गद्दी पर बैठे। रामस्वरुप शरण के परम धाम जाने के बाद रघुनन्दन शरणजी महन्थ हुये। ये अवधिया थे। इनके साथ विष्णुपुरा के आद्या शरणजी भी रहने लगे। रघुनन्दन शरण के स्वर्गवास होने पर आद्या शरणजी महन्थ हुये। आद्या शरण की मुक्ति के बाद सोना के भागवत शरणजी कुछ दिनों तक देख-भाल करते रहे। उनके चले जाने के बाद दानापुर के बजरंग बली कोइरी कुछ दिन रहे। हाँ, एक बात भूल गया। रघुनन्दन शरणजी के वक्त में एक और साधु यहाँ आकर रह गये थे। उनका नाम सिया शरणजी था। सिया शरणजी सलेमपुर आरा जिले के कन्नौजिया ब्राह्मण थे। उनका स्वर्गवास अयोध्या में हुआ। उनके एक चेला दियारे के रतनटोला के सावजी थे। उनका नाम जयगोबिन्द था। उनके पास सिया शरण जी का कुछ पैसा जमा था। सिया शरण जी के भंडारा में जयगोबिन्द ने कुछ पैसा लगाया। भंडारा के बाद उनके पास

४००) चार सौ रुपये और बचे रहे। उनके ४०० रु० से १५ कट्ठे जमीन की खरीद ठाकुरबाड़ी के नाम हुई। जय गोविन्दजी को भी महात्मा ही कहना चाहिये, क्योंकि उन्होंने महात्मा की कुल सम्पत्ति उनकी मृत्यु के बाद भी धर्मार्थ ही खर्च कर दिया।

अब पूर्वा पर आइये—दानापुर बजरंग बली के दो वर्ष रहने पर बलिया जिले के श्री कृष्णदास कन्नौजिया ब्राह्मण आये। जन्मभूमि सिकन्दरपुर था। वे १५ वर्ष की ही आयु में साधु हो गये थे और अयोध्या वास करने लगे थे। फिर देशाटन करते हुए पयनाल आये और यहीं रह गये। इनके आये हुए करीब ६-७ वर्ष हुए हैं। पढ़े लिखे तो नहीं हैं पर आचार-विचार के बहुत अच्छे हैं और ठाकुरबाड़ी को भली-भाँति चला रहे हैं। यहाँ अभी तक वे एक पक्का कुँआ और एक यज्ञ-शाला बना चुके हैं। ठाकुरबाड़ी का ओसारा उदान रहता था। इससे वहाँ के बहुत सामान बर्बाद हो जाते थे ओसारा में लोहे की छरों की झिझरी लगा दी गई। यह झिझरी वर्त्तमान कपिलदेव सिंह टी० टी० की माँ की कीर्त्ति है।

इस समय यहाँ तीन ठाकुरबाड़ी मुख्य हैं। एक तो वह जिसका वर्णन मैं कर चुका हूँ। जिसमें राम जानकी की स्थापना हैं। दूसरी ठाकुरबाड़ी वर्त्तमान भोला प्रसाद सिंह वगैरह की जमीन में उनके घर के पास ही है। तीसरी ठाकुरबाड़ी 'श्री गोपाल जी' 'राधा कृष्ण जी' के नाम से है। इसमें श्री कृष्ण भगवान और राधिका की मूर्त्ति है। इसका वर्णन मैं आगे चल कर करूँगा। जन्माष्टमी और रामनवमी के उपलक्ष्य में जनता अधिक संख्या में इकट्ठी होती है। श्रावन महीने के शुक्ल पक्ष में भगवान का झूला होता है गाँव के कुछ लोगों का यह नियम था कि वे शिव सेवक सिंह कृत ठाकुरबाड़ी में नित्य बारहों महीने, चाहे जाड़ा हो या बरसात, जाकर १० बजे रात तक सत्संग में समय व्यतीत करते थे। कुछ लोगों की नामावली इस तरह है। श्री हित नारायण सिंह, त्रिवेणी सिंह (दोनों) यमुना सिंह, भगत जी (जगदीपा सिंह), हरवंश सिंह, दसई सिंह (पूरब), रामऔतार सिंह, बीजन सिंह, विशुन सिंह आदि।

श्री गोपाल जी राध कृष्ण ठाकुरबाड़ी :—पं० केदार नाथ मिश्र शाकद्वीपी ब्राह्मण थे। इनको कोई सन्तान नहीं थी। इनकी आयु ७० वर्ष की हो गई थी। बराबर भगवद्-भजन में अपना समय व्यतीत करते थे। अब

उनको कोई बाल-बच्चा होने की उम्मीद नहीं रही। स्त्री भी इन के रहते ही स्वर्गवास कर गई। अतः कुछ अंश रख कर अपनी शेष सम्पत्ति 'श्री गोपाल जी राधा कृष्ण' जी के नाम से समर्पित कर दी। पहले से ही, अपने घर में 'श्री गोपाल जी राधा-कृष्ण' जी की मूर्त्ति स्थापित किये हुये थे। ठाकुर-बाड़ी का खाता नं० २३६१ और सर्वे नं० ४७८३ है। एराजी ९ डि० है। इसकी देख-रेख के लिए पाँच पंचों की कमिटी नियुक्त कर दी गई। १—शिव प्रसाद सिंह, २—किशोरी शरण सिंह, ३—वृजनन्दन सिंह, ४—कपिल देव मिश्र एवं ५—हरदेव सिंह।

हरदेव सिंह १८-४-४९ ई० को स्वर्गवास कर गये। उनके जगह पर उन्हीं के सुयोग्य लड़के अवध बिहारी सिंह चुने गये। ता० २०-१-१९४५ ई० को समर्पणनामा लिखा गया और रजिस्ट्री कर दी गई। उनके दरवाजेपर बहुत से सत्संगी लोग जमा रहते थे और प्रवचन होते रहता था। इनके पास ज्योतिष; कर्म-काण्ड, तन्त्र-मंत्र की बहुत-सी किताबें थीं, लेकिन आज वे सब अनुपलब्ध हैं। ता० १४-१-४६, चन्द्रवार को ११ बजे रात में पंडित जी की मुक्ति हुई।

पं० शिव चरण मिश्र द्वारा स्थापित दखिनवारी शिवालय—यह एक विशाल मंदिर है। लम्बा-चौड़ा चबूतरा भी है। बिहटा की तरफ से आकर जो सड़क पटना की ओर गई है उसी के किनारे उत्तर ओर यह मंदिर है। पहले यह सड़क कच्ची थी, अब पक्की बन गई है। सड़क के किनारे दक्षिण ओर पक्के का कुआँ है। वह श्री मिश्र द्वारा ही बनाया हुआ है। इसी कुएँ के पास वटवृक्ष है, जहाँ पतकट्टी होती है। यहाँ पर भगवान दास 'त्यागी' नामक साधु ने ता० ४-७-५८ ई० को एक महान् यज्ञ किया था उन्होंने एक जलसुर मंदिर भी छोटा-सा बनवाया था। शिव चरण मिश्र के वंशज राधेश्याम मिश्र ने जो आज वर्त्तमान हैं, एक शक्ति-यज्ञ का आयोजन २१-१०-७१ को आरम्भ और २७-१०-७१ को समाप्त किया था। वह पूर्ण रुप से सम्पन्न हुआ था। इस यज्ञ में अरणि-मंथन से अग्नि उत्पन्न हुई थी।

दखिनवारी शिवालय न० २—यह शिवालय पं० नारायण मिश्र के पितामह पं० राम सहाय मिश्र का बनाया हुआ है। उसके पास पक्का इनारा भी है।

जंगली महादेव—गाँव से पश्चिम कुछ दूर पर जंगल में भगवान शंकर की स्थापित मूर्त्ति है। यह सिद्ध-स्थान बहुत प्राचीन काल का है। जंगल में रहने से ही जंगली महादेव कहलाते हैं। इसी के सटे एक बरसाती नदी बहती है और वह गंगा तक चली जाती है।

सती चौरा—श्री कृष्णानन्द मिश्र की स्त्री 'राधिका देवी' पति के [illegible] जाने पर अपने बाग में ग्राम से पश्चिम जाकर सती हो गईं। वहाँ [illegible] समाधि लगा दी और योग-अग्नि से शरीर भस्म कर डालीं। सती चौरा आज भी भग्नावशेष रूप में कायम है। विवाहोत्सव में स्त्रियाँ वहाँ गीत गाती हुई [illegible] है। वहाँ पर सती हो जाने से उस बागीचे या बाग का नाम 'सतीआरा' [illegible] 'सती चौरा' कहा गया। उस जगह का विवरण सर्वे खतियान में इस तरह है—तौजी-शामिलात। मौजा पैनाल। खाता न० २४७७ और खसरा न० [illegible] है। बरमोतरदार—केवलधारी मिश्र वल्द रामधन मिश्र, ब्रह्मदेव मिश्र वल्द हनुमान मिश्र। आज भी यह स्थान वर्त्तमान कवि मनीषी श्री पं० दुग्धेश्वर मिश्र के अधिकार में है।

महेश ब्रह्म—दखिनवारी शिवालय न० १ के पास से जो सड़क पूरब की ओर गई है, कुछ दूर जाकर नदी के किनारे 'महेश ब्रह्म' का स्थान है। वहाँ पर एक विशाल पीपल का दरख्त है और बहुत ऊँचा पक्के का चबूतरा बना हुआ है। इधर पीताम्बर मिश्र के चाचा श्री जगदीश मिश्र, जो तान्त्रिक थे, वे चबूतरे को बहुत अच्छी तरह मरम्मत करा दिये थे और बराबर उनकी सेवामें लगे रहते थे। वहाँ पर अरदासियों की भारी भीड़ लगी रहती थी। इतना घी आ जाता था कि देखकर आश्चर्य होता था हमारी आँखों के सामने भी कन्टर-के-कन्टर घी आते थे और हवन होते रहता था।

और-और भी देवस्थल हैं—गोपी ब्रह्म, रूप चौरा, काल भैरव, डिबरा, खाकी बाबा का मठ, दामोदराचारी का मठ, फत्तीनाथ महादेव, कबीरपंथी मठ (श्री बुझावन दास कृत), गोपाल घाट, रामप्रीति दास की कुटिया-वीरभानु। खाकी बाबा का मठ, दामोदरा-चारी मठ, कबीरपंथी मठ-रामप्रीति दास की कुटिया और वीरभानु का स्थान अब नहीं है।

यहाँ पर अधिकांश लोग वैष्णव सम्प्रदाय के हैं। कबीर पंथी, शैव और शक्ति भी हैं। राम नारायण महाराज (मुसाफिर महाराज) सपत्नी 'राधा स्वामी' मत के अनुयायी हुए। इनकी चर्चा आगे चल कर करूँगा।

सन् १९१४ ई० में हुए ब्रितानी जर्मनी-युद्ध में भाग लेने वाले योद्धाओं की नामावली—

१. विष्णुदेव सिंह—ये वर्त्तमान कपिलदेव सिंह (मुनि जी) के चाचा थे।

सेना में भरती होकर युद्ध के लिये चले गये। परन्तु युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गये। उनकी माँ को ब्रिटिश सरकार ने जिन्दगी भर पेंशन दी।

२. **सोहराई सिंह**—पयनाल के दीपन सिंह थे। उनके दो लड़के थे। सोहराई सिंह और सरयू सिंह। सोहराई सिंह ब्रिटेन-जर्मनी-युद्ध से विजयी होकर पयनाल लौटे और वहाँ से प्राप्त सर्टिफिकेट की हैसियत से सिपाही में यहाँ भी काम किये। दोनों भाई नावल्द मर गये।

३. **रघुबीर सिंह**—वर्त्तमान कपिलदेव सिंह के बड़े भाई रघुबीर सिंह १९१४ के युद्ध में विजयी होकर पयनाल लौटे और नावल्द मर गये।

४. **टीपन सिंह**—वर्त्तमान वृजनन्दन सिंह के चाचा टीपन सिंह १९१४ के युद्ध में विजयी हो कर आये और नावल्द मर गये।

११ अन्यत्र से आकर बसनेवालों का विवरण—

१ पता लगाने से मालूम हुआ कि शाक द्वीपी ब्राह्मणों के पूर्वज श्री जगन्नाथ मिश्र श्री रामे ठाकुर के साथ ही आये।

२ हरिहर कहार लगभग १५ वर्षों से (कल्याणपुर से ससुराल में) यहाँ आ बसे।

३ हरिहर महरा कहार की लड़की (बेदमियाँ) यहीं मैके में रह गई। उसके शौहर का नाम गुरु प्रसाद राम था। वे सदावह के रहने वाले थे। उनको दो लड़के हुये—विष्णु देव राम और सहदेव राम। विष्णुदेव राम का लड़का रघुनाथ नावल्द मर गया। सहदेव राम अभी वर्त्तमान हैं। इनके वंशज भी हैं।

४ **श्री भागवत प्रसाद सिंह**—वंशावली के पृष्ठ न० ३ में गुंजा सिंह का नाम आया है, जो महमदपुर पट्टी के थे। उनको तीन लड़कियाँ थी। एक परसा गढ़, जिला छपरा, में व्याही गईं। दूसरी श्रीमती पियारी देवी मनेर व्याही गई। वह बाबू भागवत प्रसाद सिंह की माँ हुईं। तीसरी बीगन फूआ—जो तरेंगना व्याही गईं। ये सन्तान से वंचित रही और पयनाल मैके में ही रह गईं। बीगन फूआ भागवत प्र० सिंह की मौसी हुईं। बीगन फूआ ने अपनी सारी सम्पत्ति भागवत प्र० सिंह को लिख दी। बीगन फूआ के मर जाने पर भागवत प्र० सिंह यहीं रहने लगे। वे १९२३ से १९३९ ई० तक लोकल बोर्ड के वाइस चेयर मैन भी रहे।

आपने अयोध्या के रंग महल स्थान में भगवान का जगत बनवाया। [illegible] बीगन फूआ की स्मृति में बना। आपका विवाह गया जिले के जयपुर [illegible] में हुआ। आप बहुत दिनों तक पटना के नवाब खाँ बहादुर सैयद [illegible] इसमाइल, एम० एल० सी० के स्टेट मैनेजर रहे। ९ जनवरी, १९७६ [illegible] पयनाल में ही ८४ वर्ष की आयु में आपका स्वर्गवास हुआ।

भागवत प्रसाद के एक मात्र पुत्र सूर्यदेव सिंह हैं। आप आइ० ए० पास करने के बाद १९४९ ई० में पंचायत विभाग में नियुक्त हुये और अभी पंचायती राज्य प्रशिक्षण-संस्थान जसीडीह, संताल परगना में व्याख्याता पद पर कार्य रत हैं। आपके एक मात्र पुत्र हरिहर प्रसाद दीक्षित, नालन्दा मेडिकल कालिज पटना में द्वितीय वर्ष के छात्र हैं बाबू सूर्यदेव सिंह का व्याह मुजफ्फरपुर जिला के नरमा कपेन ग्राम में हुआ है।

भागवत बाबा के पितामह सारन जिले के भेलदी ग्राम से फतेहपुर थाना सोवतपुर आये और फतेहपुर से मनेर। मनेर से भागवत बाबा पयनाल आये। इस समय उनके सुपुत्र सूर्य देव सिंह जी प्राय: यहाँ रह रहे हैं। आप प्रसिद्ध धर्मार्थ-पत्रिका 'कल्याण' के नियमित ग्राहक और पाठक थे। आप एक सरिया ब्राह्मण हैं। गोत्र पराशर है। २२-१०-७६

५—श्री रक्ष्या सिंह—पयनाल के टोला महमदपुर से आकर पयनाल बस गये। इनके पुत्र श्री हरिकृष्ण सिंह और रामशरण सिंह थे। इनके भी क्रमश: एक-एक पुत्र श्री बुधराम सिंह और श्री सुखराम सिंह हुए। श्री बुधराम सिंह के तीन पुत्र हुये। रामसकल सिंह, रामाश्रय नारायण शर्मा और रामानुग्रह सिंह हैं।

६—सुन्दरी देवी—राम विलास मिश्र के भगिना जदुनन्दन मिश्र। जदुनन्दन मिश्र की लड़की सुन्दरी देवी यहीं रह गई। सुन्दरी देवी के दोनों लड़के अखिलेश और बिमलेश यहीं बस गये।

७—श्री राम दयाल सिंह की भगिनी श्रीमती हीरामणि देवी का विवाह सिकन्दरपुर निवासी श्री रामसेवक सिंह से पयनाल में ही हुआ। श्री रामसेवक सिंह प्राय: पयनाल ही रहते हैं। इनको एक पुत्र है, जिसका नाम अजय कुमार है।

८—श्री भिखारी सिंह की लड़की श्रीमती कुमारी देवी का विवाह बखोरदार चक निवासी श्री भोला सिंह से हुआ। भोला सिंह प्राय: पयनाल ही रहते हैं। इनको अशील कुमार नाम का एक पुत्र है।

भग्नावशेष
गढ़

डाक घर

दीन हितैषी नन्दन
पुस्तकालय

पं० शिवचरण मिश्र द्वारा स्थापित दखिनवारी शिवालय एवं पतकट्टी बट-वृक्ष

पतबट्टी बट-वृक्ष

१२ अन्यत्र जाकर बसनेवालों की नामावली (जहाँ तक जानकारी है)

१ सबसे पहले हमारे आदिपूर्वज सर्वश्री राम्ये ठाकुर यहाँ आये। उनके पोते श्री पराधर शाही मधुकरपुर तिनेरी जाकर बस गये।

२ रामप्यारे सिंह के भाई रामअनुराग सिंह यहाँ की सम्पत्ति बेंचकर ससुराल में टेंगरइला जाकर बस गये।

३ श्याम नारायण सिंह यहाँ की सम्पत्ति बेंचकर ससुराल में जा बसे।

४ द्वारिका सिंह-गोपालपुर मौसी के यहाँ चले गये।

५ ब्यादर सिंह-यहाँ से जाकर बड़का टेंगरइला ननिहाल) सपत्नीक बस गये।

६ शिव प्रसाद सिंह (बेंगा सिंह बैद्यनाथ धाम जा बसे। उनके लड़के कन्हैया सिंह के वंशज यहाँ हैं।

७ पाठक मिलकी के बाबू रामदास सिंह के पूर्वज यहाँ से खपुरा और खपुरा से पाठक मिलकी जा बसे। वे पयनाल के आदि बासिन्दा हैं।

८ महँगू साव बनियाँ के लड़के-मोती, धुरखेली और शिव गोविन्द दानापुर चले गये।

९ बुलकन साव बनियाँ का लड़का गती साव गदाईकूंड़ा चला गया।

१० बासू साव का लड़का हीरा साव लछुमनपुर गया।

११ रुपचन बढ़ई के लड़के चलित्तर और चन्द्रिका ताराचक गये।

१२ शिवलाल दास तीनों भाई यहाँ से महिनामा चले गये।

१३ सूर्य भान साव गोपालपुर चले गये।

१४ महादेव कहार अपनी ससुराल बाघा कोल चले गये।

१५ भुखलू साव सिंदुरिया सकरइचा ससुराल चले गये।

१६ धूरन चमार का भाई वृजनन्दन दिहरा जा बसा।

१७ हरगोविन्द चमार का लड़का दुःखदेवन बभनपुरा जा बसा।

१८ रामचन्द्र चमार का भाई पूजन गोपालपुर गये।

१९ वासगीत चमार के लड़के-सन्त जक्कनपुर, डोमन और कन्हाई नखरौल चले गये।

२० एतवार दुसाध के सार (खदेरन का लड़का) साइकिल पकरी ससुराल चला गया।

२१ लालदेव दुसाध का भाई बालकिशुन और बासुदेव जक्कनपुर गये।

२२ बुधाई तेली के भाई करीमन ससुराल रेवा चले गये।

२३ मौजीसाव बनियाँ के लड़के ज्ञानीसाव लछुमनपुरजा बसे।

२४ ठाकुर साव का लड़का दोस्त कुंज बिहार और हीरा पटना चले गये।

२५ देवाली साव बनियाँ का लड़का गनौरा लुकनपुर गया।

२६ बिलायती धोबी के लड़के ब्यापुर गये।

२७ जान महम्मद मियाँ के लड़के काशी मियाँ नेऊरा जा बसे।

२८ ओली महम्मद के लड़का अमर बिहटा रहते हैं।

२९ रमजान मियाँ के लड़के नूर मियाँ सपरिवार टाटा जा बसे।

३० टहल राउत का लड़का सेवा राउत दूसरी जगह चले गये।

३१ रामवरन गोप के लड़के परमेश्वर, बुलाकी और मिसरी मामा के यहाँ [illegible] चक चले गये।

३२ खनेट के लोग अपने को (सोनपार, पैना के पास, सन्देश थाना) पयनाल [illegible] बसिन्दा बतलाते हैं।

३३ ग्राम पियर पुरबा, स्टेशन परेढ़ी (मिर्जापुर) के साबर्णियाँ ब्राह्मण लोग भी अपने को पयनाल के बासिन्दा बतलाते हैं।

३४ ग्राम अगोथर के साबर्णियाँ ब्राह्मण भी यहीं के बासिन्दा हैं।

३५ कैथी के आस-पास के लोग भी पयनाल के ही बासिन्दा हैं।

३६ खुशरूपुर स्टेशन से पूरब गिलानी चक के लोग भी अपने को पयनाल का ही बासिन्दा बतलाते हैं। गिलानी चक से कुछ लोग बैकठ और कुछ लोग पुण्डारक चले गये।

३७ मुखलाल मिश्र यहाँ से काको (गया) में जा बसे। इनके पिता का नाम सूरजभन मिश्र था। काको में जाकर बहुत सम्पत्ति उपार्जन किये। संतान से वंचित होने के कारण एक विशाल मन्दिर बनाकर ठाकुर जी की स्थापना की और अपनी सारी सम्पत्ति ठाकुर जी के नाम से लिख दी। [illegible] पाकर दोनों व्यक्ति परम धाम को गमन कर गये। वे शाकद्वीपी ब्राह्मण थे।

३८ देव नारायण मिश्र बाजिदपुर में जा बसे। उनका वंशज आज भी [illegible] मान हैं।

३७ श्रीनाथ मिश्र पुरुषोत्तमपुर पैनाठी (पटना) जा बसे।

१३ जमीन्दारी और काश्तकारी—

बृटिश गवर्नमेंट के समय में जमींदारी थी। जमींदार लोगों के आधीन रैयत थे और बृटिश गवर्नमेंट के आधीन जमीन्दार। जमींदार लोग अपनी जमीन को जोतने के लिये दिये हुए थे। उसकी सालाना मालगुजारी प्राय: ५-६ रु० के दर से लगती थी। उसे रैयत लोग मालिक को दिया करते थे। मालगुजारी लिवाय और उनसे, खेत के बाबत में, कुछ नहीं लिया जाता था। मालगुजारी करने के लिए साल में चार किस्तें निर्धारित कर दी गई थीं। एक और से खेत बन्दोबस्त किया जाता था। उसे बटाई (भावली) कहते थे। खेत उपज में आधा मालिक को मिलता था। और आधा रैयत को, अनाज को मालिक के घर पहुचा देते थे। वे नगदी मालगुजारी या तो मालिक को पहुचा थे या मालिक या उनके कर्मचारी स्वयं जाकर उसे वसूल कर लेते थे जमीन रैयत के कब्जे में रहती थी उसको काश्त कहते थे और जिस जमीन मालिक अपने से हल-बैल रखकर जोतते थे वह बकाश्त कहलाती थी।

मालिक (जमीन्दार) मालगुजारी (कलक्टरी) कलक्टर साहब को देते थे। मालिक को काश्त और बकास्त दोनों किस्मों की जमीनों की मालगुजारी (कलक्टरी अन्दाज १ या १½ रु० बीघे के दर से चुकाने पड़ते थे मैं शेष के साथ। किस्तों से मालगुजारी लेने के लिये जो चार किस्तें बनाई गई थी उन्हीं किस्तों पर मालिक लोग भी कलक्टर के यहाँ बैंक में जमा कर आते थे।

किस्त—१-जून में ७ तारीख को
२-सितम्बर में २८ ,, ,,
३-जनवरी में १२ ,, ,,
४-मार्च मे २८ ,, ,,

रैयत वाली मालगुजारी अदा न होने पर मालिक आदालत में बाकी खजाना (नालिश) कर देते थे। यदि उस पर भी वे मालगुजारी न जमा करते थे तो उनकी सम्पत्ति नीलाम पर चढ़ा दी जाती थी। पहले उनको सूचना दे दी जाती थी कि आप के यहाँ इतनी मालगुजारी बाकी है। आकर जमा कर जायें, नहीं तो आपके ऊपर उचित कार्रवाई की जायगी। इस पर भी न जमा करने पर उनकी सम्पत्ति नीलाम कर दी जाती थी और वह जमीन नीलाम लेने वाले को हो जाती थीं।

भारत जब स्वाधीन हो गया तब जमीन्दारी समाप्त हो गई। अत: अब मालगुजारी सरकार को ही दी जाती हैं। जमीन्दार पर भी उसी हिसाब से पट्टा

(मालगुजारी) बान्ध दिया गया, जिस हिसाब से मालिक रैयय से पट्टा लेते थे। अब बकास्त न कहला कर सब कास्त ही कहलाते हैं। अब जमीन्दारी शब्द का प्रयोग नहीं होता। अब मालगुजारी राजस्व ब्लॉक, बिहटा के कर्मचारी द्वारा वसूल की जाती है।

१४. पटना प्रमंडल के खेतीहर मजदूरों की न्यूनतमजदूरी—

(यह दिनाङ्क १७ दिसम्बर १९७४ से ही पूरे पटना प्रमंडल में लागू है—

१	जोतना, बान्ध बाधना, हेंगा देना, खाद देना, बीज बोना, निकौनी-करना, पानी पटाना, पीट पाट कर दाने को भूसे से अलग करना, दौनी करना एवं अन्य अनुशंगी कार्य की यूनिटें जिनका उल्लेख इस अनुसूची में नहीं है।	२ कीलो ५०० ग्राम चावल या गेहूँ या चना या ३ किलो ७५० ग्राम धान या ३ किलो मकई या मटर या मसूर या ४ किलो कोई अन्य खाद्य अन्य (सेमार को छोड़कर) तथा ६०० ग्राम सत्तु प्रतिदिन
२	मोरी उखाड़ना (१ कट्ठा लिए)	५ किलो चावल या गेहूँ या चना या ७ किलो ५०० ग्राम धान या ६ किलो मकई या मसूर या मटर तथा १ किलो २०० ग्राम सत्तु
३	रोपना	३ किलो चावल या गेहूँ या चना या ४ किलो ५०० ग्राम धान या ४ किलो मकई या मटर या मसूर तथा ७५० ग्राम सत्तु प्रतिदिन
४	काटनी तथा काटी गई फसल का बोझा बनाना तथा उसे खलिहान पर ले आना।	काटे गये धान या रब्बी के १२ बोझा में १ बोझा।
५	ट्रैक्टर ड्राइवर एवं पेय ड्राइवर	२२५.०० रु० प्रति माह
६	ट्रैक्टर खलासी तथा पम्प खलासी	१५०.०० रुपया प्रतिमाह

'ऊ' १५ (क) भूमिहार ब्राह्मण का संक्षिप्त परिचय

लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुख बाहूरुपादतः ।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्' ।'

मैथुनी सृष्टि से पूर्व विराट भगवान अथवा ब्रह्मा ने मानसिक सृष्टि की। ब्राह्मणादि वर्णों को परस्पर विलक्षण सूचित करने के लिये उन्होंने उन्हें भिन्न-भिन्न अंगों से उत्पन्न किया। जैसे—मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, जंघे से वैश्य और पाँव से शूद्र उत्पन्न किये।

मानसिक सृष्टि के बाद उन्हीं उत्पन्न पुरुष स्त्रियों द्वारा मैथुनी सृष्टि आरम्भ हुई। अर्थात् ब्राह्मणी के रज और ब्राह्मण के वीर्य से जो विधिवत उत्पन्न होता है, उसे ब्राह्मण कहते हैं। ऐसी दशा में किसी का यह कथन कि तुम दान नहीं लेते और पौरोहित्य-कर्म नहीं करते; अतः ब्राह्मण नहीं हो, केवल मूर्खता है। क्योंकि जब उसकी उत्पत्ति ब्राह्मण से है तब उस के ब्राह्मणत्व में संदेह कैसे हो सकता है? हाँ, इतना अवश्य हो सकता है कि ब्राह्मणोचित कर्म न करने पर उसे पतित या हीन ब्राह्मण समझा जा सकता है। परन्तु प्रतिग्रहादि तो ब्राह्मणोचित कर्म नहीं हैं। प्रत्युत ब्राह्मणत्व को सत्य नाश में मिलाने वाला है। जैसा कि रामायण में लिखा हुआ है "उपरोहितीकर्म अति मंदा। वेद पुरान स्मृति कर निन्दा"। परशुराम जी ने पृथ्वी को निःक्षत्रिय करके उसे ब्राह्मणों को दे दिया। तो फिर उन लोगों ने राज्य या जमीन्दारी अवश्य ही स्वीकार की और उनमें से बहुत से तो कृषि भी करते ही। इससे जो कोई ऐसा कहता है कि कृषि करने और दान आदि त्यागने से अयाचक ब्राह्मण न रह कर हीन समझे जाने लगे, गलत है। अयाचक ब्राह्मण तो याचक से कहीं श्रेष्ठ हुए, यह स्पष्ट है। अयाचक और याचका ये दो प्रकार के ब्राह्मण पूर्व से ही होते चले आये हैं। उनमें से याचक तो प्रतिग्रहादि अवश्य करते थे (महाभारत इत्यादि ग्रंथ); परन्तु कृष्यादि करते भी थे और न भी करते थे। लेकिन अयाचक तो प्रतिग्रहादि को गर्हित समझ कृषि, वाणिज्य आदि द्वारा ही अपनी जीविका करते थे और आज भी करते हैं। जैसे याचक लोग शास्त्राभ्यास करते थे, वैसे अयाचक दल वाले भी। जब शास्त्राभ्यास लुप्त हो कर स्वच्छन्दता और कृषि, वाणिज्य एवं राज्य तथा भूमि-प्रियता ब्राह्मणों में बेतरह बढ़ गई और

---

१ मनु स्मृति १।१

प्रतिग्रहादि की प्रशंसा और उसी को ब्राह्मणता के चिह्न होने की तान कहीं कहीं सुनी जाने लगी, तो जो अयाचक ब्राह्मण बड़े-बड़े जमीन्दार और राजे महाराजे थे, बहुत दिनों बाद उनको यह भास होने लगा कि प्रतिग्रह विशेष रूप से ब्राह्मणता का चिह्न है। अतः प्रतिग्राही ही माननीय ब्राह्मण हैं। हम लोग भी सर्वोत्तम ब्राह्मण ही हैं, तथापि ब्राह्मणोचित कर्म, राज्य एवं कृष्यादि करने से हमारी स्थिति वैसी नहीं रह गई। अतः इसमें पूज्यता भी नहीं रह गई। इस भ्रम में उनका बड़ा भारी सहकारी शास्त्रों का अज्ञान था, जिससे वे स्वयं पवित्र एवं पूज्य ब्राह्मण शब्द के शुद्ध अर्थ को समझ नहीं सकते। कालान्तर में जो कोई उन्हें जैसा समझा देता था वैसा ही समझ लेते थे।

पहले तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र यही संज्ञाएँ थीं। फिर बीच में कान्यकुब्ज, गौड़, अवस्थी, वाजपेयी, राय, सिंह, राठौर, चौहान आदि संज्ञाएँ चल पड़ी। ये सब संज्ञाएँ तो ७-८ सौ वर्षों से इधर की हैं। पहले तो प्रत्येक वर्ण में आज के समान न तो इतने छोटे-छोटे और परस्पर विलक्षण दल ही बने थे और न संज्ञाएँ तथा पदवियों की इतनी गिनती या प्रतिष्ठा ही थी। पहले सभी ब्राह्मणों का व्यवहार परस्पर मिला हुआ था। इसीलिये यद्यपि कि इन अयाचक दल वाले ब्राह्मणों की जमीन्दारादि संज्ञाएँ प्रचलित भी हुईं, तथापि उनका इतना प्रबल-प्रचार उस समय न हुआ जितना आज है। उस समय जो कुछ परिवर्त्तन हुआ था उसके बावजूद ये लोग सभी ब्राह्मणों में मिले थे। लेकिन उनके बाद ही एक ऐसा समय आया (जिसको लगभग ६-७ या आठ सौ वर्षों से अधिक न हुये होंगे) जब ब्राह्मणों में अथवा अन्य सभी जातियों में भी बहुत से अवान्तर (छोटे-छोटे) दल तैयार हो गये और बहुत-सी नई-नई उपाधियाँ भी चल पड़ीं। जब मुसलमानों का राज्य कुछ दिन बीत गया और उनकी जड़ यहाँ अच्छी तरह जम गई तब उन्होंने दूर तक अपने राज्य के विस्तार तथा प्रबन्ध के लिये बड़े, बड़े वीरों, प्रबन्ध-कुशल व्यक्तियों एवं रईसों को सम्मान देना प्रारंभ किया। राज्यान्तर्गत विविध पदों का स्थापित करना और साथ ही उत्साहित एवं अपनी ओर आकर्षित करने के लिए सिंह, खाँ, राय, चौधरी, दीवान और बाबू इत्यादि पदवियों का प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया, जिससे उनकी प्रतिष्ठा बढ़ने लगी और इन्हें देख कर उनके लिये दूसरे योग्य लोग भी लालायित हो यत्नकरने और प्राप्त करने लगे। बस, अब क्या था, जितने वीर लोग थे, चाहे ब्रह्मण हों या क्षत्रिय आदि, उनकी सिंह और खाँ इत्यादि पदवियाँ होने लगी जो आजकल प्रायः सभी ब्राह्मणों में पायी जाती है और वे लोग उसीमें अपने को कृत्य-कृत्य मानने लगे। बल्कि जिनको

उस समय न मिलीं वे अपने को महा अभागी समझते थे इसी प्रकार जो-जो लोग रक्षित या प्रबंधकर्त्ता वगैरह थे उन्हें राय, चौधरी और शाह इत्यादि उपाधियाँ मिलीं। इसी नूतन धारा-प्रवाह में पुरानी शर्मा, वर्मा, ऋषि-प्रभृति पदवियाँ लुप्त सी हो गईं। जिनका आज तक पता ही न लगा। पाण्डेय, चतुर्वेदी, द्विवेदी, त्रिवेदी, वाजपेयी इत्यादि उपाधियाँ भी नवीन ही हुईं। कुछ दिनों में यही नवीन उपाधियाँ बिगड़ते-बिगड़ते पाँड़े, चौबे, दूबे इत्यादि कहलाने लगीं। जैसे ब्राह्मण, शब्द भ्रष्ट होकर बाभन या ब्राह्मण और 'वाराणसी' से बनारस हो गया। इसलिये इन बात को कहने वाले नितान्त भूले हुये हैं कि शब्द में विकार होने से उसके अर्थ में (जाति में) भी विकार हो जाता है। समय के अनुसार पदवियाँ बराबर बदलती रहती हैं। बृटिश गर्वनमेंट के समय कुछ और और उपाधियों से भी प्रतिष्ठा मिलने लगी।

पूर्वकाल में सभी ब्राह्मणों के खान-पान आदि साथ थे, परन्तु आज न तो गौड़ों, कान्यकुब्जों के साथ और न दोनों के दक्षिणात्यों के साथ खान-पान या विवाह सम्बन्ध आज भी होते हैं। जिस समय कान्यकुब्जादि ब्राह्मणों के दल अपने-अपने कर्मों और आचारों से बने उसी समय कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में जो दल जमींदारी से घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाला था, वीर और राज दरबार में प्रतिष्ठित था, आचार-विचार में भी कुछ विलक्षणता थी, वह भी भूमिहार या भुईहार नाम से प्रसिद्ध हुआ। कान्यकुब्ज वंशावलियों से इस बात की जानकारी प्राप्त होती है कि कान्यकुब्ज प्रदेश स्थित मदारपुर के मालिक भूमिहार कहलाते थे। 'भूमिहार' शब्द का प्रयोग सबसे पहले कान्यकुब्ज वंशावलियों में काश्यप गोत्र के व्याख्यान में मिलता है न कि अन्यत्र भूमिहार ब्राह्मणों के साथ याचक दल वालों का विवाह-सम्बन्ध बहुत सा बना है। भूमिहार ब्राह्मण की यह वर्त्तमान (भूमिहार) संज्ञा यवन काल से चली है। भूमिहार शब्द का यह अर्थ हुआ — **भूमिं हरित प्रापयति बलादधि करोति केनचिदुपायेन स्वीकरोति वेति भूमिहारः'** अर्थात् जो ब्राह्मण पृथ्वी के ऊपर अस्त्र शस्त्रादि के बल से अधिकार कर लेवे, अथवा अन्यायांतर से प्राप्त पृथ्वी का स्वीकार कर लेवे उसे भूमिहार कहते हैं।

विवाह सम्बन्ध—त्यागी, महिआल, पश्चिमा भूमिहार आदि ब्राह्मण दल देश के कर्मवीर, धनी और प्रतिष्ठित अयाचक ब्राह्मणों का एक दल है। यह उसी समय बना जिस समय कान्यकुब्ज, मैथिल, गौड़, सारस्वत और सर्यूपारी आदि ब्राह्मण-दल बन रहे थे और अयाचक ब्राह्मणों का प्रतिष्ठित मैथिलों, कान्यकुब्जों; सर्यूपारियों और गौड़ों से विवाह सम्बन्ध था। प्रमाण पूर्णयता के

साथ 'ब्राह्मर्षि वंश विस्तर' में सैकड़ों भरे हैं। जब काशी में भूमिहार ब्राह्मण महासभा की बैठक हुई थी तब महाराजाधिराज काशी राज ने अपनी वक्तृता में इस बात की निर्णय किया था कि इन अयाचक ब्राह्मणों का मैथिलों, कान्यकुब्जों सर्यूपारियों और गौड़ों के साथ विवाह-सम्बन्ध होता था और है। जैसे भूमिहार ब्राह्मण अयाचक हैं वैसे ही याचक दल में भी तो बहुत से अयाचक हैं। ब्राह्मणों में याचक और अयाचक होना यह तो अपनी इच्छा के ऊपर निर्भर है।

विवाह सम्बन्धी पता सहित—दरभंगा प्रान्तस्थ दुलारपुर निवासी मैथिल तुरन्त लाल चौधरी का विवाह उसी प्रान्तस्थ शेरपुर ग्राम के जलेवार मूल वाले भूमिहार ब्राह्मण खगन चौधरी के घर हुआ है, जो सच्चे मैथिल हैं।

लड़केवाले भूमिहार ब्राह्मण	लड़की वाले सर्यूपारी ब्राह्मण
१ राम कुमार सिंह	पं० महावीर पांडे, ग्राम पवर गौतम गोत्र, परगना अरैल पं० शीतल बक्स पांडे अरैल
२ माता बदल सिंह	
लडके वाले सर्यूपारी के पते सहित	
१ पं० गंगाराम तिवारी उन बलिया के, ग्राम बसही कोटहा, प्र० अरैल गोत्र वशिष्ठ	श्री पितापाल सिंह, ग्राम पुरैनी प्र० अरैल, भरद्वाज गोत्री पांडे इत्यादि।

कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के साथ सम्बन्ध—

१ परगना सुराम, जिला प्रयाग, आनापुर के श्री देवकी नन्दन सिंह तथा आस-पास वाले बहुत से ग्रामों में जो अयाचक (भूमिहार) ब्राह्मण रहते है, वे सर्यूपारी ब्राह्मण, शाण्डिल्य गोत्री पहितीपुर के पांडे, सूक्ष्मपति पांडे के वंशज हैं। यह बात उन लोगों की छपी हुई वंशावली से विदित है। परन्तु बहुत दिनों से भूमिहार ब्राह्मण के साथ विवाह-सम्बन्ध करते-करते वे लोग इन्हीं में मिल गये हैं। दृष्टान्त के लिए श्री देवकी नन्दन सिंह की बहिन का विवाह काशी के श्री अलख सिंह से था, जिनके पुत्र कृष्ण प्रसाद सिंह हुए और स्वंय श्री देवकी नन्दन का विवाह जिला आजमगढ़ के सूर्यपुर में कुढ़नियाँ भूमिहार ब्राह्मण श्री राम गोविन्द सिंह की फूआ से था।

२ उसी विवाह से जो लड़कियाँ श्री देवकी नन्दन की हुई, उनमें एक का

विवाह जिला फतहपुर, गाँव वीर सिंह पुर, परगना कोड़ा जहानाबाद के कान्यकुब्ज ब्राह्मण काश्यप गोत्री सीरू के अवस्थी के घर हुआ, जिनके साथ अभी तक आना-जाना बना है।

१ वर पक्षीय त्यागी ब्राह्मण	कन्या पक्षीय गौड़ ब्राह्मण
गंगा राम, स्वयं, गोबिनपुरी अंबाला	तुलसी राम, बहिन, मुलाना अंबाला
२ वर पक्षीय गौर ब्राह्मण	कन्या पक्षीय त्यागी ब्राह्मण
केशव, स्वयं, कन्नौर रोहतक	जयलाल बहिन; शिकारपुर दिल्ली इत्यादि।

इस तरह सभी अयाचक ब्राह्मणों का सम्बन्ध याचकों से मिला हुआ है। अनेक पत्रों से स्पष्ट है कि जब मैथिल ब्राह्मण शिरोमणि इन अयाचक दलीय ब्राह्मणों को नमस्कार या प्रणाम आज तक बराबर करते आये और करते है और स्पष्ट शब्दों में 'शर्मा' या 'ब्राह्मण' शब्दों से व्यवहार करते हैं, तो फिर अब ब्राह्मण मानना किसे कहते है ?

कुछ लोगों के बीच ऐसी भ्रांतियाँ फैली हुई हैं कि भूमिहार ब्राह्मण नहीं बल्कि अलग जाति है। लेकिन प्रमाणों के आधार पर साबित हो चुका है कि भूमिहार कोई अलग जाति नहीं है, बल्कि ये ब्राह्मण जाति के ही वंशज हैं। जब कुछ ब्राह्मण अध्ययन, पुरोहिताई एवं देना लेना कर्म छोड़कर कृषि की ओर अग्रसर हुए तो उन्हें भूमिहार ब्राह्मण कहा जाने लगा। इसका विस्तृत वर्णन में 'स्वामीसहजानन्द सरस्वती' ने अपनी पुस्तक ब्रह्मर्षि वंश विस्तर में किया है—

भूमिहार ब्राह्मण है - इन सम्बन्ध में कुछ विद्वानों की राय तथा प्रमाण इस प्रकार हैं—

१ जब परशुराम ने पृथ्वी को क्षत्रियों से रहित कर दिया था, तब जिन ब्राह्मणों को उन्होंने राज्य का भार सौंपा था उन्हीं के वंशधर ये भूमिहार या बाभन हैं।

२ भूमिहार एक ब्राह्मण जाति है जो प्रायः उत्तर प्रदेश और बिहार में बसता और प्राय. खेती-बारी से जीविका निर्वाह करती है।

३ "बाभन मगध के आदि निवासी ब्राह्मण की शुद्ध संतान हैं। बंगाल उड़ीसा, दक्खिन और गुजरात इत्यादि प्रान्तों के ब्राह्मण प्रायः रक्त से बाभन ही हैं यानी प्राचीन आदि बासी पाकृत भाषी पुरोहितों के वंशज"।

४ "Bhumihar (Sanskrit Bumi 'Land' Kara (har) 'maker'). An important tribe and Land holders and agriculturists in eastern districts. They are also known as Badhan, Zamindar Brahmans, Grihastha Brahman or Pachima or 'Western Brahmans'."

५ पंडित परमेश्वर प्रसाद शर्मा के अनुसार ब्राह्मण के पहले 'भूमिहार' शब्द पेशा को ध्यान में रख कर जोड़ा गया है। इसी चीज की ओर लक्ष्य कर अरस्तू ने कहा था—मास्टर ऑफ लनिंग दे विल बिकम मास्टर ऑफ लैंड। श्री योगेन्द्र नाथ भट्टाचार्य भी कहते हैं—'ये ब्राह्मण जायगीर इत्यादि रूपे भूमि प्राप्त हइया छेन से भूमिह,रः' भूमि से जुटावे भूमिहार ब्राह्मण हुए और जो पूजा-पाठ अध्ययन-अध्यापन में लगे रहे वे ब्राह्मण कहलाये।

६ "One story is that Rajah chamachche called the Brahmans together for religious cermony and in the customary present of पान each found the name of a village on a ticket hidden in the पान leaf. They thus became Zamindars and land holders and gave up begging for alms."

अर्थात् एक किस्सा है कि राजा चमच्छे ने ब्राह्मण लोगों को एक साथ धार्मिक अनुष्ठान के लिए बुलाया और दक्षिणा में पान भेट की। पान के पत्तों के नीचे टिकट में एक-एक गाँव का नाम लिखा था। वे लोग इस प्रकार जमींदार और भूमिधारी हुए और उन्होंने भिक्षा-वृत्ति छोड़ दी।

७ बिहार की दूसरी जाति जिसे हमलोग बिहार के आदिकालीन ब्राह्मण का प्रतिनिधि मान सकते हैं, बाभन या भुईहार ब्राह्मण हैं।

"An other Bihar case which we may recognize the representatives of Primitive Brahmans of Bihar are the Babhans Bhumihar Brahmans."

८ डॉ० बुकानन ने १८१२-१८१३ में शाहाबाद का भ्रमण किया था। अपनी पुस्तक के पृष्ठ १८५ पर 'चेरी मर्डर केश' निर्णय का उल्लेख करते हुए उन्होंने इस बात की चर्चा की है कि भूमिहार पूर्ण रूप में ब्राह्मण हैं।

९ 'तवारिख-ए-बनारस' में उल्लेख है कि वे ब्राह्मण, जिन्होंने पौरोहित्य-कर्म छोड़ कर 'सिंह और राय' आदि की उपाधियाँ ले ली हैं, भूमिहार ब्राह्मण और जमींदार ब्राह्मण हैं।

१० 'तवारिख-ए-बनारस' में उल्लेख है कि वे ब्राह्मण; जिन्होंने पौरोहित्य-कर्म छोड़ कर 'सिंह और राय' आदि की उपाधियाँ ले ली हैं, भूमिहार ब्राह्मण और जमींदार ब्राह्मण हैं। जो ब्राह्मण अपना पौरोहित्य कर्म नहीं छोड़ चुके हैं, वे ब्राह्मण के नाम से पुकारे जाते

११ 'ब्राह्मण निर्णय' (१९१६) पुस्तक में श्री छोटे लाल शर्मा ने ६२४ प्रकार के ब्राह्मण में भूमिहार को संयुक्त प्रान्त एवं बिहार का ब्राह्मण कहा है।

१२ इलाहाबाद हाईकोर्ट ने महन्त वासुदेव बनाम शान्ता नन्द १९४२, ए० डब्ल्० आर० २०५ के अनुसार फैसला दिया है कि भूमिहार अपने को ब्राह्मण कहते हैं। वे द्विज हैं।

१३ फैजाबाद (यू० पी०) के एक केस में गवाह के रूप में उपस्थित होकर पंडित दामोदर पाठक (गवाह ७) पं० सूर्य नारायण शर्मा (गवाह ८), डॉ० उदय नारायण राय (गवाह ९), श्री कुलदीप नारायण राय (गवाह १०) पं० परमेश्वर प्रसाद शर्मा (गवाह ११) और श्री विश्वंभर दास (गवाह १२) ने अच्छी तरह से प्रमाणित कर दिये हैं कि भूमिहार ब्राह्मण हैं।

१४ 'मनुस्मृति' के अनुसार ब्राह्मण के छह कर्म माने गये हैं—(१) अध्ययन (२) यज्ञ (३) दान (४) अध्यापन (५) पुरोहिताई और (६) दान लेना इनमें प्रथम तीन धार्मिक प्रकृति के हैं और अन्तिम तीन जीविका के अनुसार। भूमिहार ब्राह्मण ने प्रथम तीन को ही अपनाया। इसका यह अर्थ नहीं कि वे ब्राह्मण नही हैं-ऐसा पं० परमेश्वर प्रसाद शर्मा के विचार हैं। एम० ए० शेरिंग ने भूमिहार द्वारा ब्राह्मण के कर्म को छोड़ने के दो कारण बताये—

(क) कृषि की ओर आसक्ति और

(ख) राजा, महाराज आदि की उपाधि से विभूषित होना।

१५ श्री एम० ए० अब्बासी, अतिरिक्त सिविल जज, फैजाबाद (यू० पी०) ने दिनांक १९-१०-१९७० को अपना निर्णय इस प्रकार दिया —

"Having considered the evidences before me, I come to the conclusion that the Bhumihars are Brahmans no doubt like so may Brahmins, the Bhumihars do not accept charity and do not act as priest, but that cannot make them non-Brahmin." इत्यादि।

सवार्णियाँ भूमिहार ब्राह्मण

सावर्णियाँ का गोत्र सावर्ण्य है। सावर्ण या सावर्णि भावी मनु हुए। सावर्ण आठवें मनु का मातृपरक नाम है। मनु से ही सृष्टि हुई। इनकी कुल संख्या १४ है—(१) स्वायंभुव (२) स्वारोचिष (३) औत्तमि (४) तामस (५) रैवत (६) चाक्षुष (७) वैवस्वत (८) सावर्णि (९) दस सावर्णि (१०) ब्रह्म सावर्णि (११) धर्म सावर्णि (१२) रुद्र सावर्णि (१३) रौच्य देव सावर्णि (१४) इन्द्र सावर्णि सभी मनु ब्रह्मा के पुत्र हुए।

प्रसिद्ध विद्वान् श्री कुलदीप नारायण राय 'झड़प', दिलकर, (बलिया) के पत्र दिनांक १३ दिसम्बर, १९७२ के अनुसार 'भृगु जी की वंश-परम्परा में सावर्णि नाम के एक गोत्रकार ऋषि हुए हैं। सावर्ण्य ब्राह्मणों की परम्परा उन्हीं से चली है।'

मूल सावर्ण्य गोत्र के तीन छोटे-छोटे दल हुए—(१) बेमुवार (२) पनचोभ और (३) अरापै।

बेमुवार बेमुपुर के रहने वाले हैं। आइन-ए-अकबरी के अनुसार सूबा बिहार में १९९ परगने थे। भीमपुर या बेमुपुर नाम का भी एक परगना था। 'शासन सैनिक एवं धर्माचार्य ब्राह्मण' लेखक दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती और 'ब्रह्मर्षि वंश-विस्तर' स्वामी सहजानन्द सरस्वती के अनुसार पटना जिला में ही कहीं बेमुपुर परगना या महाल था। ये लोग नरही, नुआंव, सुहांव, टटुआरी, भरौली तथा उजियार आदि चौदह-पन्द्रह गाँवों में बसे हुए हैं। अर्थात् इस वंश के लोग भोजपुर और बलिया (यू० पी०) आदि जिलों में फैले हुए हैं।

पनचोभ—दरभंगा जिला के पनचोभ गाँव के रहने वाले हैं। ये लोग गंगा पार ही रह गये।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती के अनुसार अरापै पटना जिला के अराप गढ़ के निवासी हैं। अरापा गढ़ (वर्त्तमान अराप गाँव) बिहटा से दक्षिण है, पयनाल से ५ मील दक्षिण।

पयनाल गढ़ एवं अरापा गढ़ दोनों चेरिया राजा के अधीन था। जब हमारे पूर्वज श्रीमान् राम्पे ठाकुर तथा चेरिया राजा के साथ युद्ध हुआ उसमें दो एक को छोड़कर चेरिया के सारे वंशज मारे गये और पयनाल गढ़पर हमलोगों का आधिपत्य हो गया। चेरिया के बचे खुचे लोग अन्यत्र भाग गये। उनका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ। अरापा गढ़ पर भी चढ़ाई हुई, पर वहाँ से सन्धि हो गई।

अरापा गढ़ में हमारे पूर्वज कुछ लोग जाकर बस गये थे। कुछ दिनों के बाद जब हमारे यहाँ की बेटी अरापा गढ़ में ब्याही गई तो हमारे पूर्वज बेटी के गाँव में रहना उचित नहीं समझे और कंचनपुर आदि गाँवों में बस गये। अभी अराप में केवल अहराईच भूमिहार ब्राह्मण हैं।

सावर्ण्य गोत्र के लोग मुख्य रूप से पटना जिला में बसे हुए हैं। यहीं से रोहतास, भोजपुर आदि जिलों में फैले।

सावर्ण्य गोत्र के सम्बन्ध में दण्डी स्वामी सहजानन्द जी का विचार इस प्रकार है—

"जो लोग प्रथम से अरापा गढ़ या पनचोभ गाँव में न रह कर अन्य स्थानों में ही पटना जिला में या अन्यत्र प्रथम से ही रहते हुए पीछे तक रह गये वे केवल सावर्णियाँ या सावर्ण्य ही कहलाते रह गये। उन्हीं पटना जिले में रहनेवाले सावर्ण्य गोत्री ब्राह्मणों में से कुछ लोग इधर-उधर बढ़े।"

पुनः, दण्डी विमलानन्द सरस्वती सावर्णियाँ के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखते हैं :—

"तीसरे केवल सावर्ण्य या सावर्णियाँ कहलाते हैं, अर्थात् केवल गोत्र से बोले जाते हैं और सावर्णियाँ या सावर्ण्य गोत्र वाले ब्राह्मण प्रायः कान्यकुब्जों और सर्यूपारियों में नहीं ही हैं और मैथिलों में भरे पड़े हैं।"

अभी तक प्राप्त सूचना के अनुसार सावर्ण्य गोत्र के लोग निम्नलिखित गाँवों में बसे हुए हैं :—

पटना जिला—पड़री, अमहरा, कंचनपुर, जिनपुरा, छतनी, तिसबोरा, अजवाँ, सरासत, चर्रा, शिकरिया, बिहटा, मोलाहिमपुर, यमुनापुर, दरियापुर, सबजपुरा, सगुनी, अख्तियारपुर, तिनेरी, गोपालपुर, जमालपुर, रेमा, रूपसपुर, बेरा, पयनाल, राजपुर, बराह, बनहवा राघोपुर, नभवाँ, चिहुँटा, खड़गपुर, भलआँ, बालीपाँकर, कल्याणपुर, बेढ़ना, पैपुरा, करकट बिगहा, अँकुरी, सोन कुकुरा, फुलेड़पुर, घनसुरपुर, जनपारा, संडा, सतपरसा, कराई, बेन्दौल, नामनगर, शिवनगर, पण्डारक, परसुराई, श्रीवरगोपालपुर, चरनाही श्रीनगर, चौरमा, निरमा तरेतपाली, बड़की टेंगरैला आदि।

गया जिला :—सरबहदा, रौनियाँ, जारी, बनवरिया, रौना, सलेमपुर, बारा,

परामन जमुआंवां (लाट के निकट), सुदासपुर, दरियापुर, मोकर, दौलतपुर, कुवरी, पुराण, जलपुरा, कुई, करौना बरसा, बढ़ौना कोयाटाँड़, मूरा, बिशुनपुर, सागरपुर, भोरी, परानपुर, हाजीडाब, खसखोरी, छरियारी सलारपुर, [illegible] हाटी, बेरचू, डेढ़सहया, नोनही, शेखपुरा, फतेहपुर, रूपाइठा, लाट, मनन बिगहा, पिपरा, चिचौढ़ा, पृजपुरा, जयकिशुन बिगहा, नइली आदि।

भोजपुर जिला – चन्दा, सिकरहटा, मलडर, मुकुन्दपुर, नगरी, चौरी, [illegible] गौरा, राजपुर, बेलाडर, असलान, बड़कीखड़ाँव, कान्हरपुर, सबलपुर, कौपा, [illegible] डुमरी आदि।

पलामू जिला—लाटू।

उत्तर प्रदेश में—नरही, नुआँव, सुहाँव, टुटुआरी, भरौली, उजियार, मैसोर, अमांव आदि चौदह गाँव।

मुंगेर जिला—इटहरी, बड़हिया (बारह टोलों में एक टोला)।

भागलपुर जिला—मकनपुर (अकबरनगर स्टेशन के पास)।

नवादा जिला—भदसेनी, रिअला, ओदनपुर, भदोखरा, गोंनी, घुमड़ा, साम्बे' सरकही, कोच गाँव, माफी, ढेरा, धानपुर, सोभानपुर, चन्डीनावाँ, बेलर, अपसढ़, दोसुत, सकरा, शिवनारायण बिगहा, बगोदर, बजरा, कोसला, चेया, अरियन, धेवधा, अंजुनार, नारोमुरार, छतिहर, सिसवाँ, नेया, आसाढ़ी, आंतीगढ़, मियाँ बिगहा, कुटरी, नजरडीह, कटौना, पाण्डे बिगहा, बलियारी, हेमजा, मनौती, मुगियाचक, सिमरी, परगना समाय, दरियापुर, भहरथ, सगवाँ, पटना सराय, घोसतामाँ, बड़गाँव, एकनार, डोला, कुम्भी, सैंदी (बादो सिंह, ग्रा०, पो० बढ़ौना (नवादा)।

बेगूसराय जिला—शिउरी, पहसारा, सिमरिया का (साबेनियाँ टोला)।

दरभंगा जिला—(नया तमस्तीपुर जिला)—दिघरा, जगदीशपुर, मनिकौर।

मुजफ्फरपुर जिला—बलुआ, मीरापुर, रामदयाल आदि। इनके अलावा भी बहुत से गाँव हैं।

सावर्ण्यगोत्र के प्रवर तीन हैं—(१) सावर्ण्य (२) पुलस्त्य और (३) पुलह।

था पाँच—(१) भार्गव (२) च्यवन (३) आप्लवान (४) और्व और (५) जाम दग्नय ।

	साम वेद	यजुर्वेद
प्रवर		
शाखा	कौथुमी	माध्यंदनीय
सूत्र	गोभिल	कात्यायन
पाद	बायाँ	दाहिना
शिखा	बाईं	दाहिनी
देवता	विष्णु	शिव

वेद में मतभेद है, लेकिन हम (सावर्णियाँ) लोगों को यजुर्वेद ही मानना चाहिए ।

इस पवित्र भूमिहार ब्राह्मण के विषय में कुछ ईर्ष्यालु प्रकृति के विद्वानों ने कल्पित मन गढ़ेत बातें लिखकर, पुस्तकें छपवा-छपवा कर जो अपनी विद्वता का परिचय दिया है और **'ब्राह्मणो ब्राह्मणं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते'** को अक्षरशः सिद्ध किया है उनको स्वामी जी ने किस तरह फटकारा है और उनकी पोल लीला की कैसी धज्जी उड़ायी है--इसे आप 'ब्रह्मर्षिवंस विस्तर' में देख सकते हैं ।

(ख) भाषा-विचार (कहावत एवं मुहावरा आदि)

'मगही' इस गाँव की एक मात्र भाषा है। बिहारी बयी भाषाओं (अर्थात् मैथिली एवं भोजपुरी) में 'मगही, अपने प्रयोग एवं विस्तार की दृष्टि से विशिष्ट स्थान रखती है। डॉक्टर ग्रियर्सन के मतानुसार यह 'बिहारी बोली' है। सन् १९०१ ई० की मत गणना के अनुसार इसके बोलने वालों की संख्या १,०४,८१७ थी। करीब आठ दशकों में जिस अनुपात में जन संख्या की वृद्धि हुई है, उसी अनुपात में इसके बोलने वालों की संख्या में अभिवृद्धि हुई है। नालन्दा और पटना जिले में सम्पूर्ण क्षेत्र पर इसका एक मात्र आधिपत्य है। हजारीबाग, भागलपुर, पलामू तथा मुंगेर के हिस्सों में भी इसके बोलने वालों की संख्या कम नहीं है। अनुमानतः बिहार की सम्पूर्ण आबादी की करीब २० 'मगही' भाषा बोलती है और मगही क्षेत्रों में तो इसका प्रतिशत ५०-५५ तक है।

भाषा की शुद्धता एवं परिनिष्ठता की दृष्टि से गया जिले की 'मगही' सब क्षेत्रों से विशुद्ध एवं स्वस्थ है। पयनाल की 'मगही' पर भोजपुरी, उर्दू और फारसी का प्रभाव स्पष्टतः देखने को मिलता है। मनेर के आस-पास के क्षेत्र को 'मनेरा' कहा जाता है, जहाँ की 'मगही' भोजपुरी मिश्रित है। पयनाल भी इसके अन्तर्गत आता है। पयनाल का परगना भी मनेर ही रहा है। भोजपुर जिले की सीमा भी सटे पश्चिम में है। कहा जाता है कि १२ वीं, १३ वीं शताब्दी में मनेर मुसलमानों का गढ़ था। इसी से मगही में उर्दू-फारसी का सम्मिश्रण हो गया प्रतीत होता है। कुछ अँग्रेजी के शब्द भी प्रचलित हो जाने के कारण इसमें घुलमिल गये हैं, जैसे—स्कूल, टीचर, प्रोफेसर, ब्लैक बोर्ड, कॉपी, लाइन, स्टेशन, ट्रेन, पेन्सिल, ट्यूबेल आदि। इन शब्दों के सम्मिलन के परिप्रेक्ष्य में शासकीय अंग्रेजी शासन ही दीखता है। इस भाषा में जहाँ अरबी की 'कमीज' शब्द प्रचलित है, वहाँ तुरकी का 'कुरता' भी कम प्रयोग में नहीं है। फारसी के 'रूमाल' की भी यही स्थिति है। विद्वान् प्रोफेसर रामनाथ शर्मा का यह विश्लेषण इस गाँव की भाषा पर भी सार्थक सिद्ध होता है—"इसी प्रकार गाँव की मगही में तुर्की (काबू, कैंची, चारपाई, जाजिम, तोशक आदि) पुर्तगाली (अल्मारी, अचार, कमीज, तम्बाकू, बाल्टी, बोतल, नीलाम आदि) फ्रांसीसी (जज, होटल आदि) चीनी (चाय, चीनी, लीची आदि) अँग्रेजी (अपील, स्कूल, गिलास, कॉलेज, डॉक्टर,

ाउडर, मोटर, प्रेस आदि) तथा जापानी (रिक्शा आदि) आदि भाषाओं के शब्दों का अच्छी तरह प्रभाव पड़ा है। सभी शब्द मगही में पच गये हैं।"[१]

नये पढ़े-लिखे लोग जहाँ मगही को देवनागरी लिपि में लिखते हैं वहीं पुराने लोग 'कैथी लिपि' में। देवनागरी लिपि में लिखने के प्रचार को डॉ० श्री मती सम्पत्ति आर्याणी, डॉ० श्रीकान्त शास्त्री, संतकवि 'पुण्डरीक, सुरेश दुबे सरस, कविवर बाबू लाल मधुकर, कविवर योगेश, प्रो० रामनन्दन आदि प्रभृतों से काफी बल मिला है। इस भाषा के विकास में मगही पत्रिका 'बिहान' का प्रकाशन शुभ सिद्ध हुआ है। अब तो साहित्य की सारी विधाएँ इस भाषा से काफी प्रकाशित हो गयी है और हो रही है।

क्षेत्र विस्तार के कारण स्थान विशेष के अनुसार भाषा का स्वरूप-भेद परिलक्षित होता है। हजारीबाग, भागलपुर, पलामू और मुंगेर की बात तो दूर रही, गया, पटना और नालन्दा की मगही में भी स्वरूप-भेद सर्वमान्य है। इन जिलों की मगही में क्रिया-भेद उम्र के आधिक्य एवं अलपत्व पर आधारित प्रतीत होता है जैसे—

	बड़ों के लिए	छोटों के लिए
पटना जिला	उ खलयन या उ खलथुन।	उ खलकबऽ।
गया "	उ खलखुन।	उ खलकी।
नालन्दा	उ खलखिन।	उ खलकइ।

पटने जिले की मगही 'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी' की कहावत को चरितार्थ करती है। प्रो० रामनाथ शर्मा के अनुसार पटना जिले की मगही स्थान विशेष के कारण पांच रूपों में विभक्त है।[२]

किसी भी भाषा की शोभा-वृद्धि अलंकार-प्रयोग से होती है। इस गाँव की भाषा 'मगही में भी अलंकारों की अद्भुत छटा देखने को मिलती है। हालाँकि बोलने वाले अलंकार-ज्ञान से प्रायः अनभिज्ञ या अपरिचित हैं किन्तु बोल चाल में ये अनायास अलंकारों का पयोग कर देते हैं। विशेषतः उपमा अलंकार का प्रयोग खूब देखने को मिलता है।

१—अमहरा-प्रो० रामनाथ शर्मा-पृष्ट ७२-७३

२—अमहरा-प्रो० रामनाथ शर्मा-पृष्ट ७४

उदाहरणार्थ--

(क) उनकर दाँत चाँदी नियर हईन। } उपमा अलंकार
(ख) उनकर नाक टूसा अइसन हईन।

इस भाषा में 'नियर' और अइसन' के प्रयोग को उपमा अलंकार का प्रायः निरूपण होता है। 'मुँह' का उपमा सदा 'चाँद' ही होता है। अक्सर इसका प्रयोग महिलाएँ नई-नवेली दुलहिनों को देखते वक्त करती हैं। इसी तरह 'जर, जोरू, जमीन, झगड़ा के घर तीन' में वृत्यनुप्रास; 'बाबू के रोग न मयरोग हल, मिरतु धयलक हल' में अपह्नुति अलंकार देखने को मिलता है।

इसी तरह शब्द—शक्ति के तीनों रूप (अभिधा, लक्षणा और व्यंजना इस गाँव की मगही में देखने को मिल जाते हैं। भाषा-विज्ञान से अपरिचित होने के कारण इन शक्तियों से ग्रामीण पूर्णतः अनभिज्ञ हैं किन्तु भाषा की प्रवह मानता में ये तीनों शब्द-शक्तियाँ स्वतः सम्मिलित हो गयी हैं। महिलाओं के आपसी झगड़ों में शब्द-शक्तियों के अच्छे प्रयोग दृष्टिगत होते हैं। जैसे—'तोर मंगिया में रखिये रगड़ देब', 'तोर गोदिये सुन्ना कर देम' आदि। इन वाक्यों का अभिधार्थ अस्पष्ट है यानी मुख्यार्थ बाधित है। अतः लक्ष्यार्थ से क्रमशः स्पष्ट हैं —

विधवा बनाना, निःसंतान करना। ऐसा कहने का मात्र प्रयोजन इतना ही नहीं होता अपितु यह भी होता है कि तुम मुझ से झगड़ो नहीं, अन्यथा तुम्हारे पति-पुत्र मर जायँगे और तब तुम दर-दर की भिखारिन बन जाओगी। जिन्दगी समस्याओं के घेरे में कैद होकर दम तोड़ देगी। यही है शब्द-शक्ति की व्यंजना, जो वाक्य-रूप से अलग भाव-संदर्भ के लिए स्तुत्य है।

कहावतें—

कहावत एक ऐसा वाक्य है, जिसमें अनुभव तथा तथ्य का चमत्कार होता है, जो उसकी संक्षिप्तता में घुला-मिला होता है। इसे विशुक्त हिन्दी में 'लोकोक्ति' भी कहते हैं। किसी कथ्य को पुष्ट या सरस बनाने के लिए प्रायः इसका प्रयोग होता है। गाँवों में इसका अधिकांश प्रयोग 'हास्यस्पदता' प्रदान करने के लिए किया जाता है। दो चार व्यक्ति यदि कहीं बैठे हों और समय काटने के लिए या परिश्रम करने से उत्पन्न थकान को दूर करने के लिए अनावश्यक बातों में संलग्न हों, आप देख या सुन सकते, हैं, कैसे एक दूसरे को बेवकूफ बनाने के लिए 'कहावतों' का प्रयोग करते हैं। बेवकूफ बनाने के क्रम में जिन कहावतों का प्रयोग होता है

इसके परिप्रेक्ष्य में वैमनष्यता या दुश्मनी नहीं होती, मात्र मनोरंजन प्रदान करने की भावना होती है। उदाहरणार्थ—यदि किसी व्यक्ति को अनायास या अप्रत्याशित कोई चीज मिल जाय तो अक्सर लोग कहते हैं —'अरे ओकर बात छोड़ न, बिलाई के भागे सिकहर टूट गेलई'। इसी तरह दूसरे की कमाई पर निर्भर रहने वालों के लिए 'दोसर के भतार पर सोलहों सिंगार' विपन्न पुरुष या महिला के साथ समाज का न्यायोचित सबम्न्ध न देखने पर 'अबरा के मउगी सबके भउजी' का प्रयोग होता है। कहावत किसीबात की भाषाई विस्तृतता को संकीर्ण तथा सीमित करती है। फलतः किसी भी भाषा में सरलता, गंभीरता एवं उतुंगता आ जाती है।

गाँव का कहावत कोश

अ—अबरा के मउगी सबके भउजी। असल के बेटी केवाल के खेती। अनजोखल बाई माल्हर गाई। अपन दुआरी पर कुतबो बरिआर। अधजल गगरी छलकत जाय। अपना ला लाली वाली, भतार के देलन छाली। अहीर, गड़ेरी, पासी, तीनों सत्या नासी। अपन हारल, मेहरी के मारल कोईकहऽहे? अन्हरा आगे रोई, अप्पन दीदा खोई। अन्हरा में काना राजा। अन्त भला तो सब भला। अंडा सिखावे बच्चा के कि चें-चें मत कर। अइली न गेली, कउन बहू कहइली अक्किल बड़ा कि भैंइस। आगे सोची सदा सुखी। अघायल बगुला पोठिया तीत। अघायलों भैंइसा तो पाँच कट्ठा। असकती गिरलन कुंइयाँ में तब कहलन कि हम एही में रहब। अहीर समझावे से भरद। अबरा के मुँह कुत्ता चाटे। अनकर आस परे उपास, अप्पन हाथ जगरनाथ। अनकर कमाई पर मोरपिया बाँका। अप्पन पेट तो कुतबो पोसऽहेअ। अति सर्वत्र वर्जयेत्। अगिला खेती आगे-आगे, पछिला खेती भागे जोगे। अन्हरी गइया के राम रखवइया। अपन ढेढ़र न देखे आ दोसर के फुल्ली निहारे। अहीर हीं खाहूँ गेली तो बिना घीउ के? अहीर के माथा पर हजाम सीखऽहे। अन्हरा, लँगड़ा, तीन जौ अगरा। अंगेआ माँग के बीजे गायब। अबते बहुरिया जनमते लड़िकबा, जउन लत लगाई से लगे। अउरे-रल भतार गोरथारी।

अजिगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलुक्का कह गये, कि सबके दाता राम॥

अदरा गेल तो तीन गेल सन-साठी-कपास। हथिया गेल तो सब गेल, जहाँ ले घूमे चास। अन्हेरपुर नगरी, चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा। अपना मन के मउजी, मेहर के कहलन भउजी। अपने मुँह मियाँ मिट्ठू।

अपना घर दीया न बाती, दोसरा हीं मूसर अइसन बाती। अब पछतावे से क्या, जब चिड़ियाँ चुग गयी खेत। अबरा पर उनचास बेआर। अपना दिल जानिये पराया दिल की बात। अगहन दोबर, पूस सवाई, माघ बरसे तो फ से जाई। अनजान चोर बादशाह बरोबर। अप्पन भूख चूल्हा फूँक, सबहीं भूख माथा दूख। अति अखरखन करे जो कोई, अनल प्रगट चन्दन से होई। अददी के भँइस बिआयल आ चुक्का ले के दउरल आय। अन्हरी गइया के रखवइया। अरवा चाउर के पकना का, बूढ़ भतार के ठगना का ?

आ—आनो के आन चीता; कानो के भतार चीता। आन्हर गुरु बहिरा चेला, माँगे हरें दे बहेरा। आपरूप भोजन, पराया रूप सिंगार। आगें नाथ तब राह बतावऽ। आजे बनियाँ कान्हे सेठ। आग लगन्ते झोपड़ा, जे निकसे सो लाभ। आधा तीतर आधा बटेर। आग लगला पर कुआँ खना है? आम के आम गुठली के दाम। आँधी में बेना के बतास? आगे नाथ न पाछे पगहा, बीच बाजार में लोटे गदहा। आवें आम चाहे जाय लबेदा, आयल अगहन फूलल गाल, फिर देखऽ तो ओही हाल। आधा तजे पंडिता, सर्वस तजे मूर्खा। आधा माथे काँवर कान्धे। आप भला तो जग भला। आरिये तर कट्ठे मन, आरिये तर मुआर। आम पाल के, कटहर डाल के, लड़िका छिनार के। आइ माइ के टीका न बिलइया के भरमंगा। आप गये और जजमान को भी लेते गये। आदमी में नउआ, आ पंछी में कउआ। आरसी न फारसी मियाँ जी बनारसी।

आलस नीन्द किसाने नासे, चोर नासे खाँसी।
लिब-लिब आँख पतुरिया नासे, मिरगी नासे पासी।

आवइत हाय-हाय, जाइत संतोष। आवे ला रहऽहे तब छप्पर फार के आवऽहे।

ओ ओस चाटे से पिआस जाहे? ओखरी में सिर तो मूसर के डर का?

औं आँख हवऽ कि अलुआ के फाँक हवऽ।

इ इहाँ न लाग हि राउरि माया। इहाँ कुहड़ बतिया कोउ नाहीं जो तरजभी देखत मरि जाहीं।

ई ई हाथे देवऽ तऽ ऊ हाथे लेवऽ।

उ उदन्त घोड़ी, दुदन्त गाय, माघे भँइस गोसइयाँ खाय। उलट बैना पलट बैना, बाँझ घर के कइसन बैना। उलटे चोर कोतवाल के डाँटे। उत्तम

होती मध्यम बान, निरघिन सेवा, भीख निदान। उगइत ऊगे महभरे, डुबइत डूबे जाय। उतरा के निगार आ हथिया के सिगार।

ऊ ऊड़ल सतुआ पितरन के दाम। ऊधो के लेना न माधो के देना।

ऊँ ऊँची दूकान की फीकी पकवान। ऊँच बड़ेरी खोखड़ बाँस। ऊँट के मुँह में जीरा?

ए एगो हरें, भर गाँव खोंखी। एक पंथ दुइ काज। एक छउँरी आ हेल, तुसरी लगा गेल, अपने परा गेल। एही माघे जाड़ न जायत। एक साधे से सब सधे, सब साधे सल जाय। एक दिन पहुनई, दोसर दिन बेहई। एक बैल ओकरा भर गाँव सेकरा। एने मारे फूला पाती, ओने मारे घूँस। एक चाउर टोए से भर हाँड़ी के पता लग जाहे। एक हाथे ताली न बजे।

क कदुआ पर सितुहा चोख। कहाँ राजा भोज, कहाँ भोजवा तेली। करिया बाभन गोर चमार, इनका पर न करिह इतवार। कतनो बाभन सीधा तइओ हँसुआ अइसन टेढ़। कमाय धोती वाला, खाय टोपी वाला। कलहक जड़ सुपने खिया। कभी नाव पर गाड़ी कभी गाड़ी पर नाव। करिया अच्छर भइस बराबर कभी घोड़े के पीठ पर, कभी खुरपे के मूठ पर। करनी न धरनी, धिया ओठ बिदोरनी। कपड़ा पेन्ही तीन बार, बुध बिरहसपति शुक्करवार, हरले बरले एतवार।

करम हीन सागर गये, जहाँ रतन के ढेर।
छूत ही माँटी भये, देखो करम के खेल॥

कह सुनाई फिर कर देखाइ। कउला से कउबलबे चालाक। कहाँ धाव कहाँ पव कपड़ा पेन्ही सफेद, घोड़ा चढ़ीं कुमेद। कनगोजर के एक टाँग टूटले से का? कब बनमल, कब राकस भेल।

का काँस कसौटी सुक्कन बान, इ छोड़ मत कीन आन।
जहाँ देख रूपाधौल, दस बीस रुपया दऽ उपरौर।
जहाँ देखह बैरिया गोल, उठ बइठ के कर मोल।
जहाँ देखिहऽ मैना अलगे से फेंकिहऽ पैना।

कानी गइया के अलगे बथान। कापर करूँ सिगार; पिया मोर आन्हर। काम भेल दुख बिसरल। काजर कइली बीजर कइली, टिकुली तोहइयेनऽ। काम पेंआरा है, चामनऽ।

काका चोर भतीजा पाजी' काका के सिर जूता बाजी। का हो, [illegible] के फूल हो गेलऽ ?

के केकर खेती केकर गाय, कउन पापी हाँके जाय। केकरा-केकरा [illegible] नावें, कमरी ओढ़ले सँउसे गाँव। केकरो भँटा बैरी, केकरो भँटा पथ।

को कोढ़िया डेराबे थूक से। कोउ नृप होंय हमहिं का हानी। कोई [illegible] पुछ से काउ बाबा। कोऊ काहू में मगन, कोऊ काहू में मगन।

कु कुत्ता के चउका पर बइठंबऽ तब चउका चाटिये के भागत कुत्ता के पेट में घीउ पचऽ हे ?

कू कूदे बैल न कूदे तंगी। कूदे फाने तोड़े, तान, ओकरे दुनिया रखे मान।

ख खस्सी के जान जाय, खवइया के सवादेऽन। खग जाने खगही के भाषा। खखनल बहुरिया लट्टा कूट। खटमल मारबऽ कि खटिये के जरा देबऽ।

खा खाके पसरी, मार के ससरी। खाय के खरची न; डेउढ़ी पर नाच। खा के चले कोस; अपने मरे दइब के दोस। खाय गेहुँ न तऽ रहे एहूं। खाय के ठेकान न नेहाय के तड़के। खाध मारे बेयाध के।

खि खिचड़ी के चार इयार, दही; पापर, घीउ, अँचार।

खे खेत बिगाड़े बथुआ, गाँव बिगाड़े नटुआ। खेत खाय गदहा, मार खाय जोलहा। खेती कइली जीएला बैल बिकायल बीए ला।

ग गये मरद जो खाय खँटाई, गई राँड़ जो खाय मिठाई। गया के राह कोरमत्थू ? गइयो हूँ बछरुओ हूँ। गये नेपाल करम कपाल। गये माघ दिन उनतिस बाकी।

गं गँजेरी इयार किस के, दम लगा के घिसके।

गं गंगा के धार या हाकिम के रोख कोई न जाने। गंगा नेहाइ बोट चोट खाइ।

गा गाय के सींग बैल में आ बैल के सींग गाय में।

गाँ गाँठ खुलेन न बहुरिया दुबराय। गांव के छउंड़ी बटहगनी।..... में बार न भाल से इआरी।

गे गेहूँ सूआ, जौ मूआ।

गो गोदी में लड़का, नगर में ढिंढोरा।

गु गुड़ खा के गुलगुल्ला से परहेज। गुरु गुड़े रहलन, चेला चीनी हो गइलन। गुड्डी उड़े अकास में; तागा मेरे पास। गुरु करीं जानके, पानी पीहीं छान के। गुड़ के नफा चुँटिये खा गेल।

घ घर के जोगी जोग नऽ बहर के जोगी सिद्ध, खाने वाला खा गया; घर के गावे गीत। घर के भेदिया लंका ढाहे। घड़ी में घर जरे, नौ घड़ी भवरा। घर के मुर्गी दाल बरोबर। घर के बिगाड़े बूढ़ी; पेट बिगाड़े मूढ़ी। घर फूटे गँवार लूटे; गाँव लूटे जेवार लूटे। घन के बोइये, न पछितइये। घर-घर देखा एके लेखा। घर के भूत मारे नऽ डँहजाबे हे।

घाँ घाँय घोंय तोरा, मल्हान बाजे मोरा।

घी घीउ गीरल तो दाल में। घीउ के लड्डू टेढ़ो भल। घीउ देत घोर करिआय।

घो घोड़ा के पछार आ मालिक के अगाड़ न जाय के। घोड़ा के लात घोड़ी सहऽहे। घोड़ा नाचे घोड़ी नाचे, ओकरे साथे गदहियो नाचे।

च चलत फिरत कुछ पाइये, बैठा देगा कौन? चट मँड़बा पट बिआह। चमइन के आगे कोंख छिपाबल जाहे? चरगोरबा बन्हा हे, दु गोरबा नऽ। चले न जानी अँगनमें टेढ़। चमार के सरापला से गोरू मरऽ हे? चहिय अमिय जग जुरैन छाँछी। चमड़ी जायतो जाय, दमड़ी न जाय। चढ़ल जमानी माँझा ढील। चलनी दुसलन सूप के जिन का में, सहस्सर गो छेद।

चइतसूते रोगी, बइसाख सूते भोगी जेठ सूते राजा, अषाढ़ सूते अभागा

चढ़इत बरसे आदरा, उतरइत बरसे हस्त।

जनता राजा डाँड़ लेऽ टूटे नऽ गिरहस्त॥

चइतक जाड़ राड़ की बोली, जुगल कहार ओछ पुनि डोली। आउर चितरा के घाम, ई पाँचो जनि देखइह राम।

चले के चेत नऽ उड़ाबे के आँधी। चल घोड़ी धाने-धान। चढ़ीं तो नर, न तो बइठीं तो घर।

चा चाल चलीं सादा कि निबहे बाप दादा। चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात।

चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी।

बीस कोस पर पगड़ी बदले; तीस कोस पर छानी ॥

चार छोट चार मोट तब बैल।

चे चेरी बेटी राज करे, रानी गोबर ठोकनी। चेत जुआरी अपन दाव।

चि चित्त परे तब मेरा, पट्ट परे तब तेरा।

चो चोरी आ सिनाजोरी? चोर के दाढ़ी में तिनका। चोर-चोर मौसेरा भाई। चोर के मुँह चान्द निअर।

चू चूड़ा के गवाह दही।

छ छनकल बहुरिया .....पर हाथ।

छवधर कहे कि आऊँ जाऊँ, सतधर कहे कि मिरवा के खाऊँ, अठधर कहे पूरेपूर, नौधर कहे कि राज बइठाऊँ। छप्पर पर के कोंहड़ा आ गोदी में के लड़िका छिपावे से नऽ छिपे।

छि छीनरी के मन बसे ककरी के खेत में।

छो छोट मुंह बड़ बात। छोट भावे नऽ, बड़ अलगे नऽ।

छ छुछुन्दर के माथे चमली के तेल?

ज जहर खाय से मरऽ हें कि छूए से? जहाँ हंड़िया रहत, उहाँ डनढनयवे करत। जल में रह के मगर से बर? जनम के बिगड़ल अब का सुधरो। जब तक साँस तब तक आस। जइसन देस ओइसन भेस। जइसन हलऽ हो कुटुम ओइसन मिलल हो कुटुम, ई बाह-बाह हो कुटुम। जब जइसन तब तइसन। जब पेट में पड़ल खुट्टी त सूझे लगल बुद्धि। जहाँ मुर्गा न होय, उहाँ बिहान न होय? जोरू जमीन, झगड़ा के घर तीन। जइसने मुरदा पर पाँच मन ओइसने पचास मन। जहाँ गुड़ रहत उहाँ माछी लगवे करत। जतना गुड़ देबऽ ओतना मीठा होयत। जस दुलहन तस बनी बराता। जउन पत्तल में खयबऽ ओही में छेद करबऽ।

जइसने ऊधो, ओइसने भान।
न इनका पोंछी, न उनका कान ॥

जहाँ न जाय रवि, उहाँ जाय कवि। जइसन देवता ओइसन पूजा। जइसने हीरा के चोर ओइसने खीरा के चोर। जस-जस मुर्गी मोटानी, तस-तस दुम

सिकुरानी। जइसन निअत ओइसन बरकत। जतना बड़के गाजी मियाँ, ओतना बड़ के पूँछ। जइसन गौ के अगिला भाग, ओइसन पिछला भाग। जतना के लाई त ओतना बिदाई।

जा जान न पहचान, मैं तेरा मेहमान। जादे जोगी मठ उजार। जादे बर्तन तीन जगह मखऽहे। जाय ओला के गोड़ होअ अइऽ। जाको राखे साइयाँ मारि सकै नहिं कोय। बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय। जा पर कृपा राम की होई, तापर कृपा करहिं सब कोई। जाने के न सूने के, टर-टर फूके के। जागे से पावे, सोये से खोये। जाके पैर न फाटे बेआय, से का जाने पीर पराय। जाने जौ जाने जाँता।

जाड़ा लगल पाला लगल ओढ़ गुदरी।
बुढ़ीया के दमाद अयलन, मार मुँगरी॥

जाको मति भ्रम भयए खगेसा, सो कह पश्चिम उए दिनेसा। जाके मंत्री भये भिखारी, सेकर..... दइबे मारी।

जि जिन्दगी ले जहान हे। जिससे रखिये बनापिरीत उससे रखिये लेखा नीत।

जे जे पाँडे के पतरा में; से पड़िआइन के अँचरा में। जे गरजहे से बरखे न। जेकरा पिया माने ओही सोहागिन। जे इआरी राहे बाटे से इआरी कोल्हुआरी? जेकर छाती में एको न बार, सेकर कबहूँ न कर इतबार। जेकर बनरी सेइ नचावे: दोसर नचावे काटे धावे। जेकर लाठी ओकर भइँस। जे चाभे भदइया डाँड़, से फाने अहरा के खाँड़। जेठके दुपइरिया, भादो के अन्हरिया माघ के भिनसरबा न निकले के चाही।

जे न देखे बाघ, से देखे बिलाई।
जे न देखे कनेआँ से देखे कनेआँ के भाई॥

जेकर बाप न मारे मूस, सेकर पूत खरहा ला रूस। जेकर मइआ पुअबा पकावे सेकर धिअबा ललचे? जेकर खाइँ ओकर गाइँ। जेकर चून ओकर पून, खाने वाला धामर धूम। जे रोगी के भावे, से बइद फरमावे। जेकरे बामन के भल, से परे देवी के बल। जे धावत से पावत। जेही माथे मउर ओही माथे गनउर। जेकरा पर चूअ हे से छयवे करऽहे। जेकर घरे मध ओकरा बारहो मध। जे दोसर के बरबाद कर हे; ऊ खुद बरबाद होहे। जेकरा ला चोरी करी सेइ कहे चोरा।

जे गरज हे से बरसेनऽ जे कोई न पूछे से काउ बाबा। जे देखहीं में न से [illegible] में का।

जै जैसी बहे बेकार जब, तैसी दीजे ओट।

जो जो जनमे तरहत्थी में बार, तइओ न कर अहीर के इतबार। जो तोको काँटा बुवे, ताहि बोउ तू फूल। जो बोवेगा सो काटेगा। जो पुरबा पुरवइया पावे, सूखल नदी नाव चलावे।

जु जुग जितलें मे कानी, जुग जितलें। जुगती से मुक्ति।

झि झिटकी से भी घइलाफूटऽ हे।

झू झूठी मउँसी पाँव लागी, जीअऽ पूता लबरा।

टा टाट पर रेशम के बँखिया।

टि टिटिहिया के टाँग अलगबला से कहीं बादर रुकऽहे।

टें टेंढ़ जानि शंका सब काहू, बक्र चंद्र महि ग्रसै न राहु।

ठ ठाँव जान काजर, कुठाँव जान कारिख। ठठेरा-ठठेरा में बदलइया होहे ?

ठे ठेस लगे पहाड़ में तो फोरऽ घर के सिलउट।

ढ ढकनी कुम्हार के, घीउ जजमान के, बोल बढ़ामन सोआहा।

ढो ढीब ढाब बाजऽहे तो नीक लागऽहे, नेग जोग माँगहे तब छाती फाटऽहे।

त तकदीर में लिखे से तदबीर क्या करे ? तनी गो के गाजी मियाँ, बड़ी गो के पूँछ। तर काठ ऊपर काठ, ऊ पूत के कउन आस ?

ता ताकत कम आ खीस जादे, ई चाल पिटाय के।
आमद कम खरच जादे, ई चाल बिकाय के॥
ताड़ में .... रगड़े जैबऽ तब खइक न गरतबऽ ?

ती तीन कनउजिया तेरह चूल्हा। तीन टिकट महा बिकट।

ते तेली के तेल जरे, मशालची के..... फटे। तेतर बेटा भीख मगावे, तेतर बेटी राज बइठावे।

तो तोरे गाल तोरे पिट्ठा।

तु तुड़ुक तारी, बैल खेसारी, बाभन आम, कोइरी काम।

तू तू डाल-डाल हम पात-पात।

था थान हारब तो हारब, गज भर न फारब। थाकल बैल देह भइ भारी, ऊब का लादबऽहो बेपारी।

थ थूक से सतुआ सनाईऽ ?

द दरबे से सर्वे, जे चाहबे से करदे। दरब के दरबारहे। दही के अगोरा बिलाई ? दमड़ी के हाँड़ी गेल, कुत्ता के जात पहचानल गेल। दस के लाठी एक के बोझ। दस दिन दसई पाँच दिन असई, सेकरे सोरहे सोहराई, सेकरे छवे छठ, ओकरे पाँच जेवठान, ओकरे चारे गंगा असनान, ओकरा बाद लाबऽ हँसुआ काटऽ धान।

दा दादा कहे से बनियाँ गुड़ देहे ? दाल भात में मूसरचन्द। दाल में काला हे।

दि दिन खाय चील्ह कउआ, रात खाय सियरा।
धाड़-धाड़ करत, बेहाल भेल जियरा॥

दे देखऽ उँट कउन करवट बइठऽहे। देकली गेले दूना दुख। देहे-देहे नाता खेते-खेते पट्टा। देह में दम न, बाजार में धक्का ? देशी मुर्गी बिलायती बोल। देखले छेंउड़ी समधीन।

दो दोसर के लाल माँग देख के अप्पन कपार फोरल जाहे ? दोसर के आस, पर उपास। दोसर के भतार पर सोलहो सिंगार।

दु दुधार गाय के दु लातो भला। दुबिधा में दोनों गये, माया मिली न राम।

दू दूध पूत न छिपे। दूध के जरल मट्ठा फूंक-फूंक के पीयल जा हे। दूरके ढोल सोहावन।

ध धन देखले धन हो हे; बेटा देखले बेटा। धन के तीन सिंगार घोड़ा, रोड़ा, बिदोड़ा।

धा धान गिरे सभागा के, जौ गिरे अभागा के। धान काटि दुद्धा, जौ काटी बुड्ढा। धान पान नित असनान। धान सुखइत हे कउआ टरटराइतहे।

धो धोबी के कुत्ता न घर के न घाट के।

न न नीमन गीत गायब न दरबार में पुछायब। नर बानर अघायले जाड़। न नौ मन धीउ होयत न राधा नचतन। नउआ के बरिआती ठाकुरे ठाकुर।

न अति बरखा न अति धूप, न अति बक्ता न अति चूप। नई धोबिनिया आई, गुदड़िये साबुन लगाई। न धोबिया के दोसर जानवर हल, न गदहवा के दोसर मीरा।

ना नाचना है तब घूँघट का? नाग मरले डोर के टीका। नामी नाम ला, पेटू मरे पेट ला।

नि निरपति एक चले ससुरार, पैरे धोती लिए सँवार। कनेओ हल मसुहर गेल, गाछे कटहर ओठे तेल॥

ने नेकिओ पूछ-पूछ?

नो नोख मजूरी चोख काम।

नौ नौ के लकड़ी नब्बे खरच। नौ नगद न तेरह उधार।

प पहिले भीतर तब पीतर। पच्छी में कउआ आदमी में नउआ पतिबरता कहाँ नहे, बाँकी जब गुंडा से बचे। परिकल बहुरिया करइला में झोर। पढ़े फारसी बेचे तेल, देखो तो, किसमत के खेल। पहिले आत्मा तब परमातमा।

प्र प्रभुता पाइ काह मद नाहीं?

पा पाही खेती आ पोसपुत बेटा मानऽहे?

पि पिया भये कोतवाल, अब डर काहे का। पिया भये कोतवाल अब तो लँगटे सुतबइ ना।

पे पेड़ न बगान तहाँ रेंड़ पुरधान। पेट जरे तो जरे, सदन बिगड़े।

पो पोखरा खनाय के ठेकान नऽ आ मगर गोह के डेरा गिर गेल।

पु पुरुष होत बलवान नहीं, समय होत बलवान। पुराने चाउर के पंथ परऽ हे।

पू—पुख पुनरबस कादो सान, असरेसा मघा रोपो धान। पूत माँगे गेली, कोंख गवाँ के अइली। पूर्बा रोपे पूर किसान, आधा खखरी आधा धान। पूछेन आछे, मैं दुलहिन की चाची। पूस दिन फूस निअर।

फ—फटका चन्द गिरिधारी, जिनका लोटा न थारी। फटल दूध जमऽ हे?

फू—फुटल बरतन ठठेरा ही जाय, रूसल सवासिन नइहर जाय।

ब—बत्तीस दाँत में जीभ बेचारी। बबूर के पेंड़तर आम? बरिअरका

हारे तो हुरे, जिते तो थूरे। बड़का से भखाई न आ छोटका से परसवाईन। बनियाँ कहे कि तउलवे न करब, गहकी कहे कि नेवते दऽ। बड़-बड़ जने हार गेलन, गदहा कहे कतना पानी? बइठल बनियाँ काकरे, ई कोठी के धान उ कोठी में। बनियाँ के जीउ धनियाँ नियर। सर कन्या अनेक जग माहीं।

बराह में जनम भेल, हाथ में मिलल बरहा।
राम-राम कहत, साँझ ले लगल करहा॥

बड़ामन मुखे पाक। बरिआती लगल दुआर, तब समधिन के लगल हगवास।

बा बाढ़े पूत पिता के धरमे, खेती उपजे अपने करमे। बाभन नाचे डिगर डेंगे। बाभन गेल घर तऽ मारऽ भरहर। बानर के घाव पोरसीसे में जाय। न बासी बचे न कुत्ता खाय। बाघ चीन्हे बड़ामन के बेटा? बात छिलले रूखड़, काठ छिलले चिक्कन। बाप दादा न खैलन पान, दाँतनिपोर के गेल परान। बानर जाने आदी के सवाद? बानर के हाथ में नरियर?

बाप बड़ा न भइया, सब से बड़ा रुपईया।

बाप न दादा तीसरे पूत हरमजादा। बारह बरस मेमिआनी तब एक बच्चा बिआनी। बासीभात पर टटका दाल?

बासी भात पेट भरना।
बूढ़ भतार दिन खेपना॥

बालू पेरे से तेल न गिरे। बार-बार ऊखे में राह? बाला सड़े तो मोती झरे, रेहर सड़े तो कानऽ करे। बार उखड़े न, बरियार खाँव नाँव। बात कहीं टूक-टूक, दुख लागे चाहे सुख। बात के चूकल मरद आ डाल के चूकल बन्दर के एके हाल हे। बाभन कुत्ता हाथी, अपने कुल के घाती। बातन हाथी पाइयाँ बातन हाथी पाँव।

बाँ बाँझ जाने परसउती के पीड़ा? बाँस में बाँसे न फूटऽ हे? बाँट चोट के खाई, गंगा नेहाई। अपने खाई, पेट ललाई।

बि बिच्छी के मंतर न जानी आ साँप के बिल में हाथ लगाई? बिना दरब के दरबार का?

बिना बाप के बेटा बिगड़े, बिना माय के बेटी।

बिन धरनी धर भूत के डेरा। बिरले कान बड़ा भलमानुस। बिलाई के भाग सिकहर टूटल। बिना गाँगो झूमर ? बिन भय होत न प्रित।

बिप्र टहलुआ, चीक धन आउर बेटी के बाढ़।
एहू से धन ना घटे, तब करऽ बड़न से राड़॥
बिन मारे बैरी मरे, खाड़े, ऊख बिकाय।
बिन ब्याहे बेटी मरे, तीनों कुल तरि जाय॥
बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछताय।
काम बिगाड़े आपनो, जग में होत हँसाय॥

बी बीसी तीसी मकर पचीसी।

बे बेल के मारल बबूर तर आ बबूर के मारल बेल तर। बेटा बेटी कहाँ गुरहत्थे बइठलन मंगरो। बेल पकल तब कउआ के बाप के का ? बेसवा कमाय धरम बचल। बेटी बिआही जान के, पानी पीहीं छान के। बेलदार के बेटी के न नइहरे सुख न ससुरे सुख। बेटबों मीठ, भतरो मीठ, किरिया केकर खाई ? बेटा होय, जो पर धन हरे। बेटी चमइन के, नाम रजरनियाँ। बेहाया के..... में ऊख जमल तऽ ऊ कहलक कि हमरा छाँहे हो गेल। बेल फूटल राई-राई।

बै बैल मोटाय दमाही में, आदमी मोटाय गवाही में। बैल न बाछा नीन्द परे आछा।

बु बुड़बक के धन होयत तब होसियार के लड़िका भूखे मरत ? बुड़बक के सींग पोंछी हो हे ?

बुड़बक लच्छन एक, जो करे बड़न से टेक
बुड़बक लच्छन दू, जो बसे गाँव से दूर
बुड़बक लच्छन तीन, जो काढ़ के लगावे रीन
बुड़बक लच्छन चार, जो अपना से छोट से करे बिचार
बुड़बक लच्छन पाँच, जो दोसर के सभा में बिना बोलवले जाय
बुड़बक लच्छन छव, जो सोचे अपन गव
बुड़बक लच्छन सात, जो दोसर के दूरा पर काटे रात
बुड़बक लच्छन आठ, जो काठ पर बइठ के काटे काठ
बुड़बक लच्छन नव, जो पर तिरिया से लगावे लव

बुड़बक लच्छन दस, जो रहे मेहर के बस

बू बूढ़ घोड़ी के लाल लगाम। बूढ़ सुग्गा कहीं पोस मानऽ हे। बूढ़े कबीर के कि उपजे पूत कमाल। बूढ़ के मरला के डर नऽ हे, जम के पड़िकला डर हे।

भ भर घर देवर भतार से ठट्ठा। भँइस के आगे बीन बजे, बइठल भोस पगुराय। भरबाँह चूरी, पट दे राँड़। भईगति साँप छुछुन्दर केरी, उगलत आहर निगलत कोढ़ी।

भला संग रहब, ऽतब खयब मगही पान।
बुरा सँग रहबऽ, तब कटय्यबऽ दुनो कान ॥

भगवान जेकरा मुँह दे हथ, ओकरा अहारो दे हथ। भर फागुन बूढ़वा देवर लागेला। भल मानुस के घर जरे आ गुंडा देह सेंके।

मा भाई अइसन हितनऽ आ भाई अइसन मुदईनऽ। भाग ओला के भूत हूर जोतऽ हे। भाग जागल मसूदन के कि गुल्लर तर खरिहान।

भे भेल बिआह मोर करब का ?

भें भेंड़िया दूध देलक बाकी लेंडी-लेंडी।

भो भोज के दिन कोहड़ा रापऽ हे ?

भोरे भोजपुर जइहऽ मत, जइह तऽ खइहऽ मत, खइहऽ तऽ रहिहऽ मत रहिहऽ तऽ सुतीहऽ मत, सुतीहऽ तऽ टोइहऽ मत टोइहऽ तऽ रोइह मत।

भू भूख तऽ छूँछ का, नीन्दतऽ खरहन का ?

म मरल घोड़ा घास खाहे ? मनचंगा तऽ कठउती में गंगा। मरदा मउगी राजी तब का करिहें गाँव के काजी। मन में राम बगल में छूरी, पलखत पा के काटब मूरी। मरता क्या नहीं करता ? मइया के जीउ गइया निअर, पूतक जीव कसइया निअर। मगह मरे से गदहा होई। मरद पारू मेहरारू.....मारू।

मा – माघे जाड़, न पूसे जाड़, जब बेआर तब जाड़। मान बड़ा कि पान बड़ा।

माघ मास के बादरी और क्वार के घाम।
ई दोनों जो कोई सहे, करे पराया काम ॥

माघ के टूटल मरद आ जेठ के टूटल बरद नऽ जूटे। माथे महुअर पीठे गोल, मार अरऊआ ताबर तोर। माघ के दिन बाघ निअर। मारे सिपाही, नांव गोल, मार अरऊआ ताबर तोर। माघ के दिन बाघ निअर।

हवलदार के। मार से तो भूत भागऽ हे। माय गुन बछड़, पिता गुण घोड़, ... होय तो थोड़ो थोड़। मार शिकार पर मोर कुतिया लासा। माल महराज ... मिरजा खेले होरी। मानऽ तो देवता न तो पत्थल। मालिक के टीक नऽ ... के झुलफी।

माँ माँछी देखे घाव आ दुसमन देखे दाव।

मां मांस भात घरइता खाय, हतेआ लेले पाहुन जाय।

मि मियाँ चोराये नरी-नरी, खुदा चुराये पोला। मियाँ के ... मसजिद तक।

में मैं मरी जइहों तोही न भँजइहों, तोरा देख जिया हुलसइहों।

मो मोरी तऽ धान, बैल तऽ किसान।

मू मूढ़ पलटे साव नाचे।

मु मुँह देख बीड़ा.....देख पीड़ा।

मँ–मँगनी के हर बैल, मंगनी के बीआ, उपजल तो उपजल, न तो मसला तो किया। माँग से मउअत मिलऽ हे? मँगनी के बैल के दाँत देखल जा हे?

मं–मंत्री बिना राज सून।

र—रघुनाथ जी के माया, कहीं धूप कहीं छाया। रट मरे बैला, बइठल खाय तुरंगवा। न रहत बाँस न बाजत बाँसुरी। रवि दिन पान, सोम दिन दर्पन मंगर के गुड़ करिये अरपन। बुधे धनियाँ बीफे जीरा, शुक कहे मोही दही के पीरा शनीचर के जो अदरक पावे, कुशल क्षेम से घर पहुँचावे। रहा न कोउ बिनु दाँत निपोरे। रजवा के मोतीये के दुख। रहली तब मनमे न भइली, गइली तब मन पछितइली।

रा–राजा हो राज, मोर नगरिया मूरत हो राज। राते भरद साते बरद। राजा दिठवा, जोगी पिठवा, बाभन कोटा, अहीर बकोटा। राग रसोई पागड़ी कभी-कभी बन जाय।

रामा गति आयल मइआ पोथिया दे।
देहिया मोटायल माइ धोतिया दे॥

राम भजन में आलसी, भोजन में होसियार। राम-राम रटना, पराया धन अपना। राह चलन्ते झगड़ा किया, कुछ तो पंच दिलायेगा। रात में लाँगड़

दिन में घूँघट। रात निबद्दर, दिन को छाया, कहे साध कि बरखा गया। राजा के साथ न हल बाय हल। दिन मांगे तो सवा सेर, रात मांगे तो सवा सेर। राज के रमायन है।

रां—रांड़ मेहरारू साँड़ निअर। रांड़ साँड़ सन्यासी, तीन से बचे तब हासी।

रो—रोज माइ जीतिया? रोवेआ गावे केकरा नऽ आवे।

रु—रुपया तीन आ बैल बीन।

रू—रूखी मारले दुखी, कउआ मारले सुखी।

ल—लड़िका मालिक, बूढ़ देवान, ममला होखे सांझ बिहान। लजायल लड़िका ढोंढी टोये। लड़िका के बहाने लरकोरियो जीअहे। लत्ती के लत छूटऽ है? लग्गी से घाँस आ चोंगा से पानी? लड्डू लड़े तो झिल्ली झरे। लड़िका से लरकोरिये भारी।

ला—लाजे भावह बोलथ न, सवादे भैंइसुर छोड़थ न। लात के देवता बात से न माने। लादू साव के बेटा पादू साव। लाद दे लदवा दे, लाद के पहुँचा दे। लाल पैसा तब रोधना कैसा?

लि—लिखतंग के आगे बक्तंग क्या? लिख लोढ़ा पढ़ पत्थल।

ले—लेखनी पुस्तकं दारा, पर हस्ते न दीयते। लेछँउड़ी गगरी, हम तू बरोबरी। लेता-देता के दुनियाँ है।

लो—लोहा, लोहार के, सोना, सोनार के।

लू—लूट मार में चरखा नफा। लूट लाबऽ कूट खा।

स—सब के गुरु गोवरधन दास। शहर सिखावे कोतवाल। सराहल बहुरिया डोम घर जाय। सत्तर चूहे खाकर बिल्ली चली हज के। सब धन साढ़े बाइस पसेरी। सब दिन सेवली काशी, मरे के भेल तब कइली मसउढ़ा बासी। सड़ गल जइहें गोतिया न खइहे, गोतिया के खायल अकारथ जइहें। सरलो तेली तो कमर में अधेली। सब कुत्ता कासी जैतन तब हँड़िया के ढूँढ़त? सस्ता रोवे बार-बार, मँहगा रोवे एक बार। ससराम जइहऽ तब एक जोड़ी जाँता ले ले अइहऽ।

सलाम भाई हाँड़ी सलाम भाई चूल्हा।
उत्तर गेल हाड़ी सलाम भाई चूल्हा॥

सरत से तरत। समय परला पर गदहा के भी बाप कहे परऽ हे। सर्वे चँवर में एके ढेला। सउँसे देह खा गेल, पर मूरी के झँटनइ नऽ गेल। सइँया भये कोतवाल, अब डर काहे का? सब छउँड़ी झुमर पारे, लुल्ही कहे कि हमहूँ। समय परला पर राड़ के मूतो महँगा हे। सभ सुभ काज भरत के हाथा। सर्वे दोस हरे लक्ष्मी, सर्वे दोस दरिद्रता। सच कहे तो जीउ से जाय, झूठ कहे तो जग पति आय। सखी से सूम भला जे मुँह पर देवे जवाब। सरबस खाइ भोग करि नाना, समर मरन भये दुरलभ प्राना। सर पर मोटरी, मधुरी चाल, आज न पहुँचब पहुँचब काल। सनमुख छीके दूना लाभ। सब जात तो ऐसा, बिना जाल के बाभन कैसा?

सं—संगत से गुन होत है, संगत से गुण जाय।
बाँस फाँस औ मिसरी, एके भाव बिकाय॥

सा—सावन मास बहे पुरवइया, बेचहु बरदा कीनहु गइया।

सावन शुक्ला सप्तमी, छिप के ऊगे भान।
तबलो देव बरसि हे, जब लों होय जेवठान॥

सावन से भादोए दूबर? साढ़ के बेटा पिंडके न परधान के। साढ़ू में बड़का, दही में उपरका औ भाई में छोटका।

सावन पुरवा भादो पछेआ, आसिन बहे तूफान।
कातिक में जो अंधर चले, घरे रोवे किसान॥
सावन पछेआ भादो पुरवा, आसिन बहे इशान।
कातिक कंता सींक न डोले, कहाँ तू रखबऽ धान॥

साल भर मेमिआनी, तब एक बच्चा बिआनी। सारी रमायन पढ़ि गये, सीता किसकी जोय। साझी के सूई सँगरा पर चलऽ हे। साठी उपजे साठ दिन, बरखा होवे रात दिन। साठा तब पाठा।

सात हाथ हाथी से बचिये, चौदह हाथ मतवाला।
अनगिनत हाथ तो उससे बचिये, जो जात का है फेटवाला॥

साढ़ू के बेटा आ चइत के बरखा नऽ ई पिंड के न परधान के। सारा काँको जर गेल, कमाल बीबी के पते न।

सां—साँझ के बदरी आ कुटुम न जाय। साँच में आँच का? साँप के दूध पिलयब तब अमरित देत? साँपो मरल आ लाठियो न टूटल। साँप गेल बिल में धसना ठेठाबऽ।

सी—सीधे बाछी लूगा चिबावऽ हे।

सो—सोरही के पेट में हरही। सोना लुटायल जाय, कोइला पर छाप। सीधे अँगुरी घीउ न निकले।

सौ—सौ चोट सोनार के, एक चोट लोहार के। सौ चास गंडा, पचास बास नंडा, सेकर आधा तोरी, ओकरे आधा मोरी। सौ बेटा सवा लाख नाती, तेकरा घर दिया न बाती। सौ गुंडा में एक मोछ मुंडा।

सौ में सूर हजार में काना, सवा लाख में अँइचा ताना।
अँइचा ताना कहे पुकार, कँउसा से रहिहऽ होसियार॥

सौ हतेए बाघ मारल जाहे। सौ चास में एक सुतार। सौ राजा के बुद्धि एक चोर के हो हे।

सु—सुत उठ खेती, नित उठ जाय। सुख के साथी सब कोई, दुख के साथी कोई नऽ।

सुक रहे बदरी, सनीचर रहे छाय।
एतवार बरसे तो बरसे, सोमार कहाँ जाय॥

सुखे सिहुली दुखे दिनाय, करम फुटे तब फटे बेआय। सूई नऽ समाय तहाँ फार?

सू—सूई से भकन्दर। सूरदास के काली कमरिया, चढ़े न दूसर रंग।

ह—हथिया बरसे चितरा मेड़राय, घर बइठल धनहा इतराय। हड़बड़ के काम गड़बड़। हम पर तुम, तुम पर विधाता। हम अइली तोरा जान, तू सुतलऽ गोड़ तान। हमहुँ कहब अब ठकुर सुहाती। हम अपना माथ में नव टीक रखब ई से तोरा का? हरबहे तो हर सँग बहिये, नहीं तो बैठे रहिये। हरिअर खेती गभिनी गाय, तब जानी जब मुँह में जाय। हम चरहिं दिल्ली, हमरा चरावें घर के बिल्ली। हमरा हीं अयबऽ तब का-का ले अयबऽ, तोरा हीं जायब तब का-का खिलयबऽ? हमरा बैल तोरा भइँसा, हमरा तोरा बदली कैसा? हरही के पेट में सोरहीं। हड़बड़ के बिआह कनपटी में सेंदुर। हमरा आवइत भेल, बजरा परहत भेल। हरिसचन्द्र पर विपति परी, पाकल मछरी जल में गिरी।

हरगेली हुलस गेली, दमाद अयलन गे माई।
मर गेली मुरझा गेली, जब दहेज माँगलन गे माई॥

हें—हँसुआ के बिआह में खुरपी के गीत ? हँस के बोले नारी सोनी, तू बिगारी। हँसले घर बसऽहे।

हो=होनहार बेटा के लिलार चमकऽहे। होइहे राम तो घर पहुँचइहे। होइहें सोइ जो राम रचि राखा। होसियार के लड़िका बुड़बक, आ बुड़बक के लड़िका होसियार।

हि—हिसकी-हिसकी गइया बिआय, गइया के बचवा मर-मर जाय। हिम्मत मर्दा, मदते खुदा।

हा—हाथी चले गाँव-गाँव, जेकर हाथी ओकर नाँव। हाथी चले बजार कुत्ता भुके हजार। हाथी जाइतहे, कुत्ता भुकइतहे। हाथ कंगन के आरसी का? हाथ में न गोड़ में, टकहा लिलार में। हाथ के अछते मोंछ टेंढ़ ? हाथ गोर सिरकी, पेट नदकोला। हाथी के दाँत खाने को और, दिखाने को और। हारिये न हिम्मत, बिसारिये न हरिनाम। जाही बिधि राखे राम, वाही बिधि रहिये।

हाँ—हाँड़ी में कन नऽ, चलऽ समधी जेवें।

हे—हेलबाँडा हेल तो पोंछी अलगवले गेल।

कुछ मुहावरे

मुहावरा किसी भी भाषा का वह वाक्य या पद है, जिसका अर्थ स्पष्टीकरण लक्षणा या व्यंजना से ही संभव होता है। वाक्य रूप से भिन्न शब्द-स्वरूप से अलग इसका अर्थ होता हैं। इसमें गंभीरता एवं विलक्षणता होती है। जैसे हिन्दी में अंगों से सम्बन्धित मुहावरें काफी संख्या में हैं; वैसे ही मगही में भी हैं। गंभीरता से विचार किया जाए तो प्रायः हिन्दी के विशुद्ध मुहावरे ही मगही भाषा में आकर चादर पर के [illegible]-बूटे की तरह दृस्टिगत होते हैं। मात्र भाषाई सांचे में वे ढाल दिये गये हैं। 'हिन्दी में आँख के अंधा होना' होता है जब कि हमारी ग्रामीण भाषा में आँख के 'आन्हर' होता है। अर्थ, प्रयोजन या उद्देश्य की दृष्टि से दोनों का अस्तित्व एक ही है। हमारे गाँव में इतने मुहावरे प्रायः प्रयोग में आते हैं :—

अछरंग लगना, अरदसिया होना, अच्छा घर में न्योता देना, अकिल के पट-पट होना, अगिया बैताल होना, अफर धुनना, अकास-पताल एक करना, अगाड़-पिछाड़ बाँधना, अप्पन राग आलापना, अली से बे होना, अकरखन करना।

आटा-दाल का भाव मालूम होना, आग उगलना, आग लगाना, आग बुझाना, आग बरसाना, आग में मूतना, आही-पाही करना।

आँटा के साथ घून पिसाना, आंख के अन्धा होना, आँख आना, आँख लड़ाना, आँख में बरबी छाना, आँख गुड़ेड़ना, आँखें चार होना, आँख में धूरी झोंकना।

उदार होना, उक्खी-बिक्खी लेना, उदबस करना, उपफर पड़ना, उसकी बताना, उल्लू बनाना, उल्टी गंगा बहाना, उनइस-बीस होना, उड़नबाज होना, उल्लू के पट्ठा होना।

कचूमर निकालना, कउड़ी के तीन होना, कलेजा काढ़ना, कलेजा फटना, कलेजा ठंढा होना, कलेजा टूक-टूक होना, कलेजा थाम कर बैठ जाना, कलेजा निकाल कर रख देना, कलेजा मुँह को आना, कलेजे पर साँप लोटना, कलेजा पर पत्थर रखना, कलेजा चीरकर दिखाना, कान बहिर पीठ गहिर करना, कान खड़ा होना, कान देना, कान फूँकना, कान का पातर होना, कान काटना, कान में रुई डालना, किताब के कीड़ा होना, कोल्हू के बैल होना, कुरान के जामा पहनना, कूड़े गंगा में हेलना, खाक छानना, खेल खेलाना, खेसारी से बसमतिया बदलना, खैरजितिया करना, खैर खाँह होना, खुशामद करना, खुदा के राह देख पाना, खून खौलना, खून सूखना, खून की नदी बहाना, खून ठंढा होना, खून उतरना, खूँटे में गिरह बान्धना, खोहिछा भरना, गजरा मुरई होना, गज में गोता लगाना, गला काटना, गाल फुलाना, गाल बजाना, गाँगो सोहाइत करना, गीत का बसना भुलाना, गोबर, गनेश होना, गोर पर नाक रगड़ना, गोटी लाल होना, गोबर के चोता होना, गुरु घंटाल होना, गुरुमुख होना, गूलर के पिल्लू होना, गुरुआर करना, घोघना फुलाना, घोड़ा घासिन होना, घोड़हइ करना, चउका पुरना, चढ़ल भंड़ेहर उतरना, चकती चलाना, चकनाचूर करना, चारचान्द लगाना, चार सौ बीस होना, चीलर का चह तोड़ना, चीरा चौंथी में पड़ना, चेला मूड़ना, चूल्हा अगोर होना, चुल्लू भर पानी में डूब मरना, छठी रात के दूध ऊपर करना छब-पाँच में पड़ना, छप्पर पर चढ़कर पेशाब करना, छक्का-पंजा करना, छान पगहा तोड़ना, छाती पर कोदो दड़ना, छाती पीटना, जहर पीनकी होना, जयसिया राम होना, जरल देह पर निमक छिड़कना, जबान पर लगाम न होना, जोलहा-धुनियाँ होना, जोंक अइसन अइंठना, झिक्का-झोरी करना, टांग, अड़ाना, टांग पसार कर सोना, डपर शंख होना, डोमा डिगरी करना, तरहत्थी में बार जमना, तलवा के लहर कपार पर चढ़ना, तहस-नहस करना, तकदीर के साँड़ होना, ताना मारना, तान तोड़ना, तीनकानी के खंभा होना, तिरिया चरित्तर करना, तिल का तार करना, तेला-बेला करना, तुम्बा फेरी करना, थूक-सतुआ सानना, दही के टीका लगाना, दउड़ा में गोड़ रखना, दाव के दुरदेसिया होना, दाँत निपोड़ना,

दांत तरे अँगुरी दबाना, दांत उखाड़ना, दाँत दिखाना, दाँत खट्टा करना, दाँत जमना, दिन में सपना देखना, दिन में तरेंगन लउकना, दिन पातर होना, दीया के पानी गिरना, देह पर पानी पड़ना, दूध के माँछी होना, धार-उपधार होना, धुआँ उड़ाना, धूल फाँकना, नबाबी छाँटना, नबाब के नाती बनना, नखरा-तिल्ला करना, नस दूहना, नया जनम लेना, नरको में ठेला-ठेली होना, नाम पर थूक पोसना, नाक रगड़ना, नाक से पानी पिलाना, नाक कटाना, नाक-कान काटना, नाक का बाल होना, नाको दम करना, नाँच नचाना, निमक के सैरियत रखना, निठाह बैल होना, निनानबे के फेर में पड़ना, नीमन घर न्योता देना, नोचा-चोंथी करना, पगड़ी तर करना, पत्तल चाटना, पलरा भारी होना, पछिला लिट्टी खाना, पानी में आग लगाना, पारा गरम होना, पाँख जमना, पाँचो अँगुरी घीउ में होना, पेट का पानी न पचना, पेट के बाईपचना, पेट में बात न पचना, पेट फूलना, पेट घोर मट्ठा करना, पैंतरा बदलना, पूर परना, फिफिया होना, फेंट चाटना, फेरहइ करना, फुटानी छाँटना, बकलत भागना, बहुरूपिया होना, बाँह धुड़की देना, बाया छछनना, बेकहल होना, भकभक्की बरना, भगलपचीसी करना, मटकी मारना, मक्खी चूस होना, मन फेरना, माथा खाना माथा झुकाना, माथा मुड़ना, माथा मारना, मांग-कोख जारना, मीन मेख करना मुँहजोड़ होना, मुँह बायर होना, मुँह काला होना, मुँह बाना, मुँह फेरना, मुँह बनाना, मुँह मीठा करना, मुँह मोड़ना, मूड़ी छटकाना, मूड़ी झाँटना, मँझदहा के चोन्हर होना, रफू-चक्कर होना, राइ रेत होना, रोआँ कूँढ़ना, रुपया में तीन अठन्नी बनाना, रंगल सियार होना, लट्टाझउहर करना, लबर धो-धो होना, लकीर के फकीर होना, लावा फरही फूटना,-लाम काम बाँधना, लाल-पीअर होना, लालू-जगधर होना, लेमो अइसन गाड़ना, लौंगिया मिचाई होना, लुतरी जोड़ना, लँगट बौरी करना, जनम लेना, वंश में लेंढ़ा जनम लेना, समाँग में घून लगना, सटा कर टीक काटना, सनीचरा सवार होना, सभा के चोर होना, सात भतार करना, सात घाट के पानी पीना, साझी के सूई सँगरा पर चलना, सिरकी तानना, सियर लंघू होना, सिर काटना, सिर खपाना, सिर झुकाना, सिर चढ़ना, सिर उठाना, सींग धर के मरखाह बनाना, सोना में सुगन्ध होना, सौगुण्डा में एक मोछ मुण्डा होना, सूंस बरक्कत न होना, हड्डी छटकाना, हाड़ में हरदी लगना, हाथ ओलारना हाथ छानना, हाथ पियर होना, हाथ सरकाना, हाथ मोड़ना, हाथ पर हाथ धरकर बइठना, हाथ चाटना, हाथ बटाना, हाथ मारना, हाथ फेरना, हाथ फैलाना, हिकइती करना, हँसी में निखेली होना,

इस प्रकार गाँव की मगही भाषा कई प्रकार की कहावतों एवं मुहावरों से भरी है।

गाँव के लोग बोलते समय सखुन-तकिया का भी सहारा लेते हैं। इनके सहारा आगे शोध कर बोलने में सहायता मिलती है। यहाँ की प्रचलित तकिया कलाम निम्नलिखित है जेहे से कि, जइसे कि, का कहावडहे कि, समझली नऽ? अपने से कहीं कि, जानलऽ? सुनलऽ? इथी कि, माने कि, याने कि, हुनऽ? मतलब कि, रामजी के किरपा से, राम जी के हिच्छा से इत्यादि।

(ग) कुछ चुटकिले (हास्यप्रद) सच्ची बातें।

ज्योतिषी जी गड्ढे में—गढ़ पर एक बूढ़े ज्योतिषी आये थे। उनके साथ एक छोटा बच्चा जो उनका पोता था, वह भी आया था। वह बड़ा चंचल और बदमाश था। ज्योतिषी लोगों के पूर्व जन्म का वृत्तान्त बताते थे, किसी को कहते थे कि आप पहले जन्म में ब्राह्मण थे, किसीको बढ़ई बताते थे, किसी को धोबी इत्यादि। और भी अनेकों तरह की बातें बताते थे। जानकारी हासिल करने के लिये लोगों की भीड़ लगी रहती थी। हमारे चाचा श्री दुखित सिंह पूछे कि हमारी भैंस कौन बच्चा देगी? पंडितजी बोले कि —हँसुली, लगी पाड़ी बिआयगी। एक दिन ज्योतिषी जी पोखरे में नहाने गये। पोखरा का घाट कच्चा था। पूछे कि कितना पानी है? विश्वंभर बाबा बोले—हेल जाउ, बहुत थोड़ा पानी है। ज्योतिषी जी कदम बढ़ाये कि गड्ढा ज्यादा रहने के कारण पानी के अन्दर चले गये। बेचारे को तैरने नहीं आता था। पानी में (गोज-गोजा खाने याने) नीचे ऊपर होने लगे। विश्वंभर बाबा उनको पकड़ कर निकाले। बाहर आकर बहुत बिगड़े।

बाबा बोले—महाराज! आगम निगम भक्खऽ हऽ आ तोरा अतनो न मालूम भेलब कि ई जगह गहरा हइ। पानी कम हे कि जादे? का आगम-निगम भक्खऽ ह? ज्योतिषी जी लजा गये। ये बातें गांव भर में फैल गई। अब क्या था, ज्योतिषी जी कुछ रात रहते ही अपने बोरिया-बिस्तर लेकर यहाँ से नौ-दो ग्यारह हो गये गांव से बहुत पैसा झींट-झाट कर ले गये।

नकटा का भूत—गाँव से पश्चिम बहुत बड़ा बागीचा था। अभी भी थोड़ा है। आम खूब फला हुआ था। एक भदइया आम का पेड़ था। मालिक बाबू राम केवल सिंह थे और रैयत थे लोक नाथ मिश्र। लोक नाथ मिश्र (लोकू बाबा) का पेड़ लगाया हुआ था। आम लग चुका था। पका हुआ आम रात भर गिरता था।

और भोर में मालिक-रैयत बाँट लेते थ। रात को बागीचा में सोने के लिए रा
केवल सिह और भागवत सिह जाया करते थे।

लोकू बाबा बोले – बबुआ अब आम तोड़वा लऽ।

राम केवल सिह – नहीं रोज टपकेगा और बाँट लिया जायगा।

जब लोकू बाबा समझ गये कि आम न टूटेगा, तब एक युक्ति सोचे। बागीचे
पश्चिम में-दक्खिन से उत्तर की ओर एक बरसाती नदी बहती है। वह नदी
भी है। वह 'नकटा' कहलाती है। वह नदी भूत-खापर कहलाती है। बिना
उगे बच्चे की मृत्यु हो जाती है, तो वह नकटा में गाड़ दिना जाता है।
जगह रात को बहुत भय लगता है। लोकू बाबा बहुत निडर थे। ओझा भी
वे आम के पूरे आदी थे। रात को भी पेड़ पर चढ़ कर आम तोड़ लेते थे।
दिन रात को एक बड़ी लग्गी लेकर नकटा में जाकर बैठ गये। जब राम केवल
सिह और भागवत सिह खा-पीकर रात को आम के पास पहुँचे और बैठ कर
बातें करने लगे तब लोकू बाबा ने अपनी धोती खोल कर और लग्गी की नोक
लगा कर थोड़ा सा उँचा किया। वे दोनों आदमी उस बढ़ती हुई लग्गी को
जिसमें कपड़ा फहरा रहा था। राम केवल सिह बोले- भागवत सिह देखा
नकटा में लूब साफ लूगा पेन्ह के कउनो खड़ा हवऽ। लोकू बाबा लग्गी को
थोड़ा और ऊँचा किये।

राम केवल सिह बोले—देखऽ नऽ ऊ तो आउर लम्मा हो गेल। फिर लग्गी
धोती और बढ़ी। अब तो राम केवल सिह और भागवत सिह जान लेकर गिरते
पड़ते वहाँ से भागे, कुछ दुर आने पर जाने में जान आई। अब क्या था लोकू बाबा
मनमाना आम तोड़कर घर ले आये। भोर में मालिक-रैयत दोनों पहुँचे तो देखा
है कि आम तोड़ा हुआ है। लोकू बाबा आडंबर बाँधने लगे कि रात के तूंही दुनहू
सूतऽह, तब आम दोसर कउनों तूड़के कइसे ले जायत तोरे लोग के ई करनी हेऽ
हम आम तूरे लागी कहहली, आ तूं लोग एही से टार मटोर कर दे हलऽ कि हम
तूर-तुर के ले जायब। वे लोग रात की घटना बताये कि हम लोग तो ऐसे-ऐसे
फेर में पड़कर यहाँ से रात में भाग चले थे।

लोकू बाबा—हे हो राम केवल, हमरा से बभन-पेंच मत बतिया, हम
समझऽही,

जो आम शेष रह गया था उसी दिन तोड़ लिया गया।

युक्ति से मुक्ति—कन्हौली के परमेश्वर मिस्त्री (कुर्मी) पयनाल के

हरण पासवान से नेवारी मोल ले गये थे। दुखहरण रुपया मांगते तो वे टाल-मटोल कर देते थे। दुखहरण जान गये कि अब ये रुपया न देंगे, तब एक दिन गमछी में थोड़ा सा सत्तू बान्ध कर परमेश्वर के दरवाजे पर गये और बोले कि 'जरा छीपा-लोटा सत्तू खायला चाहीं'। एही जगह पर हर जोतइत हीं'। परमेश्वर कहीं काम करने गये थे। उन की माँ अलमुनियम का बर्त्तन ला कर रख दीं। दुखहरण बोले - 'चाची, हम अलमुनियम के बर्त्तन में न खा हीं'। तब परमेश्वर की माँ कांसे की थाली और लोटा लाकर रख दीं। दुखहरण खाने लगे। परमेश्वर की मां घर चली गईं। दुखहरण जल्दी-जल्दी सत्तू चाट-पोंछ कर और थाली-लोटा लेकर वहाँ से चम्पत हो गये। जब परमेश्वर की माँ बाहर आतीं हैं तो देखतीं हैं कि न दुखहरण है और न थाली-लोटा। इधर-उधर देखीं पर कहीं खबर न पड़ी। अब वे मन में तर्क-बितर्क करने लगीं। जब शाम को परमेश्वर आये तो यह घटना मालूम हुई। परमेश्वर दुखहरण की चाल बाजी समझ ही गये। भोर होते ही रुपया लेकर गये और अपनी थाली और लोटा ले आये।

हर जोते से सत्तुआ खाय, आ गंगा नेहाय से ठेकुआ खाय ?

जुदागी साव और झींगुर साव सहोदर भाई थे। दोनों बहुत बतफरोस (बात बनाने वाले) थे। एक दिन जुदागी साव और झींगुर साव खेत में काम कर रहे थे। झींगुरसाव हल जोत रहे थे। जुदागी साव की औरत उसी रास्ते से गंगा नहाने जा रही थी। वह सोची कि उसी रास्ते से उन लोगों को खाना (सत्तु) लेते चलूँ। स्वयं खाने के लिए ठेकुआ (टिकरी) बना कर लिये जा रही थी। सत्तु की गठरी और थाली-लोटा उन लोगों को देकर गंगा नहाने बढ़गई।

झींगुर साव—भाई जुदागी !

जुदागी साव—हं, भइया।

झींगुर साव—बता बऽ भाई—हर जोते से सतुआ खाय, आ गंगा नेहाय से ठेकुआ खाय ?

चरवाहों की पंचायती—एक दिन कुछ लड़कों (चरवाहों) ने आपस में सलाह किया कि आज झींगुर साव को छकाया जाय। झींगुर साव बहुत बतफरोसी करते हैं।

झींगुर साव एक गोजी लेकर बागीचे में बैठे थे। लड़के सब दो दल हो

कर लड़ते-झगड़ते वहाँ पहुँचे, जहाँ झींगुर साव बैठे थे। एक दल का नेता कहता है—'हम झींगुर बाबा के पंच मानइत हीऽ'।

दूसरा दल—'हमहूं झींगुर बाबा के पंच मानइत हीऽ'।

दोनों दल के लड़के झींगुर साव से कुछ दूरी पर बैठ गये।

लड़के सब बोले कि झींगुर बाबा, हमनिन के पंचाइती करऽ?

बाबा बोले—'राजा जी, हम कइसन-कइसन पंचाइती करके बइठल हीं, आ तोहरे लड़िकन के पंचाइती न करब'। पंचाइती हो गई। फैसला सुनने पर एक दल कहता है 'हम तोहर पंच के.....'।

दूसरा दल—'हमहूं तोहर पंच के.....।'

झींगुर साव—'धत् तो रे, तेरी.....के.....तेरी.....'। सारे पंचाइती कराबे ऐलन हल। मारते-मारते हम .....। झींगुर के चिन्हबे न कैलन हेऽ। डंटा लेकर खदेड़े। लड़के सब तो कुछ दूर पर इसीलिये बैठे थे। हँसते-हँसते भाग चले।

हरेक वस्तु का एक दाम—परमा सिंह की छावनी हो रही थी। ठाट पर ५-७ मजदूर चढ़े हुए थे। मोती भगत (मखनियाँ) वहाँ पर पहुँचते हैं और पूछते हैं—

'परमा सिंह, बैल बेचबऽ?'

परमा सिंह—'हाँ'।

मोती भगत—'अच्छा दाम कहऽ'।

परमा सिंह—'इस बैल का दाम इतना है'।

दूसरी ओर संकेत करके—'इसका दाम इतना है।'

तीसरी ओर संकेत करके—इसका दाम इतना है।'

मोती भगत—'नऽ सब के एक दाम होय के चाही।'

परमा सिंह—'एक दाम कइसे होयत? कउनो बूढ़ा है, कउनो जवान है, कउनो फरहर है, कउनो भद्दा है। एक दाम कइसे होयत?'

मोती भगत—'अच्छा ई तो बतावऽ, कि ई ठाट पर जे लोग चढ़ल हथ इन कर मजूरी एक किसिम के हे कि कई किसीम के?

परमा सिंह 'एक किसीम।'

मोती भगत—'तब बताब-ई में बूढ़ा भी हथ, जवान भी हथ, लँगड़ा भी हथ कमजोर-बलवान भी हथ। जब ई लोग के एक दाम (मजूरी) हेऽ, तब जानवर के एक दाम काहे न होयत ?

बभन पेंच—कन्हौली गाँव के दक्खिन एक पोखरा आज भी जीर्णावस्था में वर्तमान है। पोखरे से पूरब पयनाल ग्राम के बाबा विश्वंभर सिंह का बागीचा था। आम फलने के मौसम में वे वहीं डेरा देकर रहते थे। कन्हौली के एक हलवाई बूढ़ा साव बड़े ही सीधे स्वभाव के थे। हमारे गाँव में भी मिठाई बनाने के लिए आया करते थे। पोखरे के पास ही उनका मकान था और अभी है। कन्हौली में बाबू महादेव शरण (कायस्थ) की जमीन्दारी थी। उनके कोई मुलाजिम ने वक्त जरूरी पर कुछ रुपया बूढ़ा साव से लिया था। बूढ़ा साव एक दो बार तगादा किये, पर रुपये न मिले। दरबार के आदमी से बार-बार तगादा करने में बूढ़ा साव डरते थे। जब निराश हो गये तब एक दिन विश्वंभर बाबा से उन्होंने चर्चा की। बूढ़ा साव बाबा के बागीचे में आया-जाया करते थे।

बाबा बोले—'बूढ़ा साव, तोहर रुपया अब मिल जायत, बाकी जब हमरा सिखावे के मोताबिक काम करब तब।'

बूढ़ा साव—'हं मालिक, हम तइआर ही। जइसे अपने कहुब हम करब।'

बाबा—'देखऽ बूढ़ा साव, हम तोहरा गर्दन में अंगोछी लगा के मालिक के पास ले जायब। कुछ भला-बुरा तोरा कहइत रहब, सेकर तूं खेयाल मत करिह। बस, तुरत काम प्रारम्भ हो गया। फाटक के पास जाकर बूढ़ा साव के गर्दन में अंगोछी (गमछा) लगाई गई और बेईमान शैतान आदि कहते हुए मालिक के दरबार में पहुँच गये।

विश्वंभर बाबा—सरकार, देखू-ई हमर रुपया ..... दिन से ले-ले हथ तगादा कर ही तब तीले-ताली कहऽ हथ कि ..... गोमस्ता हीं रुपइआ हे ऊ देतन तब अपने के दे देब। हरदम्मी एही कहऽ हथ। अपने इन कर मालिक ही अपनहीं बताऊ कि गोमास्ता इनका रुपइया न देथिन तब तो ई हमरो रुपइया न देतन ?'

मालिक गोमस्ता से पूछे कि बूढ़ा साव का रुपया आप के यहाँ है ? गोमस्ता बोला कि जी सरकार।

मालिक खजांची से बोले कि ..... रुपया ला कर बूढ़ा साव को दे दीजिये।

बूढ़ा साव को रुपये मिल गये और उसी जगह रुपया बाबा को दे दिये। बाहर आकर बाबा बूढ़ा साव को रु० दे दिये। बूढ़ा साव धन्य-धन्य हो गये। उस दिन से बाबा और बूढ़ा साव की घनिष्ठता और बढ़ गई।

देवी जी से भैंस चरवाना—नत्थू राम ओझा को एक लगहर (दूध देने वाली) भैंस थी। उनका लड़का नन्दन राम उसे चराता था। चरा कर आता था और उसको दूध-भात खाने के लिये मिलता था। एक दिन उसको दूध नहीं मिला। उसने मां से माँगा, तब माँ ने कहा कि 'आज देवी जी के साली पूजा हइन, दूध उहंइ चल गेलइ।"

तब नन्दन ने कहा—"जा खचरो, अब नन्दन भइंस न चरीतन। अब देवी जी से भइंस चरवइहऽ।"

एक बुढ़िया ने अपने टोले के बच्चों का सुधार किया—जब मैं हिरामनपुर जाता हूँ तो दक्षिणवारी टोले के कुम्हार, कान्दू, दुसाध, कहार आदि के बच्चे सब मुझको प्रणाम करते या गोर लागी बाबा, कहते हैं। एक बार उत्तर से मैं अपने घर आ रहा था। जब कैलास मिस्त्री (राजमिस्त्री कान्दू) के घर के पास जिनका घर सब से दक्षिण और पूरब पड़ता है, पहुँचा तो उस जगह के सब बच्चे प्रणाम करने लगे। मैंने कैलास मिस्त्री से कहा कि आप के टोले के बच्चे सब प्रणाम करते हैं और उत्तरवारी टोले के ग्वालों के बच्चे गाली देते हैं। कैलास मिस्त्री बोले—'मालिक' यह आप क्या कह रहे हैं? भला आपको गाली कौन देगा? मैंने कहा कि एक दिन हम खेत घूम कर उत्तर तरफ से आ रहे थे। जैसे ही ग्राम में प्रवेश करना चाहते थे, याने राम बिहारी गोप के पास पहुँचे, तो पश्चिम से दो लड़कों की आवाज आई। हमको देखकर वे सब हमारी ही ओर देखते हुये बोलने लगे—'अरे बभना' मैं पश्चिम की ओर देखा तो पाया कि नत्थून राय के घर के पास दो लड़के उपर्युक्त गाली बकते जा रहे हैं। उस जगह पर दो तीन स्त्रियाँ भी खड़ी-खड़ी आपस में कुछ बातें कर रही हैं। मैं चुपचाप आगेबढ़ गया यही बात है।

उस जगह पर उत्तरबारी टोले की एक बुढ़िया ग्वालिन (खखनूराय की मां) उसी जगह बैठी हुई थी। वह बोल उठी-जब लड़िकवन सब गारी दैइत हलथिन तब ऊ मेहररुअन सब के मना करे के काम न हलइ। ऊसब के डांटे या बरजे के काम न हलइ। एही से न लड़िका सोख हो जा हे,,। अब जब कभी भी उधर से आता-जाता हूँ तो उत्तर बारी टोले के लड़के भी प्रणाम करते हैं। यह बुढ़िया के प्रभाव का ही चमत्कार था।

ठाकुर जी का घड़ी-घंट, ठाकुर जी चुरा लिये—एक पहर दिन रहते, मुठिया में एक पत्र वाहक आया। पुजारी को उसने एक पत्र दिया और जबानी भी कहा कि दुधैला मुठिया में यज्ञ (भंडारा) है। भंडारा के अवसर पर आप को निमंत्रण है। पुजारी जी ने आगन्तुक का स्वागत मन से किया। वे चावल, दाल सब्जी बनाने के लिए दे दिये। उसने खिचड़ी बनायी। इतनी खिचड़ी बनायी कि आधा खाया और आधा बँसवारी में फेंक दिया। रात को भी उस को खूब ठाट से खिलाये। गाय लगती थी, दूध भी दिये। दाल में घी भी दिये। सबसे निश्चिन्त होकर पुजारी सो गये तब उसने ठाकुर जी का घड़ी और लोटा लेकर रफू चक्कर हो गया। पुजारी की जब नींद टूटी, तो देखते है कि ठकुरवा तो हजामत बना कर निकल गया। पुजारी जब यज्ञ के दिन दुधैला पहुँचे तो देखते है बिलकुल सूनसान है तब पुजारी से मिलते है और सारी घटना कहते हैं तब दुधैला के पुजारी बोले—'जो गति तोरी, सो गति मोरी ,मेरे यहां से तो बहुत सा सामान लेकर भाग गया।

दो शिव-भक्तों की प्रति द्वन्दिता—श्री प० नारायण मिश्र और गनौरी महरा अपनी जवानी के दिनों से ही शिव-भक्त थे। दोनों में प्रातः कालीन शिव पूजा लेकर प्रति द्वन्दिता थी कि कौन पहले पूजा करता है? इसी क्रम में एक दिन गनौरी महरा एक प्रहर रात्रि रहते ही पूजा के लिये शिवालय पहुँचे। कुएँ की जगह कुछ काई थी जिसकी वजह ने उनका पैर फिसल गया और महरा कुएँ में गिर गये। माघ का महीना था। जाड़े के मारे बेचारे प्राण बचाने के लिए अस्त व्यस्त थे। एक खोंड़हर पकड़कर चिल्लाने लगे, परन्तु उतनी रात में कौन सुनने वाला था। अन्त में इस आशा में खोंड़हर पकड़े स्थिर रहे कि सुबह में कोई आयगा तो निकालेगा या नारायण बाबा भी आते ही होंगें। उनसे कहूँगा तो वे लोगों को बुलाकर निकलवा देगें।-

इधर नारायण मिश्र की नीन्द कुछ देर में टुटी। घबड़ा कर लोटा-डोरी लेकर दौड़ते हुए शिवालय के कुएँ पर पहुँचे और सड़ाक (झट)से डोरी से बन्धे लोटे को बड़े ही वेग से कुएँ में डाले तो लोटा टन्न से गनौरी महरा के माथे पर पड़ा और अरे बाप रे मर गये" की आवाज आई। यह सुनकर नारायण बाबा इतने घबराये कि (बाप रे बाप भुत) कहते हुए भाग खड़े हुये। लोटा-डोरी कुएँ में ही गिरगई। गांव में आकर लोगों को बताये कि कुएँ में भूत है। इस पर कुछ साहसी लोग गये और कुएँ में रोशनी डाली गई तो पता चला कि ये तो गनौरी महरा हैं।

जगह खाली नहीं है—राँची के अन्तर्गत 'जगन्नाथ पुरी के एक प्राइमरी स्कूल में मेरे ज्येष्ठ लड़के रामस्वरूप सिंह मेरे पौत्र (तृतीय लड़के के पुत्र) रत्नेश कुमार का नाम लिखवाने के लिए गये। वहाँ की अध्यापिका बोली कि यहाँ पर तो कोई जगह खाली नहीं है'।

रत्नेश ओका कोना में जगह खाली हइ। उहइ हम टाट बिछा बइठब।

(घ) **हमारी मातृ-भाषा**—पहले कैथी भाषा में लिखने की प्रथा अधिक थी। जमींदार के दीवान लोग प्रायः कैथी में ही लिखा करते थे वह इस प्रकार है—

पइहे पइनाह में ओकार पराइमरी पाठशाला
हइ। इहां पर कनहउली के मुंशीजी पढ़ावड
हलथीन ..... आउर घरी इहां पर कोई
पाठशाला न हलइ। जेकरे तेकरे दुरा पर पढ़ावल जा हलइ।
मुंशी जी देशी हिसाब खूब जान हलथिन। जमान-जमान लोग उनका से हिसाब सीखेड आवड हलथिन। बहुत सीधा आदमी हलथिन। रसता में चल हलथिन तब सीधे आँख करके चल हलथिन। इधर उधर न ताकड हलथिन। जब कोइ कह हलइन कि बंदगी मुंशी जी तब ताक के ओहू कहऽहलथिन कि बंदगी। बहुत बूढ़ा हो गेलथिन हल। बेंत के छरी रखऽहलथिन। आउर चमरउआ जूता नक बइठा पेन्हऽलथिन। चलहलथिन तब जुतवा मचर-मचर करऽहलइन। ओह घड़ी कन्हउली में भोनू राम नाम के चमार हलथिन। ऊ चमरउआ जूता बनाबे में मशहूर हलथिन। जुतवा में इमली के चाउँस दे देहलथिन। एही से जुतवा मचर-मचर करड हलइ। मरकीन के धोती बिना कोर के पेन्हऽहलथिन। बड़ी साफ रखऽहलथिन। कन्हउली में दखिन तरफ एगो पोखरा हलइ। अबहिओं उ पोखरा टूटल-फूटल हइ।

में बारहो महीना पानी रहइहलइ। ओकरा किनारे पर पछिम तरफ शिवजी के मंदिल हलइ। अबहियों ऊ मंदिल बढ़ियाँ से आबाद हइ। ओही पोखरा में मुंशी जी बारहो महीना कीरिग फुटे से पहिले नेहाले हलथिन। आउर शिवजी पर जल चढ़ाब हलथिन।

ए १५ (क)पाठशाला में सर्व प्रथम प्रवेश—बच्चा जब ५ या ६ वर्ष के हो और कुछ बड़ा हो जाता था, तब घर वाले कहते थे कि अब बबुआ को खल्ली छुआ देनी चाहिए, इस लिए किसी अच्छे शुभ मुहूर्त में उस को खल्ली छुआ दी जाती थी। अधिकतर भाद्र मास शुक्ल पक्ष की चतुर्थी (चौथ) को ही खल्ली छुआई जाती थी,क्यों कि उसी दिन भगवान गणेश प्रगट हुए थे। उसी दिन खल्ली छुआने से विद्या खूब आती है। गणेश जी के प्राकट्य की कथा सक्षेप में इस प्रकार है।

गणेश-दर्शन की तीव्र लालसा से शिव-प्रिया लेखनाद्रि के एक रमणीय स्थान पर गणेश का ध्यान करती हुई उनके एकाक्षरी मंत्र का जाप करने लगीं इस प्रकार बारह वर्ष तक कठोर तप करने पर गुण-वल्लभ गणेश सन्तुष्ट हुए और पार्वती के सम्मुख प्रगट हो कर उन्होंने उन के पुत्र के रूप में अवतरित होने का वचन दिया। भाद्र शुक्ल चतुर्थी का मध्याहन- काल था। उस दिन चन्द्रवार, स्वातिनक्षत्र एवं सिंह लग्न का योग था। पाँच शुभ ग्रह एकत्र थे। जगजननी शिवा ने गणेश जी की षोड़षोपचार से पूजा की और उसी समय उनके सम्मुख अमित महिमा मय, कुन्दधवल, षड'भुज, त्रिनयन भगवान गणेश पुत्र रुप में प्रगट हो गये (गणेश पुराण)। भक्त-सुखदायक परम प्रभु गणेश की प्राकट्य-तिथि के होने के कारण भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी दया-धाम गणेश की वरदा-तिथि प्रख्यात हुई। उस दिन मध्याह्न काल में भगवान गणेश की मृन्मयी मूर्त्ति की श्रद्धा भक्ति पूर्वक पूजा ,एवं मंगल मूर्त्ति प्रभु के स्मरण, चिन्तन, एवं नाम जप का अमित माहात्म्य है। गणेश जी की मूर्त्ति हरेक पाठशाला में रहती थी। प्रथम दिन बच्चे उनके पूजन की सामग्री-नैवेद्य, खल्ली, इत्यादि लेकर जाते थे। गणेश जी की पूजा करके खल्ली छुआई जाती थी। अभी तो बच्चा अक्षर से अबोध रहता था। इसलिए गुरुजी उसके हाथ में खल्ली धरा देते थे और उसे पकड़ कर जमीन पर ही श्री गणेशाय नमः, श्री सरस्वत्यै नमः इत्यादि पाँच देवताओं के नाम लिखने के बाद राम गति देहु सुमति, लिखवाते थे। उसके बाद ककहरा- क ख ग घ ङ लिख वाये जाते थे। बाद में लड़का खल्ली से लिखे गये को हाथ से लिख कर अपने ललाट में

लगा लेता था। विश्वास रहता था कि इस से विद्या जल्दी आवेगी। बस, उस दिन का कार्य सम्पन्न हो जाता था। प्रसाद सब लड़कों को बाँट दिया जाता था। कुछ प्रसाद घर के लिए बचा लिया जाता था।

कुछ दिनों तक बच्चे ककहरा जमीन पर ही लिखते थे। उसके बाद सिलेट, पेंसिल दी जाती थी। वे पत्थर के बने रहते थे। पहले शुरु में ककहरा की पढ़ाई का रिवाज था। ककहरा दो प्रकार के होते हैं—व्यंजन और स्वर।

व्यञ्जन—क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ। ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न। प फ ब भ म। य र ल व श ष स ह। क्ष त्र ज्ञ।

स्वर—अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः।

व्यञ्जन को स्वर में मिला कर इस प्रकार पढ़ाई जाती थी—क में कातु का। क में हिरसिन कि। क में दिरगिन की। क में एकले के। क में दोल्हे कें। क में कुरमुट को। क मे धुरमुट को। क उतारे कु। क में मास्ते कं।

इस प्रकार क से लेकर अन्तिम अक्षर तक याद करवाये या लिखवाये जाते थे। ककहरा याद कर लेने पर पहाड़ा पढ़ाई जाती थी। यह प्रथा तो आज भी प्रचलन में है। पहले यहाँ लोअर प्राइमरी पाठशाला थी। उसके बाद अपर प्राइमरी, मिड्ल और हाई-स्कूल का निर्माण हुआ। इसका वर्णन आगे करूँगा।

लोअर प्राइमरी में तीन श्रेणियाँ थी—

प्रथम वर्ग—सी-क्लास कहलाता था।

द्वितीय वर्ग—बी " " "

तृतीय वर्ग-लोअर " " "

बी, क्लास में जाने पर लड़कों को इतिहास, भूगोल इत्यादि की किताबें लेनी पड़ती थी। साल में दो बार परीक्षा होती थी। छःमाही, (अर्द्ध वार्षिक) और वार्षिक। वार्षिक परीक्षोत्तीर्ण हो जाने पर लड़के अगलेवाले क्लास में चले जाते थे।

लोअर प्राइमरी की परीक्षा कहीं अन्य निर्धारित जगह पर होती थी। वहाँ की परीक्षा में डिप्टी साहब रहते थे परीक्षा फल में जिस लड़के का नम्बर सबसे अधिक आता था, उसे स्कालरशिप मिलती थी।

अच्छा, अब पूर्वा पर चलिये—जब बच्चों को कुछ लिखने की शक्ति हो जाती थी तब उन से कॉपी पर स्याही से लिखवाने का काम शुरु होता था। पहले

कंडे की कलम से लिखवाया जाता था, क्योंकि कंडे की कलम मुलायम होती थी। प्रथम-प्रथम लिखने में बच्चों को आराम रहता था। नीब से बढ़ियाँ लिखने में नहीं बनता था। कंडे की कलम से अक्षर भी अच्छे बनते थे। प्रमाण के लिए तुलसी कृत सातों काण्ड रामायण' मेरे हाथ की लिखी हुई देख सकते हैं। बाद में नीब काम में लायी जाती थी। अब तो नीब का व्यवहार भी खतम होता जा रहा है और लड़के शुरु से ही फोन्टेन पेन इस्तेमाल में लाने लगे हैं। उनदिनों स्याही घर ही बना ली जाती थी। बड़की हर्रे, कसीस और फुल्ली (जो दीपक जलाने से ताखे में फुल्ली जम जाती है) मिला कर रोशनाई तैयार कर ली जाती थी (सज्जी, सुहागा, विजयसार (लोध), लाही फुलिया मिलाया तो पक्की सिआही)। बहुत सस्ती पड़ती थी। एक ही दो पैसे में बोतल से भी अधिक रोशनाई तैयार हो जाती थी—एकदम काली।

गुरुजी को वेतन ९—१२ रु० मासिक मिलता था। प्रत्येक माह की पूर्णमासी को सभी लड़के अपने-अपने घर से गुरुजी के लिए सीधा (चावल, दाल) ले जाते थे। हर एक साल भाद्रपद मास में, शुक्ल पक्ष के चौथ को गणेश जी की पूजा बड़ी धूम-धाम से होती थी। पहिले 'चकचन्दा' (चौथ चन्दा) खेलाया जाता था। दस-बीस रोज पहले से ही शाम के शाम छुट्टी हो जाने पर चकचन्दा सिखलाया जाता था। सब लड़के एक कतार में खड़े हो जाते थे। एक लड़का आगे-आगे बोलता था। पीछे-पीछे सब लड़के उसी को दुहराते थे। दस-बीस दिनों में सब लड़के सीख कर निपुण हो जाते थे। लकड़ी की बनी हुई रंग-बिरंग की गुल्लियाँ रहती थीं। दो गुल्लियों को (एक दूसरे से टकरा कर) बजा-बजा कर चकचन्दा गाते थे। दो-दो तीन-तीन दिन चकचन्दा खेलने के लिए छुट्टी रहती थी। सब लड़के मिल-जुल कर घर-घर जा कर गाते थे और गार्जियन से निछावर वसूल करते थे। साथ-साथ गुरुजी भी रहते थे। नाई दउरा (टोकरी) में मिठाई (लड्डू) लेकर चलता था। सभी लड़कों के घर परसादी ही जाती थीं। अपने लड़के सहपाठियों के घर जाते थे और उसघर के विद्यार्थी की आँखों को अँगोछी से मूंद कर घर के सभी व्यक्तियों के पास घुमाते थे और निछावर लेने के लिए तरह-तरह की बातों से घर वालों को रिझाते (खुश करते) थे। घरवाले भी बहुत आनन्दित होते थे और खुशी में श्रद्धानुसार, पैसे, साड़ी, चोली इत्यादि देते थे। सब लड़कों के ऊपर एक प्रधान (बालचट) रहता था। उसीके जिम्मे सब भार रहता था। जो कुछ निछावर मिलता था, गुरुजी का होता था। घरवाले खुश होकर बालचट

को बलचटई दे देते थे। बालचट उन पैसों से मिठाई खरीद कर सब लड़कों को बाँट देता था।

लड़के सब जो चौथचन्दा गाते थे उनमें से कुछ निम्नलिखत हैं :—

(१)

जय गणेश जय गनेश, जय गणेश देवा।
नाम लेत बिघ्न हरत सुफल होत सेवा॥
कोई चढ़ावे पान फूल, कोई चढ़ावे मेवा।
माता गौरा पारवती, पिता महादेवा।

(२)

भादो मास चौथ का चन्दा।
मिलने लगा करैला कन्दा।
खीरा ककरी मकई के बाल।
लड़के खाकर भये नेहाल।

(३)

चलो इआरो बाग में, मेवा खिलाऊँगा।
मेवा के डाढ़ टूट गेल, चादर बिछाउँगा॥
चाचर के खूँट फाट गेल, दरजी बुलाऊँगा।
दरजी के सूई टूट गेल, लोहार बोलाऊँगा।
लोहार के हथउरी टूट गेल, घोड़ा दउड़ाउँगा।
घोड़ा के टाँग टूट गेल, हरदी चढ़ाऊँगा॥
हरदी न छोड़े दरदी, बुल बुल न छोड़े रग।
बुढ़वा बेचारा का करे कि बुढ़िया न छोरे संग।

(४)

श्री गणेश जी चढ़े तुरंत, नौ सौ मोती झलके अंग।
एक मोती हरतालम ताला गुरु जी पढ़ावथ पंडित लाला॥
पंडित लाल ने दिया असीस, जीओ चटिया लाख बरीस।
लाख-लाख के ताख मँगाये, दिल्ली से गल मोछ मँगाये॥
दिल्ली-दिल्ली काली चोर, घर बहादुर पहिला चोर-।
पहिला चोर गनेश जी के पूजा॥

पूजा कीजै लीयै दान, सब चटिअन के हो कल्याण।
काला हे कल्याण के, सूरज मुखे बान्ध के, एक समय है राम के॥

(५)

बेलफरी जी बेलफरी, बेल तले मत जाओ जी।
बेल गिरेगा, सिर फुटेगा, दही चुरा मत खाओ जी॥
अम्मर सिंह के कम्मर टूटल, बच्चू सिंह के बाँह जी।
पूछ आवऽ दशरथ सिंह से लड़बऽ कि ना जी?

लड़ब न त करब का, भाई के हँसायब का? मारब गोली तान के, गिरतन मैदान के, तोक लेब खरिहान में, बेंच देब दूकान में; खा जायब मिठाई॥

(६)

खेलत-खुलत में कौड़ा पाया, सो कौड़ा मैं गंग दहाया।
गंगा मइया बालू दीया, सो बालू कनूनियाँ लीया॥
कनुनियां बेचारी भुंजा दीया, सो भुंजा घसगढ़वा लीया।
घसगढ़वा बेचारा घासदीया, सो घासले गइया खाया॥
गइया बेचारी दुद्धी दीया, सो दूध ले बिल्ली पीया।
बिल्ली बेचारी मूँस दीया, सो मूस को चील्ह लीया॥
चील्ह बेचारा पंख दीया, सो पंख ले राजा लीया।
राजा बेचारा घोड़ा दीया, सो घोड़ा में आर पार॥

उस पर बैठे मियाँ दलाल।
मियाँ दलाल के लम-लम छूरी, थर-थर कांपे जमुना पुरी॥
जमुना पुरी के आयल मीर, मार देलक छैला के तीर।
छयला-छयला लौंग सुपारी; छयला खोजे अपन मतारी॥

(७)

क्या सुन्दर अंगरेज बहादुर, कोइलवर पुल बनाया है।
ऊपर-ऊपर गाड़ी चलती, नीचे पानी बहता है,
उसके बीच में आदमी चलता, सोन पार हो जाता है॥

लड़कों से कुछ शारीरिक परिश्रम भी करवाया जाता था—कवायद या और तरह-तरह के खेल कबड्डी इत्यादि।

हाँ, एक बात और कह देना चाहता हूँ। उस समय लड़कों को पढ़ाने में

गुरुजी को बड़ी कठिनाई उठानी पड़ती थी। शुरू-शुरू जब लड़के पाठशाला में भर्ती कराये जाते थे तब कुछ लड़के पढ़ने जाने में बड़ी आनाकानी करते थे। घर से सिलेट-किताब लेकर पढ़ने के लिए निकलते थे, परन्तु पाठशाला न जा कर कहीं बागीचे में, कहीं राहर के खेत में, कहीं ऊख के खेत में छिप जाते थे और टिफिन (जलपान) के वक्त या छुट्टी के वक्त घर पहुँच जाते थे। जब गुरूजी घर वालों को यह सूचना दिलवाते थे कि आपका लड़का पढ़ने नहीं आया तब घरवाले जानते थे। फलतः वैसे लड़कों पर विशेष निगरानी की जरूरत पड़ जाती थी। घरवाले गुरूजी को खबर करते थे कि यहाँ से लड़का खा-पी कर ठीक समय पर पाठशाला जाता-आता है। वह जिस दिन पाठशाला न जाय, आप समझेंगे कि वह कहीं छुपा हुआ था। आप उसकी खोज-खबर लेंगे। गुरूजी उसकी खोज-खबर के लिए ४-५ मजबूत लड़कों को छोड़ते थे और कहते थे कि उसे जहाँ पावो वहीं से पकड़ लाओ। लड़के सब खोज करना शुरू करते थे। खोजते-खोजते जहाँ मिल जाता था, उस को पकड़ कर ले आते थे। आने में वह लड़कों के साथ बहुत ऊधम मचाता था। नहीं आना चाहता था। लेकिन मजबूत लड़के उसे जबरदस्ती पटक कर या टाँग कर गुरुजी के हवाले कर देते थे। गुरूजी उसको सख्त दंड देते थे, लेकिन तौभी वह अपनी आदत नहीं छोड़ता था। इससे गुरुजी बड़ी परेशानी में रहते थे। यदि गुरुजी लड़के की खोज-खबर न लेते तो घर के गार्जियन उनके पास उलाहना भेजते थे, कि आप हमारे लड़के के ऊपर कुछ भी ध्यान नहीं देते हैं। लड़कों को कठिन दंड दिया जाता था तौभी घरवाले नाराज नहीं होते थे, क्योंकि वे लोग समझते थे कि मेरे लड़के की भलाई के लिए ही वे दंड देते हैं। दुलार करने से लड़के खराब हो जाते हैं। लड़के जब मार खाने की बात घरवालों को कहते थे तब घरवाले कहते थे कि—गुरुजी के मार से विद्या खूब आवऽ है। धीरे-धीरे लड़के सुधर जाते थे। हर एक क्लास के लड़कों से महीना लिया जाता था। वह पैसा गुरुजी का होता था।

'ऐ'—कृषि इत्यादि के सम्बन्ध में—

यहाँ की जीविका खेती पर ही निर्भर थी। यहाँ पर दो प्रकार की जमीन है भीठ और केवाल। केवाल में धान, खेसारी मसूर, तीसी, बूँट इत्यादि फसलें होती हैं और भीठ वाला) में गेहूँ, जौ, चना, सरसों, मटर, मरुआ, कउनी (टेउनी), राहर, आलू और मकई। मकई वाला खेत में ही राहर और पटुआ बो दिया जाता है। अब नये-नये किस्म के बीज आने लगे हैं। अब धान

कर भी उसमें गेहूँ बोया जाता है। आलू रोप देने के एक सप्ताह के बाद एक पंक्ति को छोड़ कर एक पंक्ति में एक-एक हाथ पर रेंड़ी (अंडी) का बीज बो दिया जाता है। आलू के ही साथ-साथ रेंड़ी की फसल भी हो जाती है। आलू उखाड़ने के समय रेंड़ी का पौधा बचा दिया जाता है। चैत मास में रेंड़ी के गुच्छे पकने लगते हैं। गुच्छे में एक फल भी पक जाता है तो वह गुच्छा तोड़ लिया जाता है। उसके तैयार होने का यही चिन्ह है। रेंड़ी के पत्ते की तासीर ठंडेपन के लिए प्रसिद्ध है। गर्मी के मौसम में दुधारू (लगहर) जानवर को खिलाने से दूध की बढ़ोत्तरी होती है। सब रेंड़ी टूट जाने पर उस का पौधा उखाड़ लिया जाता है, वह जलावन के काम में आता है। रेंड़ी के गुच्छे को घर लाकर सब फल को अलग-अलग करके उसमें गोबर घोल कर मिला दिया जाता है इससे दाने पर के छिलके चटक कर अलग हो जाते हैं।

अब रेंड़ी की खेती में लोगों की अभिरुचि कम हो गई है। घर में ही तेल निकाल लिया जाता था। उसके तेल निकालने के लिए कोल्हू की जरूरत नहीं पड़ती थी। प्रायः उसी के तेल से दीपक जलता था और लड़के पढ़ते थे, क्योंकि उसका तेल बहुत ठंडा होता है। उसके प्रकाश में गर्मी नहीं होती और धुआँ तथा दुर्गन्ध भी नहीं होता। उसका तेल दवा के प्रयोग में भी लाया जाता है।

ट्यूब-वेल हो जाने से अब टेउनी, मरुआ, कोदो की खेती प्रायः समाप्त सी हो गई है। ट्यूब-वेल हो जाने से मुख्यतः धान और गेहूँ की ही खेती अधिक मात्रा में होने लगी है।

यहाँ कोई खास बढ़िया पानी का खजाना नहीं था कि जिसमें काफी पानी जमा रह सके। वर्षा के पानी पर ही धान की उपज होती है। खजाना न रहने से अधिकांश खेतों में बावग धान बो दिये जाते थे। रोपा कम रोपाता था, क्योंकि रोपा के लिये अधिक मात्रा में पानी की जरूरत रहती है। बावग धान थोड़ा-थोड़ा पानी मिल जाने पर भी तैयार हो जाता था। बावग धान सूखे खेतों में ही छींट कर जोत दिया जाता है। पानी पड़ने पर वह बीज जम जाता है। अब बावग की खेती बहुत कम होती है। बावग धान बोने का प्रधान नक्षत्र 'रोहन' है। फसल बोने के भी नक्षत्र और समय होते हैं।

रोहन नक्षत्र का महत्व (एक कहानी के तौर पर)

पुराने (बुजुर्ग) लोग ऐसा कहते आये हैं कि 'रोही' नाम का एक किसान था। किसी कारणवश उसे कैद करके जेल में भेज दिया गया। जब 'रोहन' नक्षत्र

आया, तब वह बराबर यही बकता था कि—'रोहन' आया, घर रोही आ
उस के साथी सब पूछते कि यह क्या बकते हो ? वह कुछ जवाब नहीं देता था
एक दिन कोई औफिसर देखभाल करने के लिए जेल के अन्दर गये और वे
उसको इसी तरह बकते पाये। उसने समझा कि यह कोई पागल तो नहीं है। उन्होंने
पूछा—ऐसा तुम क्यों बोलते रहते हो ? फिर उसने उसी वाक्य को दोहराया।
औफिसर ने वाक्योच्चारण का अभिप्राय जानना चाहा।

उसने जवाब दिया कि सरकार मैं गृहस्थ आदमी हूँ। गृहस्थी ही हमारा
पेशा है। उसी से संपूर्ण परिवार का पालन-पोषन करता हूँ। इस समय धान
बोने के लिए सबसे अनुकूल नक्षत्र 'रोहन' बीत रहा है। आज का बोया धान
अवश्य होकर रहता है, चाहे जो भी बाधा आये ?

औफिसर ने आश्चर्य से कहा—ऐसी बात है ?

रोही--हाँ सरकार !

औफिसर—अच्छा, तुम को हम धान बोने के लिये छुट्टी देते हैं, मगर यदि
धान नहीं हुआ तो तुम को और कड़ी सजा मिलेगी।

रोही—धर्मावतार, मंजूर है !

धान बोकर वह नियत समय पर आ गया। जब फसल तैयार हुई तब
परीक्षण हेतु औफिसर उसके खेत पर आये। धान की अच्छी फसल देखकर 'रोही'
के अनुभव की प्रशंसा करने लगे तभी उन्हें याद आयी कि रोही ने कहा था कि
किसी प्रकार की भी बाधा आ जाय, लेकिन धान होकर ही रहेगा। उस को नष्ट
करने के लिए, उस जगह के चरवाहों को, जो जानवर चरा रहे थे, हुक्म दिया कि
सब जानवरों को इस धान के खेत में घुसा कर नष्ट कर दो। चरवाहों ने ऐसा
ही किया। खेत में पानी तो था ही। सब पौधे जानवर के खूँर से कुछ दब गये,
कुछ टूट गये। यानी फसल बिलकुल चौपट हो गयी। औफिसर ने रोही को सूचना
दे दी कि तुम्हारी फसल को मैंने जानवरों को घुसा कर तहस-नहस करवा दिया
है। तुम ने कहा था कि उसमें विघ्न-बाधा न असर करेगी। अब धान तैयार हो
जाने के समय फिर मैं निरीक्षण करूँगा। यदि पौधे आबाद न हुए तो कथनानुसार
तुम्हें दंड भुगतना पड़ेगा।

कत्तिक मास में औफिसर खेत पर गये, देखते हैं कि यह तो आस-पास के
खेतों से भी आगे है। इस में जैसे बड़े-बड़े बाल लगे थे, वैसे अन्य खेतों में नहीं।

कारण कि जानवरों की दौड़-धूप से ऊपर की मिट्टी नीचे तथा नीचे की ऊपर हो गयी। घास घुल-मिल कर खाद हो गयी मिट्टी की शक्ति पाकर बचे धान के पौधे हरे तथा घने होकर खेत पर छा गये। जो टूट गये थे सभी नयी शक्ति पाकर खड़े हो गये। औफिसर 'रोही' की दूरदर्शिता पर पूर्ण प्रसन्न हो गये। उन्होंने उसे सिर्फ तो किया ही साथ-साथ उसको यथोचित पुरस्कार भी दिया।

बावग वाले धान के पौधे जब एक-एक बित्ता के हो जाते हैं, तब उस खेत से मोहनी (निकौनी) कर दी जाती है। अधिकतर नीचे खेतों में बावग की खेती होती है।

एक समय लगातार दो-तीन वर्ष पानी नहीं हुआ। फलतः लोगों ने धान बोना बन्द कर दिया था। उन खेतों में रब्बी, चना, सरसों आदि काफी मात्रा में पैदा हो जाते थे। भीठ (बाल') खेत में बरसाती पानी न होने से यानी पानी के अभाव में मकई, राहर, चना, मटर, जौ, गेहूँ, सरसों इत्यादि की पैदावार खूब हो जाती थी। रब्बी खेतों की सिंचाई (पटवन) लोग कुएँ से कर लिया करते थे। पहले के लोग हृष्ट-पुष्ट (हट्ठे-कट्ठे) और मजबूत होते थे। बहुत दूर तक माठ के पानी से खेती आबाद कर लेते थे। बरसात कम होने से खेतों की जुताई खूब हो जाती थी, जिससे उर्वरा शक्ति बढ़ जाती थी। रब्बी वाले खेत, जिसमें गेहूँ और जौ होते थे, बीच में एक साल चौमास (परती) छोड़ दिये जाते थे और बरसात भर उस में जुताई होती थी। जिस खेत में इस साल गेहूँ है, तो दूसरे साल उस में गेहूँ न बोकर मटर, चना, मसूर, राहर बो दिये जाते थे। गेहूँ वाले खेत में चना इत्यादि बो देने से वह खेत मजबूत हो जाता था। इसी तरह हेर-फेर कर के खेती होती थी।

२० मन प्रति बीघा अनाज बिना खाद-खल्ली के हो जाता था। हत्था से सिंचाई होती थी। इतना हलका पानी मिलता था कि किसी पौधे की जड़ भींगती थी और किसी की नहीं भी। कारण कि चौमास रहने से इतनी उर्वरा शक्ति बढ़ जाती थी। चौमास का मानी है=जेठ, अषाढ़, सावन और भादो चार महीने खेत को जोतना। चना वाले खेत में उसी के साथ-साथ सरसों बो दिया जाता था। चना वाले खेत पटाये नहीं जाते थे। जिन दिनों लगातार २-३ वर्ष पानी नहीं होता था। कुछ लोगों को पूरी खेत में ७५-८० मन तक सरसों, बूँट वाले खेत में साथ-साथ हो जाता था। १०-२० मन तो साधारण किसान को हो जाता था।

वर्षा नहीं होने पर भी यहाँ अन्न का संकट कभी नहीं हुआ। मजदूरों को भी कोई खास दिक्कत नहीं थी। खेत में खाद गोबर के सिवाय और कुछ नहीं दिया जाता था। कहीं-कहीं बावग वाले खेत जो अधिक पानी होने से डूबने लगते थे, उनमें में लोग थोड़ा-थोड़ा खरिया नमक देते थे, या रोपा वाले वैसे खेत में, जिस में कि पीछे रोपनी होती थी। उससे पौधे अधिक बढ़ जाते थे। ऊँचे खेतों में कुछ कलिया, सिड़ंटी, साठी, कड़ुआ, इत्यादि हलके धान बो दिये जाते थे। यहाँ प्रधान भोजन सत्तू, रोटी और भात था। यहाँ के लोग दिन में अधिकांशतः सत्तू और रात में भात या रोटी खाते थे। रोटी और भात का भोजन तो अब भी चल रहा है लेकिन प्रधानता भात की ही है। सत्तू का भोजन बहुत कम हो गया है। सत्तू सिर्फ मजदूरों के लिए ही तैयार किया जाता है, क्योंकि उन लोगों को दूर-दूर खेतों में काम करने के लिए जाना पड़ता है। नजदीक काम करने पर उन लोगों को भी भात या रोटी ही मिलती है, परन्तु वे लोग अधिकतर सत्तू ही खाना पसन्द करते हैं।

गोड़ा (डीह) खेत में पहले पोस्ता (अफीम) की भी खेती होती थी। इस की खेती सर्वे के कुछ दिन बाद तक चलती रही, पर १९१७ ई० से इस जिले में बिलकुल बन्द हो गई। पुराने लोग ऐसा कहा करते थे कि जितनी जमीन में खेती करनी होती थी, उस के लिए सरकार से परवाना लेना पड़ता था। खेत खूब बढ़िया से जोतकर तैयार किया जाता था। कार्तिक महीने में बीज बोये जाते थे। बीघा में सवासेर बीज बोया जाता था। पौधे जब एक-एक बित्ते के हो जाते थे तब उसकी निकौनी होती थी। निकौनी के वक्त घने पौधों को छाँट दिया जाता था और एक एक बित्ते पर पौधे छोड़ दिये जाते थे। छँटे हुए छोटे-छोटे पौधों को अन्य तरह के सोया इत्यादि सागों में मिला कर खाने के लिए तैयार किया जाता था। सोहनी २-३ बार की जाती थी। सिंचाई के लिए छोटी-छोटी क्यारियाँ बनाई जाती थी। ५-६ पानी दिये जाते थे। उसका डंठल भर छाती यानी लगभग ३ फीट तक होते थे। फाल्गुन से चैत मास तक पौधे तैयार हो जाते थे। उनमें से जो फूल निकलता था, वह कई तरह के रंगों से मिश्रित मालूम पड़ता था। उस के फूल की रोटी भी बनती थी। यदि सरकार फूल लेती तो उस का दाम भी देती और साथ-साथ कुछ कपड़े इनाम में भी देती थी।

माघ में उसकी पछनी होती थी। जब ढेंढ़ी (छेनी) अच्छी तरह निकल आती थी तब तीन नरहन्नी को एक साथ इस हिसाब से बान्धकर तैयार की जाती थी कि पछनी करने में ढेंढ़ी में तीनों धारें बराबर घुसे। ऐसा न हो कि किसी

नरहन्नी की धार ऊपर रहे और किसी की कुछ भीतर। नरहन्नी बान्धने का हिसाब कम लोगों को मालूम रहता था, क्यों कि यह महीन हिसाब था। सर्वानन्द मिश्र के पास बहुत लोग बन्धवाने जाते थे। कोइरी लोग इस काम में बहुत निपुण थे। पछनी दोपहर के बाद से होती थी और कछनी भोर में सूर्योदय होने से पहले ही हो जाती थी। कछनी के लिए एक सितुही होती थी। उसी से काछी जाती थी, वाली अफीम निकाली जाती थी। बीघे में ६-७ सेर अफीम होती थी। उसके पत्ते या डंठल खाद के काम में आते थे। उसके सड़ने से खेत की उर्वरा शक्ति बहुत बढ़ जाती थी। उसके डंठल मकान की छावनी में तड़ेड़े के काम में भी आते थे। अफीम तीन खण्डों में विभक्त रहता था।

१ बालादर (अउअल) फर्स्ट क्लास बिक्री ४ रु० से ६ रु० सेर तक।

२ ,, (दरउगल) सेकण्ड ,, ,,

३ ,, (पसेवामेल) थर्ड ,, ,,

इसकी गृहस्थी के लिए दादनी (कुछ पैसे) बँटती थी और एकरार नामा होता था कि कितने खेतों में पोस्ते की खेती करूँगा, इससे ज्यादा या कम नहीं। बोने के वक्त खेत नाप ली जाती थी कि दादनी के मुताबिक खेत है या नहीं। तैयार होने के वक्त तक तीन बार नापी होती थी। ढेंढ़ी में दाने होते थे, बहुत महीन-महीन। ये दाने व्यापारियों के यहाँ सभी जगह मिलते हैं। किसी-किसी खाने के पदार्थ में उसका मिश्रण किया जाता है, जिससे उसका स्वाद बढ़ जाता है। मुझे याद है कि डीह में जाकर हम लड़के लोग उसके पके हुए ढेंढ़ी को फोर-फोर कर दाना खाते थे।

अफीम का तौल पटना के गुलजारबाग, महावीर घाट, मसौढ़ी या अन्य जगहों में होता था।

अफीम की खेती रुक जाने पर उन डीह खेतों में आलू उपजने लगा। यों तो पहले भी कुछ आलू हो जाया करता था, लेकिन अफीम के बाद तो डीह में प्रायः बस्ती के चारो तरफ आलू ही आलू नजर आने लगा। जो अब तक चल रहा है।

आलू पहले कट्ठे में १६-१७ मन तक हो जाया करता था। बढ़िया खेत बना कर बो देने पर इस समय भी १२ मन तक हो जाता है। आलू जब उखाड़ा जाता है तब खेत में ही टाल लगा दिया जाता है और प्रायः खेत में ही बेच दिया

जाता है। कम लोग घर लाकर बेचते हैं। कुछ तो गाँव के ही व्यापारी लोग खरीदते हैं और कुछ बाहर के भी।

खेत में जिस समय आलू का टाल लगता है, उस समय की शोभा देखते ही बन पड़ती है। ट्रक, गाड़ियाँ आती-जाती रहती है, माल लदाता रहता है। गाँव के सभी मजदूर आकर उखाड़ते हैं। यह एक ऐसा खाद्य -पदार्थ है जिसकी तरकारी (सब्जी) बारहों महीने चलती है। पहले लोग बीज के लिए या खाने के लिए काफी आलू घर ही रख लेते थे। अब कोल्ड स्टोरेज हो जाने से उसी में जमा कर दिया जाता है। अधिकतर सब्जियाँ हम लोग अपने घर पर ही उपजा लेते हैं। जैसे—आलू, लौकी, नेनुआँ, रामतरोई, बैंगन, झिंगी, ककरी, करैला कोंहड़ा, भतुआ, टमाटर, साग इत्यादि। खेसारी, चना और मटर की भी भाजी होती है। जिन लोगों से सब्जियों का उपार्जन नहीं होता, उन लोगों को भी प्रायः बाजार जाने की आवश्यकता नहीं रहती है, क्योंकि बहपुरा, पैनाठी, सदीसोपुर के तुरहे या दीयर के व्यापारी आकर, गली-गली घूमकर सब्जियाँ और फल, यथा-केला, अमरूद, सेव, टमाटर, नींबू, गर्मी के मौसम में ककरी, फूट, तरबूजा, लालमी इत्यादि बेच जाया करते हैं। विशेष कार्य प्रयोजन में जब अधिक की जरूरत होती है तब बाजार जाना पड़ता है।

पहले लोग बहुत महीनी चाल चलते थे। घर से गाँव में भी जाना होता था तो सिर पर टोपी जरूर रख लेते थे और गर्दन से दोनों तरफ लटकते हुए गमछे को भी। कुर्त्ता, मिरजई हो या न हो। बाहर जाने पर मिरजई, पगड़ी, गमछा और जूता अवश्य पहनते थे। अच्छे गृहस्थ लोग तो खेत में जाते भी नहीं थे जहाँ बैठक जम जाती थी, लोग शतरंज, चौपड़ इत्यादि खेल जमा देते थे। खेतों के पटवन के लिए सबसे पहले नल कूप न० २० पयनाल-हिरामनपुर में १९४७ ई० में बना। ग्रीष्म ऋतु में नलकूप से मकई, धान, मरुआ आदि की खेती होने लगी थी, लेकिन कुछ दिनों के बाद प्रायः बन्द हो गयी, क्योंकि खर्च अधिक बैठने लगा और नल-कूप बीच-बीच में बन्द हो जाने पर फसल खराब हो जाती थी, क्योंकि समय पर पानी नहीं मिलता था। थोड़ी-थोड़ी ऊख की खेती भी होती है। मजदूरों को सालों काम लगा रहता है। बैठना नहीं पड़ता है। उनकी जीविका बारहों महीने अच्छी तरह चल जाती है। पहले बैतरनी धान अधिक बोया या रोपा जाता था। अब बहुत तरह के नये-नये धान या गेहूँ के बीज आने लगे हैं। पहले गोबर और अंडी की खल्ली ही खाद के रूप में व्यवहृत होती थी। अब तरह-तरह की खाद का प्रयोग होने लगा। प्रारम्भिक काल में खाद कट्ठा में पाव भर या

आधा सेर दी जाती थी। अब तो एक-दो पसेरी तक दी जाने लगी है। गोबर की खाद की कमी हो गयी, क्योंकि नल कूप होने से राहर (अरहर) की उपज एकदम कम हो गई है। गोबर जलावन के काम में आ जाता है। राहर के रहने से जलावन की आवश्यकता उसी से पूरी हो जाती थी। पहले सभी चीजों की दौनी बैल से होती थी, पर अब मशीन के प्रयोग होने से जौ गेहूँ तो बिलकुल थ्रेसर से ही दौनी की जाती है। मशीन के प्रयोग से बैलों को आराम मिल गया है, नहीं तो दौनी में बैल तबाह हो जाते थे। बरसात में समय पर पानी न बरसने पर लड़कियाँ चौहट (गीत) गाती हैं—

चौहट गीत

(शान्ति कुमारी द्वारा प्राप्त)

मिलहुक सखिया हे, मिलहुक सलेहर,
मिली-जुली सैरा नेहाइ हे ना।
सब रे सखी सब घर चलि अइले,
असगर चपिया झारे लंबी केसिया हे ना॥
झर रे झरोखा चढ़ी रजवा निरेखे,
केकरि बहिनियाँ झारेलंबी केसिया हे ना,
राजा सिह के बेटिया हे होरी सिह के भतिजिया,
गंगाराम के बहिनियाँ झारे लंबी केसिया हे ना॥
देबुअक गंगाराम डाली भरी सोनमा,
चपिया बहिनियाँ हमरा के देहू ना।
आग जे लगबऽ राजा डाली सोनमा,
मोरा वंश चपिया नहई हे ना॥
हकरहू डकरहू गाँव चौकीदरवा,
गंगाराम के पकड़ी ले आवऽ हे ना।
आग जे लगवऽ चपिया तोरी लंबी केसिया,
बजरऽ परे तोरी सुरतिया हे ना,
कि तोरे कारण स्वामी बन्हैलन हे ना॥
लेहुक भउओ हे गोदी के बलकवा,
हम जबइ भइया के छोड़ावन हे ना।

एक कोस गइले चपिया, दुई कोस गइले,
भेटी गइले गइया चरवहवा हे ना।
गइया चरावत गइयाँ चरवहवा,
कने बसे मूगा कचहरिया हे ना।
अउठी-पउठी हई चपिया जमिदरिया,
बीचे हई राजा के दुअरिया हे ना।
एक डेउढ़ी गइले चपिया, दुई डेउढ़ी गइले,
तीसरे में परि गइले राजा पर नजरिया हे ना।
जब तू रजवा हो हम से लुभइलऽ,
हमे जोग सेन्दुरा बेसाहऽ हे ना।
हँसी-हँसी रजवा सिन्दुरा बेसाहे,
रोई-रोई टीके बेटी चपिया हे ना॥
जबतू रजवा हम से लुभइले,
हमे जोग डड़िया फनावऽ हे ना।
हँसी-हँसी रजवा डड़िया फनावे,
रोई-रोई चढ़े बेटी चपिया हे ना॥
एक कोस गइले डाड़ी, दुई कोस गइले,
तीसरे में लगी गइले मधुरी पियसवा हे ना।
गोर तोड़ा पड़ीला अगीला कहरवा,
बाबा के पोखरिया डाड़ी बिलमावऽ हे ना॥
बाबा के पोखरिया चपिया पिछु छुटि गेलवऽ,
स्वामी के पोखरिया डाड़ी बिलमावऽ हे ना।
एक चुलु पीले चपिया दुई चुलु पीले,
तीसरे में खिलले पतलवा हे ना॥
हम जो जे जानती चपिया इत बुधि छेड़बे,
रहवा इजतिया तोरी लेती हे ना।
झर रे झरोखा चढ़ी अम्मा निरेखे,
तीन कुलवा रखल बेटी चपिया हे ना॥

(२)

सुपली मउनियाँ खेली जयपत बेटी हे,
से धोई लावऽ बासी हँरीयवा रे दइया।

इमरा से अहे अम्मा एहो नाही होतबऽ,
से हमे खेलबो सुपली मउनियाँ रे दइया ॥
तोरा से जयपत एहो नाही होतबऽ,
चली जाहू डोम के दुअरिया रे दइया ।
हथबा में लेलन जयपत फटली गुदरिया,
चली भेलन डोम के दुअरिया रे दइया ॥
एक कोस गेलन जयपत दुई कोस गेलन,
भेटी गेलइ गइया चरहबा,
से कने हई डोम के दुअरिया रे दइया ।
अउंठी-पउंठी हई घनी बँसवरिया,
बीचे हई डोम के दुअरिया रे दइया ॥
सुपली मउनियाँ बिनत डोम हो भइया,
से जयपत बेटी रखबऽ कि ना रे दइया ।
तोरा हवऽ जयपत कोठबा से सोफवा,
हमरा हई टुटली झोपरिया रे दइया ॥
कोठवा अटरिया डोम भइया बाप-माय तेजली,
हमे रहबों टुटली झोपरिया रे दइया ।
खोलहू जयपत बेटी, लाली चुनरिया से
पहिनी लेहू फटली गुदरिया रे दइया ।
लेहू अहे जयपत बेटी बाँस के छकुनिया,
चली जाहू सूअर चरावन रे दइया ॥
हमहूँ जे जनती डोम सूअरऽ चरैबऽ,
बाबा के पोखरिया डुबी जइती रे दइया ॥

(३)

केरे खनावे सेरो पोखर,
एरामा केरे बन्धावे चारो घाट हो ना ।
बाबा मोर खनावे सैरा पोखर,
ए रामा भइया बन्धावे चारो घाट हो ना ॥
कने गेलऽ किया गेलऽ बढ़ामन,
ए रामा पोखरा के करऽन विचार हो ना ।
पुराना पोथी रखलन बढ़ामन नया पोथी खोललन,

ए रामा पोखर मांगि दौलत बेटी हो ना ॥
झर रे झरोखा चढ़ी निरखले दौलत,
ए रमा जइसे लागल भइया चलल आवे हो ना।
सभवा बइठले तूहू ससुर बरइता हो रामा,
अब की नेअरवा नइहर जाय दहू ए ना ॥
ए रामा नइहर में छोटका भइया के बिआह हइ हो ना।
अबकी नेअरवा दौलत फेरी देहू,
ए रामा जीव जे जतव अकारथ हो ना ॥
झर रे झरोखा चढ़ी अम्मा निरखे,
जइसे लागल दौलत चलल आवे हो ना ॥
खोलिओ में देहू दौलत लहँगा पटोरवा,
पियरी पहिनी पोखर पुजहू हो ना ॥
भर घुठी पनियाँ में दौलत गेलन,
ए रामा अम्मा के छतियो न फाटइन हो ना ॥
छतिया मोर फाट हे कँकरिया अइसन,
ए रमा पोखर मांगि दौलत बेटी हो ना ॥

(४)

कहवाँ में गरजले मैंघर गे हथिया,
कहवाँ बरसे इन्दर देवा हे ना।
पटना में गरजले मैंघर गे हथिया,
पयनाल बरसे इन्दर देवा हे ना ॥
कहवाँ के रनियाँ हे कर हइ पुछरिया,
कइसन हथिन दुलरहवा साही मनुसवा हे ना।
आगे पटोर मुख ढुँढ़-ढुँढ़ गे रनियाँ,
मोछ- दाढ़ी भवँर गुँजर हइगे रनियाँ ॥

१९६७ में अकाल हुआ। इसका प्रभाव बिहटा थाना में अधिक पड़ा। 'राशन कार्ड' बन गये थे। बिहार सरकार ने उद्वाही-भू-सिंचन-विभाग को पटवन के कार्य (१० जुलाई १९७४ ई०) को कॉरपोरेशन को समर्पित कर दिया। इसी समय से सभी फसलों के सिंचन की दर करीब-करीब दूनी हो गयी थी उसकी एक तालिका नीचे दी जाती है—

फसल	अवधि	फसल का प्रकार
१ (क) खरीफ	२५ जून से २५ अक्टूबर तक	
(ख) खरीफ	२५ ,, २५ ,,	धान, पटुआ, कोदो
२ (क) रब्बी	२६ अक्टूबर से २५ मार्च तक	—गेहूँ, जौ, चना, मटर, अन्य फसलें।
(ख) रब्बी से भिन्न एक पटवन	२६ ,, ,, २५ ,, ,,	(क) गेहूँ, जौ, चना मटर, अन्य (ख) मिचाई, तम्बाकू
(ग) रब्बी मौसम	२६ ,, ,, २५ ,, ,,	(क) अगला आलू (ख) आलू दो फसल (ग) देर से होने वाले आलू
३ (क) गर्मी मौसम पट्टा	२६ मार्च से २४ जून तक	(क) ईख को छोड़ कर (ख) ईख
(ख) गर्मी मौसम के बाहर ईख की इकहरी सिंचाई	२६ ,, ,, २४ ,, ,,	ईख

क्रमशः

पटवन की संख्या

१	(क)	८८,०००	गैलन	पटवन	की	दर से	तीन	पटवन	(कुल१२)—४२
	(ख)	८८,०००	,,	,,	,,	,,	एक	,,	—१६
२	(क)	८८,०००	,,	,,	,,	,,	दो	,,	(कुल ८)—३२
	(ख)	८८,०००	,,	,,	,,	,,	एक	,,	(क)—१८
									(ख)—२६
	(ग)	६६,०००	,,	,,	,,	,,	चार		(क)—५४
		६६,०००	,,	,,	,,	,,	नौ		(ख)—९०
		६६,०००	,,	,,	,,	,,	छः		(ग)—६२
३	(क)	८८,०००	,,	,,	,,	,,	एक		(क)—२२
		८८,०००	,,	,,	,,	,,	चार	(कुल २०)	(ख)—७४
	(ख)	८८,०००	,,	,,	,,	,,	एक		(क)—२२
		१,१०,०००	,,	,,	,,	,,	एक		(ख)—३२
	(ग)	१,१०,०००	,,	,,	,,	,,	एक		—४४

सिचाई की प्रारम्भिक दर

खरीफ—५ रु० प्रति एकड़

रब्बी— ३ रु० ४ आने प्रति एकड़

ईख— ९ रु० प्रति एकड़

१९६८-६९ में

खरीफ—१६ रु० प्रति एकड़

रब्बी— १२ " "

ईख — २८ " "

१९७२-७३ में

खरीफ —२१ रु० प्रति एकड़

रब्बी —१६ " " "

ईख —३७ " " "

१० जुलाई १९७४ ई० को जब कॉरपोरेशन को समर्पित किया गया, तब ७२-७३ से पटवन की दर दूनी हो गयी, जिस की तालिका पहले दी जा चुकी है। इस तरह पटवन की दर में उत्तरोत्तर इतनी वृद्धि होती रही है। पटवन-दर की इतनी तेजी से बढ़ोतरी के कारण किसानों की हालत सोचनीय हो रही है। स्थिति खराब होती जा रही है। यदि इस तरह की समस्या रही तो किसानों से पटवन और मालगुजारी के पैसों का भुगतान मुश्किल हो जायगा।

नलकूप-संख्या

(निश्चित तिथि अनुपलब्ध है)

न०

१-)२० (पयनाल हिरामनपुर) स्थापना १९४७-४८ ई० में हुई

२-)३४ (पयनाल महमदपुर) " १९४८-४९ " " "

३-)२५ (पयनाल बेला) " १९४८-४९ " " "

४-)६० (पयनाल) " १९४९-५० " " "

५-)७६ (पयनाल) " १९५२-५३ " " "

६-)९८ T.C.A. पयनाल " १९५४-५५ " " "

७-)१०३ (पयनाल) " १९६५-६६ " " "

बाग-बगीचे के सम्बन्ध में

आम—आम भी एक प्रधान फसल समझा जाता है। फाल्गुन महीने से ही चटनी बनायी जाती है। मीठा मिलाकर खट-मीठी भी बनायी जाती है। कच्चे आमों को छील-सुखाकर रख दिया जाता है और वही खटाई कहलाती है, जो सालों चटनी बनाने के काम में आती है तथा खट्टेपन की आवश्यकता की पूर्ति करती है। इसके वृक्ष दो प्रकार के होते हैं—साटा और बीजू। यहाँ पर अधिकांश बीजू के ही वृक्ष थे। साटा का रिवाज नहीं था। पहले बगीचे भी यहाँ बहुत थे और खूब फलते भी थे। खूबी यह है कि हर-एक वृक्ष के फल का आकार और स्वाद भिन्न-भिन्न होता है। मनमाना भोजन होता था। पचने में भी किसी तरह की शिकायत नहीं थी। ऐसे तो लोग बगीचा में खाते ही थे, लेकिन घर पर भी खूब खाते थे। तरह-तरह के स्वाद होने से मन नहीं भरता था। पेड़ के पके हुए आम इतने गिरते रहते थे कि खाने से खत्म नहीं होते। राही-बटोही को लोग जबरदस्ती खिलाते तथा घर ले जाने के लिए दे देते थे। ग्राम के हरिजन इत्यादि वर्गों के लिए भी (जिनको पेड़-पौधे नहीं थे) पूरी छूट थी। बगीचे में जाने और गिरे हुए फलों को लेने के लिए कोई प्रतिबन्ध नहीं था। सभी वर्गों के लोग सानन्द खाते थे। आँधी-तूफान में तो इतने कच्चे आम गिरते थे कि सभी जातियों के लोग आम चुनकर खटाई बना लेते थे। जेठ, आषाढ़, श्रावण मास तक पके आम चलते थे। आम का पाल भी दिया जाता था। जो पेड़ लग जाते थे, याने जब उसमें के कुछ आम पकने लगते थे, तब उन पेड़ों पर के आमों को तोड़ कर घर ला कर पुआल पर बिलग बिलग करके रख देते थे। दो-चार रोज में वे सब पकने लगते थे। पाल वाला आम खाने में बहुत मीठा लगता है। गिरे हुए और पाल वाले आमों के स्वाद में अन्तर पड़ जाता है। आम का 'अमावट' भी बनता था। खूब पके हुए आमों के रस को निचोड़ कर किसी बर्त्तन में जमा कर दिया जाता था। और एक बड़े कपड़े पर उसको पसार दिया जाता था। जब वह रस सूख जाता था, तब फिर आम के रस को दुबारा उसी पर पसार देते थे। जब दूसरा तह भी सूख जाता था, तब तीसरा, चौथा, पाचवां तह भी दिया जाता था। सब मिलाकर एक मोटा तह बन जाता था। फिर उस को उस कपड़े से उखाड़ कर किसी तख्ते पर रख कर छूरी से छोटे-छोटे चौखूट या किसी अन्य आकार के टुकड़े बना लिये जाते थे। अधिक बनने पर कपड़े में रख कर भूसे में रख दिया जाता था। जब इच्छा हुई निकाल कर खाए या चटनी बना लिये। बहुत स्वादिष्ट मिठाई तैयार हो जाती थी। हिफाजत से रखने से उसमें कीड़े भी नहीं

होते थे और न स्वाद ही खराब होता था। अब तो प्रायः सभी पेड़ कटते जा रहे हैं। नाम के लिए आम के पेड़ हैं और पहले जैसा खूब फलते भी नहीं हैं। अब कुछ-कुछ साटा लगाने का रिवाज बढ़ रहा है।

महुआ—महुआ के दरख्त भी काफी थे। महुए की फुल्ली भी चैत-वैशाख मास में ही चूती है। पहले इसकी चुनाई मजदूरों को इक्कीस टोकरी (मउनी) में एक एक टोकरी यानी इक्कीसवाँ हिस्सा मिलता था। इस समय तो मालिक को आधा से भी बाधा लगता है। मजदूरों को चुनने के लिए दे दिया जाता है। चुन कर वह घर पहुँचा देता है। चाहे आधा पहुँचावे या कम ही, उसकी निगरानी भी कोई नहीं करता। आज महुए का मान घट गया है। आज के लोग महुए के पेड़ को बेकार समझते हैं। पहले के लोग महुआ को एक अमूल्य खाद्य समझते थे। कच्चे महुए को उबाल कर उसमें दूध मिलाकर खाते थे। सुखाये हुए महुए को भून कर उसमें चना मिलाकर मजदूरों को जलपान के लिए दिया जाता था और लोग अपने भी खाते थे। महुआ एक पौष्टिक पदार्थ है। जिनको दर्द (गठिया इत्यादि) होता था, वे महुए की फुल्ली को साफ करके दूध में खूब औंट कर खाते थे। इसमें गर्मी अधिक है। महुए में जितनी अधिक गर्मी है उसके तेल में उतनी अधिक ठंडक। उसका 'लट्ठा' भी बनाया जाता था। पहले के लोग जब धान की रोहनी करने जाते थे तब लट्ठा लिए जाते थे। जब झपसी (बदली) लगती थी, ठंडी हवा बहने लगती थी, खूब जाड़ा लगने लगता था, तब उसी लट्ठे को खाते थे। उसके खाने से उनका बदन गर्म हो जाता था। महुअर भी बनाया जाता था, जिस तरह टिकरी (ठेकुआ) बनाई जाती है। महुए में गुड़ का प्रयोग नहीं किया जाता है। गुड़ मिलाने से शराब के दर्जे में आ जाता है, जिसे लोग अपवित्र समझते हैं यह स्वयं इतना मीठा होता है कि गुड़ डालने की जरूरत ही नहीं रहती। पहले के लोग पहलवान (मजबूत) होते थे। खूब खाते थे और पचा भी जाते थे। अब तो मनुष्य दिन-पर-दिन अल्पायु होते जा रहे हैं। अब तो पचता ही नहीं। शायद ही कभी कोई शौक से लट्टा बनवाता है। अब महुए को लोग सुखा कर रख देते हैं और कदवाही या जाड़े में फुला कर सरसों की खल्ली में मिला कर बैलों को खिलाते हैं। महुए की फुल्ली खतम हो जाने के बाद उस में फल लगता है, जिसे कोईड़ कहते हैं। वह भी जब पकता है, तब उसका तेल होता है। तेल का स्वाद तो अच्छा नहीं होता है, परन्तु अभाव में लोग सब्जी में डालते है अभावे बालि चूर्णम्बा। इसके तेल में नींबू के पत्ते या और कुछ डाल कर 'डाह' (गर्मकर) देने से उसका तीखापन कम हो जाता है। इसका तेल दवा के प्रयोग में आता है। ठंडक में घी की तरह जम जाता है। देखने में घी और इसमें कोई अन्तर नहीं

दिखाई देता। अब तो इसके पेड़ भी नाम-मात्र के रह गये हैं। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत और वजनदार होती है। दरवाजे के चौकठ प्रायः इसी के बनाये जाते थे। पहले छत बनाने में सिलपट के काम में भी आती थी। आज भी पुरानी छतों में इसकी लकड़ी लगी हुई है।

जामुन—जामुन आम के पकने के समय यह भी पकता है। खूब फलता है। यह तो प्रायः हर साल फल जाया करता है। यह भी खैरात रहता है। किसी को भी खाने में रोक-टोक नहीं किया जाता। यह भी दो किस्म का होता है। एक तो वह जिसे किसान रोपते हैं, जो फल-जामुन कहलाता है। दूसरा जो प्रायः सड़कों के किनारे-किनारे लगाये रहते हैं। इसको 'कठ-जामुन' कहते हैं। यह बरसात में पकता है। 'फल-जामुन' का आकार ठीक 'गुल-जामुन' के ऐसा और कठजामुन का गोल-गोल और छोटा-छोटा होता है। यह खाने में 'फल-जामुन' की तरह न मीठा है न स्वादिष्ट ही।

कटहल—कटहल पहले हमारे गाँव में कटहल के बहुत से पेड़ थे। अब तो सिर्फ एक-दो रह गये हैं।

नीम—नीम का पेड़ यहाँ बहुत है। अब तो अधिक लोग अपने घर के आगे लगाने लगे हैं। इससे आई हुई वायु स्वास्थ्यकर होती है। गर्मी के दिनों में नीम के पेड़ के नीचे बैठे रहने से गर्मी नहीं लगती। छाया भी खूब घनी होती है। चैत महीने में इसका 'सिरका' बना कर कोई-कोई पीते हैं। इससे चर्म रोग नहीं होता। देवी जी के मन्दिर के पास इसका वृक्ष अवश्य रहता है जब किसी के घर 'गोटी' निकलती है या छपवाया जाता है तो उस के पास इसकी छोटी डाली रख दी जाती है।

एक कहावत है—कोई वैद्य ने अपने वैद्यक पढ़े हुए लड़के की परीक्षा के लिए ऐसा किया था। उनका लड़का परदेश में था। वैद्यजी ने किसी व्यक्ति को किसी कार्य के बहाने वहाँ भेजा और कहा कि देखो, रास्ते का खर्च तुम को देता हूँ। लेकिन एक बात की हिदायत कर देता हूँ कि जब कहीं तुम ठहरो तो इमली के पेड़ तले ठहरना। उसी की छड़की से दतवन या जलावन करना। वह आदमी वहाँ से बिदा हुआ और उनकी आज्ञा का पालन करते हुए उनके लड़के के पास पहुँचा। परन्तु वहाँ पहुँचते-पहुँचते उसका शरीर रोग-ग्रस्त हो गया। उसका खून एकदम खराब हो गया, अर्थात् उसको कुष्ठ-व्याधि हो गई। वहाँ पहुँचने पर उसने वैद्य जी को पत्र दिया और खाने-पीने आराम करने के पश्चात् बातचीत के

सिलसिले में अपने स्वास्थ्य की बात वैद्यजी के पुत्र को बतायी—"मैं जब घर से निकला था तब खूब स्वस्थ था; लेकिन यहाँ आते-आते हमारी ऐसी दशा हो गई। वैद्य जी के लड़के ने रास्ते भर में रहने खाने-पीने इत्यादि का ब्योरा पूछा। उसने ठीक-ठीक बता दिया। वैद्य के लड़के ने कहा तुम घर लौट जाओ। खाने की सामग्री ले लो; परन्तु ध्यान इस बात का रखना कि जिस तरह तुम इमली के पेड़ के नीचे खान-पान करते आये थे उसी प्रकार इधर से लौटते समय नीम के पेड़ के नीचे ठहरना। दतवन, जलावन इत्यादि उसीका करना। कथनानुसार वह व्यक्ति उसी तरह करते-करत घर पहुँचा। घर पहुँचते-पहुँचते उसका स्वास्थ्य पहले जैसा ही हो गया।

वैद्यजी के पास लौट कर उसने जाने का सब वृत्तान्त कह सुनाया। वैद्य जीने तो परीक्षा के लिए ही ऐसा किया था। अब समझ गये कि मेरा लड़का वैद्यक-शास्त्र का विद्वान हो गया है।

इससे भी मालूम होता है कि नीम का वृक्ष बहुत आरोग्य दायक है।

यहाँ पर और-और भी वृक्ष हैं। जैसे बड़हल, सेमल, गूलर, बेल, कुसुम, अमड़ा, शीशम, सिरिस, तार, खजूर, जीअल नीबू अमरूद इत्यादि। हरिजन के टोले में एक जिलेबी का पेड़ है। उसका फल जिलेबी की तरह होता है। अशोक, जुरपित्ती, पीपल, बट-वृक्ष भी हैं। केला रोपने का रिवाज भी बढ़ रहा है। कहीं-कहीं नारियल के पेड़ भी हैं। यहाँ बँसवारी भी बहुत हैं।

ओ' १९ (क) मनुष्य का जन्म और संस्कार

निस्सरन्ति यथा लोहपिण्डात्तप्तात्स्फुलिङ्गकाः।
सकाशादात्मनस्तद्वदात्मानः प्रभवन्तिहि ॥[1]

जैसे आग में तपाते हुए लोहे के गोले से छोटी-छोटी चिनगारियाँ उड़ती है, वैसे ही परम्परा से जीवात्माएँ उत्पन्न होती हैं।

आहुत्याप्यायते सूर्यः सूर्याद्वृष्टिस्तथौषधिः।
तदन्नं रस रूपेण शुक्रत्वमधिगच्छति ॥
स्त्रीपुंसयोस्तु संयोगे विशुद्धे शुक्रशोणिते।
पञ्चधातून्स्वयं षष्ठ आदत्ते युगपत्प्रभुः ॥

---

१. याज्ञवल्क स्मृति—३रा अध्याय श्लोक—६७

इन्द्रियाणि मनः प्राणो ज्ञानमायुः सुखं धृतिः।
धारणा प्रेरणं दुःखमिच्छाहङ्कार एव च॥
प्रयत्न आकृतिर्वर्णः स्वरद्वेषौ भवाभवौ।
तस्यैतदात्मजं सर्वं मनादेरादिमिच्छतः॥[२]

आहुति देने से सूर्य पुष्ट होते हैं, सूर्य से वर्षा होती है, वर्षा से अन्न उत्पन्न होता है और अन्न के रस से वीर्य बनता है। जब स्त्री और पुरुष के संयोग से पुरुष का वीर्य और स्त्री का रज शुद्ध होता है, तब आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी के साथ आत्मारूप ग्रहण करती है। इन्द्रिय, मन, प्राण, आयु, अवस्था, सुख, धैर्य, स्मरणशक्ति, प्रेरणा, दुःख, इच्छा, अहंकार, प्रयत्न, आकार, रंग, स्वर, द्वेष, उत्पत्ति और नाश ये सब उस जीवात्मा के आधार होते हैं।

प्रथमे मासि संक्केदभूतो धातुविमूर्च्छितः।
मास्यर्बुदं द्वितीये तु तृतीयेऽङ्गेन्द्रियैर्युतः॥
स्थैर्यं चतुर्थे त्वङ्गानां पञ्चमे शोणितोद्भवः।
षष्ठे बलस्य वर्णस्य नखरोम्णां च संभवः॥
मनस्चैतन्ययुक्तोऽसौ नाडीस्नायुशिरायुतः
सप्तमे चाष्टमे चैव त्वङ्मांसस्मृतिमानपि॥
पुनर्धात्रीं पुनर्गर्भमोजस्तस्य प्रधावति।
अष्टमे मास्यतो गर्भो जातः प्राणैर्वियुज्यते॥
नवमे दशमे वापि प्रबलैः सूतिमारुतैः।
निःसार्यते बाण इव यन्त्रच्छिद्रेण सज्वरः॥[३]

उसका रूप आकाश आदि पञ्चमहाभूतों के साथ मिला हुआ पहले महीने में गीला रहता है, दूसरे महीने में कड़ा होता है, तीसरे महीने में अंग और इन्द्रियों से युक्त होता है। चौथे मास में प्रकट हुए अंग कुछ श्रेष्ठ होते हैं, पांचवें महीने में रुधिर की उत्पत्ति होती है। छठे मास में बल, रंग, नख और रोएं उत्पन्न होते हैं। सातवें मास में वह गर्भ मन, चैतन्यता, सब शरीर में प्राण वायु को ले जाने वाली नाड़ी, हड्डियों को बान्धने वाली स्नायु और वात, पित्त और श्लेष्मा को शरीर में डालने वाली शिरा से युक्त होता है। आठवें महीने में चाम

---

२. " " " " ७१,७२,७३,७४

३. याज्ञवल्क्य स्मृति—३रा अध्याय श्लोक—७५,८०,८१,८२,८३

ज्ञान और स्मरण शक्ति को प्राप्त करता है। आठवें मास में गर्भ का ओज
संस्कार भीतर दौड़ता है, इसलिए आठवें मास का जन्मा हुआ बालक मर जाता
है। नवें अथवा दशवें मास में प्रबल मारुत से प्रेरित होकर बाण के समान वेग
से बालक प्रकट होता है। देह की शिरा और धमनी, दोनों नाड़ियों के मिलने से
उसकी शाखाएँ ९५६ हो जाती हैं। १०७ मर्मस्थल और २०० हड्डियों के जोड़
होते हैं। पसीना निकलने के स्थानों समेत सब शरीर में ५४ करोड़ ६७ लाख
१० हजार रोम होते हैं।

गर्भाधान पुंसवनं सीमन्तो जातकर्म च।
नाम क्रियानिष्क्रमणेऽन्नाशनं पवन क्रिया॥
कर्णवेधौ व्रतादेशो वेदारम्भ क्रियाविधिः।
केशान्तः स्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः॥[४]

(१) गर्भाधान (२) पुंसवत (३) सीमन्त (४) जात कर्म (५) नामकरण
(६) निस्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) मुण्डन (९) कर्ण वेध (१०) जनेऊ
(११) वेदारम्भ (१२) केशान्त (१३) ब्रह्मचर्य समाप्ति का स्नान (१४) विवाह
(१५) विवाह की अग्नि का ग्रहण और (१६) दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य और आहवनीय,
इन तीन अग्नियों का ग्रहण करना—यही षोड़स संस्कार हैं।

गर्भ के प्रकाश होने पर भर्भाधान संस्कार होता है। गर्भाधान से तीसरे
मास पुंसवन। आठवें मास सीमन्त। सन्तान उत्पन्न होने पर जाति कर्म।
(मनु) स्मृति में लिखा है कि बालक का नाल काट कर निजगृह्य मंत्रों से उस को
सोना, मधु और घी चटाया जाता है, उसीको जातकर्म कहते हैं)। जन्म के ११वें
दिन में नामकरण अर्थात् योनि जन्म के आशौच बीत जाने पर नामकरण संस्कार
होना चाहिए। १० दिनों तक जन्म का आशौच रहता है, यथा—

अजा गावो महिष्यश्च, ब्राह्मणीच प्रसूतिका।
दश शत्रे न शुध्यन्ति भूमिश्थं चनवोदकम्॥

चौथे मास में निष्क्रमण, छठे मास में अन्न प्राशन। कुल की रीति के
अनुसार मुण्डन (या पहले वर्ष या तीसरे वर्ष में)। मुण्डन के बाद कर्ण वेध
(गर्भारम्भ से ८ वे वर्ष ब्राह्मण का, ११ वें वर्ष क्षत्रिय का और १२ वें वर्ष वैश्य
का यज्ञोपवित होना चाहिएं। १६ वर्ष तक ब्राह्मण का, २२ वर्ष तक क्षत्रिय का
और २४ वर्ष तक वैश्य का जनेऊ हो सकता है।

४. व्यास स्मृति—१ अध्याय—श्लोक १३,१४

यज्ञोपवीत दो शब्दों से बना है—यज्ञ + उपवीत। उपवीत उस सूत को कहते हैं जो बायें कन्धे पर से पीठ की रीढ़ या नाभि से होकर दाहिनी बगल में लटका रहे। इसका मतलब यह है कि आज से ही मनुष्य यज्ञ करने का अधिकारी हुआ। इससे पहले नहीं था। जब लड़का या लड़की का जन्म होता है तो पुरोहित को सूचना दी जाती है और वे पंचांग लेकर आते हैं तथा जन्म की वेला घड़ी के मुताबिक देखते हैं कि लड़का शुभ मुहूर्त में पैदा हुआ है या अभुक्त मूल में। यदि गण्डमूल (सतइसा) में पड़ा तो २७ दिनों तक पिता उसका मुख नहीं देख सकता है। सतइसा के छः नक्षत्र हैं—अश्विनी, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती। जब वही नक्षत्र आयगा, जिस नक्षत्र में जन्म हुआ था, तब उस नक्षत्र की शान्ति कराकर पिता बच्चे का मुख देखेगा। पहले एक बर्तन में तेल रख कर उसमें लड़के का प्रतिबिम्ब देखकर तब सन्मुख मुख देखेगा।

अभुक्तमूल—"ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम पाँच घंटी, किसी के मत से चार घटी, किसी के मत से एक घटी या आधी घटी। इस तरह ज्येष्ठा नक्षत्र के बाद मूल नक्षत्र आता है, तो मूल नक्षत्र के आदि की आठ घटी, किसी के मत से चार घटी, दो घटी या आध घटी अभुक्तमूल कहलाती है। अभुक्त मूल में पैदा होने वाले बच्चे का मुँह पिता आठ वर्ष न देखे।"५

हरएक बच्चे या बच्ची के दो नाम होते हैं। एक तो शास्त्रानुसार नाम रखा जाता है जो 'राशि का नाम कहलाता है और एक मनसा इच्छानुसार लोग नाम रखते हैं वह 'पुकार का नाम' कहलाता है। राशि का नाम तो पुरोहित उसी वक्त रख देते हैं।

राशि का नाम रखने का नियम यह है—ऊपर लिख चुका हूँ कि २७ नक्षत्र होते हैं। एक नक्षत्र में चार चरण होते हैं। मान लिया कि अश्विनि नक्षत्र ६० घटी का हुआ तो ६० में चार का भाग देने से हरेक चरण पन्द्रह-पन्द्रह घटी का हुआ। यदि प्रथम चरण में बच्चा या बच्ची पैदा हुई तो 'चू' अक्षर पर उस का नाम रखा जायगा। नाम का प्रथम अक्षर 'चू' होगा। जैसे चूल्हन या चुहिया इत्यादि। दूसरे चरण में जन्म लेने पर 'चे' या 'चै' अक्षर पर नाम रहेगा। जैसे—चेतनारायण, चैतू आदि। तीसरे चरण में होने पर 'चो अक्षर पर और चौथे चरण में होने पर 'ला' अक्षर पर नाम रहेगा। इसी तरह सभी नक्षत्रों की बातें हैं। सभी नक्षत्रों के हरेक चरण का अक्षर लिखता हूँ—

५. लक्ष्मी पाकटे मंत्री डॉ० राबेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय-पृष्ठ—५०

चू चे चोला-अश्विनि । ली लू ले लो-भरनी । अ इ ऊ ए-कृतिका । ओ वा वी बू-रोहिनी । वे वो का की-मृगशिरा । कु घ ङ छ-आर्द्रा । के को ह हि-पुनर्वसु । हू हे हो डा-पुष्य । डी डू डे डो श्लेषा । मा मी मू मे-मघा । मो टा टी टू-पूर्वाफाल्गुनी । टे टो पा पी-उत्तरा फाल्गुनी । पू ष ण ठ-हस्त । पे पो रा री-चित्रा । रू रे रो ता-स्वाती । ती तू ते तो-विशाखा । ना नी नू ने-अनुराधा । नो या यी यू-जेष्ठा । ये यो भा भी-मूल । भू ध फ ढ-पूर्वाषाढ़ । भे भो जा जी-उत्तराषाढ़ । खी खू खे खो-श्रवणा । गा गी गू गे-धनिष्ठा । गो सा सी सू-शतभिषा । से सो द दी-पूर्वा भाद्रपद । दू थ झ ञ-उत्तरभाद्रपद दे दो चा ची-रेवती ।

बच्चे के जन्म की वेला घड़ी के मुताबिक ही जन्म कुंडली बनायी जाती है, जिससे बच्चे के भविष्य-फल निकाले जाते हैं। प्रसूती १० दिनों तक अशौच रहती है, लेकिन इधर 'बिसउरी' पूरने अर्थात् २० दिनों के बाद पाक होने का रिवाज बन पड़ा है। पहला स्नान तो तुरत ही करा दिया जाता है, क्योंकि प्रसव के बाद उसके शरीर के कपड़े गन्दे बने रहते हैं, स्वास्थ्य खराब होने का डर रहता है। प्रसूती को १० दिनों तक प्रसूतिका-गृह में ही रहने का नियम आ रहा है। यह तो बहुत हानि प्रद नियम है। एक तो प्रसव होने से प्रसूती कमजोर हो जाती है, प्रसूती-गृह का दरवाजा बन्द रहता है। शुद्ध हवा मिलती ही नहीं। दरवाजा इसलिए बन्द रहता है कि 'जम्हुआ' कहीं प्रसूती-गृह में न घुस जाय। 'जम्हुआ' का प्रवेश रोकने के लिए प्रसूती के द्वार पर सीज का कांटा रख दिया जाता है ताकि इस के डर से वह घुस न सके।

'जम्हुआ' का भ्रम भी एक बहुत अनिष्ट-कारक भ्रम है। नवजात शिशु को गर्मी हो या कोई मौसम, उसको न शुद्ध हवा मिलती है और न सूर्य का प्रकाश। प्रसूती का वस्त्र भी गन्दा और शरीर भी गन्दा रहता है। इन सब कारणों से प्रसूती का स्वास्थ्य खराब हो जाता है और बच्चों की हालत के सम्बन्ध में क्या कहा जाय, वह तो नवजात ही है। इसतरह बहुत से बच्चे अकाल में ही काल के गाल में चले जाते हैं। अब धीरे-धीरे 'जम्हुआ' का भ्रम मिटता जा रहा है। हमारे ही घर में एक हमारी पोती (राम स्वरूप की लड़की) सरिता को जन्म लिये ३-४ रोज हुए कि उसको 'जम्हुआ' ने पकड़ लिया। ओझा गुनी हार गये। उसका शरीर शिथिल हो गया। बत्तक चिड़ियाँ को लाकर ढोंढ़ी पर बैठने से 'जम्हुआ' भाग जाता है। यह 'टोटरम' भी किया गया, तौभी 'जम्हुआ' न भागा। सरिता का सिर्फ होठ फड़क रहा था। ओठ बारम्बार बन्द करती थी और खोलती थी। घर वाले या अन्य लोग बोले कि अब क्या बचेगी। उसको 'जम्हुआ' पकड़ लिया।

परन्तु 'जब तक सांस तब तक आस' वाली बात थी। रामस्वरुप स्वतः सदौशाहुर जाकर डा० विमल कुमार मिला, मेडिकल आफिसर को राजकीय चिकित्सालय से बुला लाये। डाक्टर साहब ने उन सबों को तुरत खुली हवा में साफ सुथरा होकर रहने का आदेश दिया और शीघ्र ही उस का उपचार किया। इन्जेक्सन भी दिया। थोड़ी ही देर में बच्ची हिलने-डोलने लगी और बहुत शीघ्र स्वस्थ हो गई। डाक्टर साहब को देखते ही पता नहीं कि 'जम्हुआ' कहाँ भागा। इससे सिद्ध होता है कि 'जम्हुए' के फेरे में कितने बच्चों की जान चली जाती होगी। सरिता आज १३ साल की है।

मुण्डन के लिए स्त्रियाँ मन्नत (मनौती) मानती हैं। कि बच्चे का बाल (जटा) अमुक देवता पर चढ़ेगा। इस तरह कोई अच्छा मुहूर्त्त देख कर किसी देवता के स्थान पर (या गंगा जी के संगम पर) मुण्डन किया जाता है। जनेऊ भी आज कल प्रायः विवाह के ही समय दिया जाता है। विवाह के एक या दो दिन पहले या जिस दिन बारात प्रस्थान करने के लिये होती है। इसमें यज्ञोपवीत का विशेष लग्न मुहूर्त्त देखने की जरुरत नहीं। परन्तु यह परिपाटी अच्छी नहीं है। जनेऊ एक प्रधान संस्कार है। विशेष कर चान्द्रमास (मीन) चैत्र में ही देने का विशेष माहात्म्य है। यज्ञोपवीत की विधि जनेऊ पड़ने के पांच दिन या आठ दिन पहले से प्रारम्भ होती है, जो 'पंच मंगरा' या 'अठ मंगरा' के नाम से जाना जाता है। जैसे मान लिया कि गुरुवार को जनेऊ देना है तो पांच दिन पहले यानी रविवार को ही मटकोरवा (मृतिका हरण) होगा। चन्द्रवार को कुछ नहीं; भौमवार को हलदी कलश, मडप छाजन। बुधवार को देवार्चन (वन्दी परमेश्वरी की) विधि। यदि बीच में कोई दिन मान हो (यानी उसदिन अच्छा कर्म नहीं किया जाता है। तो कुछ घटा बढ़ा भी दिया जाता है। इसी तरह अठमंगरा में भी हिसाब बैठा लिया जाता है। मटकोरवा के दिन साधारण तौर से ९-१० बजे रात्रि में गणेश, गौरी आदि की पूजा करके मिट्टी लाने के लिए किसी खास जगह पर जहाँ पहले से रिवाज चला आता है, स्त्रियाँ सब गीत गाती हुई जाती हैं। साथ में नाइन (हजामिन) दउरा में कुदाल, जलपात्र, नया पीला वस्त्र (मिट्टी लाने के लिए) लेकर जाती है। उसी मिट्टी का चूल्हा या और कुछ बनता है। नाइन को खुशी का न्यो-छावर मिल जाता है। स्त्रियाँ घर से निकलते समय यह लोकगीत गाती हैं —

साँकरि गलिया तोहरो अनजानू शाही, अहे हाथी
घोड़ा पयरो न लेहु, कइसे कै घर पइसव हे।

दुअरो मढ़ैबो दुअरमनियाँ, अहे खिड़की मँढ़ैबो
कोतवाल, कइसे के घर पइसब हे (साँकरिन)

मिट्टी खोदने का गीत (१)

कउना शाही कुम्हरा बसावले, मांटी कोरावले, एमांटी
न उठई झटा-झट सोहाग के माटी कउना शाही अन्य

अन्यगीत (२)

कउना बने रहले ए कोइलर, कउना बने जाय,
कउना शाही दुअरिया रे कोइलर उछहल जाय
वृन्दा बन रहल ए कोइलर, कुँज बने जाय।
अनजानू-शाही दुअरिया रे कोइलर, उछहल जाय॥
खाय केरा देबऊ रे कोइलर, अमियाँ के बतिया।
पिये केरा देबऊ रे कोइलर, गंगा जल पनियाँ। कउना०

मिट्टी लाकर स्त्रियाँ सब लड़के या लड़की को चौका पर बैठा कर धान से बुमावन करती है।

हल्दी कलशा:

स्तम्भा रोपन, मंडप छादन आदि।

हमारे यहाँ लड़का के जनेऊ या विवाह में मंडपा-छादन नहीं होता है; सिर्फ लड़की के विवाह में ही होता है। लड़के के व्यवहार में हरिश, बांस की छकुनी इत्यादि और लड़की के व्यवहार में हरिश के साथ चौकी भी, जो खेत में मिट्टी बराबर करने के लिए बनाई जाती है, जिसे हेंगा भी कहते हैं। एक साथ खड़ी की जाती हैं। उसी दिन प्रधान कलश स्थापना होता है। उस दिन टोले-महल्ले के पुरुष और स्त्रियाँ आती हैं। गौरी गणेशादि पूजन के बाद हल्दी चढ़ाने का व्यवहार होता है, नाई एक ढकनें में हल्दी सरसों का तेल मिला हुआ और दुबे घास का गुच्छा बना कर लिए रहता है। न्योछावर मिल जाने पर लड़का या कन्या के पिता को वह हल्दी देता हैं। पंडित जी हल्दी संकल्प कराते हैं और उनको भी उसका न्योछावर होता है। लड़का या लड़की को पीढ़े पर चुक्का-मुक्का (बैठने का एक तरीका है) बैठा दिया जाता है। उसके आगे एक लोटा जल भरा हुआ रहता है, जिसमें ऐपन सेन्दुर लगाया रहता है। सर्व प्रथम पुरोहित हल्दी चढ़ाते हैं। ढकने में तेल मिला हल्दी रहती है, उसमें से वही दूब वाला गुच्छा से हल्दी लेकर पहले गौरी गणेश को चढ़ा कर तब लड़का या लड़की के पाँव, घुटने, बाँह, कन्धे और सिर पर लगाते हैं। स्त्रियाँ सब मंगल गीत गाती हैं।

उसी दिन एक नकली जनेऊ भी लड़के को पहिनाया जाता है। कच्चे सूत

को रंग कर बिना अभिमंत्रित किए हुए ही पाँच आदमी मिलकर लड़के को पहना देते हैं, जिसे गोबर जनेऊ कहते हैं। बाद में सब लोग आशीर्वाद का अक्षत ग्रहण कर अपने-अपने घर जाते हैं। गोबर जनेऊ का रिवाज इस लिए चालू कर दिया गया है कि ४-५ रोज पहले से ही जनेऊ की विधि निभाने (कान पर चढ़ाने) आदि की आदत पड़ जाय ताकि असली जनेऊ पड़ जाने पर भूल न होने पाय।

(ख) दहेज या फलदान तथा विवाह आदि से संबंधित संक्षिप्त बातें—

विवाह में गणना की आवश्यकता होती है, जिसे मेलायक भी कहते हैं। इसके देखने से यही निश्चित होता है कि वर-कन्या दोनों के स्वभाव का मेल होगा या नहीं? इसमें आठ बातों का विचार किया जाता है।

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रिकम्।
गण मैत्री भकूटं च नाडीचैते गुणाधिकाः॥

वर्ण, वैश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट और नाड़ी। ये आठों ठीक हो तो गणना सर्वोत्तम मानी जाती है। इन आठों में क्रमशः एक-एक गुण बढ़ते हैं। जैसे वर्ण में १, वश्य में २, तारा में ३। इसी तरह बढ़ते-बढ़ते नाड़ी में आठ गुण तक आ जाते हैं। सबों का जोड़ ३६ होता है। यह ३६ 'गुण' कहलाता है। लड़का-लड़की दोनों के गुणों का योग यदि ३६ के आधा १८ से जितना ही अधिक आता जायगा, उतनी ही गणना—अच्छी समझी जायगी। लड़का लड़की के राशि के आदि अक्षर से हिसाब बैठाया जाता है। यदि राशि का नाम न हो तो लाचारी वश दोनों के पुकार का नाम से भी काम चलाये जाते हैं। परन्तु गणना जब होगी, तब या तो दोनों के नाम राशि-राशि या पुकार-पुकार का हो न कि एक का राशि का हो और एक का पुकार का। विवाह में यह भी विचार किया जाता है कि लड़का या लड़की का अपना या ममहर का गोत्र न मिले। आज कल तिलक की व्यवस्था बिगड़ जाने से गणना शायद ही कोई-कोई देखते हैं। अब तो 'गणना' से विशेष महत्व 'मनना' का ही हो गया है। गोत्र का विचार भी सिर्फ अपना गोत्र तक रह गया है। मालूम होता है, कुछ दिनों में यह भी खत्म हो जायगा। अब तो जानवरों की तरह 'वर' का भी मोल बिक्रय होता है। लड़की सुन्दर हो या कुरूप, पढ़ी-लिखी हो या किसी तरह की हो, इसका तो कोई सवाल ही नहीं, पैसे जहाँ तक अधिक मिलें। यदि लड़का विज्ञान का छात्र हो, इंजिनियरिंग में प्रवेश किया हो, तो उस के तिलक का कोई शुमार ही नहीं।

लड़की वाले से कस कर पैसे लिये जाते हैं। अब देखिये कि पैसे किस मद में खर्च होते हैं—

लड़की वाले तो कर्ज लेकर या खेत-बारी बेच कर पैसे चुकाते हैं और लड़के वाले नाच, शामियाना, अधिक दामवाला बाजा, पोशाक, गहना इत्यादि में सब पैसे खर्च कर देते हैं। तुर्रा यह कि यदि लड़के वाले तिलक के सब पैसे न खर्च करें तो लड़की वाले भी तो ठोकर मारते हैं, कि मैंने इतने पैसे घर में रखने के लिए आपको दिया था ? आपने तो हमारी इज्जत का सत्यानाश कर दिया। इतने पैसे दिये और ठाट से बरात नहीं लाये। हो सकी तो मुठभेड़ भी हो जाती है। यह कितनी भारी मूर्खता है। दोनों मूर्ख। लड़का वाले भी और लड़की वाले भी। अब विचार करना चाहिए कि इस तिलक से फायदा क्या ? एक तो वर-विक्रय करना ही निषिद्ध है दूसरे विक्रय वाला पैसा भी नाजायज रूप में खर्च कर दिया जाता है। यदि कन्या—विक्रय शास्त्र से निषिद्ध है तो वर विक्रय कहाँ शास्त्र-सम्मत है ? यह भी तो अधर्म ही है। तिलक से कुछ फायदा तो है नहीं, सिर्फ नाम, कि फलाँ को इतना तिलक मिला। दोनों तो घाटे ही में हैं। लड़का वाला कसकर तिलक लेता है और लुटा देता है। सोचना चाहिए कि लड़के वाले के घर भी तो लड़कियाँ पैदा होती हैं और उसको भी उसी तरह हैरानी-परेशानी उठानी पड़ती है। दोनों की स्थिति बराबर हो गई, फायदा क्या ? दोनों बर्बाद। मगर ये बातें क्या सूझती हैं ?

विवाह तो दो पैसे में होते हैं। सन और सेन्दुर। बस, यही दो प्रधान वस्तुएँ हैं। हजारों रुपये के सामान जायें और यदि सन-सेन्दुर न जाय तो विवाह रूक जायगा। इसके बिना विवाह नहीं हो सकता। यदि कोई सामान न जाय, सिर्फ सेन्दुर और सन चला जाय तो विवाह सम्पन्न हो जायगा। इसके बिना लाखों का सामान बेकार है। इस तरह दो पैसे का महत्व लाखों रूपये के महत्व से कितना ऊँचा है।

इन सब कुरीतियों को देखकर भारत सरकार ने घोषित कर दिया है कि जो लोग तिलक की प्रथा जारी रखेंगे या इसका जिक्र भी करेंगे या बारात में अधिक आदमी ले जायेंगे वे कठिन दंड के भागी होंगे।

तिलक का मानी ही है फलदान। शुभ मुहूर्त में नारियल इत्यादि मांगलिक पदार्थ, वर के लिए नवीन वस्तु, पूजा की सामग्री, बस। रुपय-पैसे के सवाल से पवित्र वैवाहिक सम्बन्ध की मर्यादा नहीं बढ़ती

पहले गाँव में दालान कम थे और तिलक दालान पर ही पड़ने का रिवाज था। इसलिये खास-खास जगहों पर ही तिलक पड़ते थे। अब तो सबों के घर-घर दालान हो गये हैं, लेकिन अभी भी वही परम्परा चल रही है। वही लकीर के फकीर वाली बात—'हमारे बाप दादे का पहले से ही वहीं पड़ते आ रहा है, अब हम नया रिवाज क्यों जारी करें? एक न एक दिन तो इस रिवाज को तोड़ना ही पड़ेगा। मानलिया कि पुराना दालान भीठ हो जाय, या उसमें जनानी किता बन जाय तब तिलक कहाँ पड़ेगा? पुरनकी दालान जो गाँव के पच्छिम तरफ था, भीठ हो गया; लेकिन अभी भी उसी जगह तिलक पड़ता है। यह कब तक चलेगा? पहले तो दालान सबों को था नहीं, इसीलिए ऐसा होता था। अब तो यह प्रथा तोड़ देना ठीक है। गाँव में कुछ लोग तोड़ भी चुके हैं। अब आँगन में ही तिलक पड़े तो अच्छी बात है, क्योंकि तिलक पड़ना घर या टोले मुहल्ले की औरतें भी देखना चाहती हैं और मंगल गीत गाने का अवसर भी मिल जाता है।

हमारे यहाँ से जो पुरोहित जाते हैं वही तिलक चढ़ाते हैं, लेकिन अन्य जगहों में या हमारे यहाँ भी तिलक आता है तो प्रायः लड़की का भाई ही आकर चढ़ाता है। चाहिए भी ऐसा ही। अब कुछ-कुछ लोग भाई को भेजने लगे हैं। अभी कुछ ही दिन हुए हैं बड़े घराने के लोगों की लड़कियों की शादियों के लिए पुरोहित और हजाम ही 'वर' खोजने जाते थे। सारा व्यवहार पुरोहित के ऊपर निर्भर रहता था। तिलक चढ़ाने भी पुरोहित और हजाम ही, नौकर-चाकरों के साथ जाते थे। बाबू लोग अपने से जाना इज्जत के खिलाफ समझते थे। अब तो लोग स्वयं भी पुरोहित के साथ जाते हैं। प्रायः पूरे गाँव में का यही रिवाज चल रहा है।

हमारे यहाँ का एक और रिवाज है जो पहले से ही आ रहा है। यह ज्यों का त्यों है। इसमें परिवर्त्तन नहीं हुआ है—वर के पोशाक धोती, और चादर (अंगोछी) बस। तिलक पड़ जाने के बाद लड़का के घर से ही हल्दी, धान इत्यादि माँगालिक वस्तुएँ लायी जाती हैं और कन्या के घर से भी आती है। दोनों तरफ के धान को एक जगह मिला कर बराबर-बराबर दो हिस्सा कर दिया जाता है। एक हिस्सा लड़की वाले को दे दिया जाता है और एक हिस्सा लड़के वाले को। दोनों तरफ के हल्दी-धान मिलाने का मतलब यह है कि हम लोगों का आज से सम्बन्ध हो गया। दोनों परिवार एक दूसरे से इस प्रकार मिल गये कि अलग होना संभव नहीं रह गया।

दोनों तरफ के पुरोहित लगन-पत्री लिखते हैं, जिसमें विवाह की तिथि, लग्न, समय इत्यादि लिखे रहते हैं. जिसमें आगे के कार्य में फिर सचोने की जरूरत न रहे। कन्या-पक्ष के पुरोहित जो लिखते हैं वह वर पक्ष के पास और वर पक्ष के पुरोहित जो लिखते हैं वह कन्या-पक्ष वाले के पास रहता है, जिसमें दोनों पक्ष वाले इस बात से अवगत हो जायें। हाँ, तिलक पड़ जाने पर लड़के के हाथ में जो कटोरा रखा जाता है, नारियल इत्यादि मांगलिक पदार्थों से भर कर, उस कटोरे को लड़का अपने साथ लिये बन्दी-परमेश्वरी के पास रख देता है। बस, मूल तिलक यही (कटोरा वाला सामान) हुआ। इसका नाम 'फलदान' है न कि रुपये की थैली गिनना।

पतकट्टी – विवाह के दिन सबेरे सूर्योदय के बाद पतकट्टी की प्रथा है। शिव चरण मिश्र कृत जो शिवालय है, जिसको मैं पूर्व लिख चुका हूँ, शिवालय के दक्षिण सड़क और सड़क से लगे दक्षिण उनका बनाया हुआ कुआँ है और उसी कुएँ से पश्चिम, सड़क के दक्षिण ही एक विशाल बट-वृक्ष है, वहीं पतकट्टी होते जाती है। आज जहाँ हाई स्कूल है, उससे पश्चिम और गोरैया स्थान से दक्षिण एक बहुत बड़ा बड़ का पेड़ था। पहले वहीं पतकट्टी होती थी। उसके धराशायी हो जाने पर अब यहीं होती है।

जब पहला वृक्ष गिर गया तब विचार हुआ कि अब नया स्थान किसके द्वारा शुरू किया जाय? तय हुआ कि पहले पुरोहित जी से ही नये स्थान पर श्री गणेश किया जाय। ऐसा ही हुआ। प्रथम-प्रथम पं० ब्रह्मदेव मिश्र की लड़की कुमारी महासुन्दर के विवाह से शुरू हुआ। उसके बाद हनुमान सिंह की पुत्री सीता कुमारी से आगे बढ़ा। टोले-मुहल्ले की स्त्रियाँ इकट्ठी होती हैं और गीत गाते हुए बाजे-गाजे के साथ घर से निकलती हैं। लग्नवती कन्या को मजबूत स्त्रियाँ फेरा-फारी गोद में लेते हुए पतकट्टी के स्थान पर ले जाती थीं, क्योंकि उस समय बचपन में ही विवाह की प्रथा चली थी। १० वर्ष से अधिक उम्र हो जाने पर लड़की का विवाह करना पाप समझा जाता था। जैसा कि—

अष्ट वर्षा भवेद् गौरी नव वर्षा च रोहिणी ।
दश वर्षा भवेत्कन्या अत उर्ध्वं रजस्वला ॥
माता चैव पिता चैव ज्येष्ठो भ्राता तथैव च ।
त्रयस्ते नरकं यांति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ॥

तस्माद्विवाहयेत्कन्या यावन्नतु मती भवेत् ।
विवाहोह्यष्ट वर्षीयाः कन्या यास्तु प्रशस्यते ॥

लेकिन अब तो ये सब बातें है ही नहीं। अब तो लड़की जब पूर्ण युवा-वस्था में पदार्पण करती है, तभी उसका विवाह होता है। अर्थात् १५-१६ वर्ष से कम में तो शायद ही किसी लड़की का विवाह किया जाता है। जवान होने पर लड़की का वजन अधिक हो जाता है। पतकट्टी-स्थान लगभग आधा मील से कम नहीं है। उतनी दूरी तक गोद में लेकर जाना मुश्किल हो जाता है, इसलिये अब लड़की पालकी (डोली) पर जाती है। साथ-साथ लड़की का भाई कन्धे पर एक तलवार रखकर वीर-वेष में जाता है। वहाँ पहुँकर वट-वृक्ष की पूजा की जाती है और कन्या पांच सौभाग्यवती स्त्रियों के साथ मिलकर वृक्ष के चारों तरफ कच्चे सूत से घेरती है। फिर लड़की का भ्राता उसी तलवार से वड़ के पत्ते को काटता है और लड़की (कन्या) चुनती है। फिर वहाँ से प्रस्थान किया जाता है और 'मीठा इनार' पर आकर कन्या का भाई पानी भरता है। डोरी पगड़ी कपड़े की रहती है और एक ही हाथ से पानी भरा जाता है। उस जगह एक चुक्का रख दिया जाता है। कन्या का भाई ऊपर से चुक्का में पानी गिराते जाता है और कन्या उस तलवार से पानी गिरती हुई धारा को पांच वार काटती जाती है। फिर वहाँ से चल दिया जाता है। यह मीठा-इनार गाँव से दक्षिण है, सड़क के किनारे पश्चिम तरफ। इस कुएँ के चतुर्दिशाओं के दूर-दूर तक कुएँ का जल खारा है। सिर्फ बीच में यही एक कुआँ है। जिसका जल मीठा है। इस जगह 'हरिजनों' का टोला है। लोग पानी पीने के लिए इसी कुएँ से जल ले जाते हैं। इसी कुएँ पर गाँव भर की पतकट्टी का कार्य होता है। मालूम होता है कि देवी-देवताओं का ही यह प्रभाव है। वहाँ से सभी स्त्रियाँ तेली के घर तेल लेने के लिए जाती हैं और उसी वट वृक्ष के पत्ते पर गौरी-गणेश की मूर्ति बना कर तेलिन तेल देती है। बाद में यह सामान गौरी-गणेश और तेल को घर में ग्राम-देवता के पास ले जाकर रख दिया जाता है। उसी तेल से कन्या का सब काम सम्पन्न होता है और उसी गणेश की मूर्ति को वहाँ रख कर लग्नवती कन्या विवाह होने के वक्त तक उन गौरी-गणेश की आराधना (पूजा) किया करती है।

वर-यात्रा और द्वार-पूजा—बारात गमन के समय वर से गौरी-गणेश आदि की पूजा करवा कर तथा नया वस्त्र पहना कर वर को विदा किया जाता है।

६—कर्मकलाप-स्वामी सहजानन्द सरस्वती—पृष्ठ-३६४

आज से २५-३० वर्ष पूर्व पुराने ही वस्त्र पहनाकर 'वर विदागी' होती थी। कुछ सुखी लोग कामदार जोड़ा-जामा बनवा कर रख देते थे। जिस लड़के को विवाह करने के लिए जाना होता था, उसी को पहन कर जाता था और फिर आकर जिसका जोड़ा-जामा रहता था उसे वापस कर दिया जाता था। बस, वही जोड़ा-जामा पुस्त-दरपुस्त चलता था। कोई यह भी हिसाब नहीं रहता था कि वह जोड़ा-जामा किसी खास जाति के ही यहाँ घूमता था। अन्य-अन्य भी हिन्दू जाति के वर उसीको पहना करते थे। वह धुलाया भी नहीं जाता था। सिर्फ 'मौरी' नवीन रहती थी। अब नया वस्त्र पहना कर 'वर-विदागी' की जाती है।

घर से वर (दुल्हा) पालकी पर बैठ कर बाजे-गाजे के साथ निकलता है। साथ-साथ हजाम 'चंवर' डुलाते हुए चलता है। दुल्हा पहले देवी जी के मन्दिर में जाकर उनको प्रणाम करके फिर 'दिबरा' पर जहाँ पुराना गढ़ था। (जहाँ इस समय तीर्थनिन्द का बैठका है) उस जगह भी दुल्हा पालकी से उतर कर प्रणाम करके तब ससुराल के लिए प्रस्थान करता है।

बारात जाकर गाँव से थोड़ी दूर पर डेरा डालती है। सब लोगों के इकट्ठे हो जाने पर बाजावाले बाजा बजाते हैं, जिससे गाँववालों को मालूम हो जाता है कि बारात आ गई। कन्या-पक्ष का हजाम 'वर-'निमंत्रण-पत्र' लेकर बारात में पहुँचता है, तब बारात दरवाजा लगने के लिए चलती है। कन्या-पक्ष के भी कुछ लोग बाजे-गाजे के साथ अगवानी के लिए आते हैं। बहुत जगह जमीन पर चौका पुर कर, पीढ़ा रखकर उसीपर 'वर' को बैठा कर 'द्वार-पूजा' की जाती है, लेकिन कहीं-कहीं पालकी पर ही 'द्वार-पूजा' कर दी जाती है। इसके बाद फिर बारात जनमासे को जाती है।

जब दुल्हा मंडप में जाता है तब पुरोहित, वर एवं अन्य तीन व्यक्ति मिलकर (पाँच की संख्या में) हाथों से मूसल पकड़कर ओखली में धान कुटते हैं। वही चावल मंगलकार्य में आता है। बाद में विवाह की विधि सम्पन्न की जाती है।

सेन्दुर डालने का गीत—

कहाँ केरा सिन्दुरिया सेन्दुर बेचेआयल।
कहाँ के वर कामिन सेन्दुरा बेसाहले॥
अयोध्या केरा सिन्दुरिया सेन्दुर बेचे आयल।
जनकपूर के वर कामिनि सेन्दुरा बेसाहले॥

लउआ न छिटहू अनजानू भइया बहिनी तोहाऽर हो ।
अँगुठवा न धरहु अनजानू दुल्हा सुगई तोहाऽर हो ।।
इत्यादि ।।

सप्त मण्डलेषु सप्त पदाक्रमणं (सप्तपदी)—

(पाणी-ग्रहण) के बाद और सिन्दुर डालने (सेन्दुर-दान) के पूर्व 'वर-वधू' आपस में सात प्रतिज्ञाएँ करते हैं। मंडप में सात मंडल बने रहते हैं। हरेक मंडल में चावल रखा रहता है। 'वर' कन्या को पहले मंडल में पैर रखने को कहता है और फिर वह उसके पैर को निकाल लेता है। इसी तरह क्रमशः सातों मंडलों में पैर रखवाता और निकालता है और प्रतिज्ञा करवाता जाता है (यह शास्त्रीय रीति है)।

हमारे यहाँ एक पत्थर पर सात कुट्टी चावल सात जगहों पर रख दिया जाता है और उसी पर ऊपर लिखी रीतियाँ होती हैं। ('वर' कन्या को पैर रखने के लिए कहता है और फिर 'वर' ही उसके पैर को अपनी हाथों से हटाता है)।

१. वर—हे कुमारी ! विष्णु स्वरुप मैं अन्न, वस्त्र आदि प्राप्ति के लिए तुम्हारा एक पद आक्रमण कराता हूँ ।

कन्या - महाराज ! मैं आपकी आज्ञा पालन करने को तैयार हूँ, जबकि आप तीर्थ, व्रत एवं किसी यज्ञ की उद्यापन अवसर पर या दान अवसर पर मुझे वामांगी बनायेंगे ।

२. वर - हे कुमारी ! विष्णु स्वरुप मैं बल प्राप्ति के लिए दूसरा पद आक्रमण कराता हूँ ।

कन्या—महाराज ! देव-कर्म एवं पितृ-कर्म करने के अवसर पर मुझे साथ रखेंगे तो मैं आपकी वामांगी बनूँगी ।

३. वर—हे कुमारी ! विष्णु स्वरुप मैं धन पुष्टि के लिए तुम्हारा तृतीय पग आक्रमण कराता हूँ ।

कन्या - महाराज ! आप कुटुम्ब की रक्षा एवं पशुओं के पालन में तत्पर रहेंगे तो मैं आपकी वामांगी बनूँगी ।

४. वर—हे कुमारी ! विष्णु स्वरुप मैं शुभ की कामना से तुम्हारा चतुर्थ पद आक्रमण कराता हूँ ।

कन्या - महाराज ! आप जो आमदनी या खर्च करेंगे धन धान्यादिक, जो बाहर से लायेंगे, वे मेरी अधीन देंगे तो मैं आपकी वामांगी बनूँगी ।

५. वर—हे कुमारी ! विष्णु स्वरुप मैं पशु आदि सुख के लिए तुम्हारा पञ्चम पद आक्रमण कराता हूँ।

कन्या—महाराज ! आप देवालय, बागीचा, तालाब, कुआँ एवं बावली की पूजा करेंगे, उस समय मुझे भी साथ रखेंगे, तब मैं आपकी बामांगी बनूँगी।

६. वर—हे कुमारी ! षड् ऋतुओं के सुख, आनन्द, भोजन के लिए तुम्हारा षष्ठम् पद आक्रमण कराता हूँ।

कन्या—महाराज ! यदि आप देश, विदेश या कहीं अन्य जगहों में जायेंगे वो मुझे भी साथ रखेंगे तो मैं आपकी बामांगी बनूँगी।

७. वर—हे कुमारी ! विष्णु स्वरुप मैं आशा करता हूँ कि पतिव्रतादि धर्मों से युक्त होकर तुम भी अरुन्धती, जानकी आदि पतिव्रताओं की तरह संसार में विख्यात हो।

कन्या—महाराज ! आप मेरे रहते किसी भी दूसरी स्त्री को अवैध उपाय से जारपति का काम नहीं कर सकते हैं। आपसे और मुझसे पैदा हुई बच्ची या कामिनी का विवाह इत्यादि हमारी ही सम्मति से कर सकते हैं।

वर—हे कुमारी ! यदि तुम मेरे मन के मुताबिक अपने मन को बनायगी, पतिव्रत धर्म को पालन करते हुए मेरी आज्ञा का पालन करने में परायण रहोगी तो तुम्हारी सभी प्रतिज्ञाएँ मैं मानने को तैयार हूँ। इसके साक्षी विष्णु, अग्नि, सूर्य, ब्राह्मण और जाति-बान्धव लोग हैं।[७]

इसके बाद सेन्दुर-दान होता है। इति सप्तपदी। घर से वर और दुल्हिन एक ही पालकी पर बैठा कर बिदा की जाती है। जनमासे के पास आकर फिर वर-दुल्हिन अलग-अलग सवारी पर बैठते हैं। दुल्हा जब घर पर पहुँचता है तब वहाँ भी वर-दुल्हिन को एक ही सवारी पर बैठा कर परिक्षण की जाती है।

(ग) नये-पुराने—

आभूषण—पहले के लोग खुंटिया मिरजई और चपकन तथा चौबन्ना मिरजई पहनते थे नीचे कमर तक रहती थी। नमस्तीन और अधबहियाँ का भी प्रचलन थी। बूढ़े लोग जाड़े में कनझपा टोपी पहनते थे और गर्मी

७ पञ्च रत्न विवाह पद्धति पृष्ठ १५९-१६० (हिन्दी अनुवाद मात्र)

के दिनों में मगजी लगी हुई उजली टोपी। जवान से लेकर बूढ़े तक की पगड़ी १०—१२ गज महीन मलमल या नैनसुक की होती थी। बाहर कहीं जानेपर पगड़ी ही काम में लाई जाती थी। एक बार की बनाई हुई पगड़ी बहुत दिनों तक चल जाती थी। जब उस को धुलाने की आवश्यकता होती थी, तभी खुलती थी। पहले साबुन का प्रयोग नहीं होता था। धोबी के यहाँ धुलाने के लिए दे दिया जाता था। जब साबुन चला तो कुछ दिनों तक लोग इस्तेमाल में नहीं लाये, क्योंकि उसको अपवित्र समझते थे। १९१२ नम्बर का मारकीन बहुत मशहूर था। उसका सूत महीन, चिकना तथा मजबूत होता था। जमान लोग उसी की धोती भी बनाते थे। आम-छाप मारकीन भी खूब चलता था। अढ़ाई रुपये थान मिलता था। (२४ गज का थान)। अमीर लोग जाड़े में बनात की मिरजई, जिसमें बाँह तथा हरेक कोर और छाती के सामने नक्शेदार बेल-बूटे बने होते थे। लोई धुंसा, दोहर, गिलेफ, रजाई नेहाली जाड़े का ओढ़ना था। दोशाला किसी-किसी के घर रहता था, क्योंकि वह क़ीमती चीज थी। पहले हमारे गाँव में घोड़े (टट्टू) बहुत रहते थे। कुछ अमीर लोग रास (बहुत ऊँचा कद का) घोड़ा भी रखते थे। सर्वश्री देवी प्रसाद सिंह, अलख नारायण सिंह, श्याम चरित्र सिंह (घुटुक्का सिंह), शिवधर प्रसाद, कैलाश सिंह, प्रदीप सिंह इत्यादि लोग रास (बड़की) घोड़ा रखते थे। शिवधर प्रसाद और कैलाश सिंह नामी घोड़-सवार थे। छोटे-छोटे टट्टू प्रायः सभी शाक-द्वीपी ब्राह्मणों और बनियाँ लोगों के पास रहते थे। जब किसी का दोंगा (द्विरागमन) होता था तब जितने १०—२० आदमी जाते थे, सबके सब घोड़े या टट्टू पर ही जाते थे। पैदल जाना इज्जत के खिलाफ समझते थे। घोड़े वालों को पहले ही अगाह कर दिया जाता था कि अमुक दिन को दोंगा में जाना है। उस दिन के लिए सभी घोड़े उन के लिए मोकर्रर हो जाते थे।

विवाह में जब बारात जाती या आती थी, तब दोनों तरफ के लोग महफिल में रंग-बिरंग के कामदार रेशमी कपड़े के सुलेमानी जो ठेहुने से भी कुछ नीचे तक लटके रहते थे, कामदार पैजामा और कामदार टोपी पहनते थे। महफिल लड़की वाले के दरवाजे पर ही होती थी या होती है। गोतिया भर के लोगों को निमंत्रण दिया जाता है। उसमें नाच-गाना भी होता है। नर्तकी को छूट में बहुत पैसे दिये जाते हैं। मलमल का थान लेकर उसके बहुत से छोटे-छोटे टुकड़े करके रुमाल बना कर उसमें मशाला रखकर, जिसमें

लोग आते हैं, सबों को एक-एक रूमाल बाँट दिया जाता है। महँगी हो जाने से अब रूमाल तो नहीं ही, सिर्फ मशाले पर ही सम्पन्न हो जाता है।

पहले बाल-विवाह की प्रथा अधिक थी। जब दुल्हा कोहबर में जाने लगता था तब दरवाजे पर सरहज लोग 'द्वार छेकन' करती थी और दुल्हे को गजल गाने के लिए कहती थी। बच्चों की बोली मधुर होती है, स्त्रियाँ सब सुनना चाहती हैं, इसीलिए यह रीति प्रचलित थी। दुल्हा गजल गाता था और स्त्रियाँ खुश होकर रुपये देती थी। जो लड़के गजल सीख कर नहीं जाते थे उनको भेंदि में का सुस्त गिना जाता था।

'द्वार-छेकन' का रिवाज तो अभी भी है।

हमलोग तो अभी तक धोती ही पहनते आ रहे हैं। (पाँच गज की)। लेकिन अब तो पाजामा, जँघिया और लुंगी का प्रयोग हो रहा है। तिलक के समय जब लड़कों को चौका पर बैठने के समय धोती पहनने के लिए दी जाती है तो उनको पहनने ही नहीं आती। यदि पुराना नाई रहता है तब वही बताता है। यदि नया नाई हुआ तो पहनने और पहनाने में दुल्हा और हजाम दोनों फेल। मालूम होता है कि कुछ दिनों में धोती की प्रथा ही उठ जायगी।

पहनावा में दिनानुदिन नये-नये ढंग के फैशन निकल रहे हैं। पहले स्त्रियाँ सब कोरदार साड़ी और बुलटेन की चादर बेल-बूटे काढ़े हुए बैंगनी रंग के होते थे, उसीको काम में लाती थीं। बुलटेन चादर के बाद बनारसी साड़ी चादर भी बनारसी ही चली। अब वह भी खत्म। अब मनमाना, चाहे जिस रंग का जैसा कपड़ा पसन्द हो, खरीदा जाता है सादा नैनसुक लेकर उसे लाल रंग में रँग कर गोटा, पट्टा रंग-बिरंग के चढ़ा कर 'राता साड़ी' बनता था। यह राता साड़ी वही साड़ी है जो विवाह के बाद दुल्हिन को पहनना पड़ता था। अब रंग-बिरंग के ही कपड़े लेकर उस पर साज चढ़ाया जाता है। दुल्हिन के लिये उसी बनारसी कपड़े की भी साड़ी और ब्लाउज बनता था। ब्लाउज (झूला) का बहियाँ कंधे ही तक या आधी बाँह तक तथा नीचे कमर तक रहती थी।

वस्त्रों में तिनपरिया साड़ी, बंगला साड़ी, चिनियाँपोत, जौरजेट, मखमल, अलपाका आदि भी थे।

मर्द लोग बाल बनवाते थे तो सिर के अग्रभाग में चन्द्राकार कोनी छोड़वाते थे। कोई-कोई झुलफी रखते थे। वह झुलफी माथे के पीछे जहाँ शिखा (टीक) रहती है उससे नीचे की ओर बढ़ने देते थे। झुलफी का बाल गर्दन तक ही लटका रहता था। जब नीचे बढ़ने लगता था तब लोग छँटवा देते थे। शिखा के आगे के

अर्द्धभाग को छूरा से बिलकुल साफ करवा देते थे। पहले की यही झुलफी थी।

बदलते समय के अनुसार पहनावे का फैशन नित्य ही कुछ न कुछ बदलता जा रहा है। इसकी गति इतनी तेज है कि जो कपड़े, का फैशन आज है, वह संभव है कल न रहे। पुरुष धोती, कुरता, सोशलिस्ट-कट, सरगल-कट कुरता, खादी कुरता, विभिन्न किस्म की कमीजें, नये-युवक चुस्त कुरते जिसे हिप्पी-कट कहे जाते हैं, पहनने लगे हैं। साथ ही साथ, बंडी बिना कालर के, पायजामा, चुस्त-पायजामा, पैन्ट टाइप पाजामा, बेल बाटम पाजामा, कोट, इंगलिश कोट, प्रिंस कोट, परिवार कोट, लौंग कोट, टाई, नेकटाई (इसका फैशन अब प्राय समाप्त है) का प्रचलन है। उरेबी कपड़े की गंजी भी कम हो रही है। नाइलॉन का सैंडो, आधी बाँह वाली का प्रचलन है। जो लोग पहले विभिन्न किस्म के कोट पहनते थे, अब विभिन्न किस्म के स्वेटर पहनते हैं। टोपी का रिवाज प्रायः समाप्त हो गया है। अब किसान लोग गमछे का मुरेठा, आधुनिक लोग फेल्ट हैट और जाड़े में मंकी कैप का व्यवहार करते हैं। अब जूते विभिन्न कम्पनियों जैसे—बाटा, B. S. C., P, L. X के बूट, पेशावरी चम्पल, नीपकट, अलवर्ट आदि विभिन्न रंगों के चम्पलों को इस्तेमाल करते हैं। अब तो पलास्टिक के जूतों का चलन होता जा रहा है, जो सस्ते हैं और बरसात में भी कामयाब रहते हैं।

स्त्रियों की पोशाक—स्त्रियों में पहले साड़ी का प्रचलन था, वह अब भी है; परन्तु इसकी स्टाइल बदल गई है। पहले छः गज की साड़ी रहती थी, जो माथे को ढककर घूँघट निकालने तक के काम आती थी, परन्तु अब अधिकत्तर ४½ साढ़े चार मीटर की ही होती है। बूटेदार साड़ियों का प्रचलन कम हो गया है। प्लेन, चमकदार, टेरीलिन सिल्क, (अब इसका स्थान रोलेक्स ने ले लिया है या टोईलीन ने) की साड़ियों का प्रचलन है।

अब औरतें बाटा या B S. C. की जूते चप्पल का प्रयोग करतीं हैं। कुछ-कुछ औरतें ऊँची एड़ी की चप्पलें इस्तेमाल करतीं हैं, परन्तु बहुत कम।

जेवर—स्त्रियों के पुराने जेवर इस तरह के थे—मँगटीका, कर्णफल, झुमका, पासा, नथिया, बुलाकी, बुलकन, छूँछी, कंठा, हैकल, हँसुली, चमेल, मोहरमाला, कटसर, कमरधनी, कोठिला, झबिया, बिलौठा, बाँक, नवनग्गा, अनन्त, बजुआ, ज्योसन, पिछुआ, कंगन, पहुँची, हथ सकल, अँगूठी, छाड़ा, काड़ा, झाँझ, पाजेब, गोरावँ, गोर सकल, बिछिया, इत्यादि।

जेवर नया—चीक, मटरमाला, सिकरी, पायल, लहठी, काँच की चूड़ी, काँच शबर, लैमून एवं प्लास्टिक की चूड़ियाँ।

ग्रो'-२०-गृहस्थाश्रम का महत्त्व एवं उपादेयता—

यथा वायुं समाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्वजन्तवः ।
तथा गृहस्थ माश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व आश्रमाः ॥
यस्मात्त्रयोऽप्याश्रमिणो ज्ञानेनान्नेन चान्वहम् ।
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही ॥[1]

जैसे प्राण वायु के सहारे ये सब प्राणी जीते हैं वैसे ही गृहस्थ के आश्रय से सम्पूर्ण आश्रम वाले मनुष्य जीवन धारण करते हैं। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और सन्यासी; ये तीनों आश्रमी वेदार्थ व्याख्या और अन्न आदि द्वारा सदा गृहस्थ से ही प्रतिपालित होते हैं, इसलिये सब आश्रमों में गृहस्थ आश्रम ही श्रेष्ठ है।

ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा ।
एते गृहस्थप्रवाश्चत्वारः पृथगाश्रमाः ॥[2]
यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम् ।
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम् ॥[3]

ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, और सन्यासी; ये चारों आश्रम वाले गृहस्थ से ही उत्पन्न होते हैं। जैसे सब नदी और नद समुद्र में जाकर स्थित होते हैं वैसे ही तीनों आश्रमवाले मनुष्य गृहस्थ की ही सहायता से निवास करते हैं।

ब्रह्मचारी यतिर्भिक्षुर्जीवन्त्येते गृहाश्रमात् ।
तस्मादभ्यागतानेतान्गृहस्थो नावमानयेत् ॥
गृहस्थ एव यजते गृहस्थस्तप्यते तपः ।
ददाति च गृहस्थस्तु तस्माज्ज्येष्ठो गृहाश्रमी ॥
ऋषयः पितरो देवा भूतान्यतिथयस्तथा ।
आशासते कुटुम्बिभ्यस्तस्माच्छ्रेष्ठो गृहाश्रमी ॥[4]

ब्रह्मचारी, सन्यासी और वान प्रस्थ; ये सब गृहस्थ से ही जीविका निर्वाह करते हैं, इसलिये इनके अभ्यागत होकर आने पर गृहस्थ इनका निरादर नहीं करे। गृहस्थ ही यज्ञ, तपस्या तथा दान करता है इसलिये गृहस्थ ही श्रेष्ठ

---

१ मनु स्मृति ३ रा अध्याय श्लोक-७७॥७८॥
२ ,, ६ ठाँ ,, ,, -८७
३ ,, ,, ,, —९०
४ वृहद् विष्णु स्मृति—५९, अध्याय-श्लोक २७॥२८॥२९॥

है। ऋषि, पितर, देव भूत और अतिथि गृहस्थ की ही आशा करते हैं, इस कारण से (चारों आश्रमों में) गृहस्थ ही श्रेष्ठ है।

गृहाश्रमात्परो धर्मो नास्तिनास्ति पुनः पुनः।
सर्वतीर्थफलं तस्य यथोक्तं यस्तु पालयेत्॥[५]

निश्चय करके गृहस्थाश्रम से श्रेष्ठ कोई धर्म नहीं है; जो गृहस्थ यथोक्त अपना धर्म प्रतिपालन करता है उसको सब तीर्थों का फल मिलता है।

इन्द्रियाणि वशीकृत्य गृह एव वसेन्नरः।
तत्र तस्य कुरुक्षेत्रं नैमिषं पुष्कराणि च॥[६]
गंगाद्वारं च केदारं सन्निहत्य तथैव च।
एतानि सर्वतीर्थानि कृत्वा पापैः प्रमुच्यते॥[७]

जितेन्द्रिय होकर घर में बसने वाले मनुष्य को घर में ही कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य, पुष्कर, हरिद्वार और केदार तीर्थ मिल जाते हैं, वह इनको करके सब पापों से मुक्त हो जाते हैं।

देवैश्चैव मनुष्यैश्च तिर्यग्भिश्योपजीव्यते।
गहस्थः प्रत्यहं यस्मात्तस्माच्छ्रेष्ठाश्रमो गृही॥
त्रयाणामाश्रमाणां तु गहस्थो योनिरुच्यते।
सीदमानेन तेनैव सीदन्तीहेतरे त्रयः॥
मूलत्राणे भवेत्स्कन्धः स्कन्धाच्छाखेतिपल्लवाः।
मूलेनैव विनष्टेन सर्वमेतद्विनश्यति॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन रक्षणीयो गृहाश्रमी।
राज्ञा चान्यैस्त्रिभिः पूज्यो माननीयश्च सर्वदा[८]॥

सब देवता, मनुष्य, तथा पशु-पक्षी आदि जीव प्रतिदिन गृहस्थ से ही जीते हैं, इसलिये सब आश्रमों से गृहस्थाश्रम ही श्रेष्ठ है। इसीसे ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और सन्यासी की उत्पत्ति है, गृहस्थों के दुखी होने से तीनों आश्रमी दुखी होते हैं। वृक्ष के मूल की रक्षा होने से स्कन्ध, स्कन्ध की रक्षा से शाखा और शाखा की रक्षा से पत्ते होते हैं, किन्तु मूल के नाश होने से ये सब नष्ट हो जाते हैं।

---

५ व्यास स्मृति-४ था अध्याय श्लोक —२
६ ,, ,, ,, —१३
७ व्यास स्मृति-४ था अध्याय-श्लोक-१४
८ दक्ष स्मृति २रा अध्याय-श्लोक ४५-४६-४७-४८

इसलिये राजा तथा तीनों आश्रमों के लोगों को उचित है कि सत्कार और मान के सहित यत्नपूर्वक गृहस्थों की रक्षा करें।

यथा मातरमाश्रित्य सर्वे जीवन्ति जन्तवः।
एवं गृहस्थमाश्रित्य सर्वे जीवन्तिभिक्षवः॥

जैसे सब प्राणी माता के आश्रय से पालित होते है वैसे ही ब्रह्मचारी आदि सब भिक्षुक गृहस्थ से जीवन धारण करते हैं।

आश्रमों का उत्पत्ति स्थान गृहस्थ ही है, क्योंकि ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ तथा सन्यासी की कोई सन्तान नहीं होती है।

———

'अ'–२१. व्रत —त्योहार एवं खेल तमाशे

स्त्रियाँ बहुत व्रत करती हैं जैसे—एतवार, सोमवार, मंगलवार, (शुक्र की भी प्रथा चल पड़ी है), एकादशी, जीवत्पुत्रिका, गणेश चौथ, अक्षयनवमी, छठ (सूर्यव्रत), ऋषिपंचमी, नाग पंचमी इत्यादि।

पतित-पावनी गंगा जी यहाँ से ७ मील उत्तर पश्चिम से पूरब की ओर बहती है। नजदीक होने से बहुत लोग अमावस्या पूर्णिमा, दशहरा संक्रान्ति इत्यादि पुण्य तिथियों को स्नान करने के लिए जाया करते हैं। हल्दी छपरा यहाँ से १० मील पर है। वहाँ गाँव से उत्तर गंगा नदी बहती हैं। कुछ लोग वहाँ भी स्नान करने जाते हैं। स्नान करके गंगा जल ले आकर किसी बोतल में रख देते हैं। खूबी है कि गंगा जल वर्षों रखा रह जाता है, परन्तु उसमें कीड़े नहीं पड़ते। मर्द लोग प्रायः एकादशी जन्माष्टमी, रामनवमी, अनन्त और छठ व्रत ज्यादा करते हैं। सत्यनारायण स्वामी की कथा भी समय-समय पर हर घर में होती है।

सूर्यषष्ठीव्रत—यह व्रत साल में दो बार किया जाता है। एक कार्तिक शुक्ल पक्ष में, दूसरा चैत शुक्ल पक्ष में। इसमें चौथ को नियमपूर्वक रहकर सात्विक-भोजन करते हैं। सब्जी प्रायः कद्दू (लौकी) होती है। पंचमी को दिन भर उपवास रहकर शाम को रोटी और खीर, लवण रहित अपने गोतियों एवं मित्रों को खिलाते हैं और स्वयं भी खाते हैं। षष्ठी को निराहार-निर्जला रहकर शाम को किसी नदी के किनारे या पोखरे में या अभाव में कुएँ पर ही स्नान करने जाते हैं और तरह-तरह के फलों और ठेकुआ, कसार मिष्ठान को कोलसूप में रखकर सूर्य भगवान को अर्घ्य देते हैं। दउरा में सामान रख कर सिर पर या बहँगी में रखकर बाजे-गाजे के साथ घाट पर पहुँचते हैं और स्नान करके सूर्यास्त के पहले

---

९ वारिष्ठ स्मृति ८ अध्याय श्लोक-१६

ही अर्घ्य देते हैं। फिर सप्तमी को कुछ रात्रि शेष रहते ही घाट पर पहुँच जाते हैं। और सूर्योदय के बाद अर्घ्य देते हैं। साथ-साथ टोले-मुहल्ले की बहुत-सी स्त्रियाँ भी सूर्यभगवान का गीत गाते हुए आती-जाती हैं। अर्घ्य देने के बाद हवन होता है। तत्पश्चात् उस जगह के रहने वाले लड़कों को प्रसाद-वितरण होता है तथा घर जाकर टोले-मुहल्ले में प्रसाद बाँट कर व्रती लोग पारण करते हैं।

उदाहरणार्थ कुछ गीत—

(१)

पयनाल के पक्की सड़कवा, ऊपर नरियर बिकाय,
ऊपर कोलसुप बिकाय, ऊपर दउरा बिकाय।
जलदी से करू बाबामोलवा, होलइ अरघ के वेर।। होलइ०
पयनाल के पक्की सड़कवा, ऊपर घाघर बिकाय,
ऊपर केला बिकाय, ऊपर केवला बिकाय।। पयनाल०

(२)

काँचहि बाँस के बँहगिया, बँहगी लचकत जाय,
बँहगी लचकत जाय।
लहू न....शाही बँहगिया, बँहगी घाटे पहुँचाय,
बँहगी घाटे पहुँचाय।
बाट जे पूछले बटोहिया, बँहगी केकर जाय
बँहगी केकर जाय।
तूँ तो आन्हर हहीं रे बटोहिया, कायाकोढ़ी होइ जाय,
काया कोढ़ी होइ जाय।
छठी मइया के जाइत हइन, सँदेसवा ए अरघ देवेला,
ए कोशिला भरेला। काँचहि०।

(३)

सरयू के पनियाँ लहालह, नइया लागल हइ किनार,
नइया लागल हइ किनार।
ताही नइये चढ़थिन.....शाही जौरे.....देई के साथ,
जौरे.....देई के साथ।
आँचर धरले.....पूत, मइया हमहूँ चलब साथ,
मइया हमहूँ चलब साथ।
छोर-छोर बाबू हो अँचरबा, भेलब अरघ के वेर,
भेलव अरघ के वेर।सरयू०।

(४)

नरियर के गछिया लहालह, ऊपर धजा फहराय,
ऊपर धजा फहराय ।
धजवे धरिए बाँझी ठुमकइ आदित होअन सहाय,
सूरज होअन सहाय ।
बलका के मइया हम कहइती, देती बजन बजाय,
देती नेटुआ नचाय । नरियल० ।

(५)

रुनुकी-झुनुकी बाजन बाजे, मोरा एको न सोहाय ।
मोरा एको न सोहाय ।
एक पुतर आदित दीतऽ, मोरा सब कुछ सोहाय,
मोरा सब कुछ सोहाय ।
बलका के मइया हम कहइती, मोको सब कुछ सोहाय,
मोको सब कुछ सोहाय । रुनुकि० ।

(६)

छठी मइया जाले नइहरवा, नवरंग बाजन बजाय,
नवरंग बाजन बजाय ।
बटिया में मिले एक बाँझी, बाँझी चरनियां धैले ठार,
बाँझी चरनियाँ धैले ठार ।
बटिया में मिले एक कोढ़िया, कोढ़िया चरनियाँ धैले ठार,
कोढ़िया चरनियाँ धैले ठार ।
बटिया में मिले एक निरधन, निरधन चरनियाँ धैले ठार,
निर्धन, चरनियाँ धैले ठार ।
कउनी करतब हम कइली, बाँझी परल हमरो नाम,
बाँझी परल हमरो नाम ।
कउन करतब हम कइली, कोढ़िया परल हमरो नाम,
कोढ़िया परल हमरो नाम ।
कउन करतब हम कइली' निरधन परल हमरो नाम,
निरधन परल हमरो नाम ।

भगिना बोलाई तू ले अयलऽ, भगिना देलऽ लुलुआय,
भगिना देलऽ लुलुआय ।

बड़ा के कहनमाँ तूँ टारलऽ, बाँझी परल तोहरो नाम,
बाँझी परल तोहरो नाम ।

कचन सोनमा खरीदिहऽ, करिह भगिना के दान,
करिह भगिना के दान ।

एहीरे करतबऽ तू करिहऽ बाँझी छूटत तोहरो नाम,
बाँझी छूटत तोहरो नाम ।

दुअरासे भिच्छुक घुरवलऽ, कोढ़िया परल तोहरो नाम,
निरधन परल तोहरो नाम ।

कंचन सोनमा खरीदिहऽ, करिह भगिना के दान,
करिह भगिना के दान ।

भूखल भगिना जेंवइह, कोढ़िया छुटत तोहरो नाम,
निरधन छूटत तोहरो नाम । इत्यादि ।

छठ के समय कुछ पहले से ही लड़के सब गुड्डी (पतंग) खूब उड़ाते हैं और आकाश में एक दूसरे से लड़ाते हैं ।

विजया दशमी—यह एक महान पर्व है। यह उत्सव सारे भारत वर्ष में मनाया जाता है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष दशमी को यह पर्व आता है। प्रतिपदा को कलश-स्थापन एवं दुर्गा सप्तसती का पाठ प्रारम्भ हो जाता है तथा दशमी को विसर्जन हो जाता है। श्री दुर्गा जी की मूर्ति खूब सज-धज से बनायी जाती है। सप्तमी को स्थापना की जाती है। दशमी के दिन उनको बैठक पर बैठाकर समूचे गाँव में घुमाया जाता है। गाँव के नव-युवक या बच्चे साथ-साथ लाठी-पैना लेकर चलते हैं और जगह-जगह पर ठहर-ठहर कर लाठी खेलते हैं तथा विभिन्न अस्त्रों के चालन का प्रदर्शन करते है। ग्रामीण जनता महारानी जी का दर्शन करते है और पूजा का न्योछावर चढ़ाते है। खेलते कूदते महारानीजी की जयकार मनाते हुए गाँव से उत्तर वाले अहरे में विसर्जन किया जाता है।

दीपावली—कार्तिक मास में अमावस्या के दिन यह उत्सव मनाया जाता है। एक दिन पूर्व चतुर्दशी को सब लोगों के भोजन कर लेने के बाद सोने के समय एक बड़ी दिये में तेल भरकर घर से बाहर जला दिया जाता है यह छोटी दीपावली।

लाता है। अमावस्या के दिन अपनी श्रद्धा-शक्ति के मुताबिक बहुत से दीप रातों
र जलाये जाते हैं। लड़के लोग आतिशबाजी की चीजें लाकर छोड़ते हैं। इस
वर में लक्ष्मी-महारानी की बहुत सी मूर्त्तियाँ टोले-टोले के लड़के मिलकर
वाते और स्थापना एवं पूजा करते हैं। इस साल यहाँ पर २२ जगहों पर
र्त्तियाँ सजाई गई थीं। दूसरे दिन किसी जलाशय में विसर्जन किया जाता है।
तीया के दिन गोधन कूटा जाता है। टोले-टोलेभर की लड़कियाँ सब इकट्ठी
कर गाय के गोबर, रेंगनी काँटे का पौधा, मटर इत्यादि मिलाकर जमीन पर
मूसल से कूटती हैं। मूसल एक जमात में एक ही रहता है। उसी को पकड़ पकड़
र सब गीत गाती हुई कूटती हैं। उसमें का मटर निकाल कर अपने सम्बन्धियों
देती हैं और उनसे न्योछावर वसूल करती हैं।

परिवा के दिन दोपहर के बाद ग्वाले लोग गौओं को किसी मैदान में इकट्ठा
गाय-डाड़ का खेल करते हैं। फटी-चिटी काली कमली को गौओं के माथे पर
ते हैं। गौएँ भड़कती हैं और खूब कूदती-फाँदती हैं। यही कौतुक होता है।
र शाम को मानर (ढ़ोलक) बाजा के साथ गाना-बजाना करते और लाठी खेलते
गाँव के दरवाजे-दरवाजे घूमते हैं और बिरहा गाते हैं। खुशी में लोग अन्न-पैसे
छावर देते हैं।

बिरहा—१

अहीर—हम नहिं आवत रहलीं ए बाबू,
एहो गढलबले बोलाय हो।

चलिहीं भईया अहिरा मीरां के दुअलिया,
तोरा के करबह महवाऽल हो। बाजत बोल

(ग)
री-सुतरी तोरी लठिया भइया अहिरा,
पतरी . तो तोहरो हो।
आयल हई कार्त्तिक के भीर हो।

बूझि समुझि के लठिया चलन्हें भइया अहिरा,
कि बचल रहे अँगुरी के पोओर हो। बाजत बोल।

जइसे कि उखवा रोपले किसनमाँ,
बड़े लागल ऊखवा के पोओर हो।

ओइसही तो बढ़हन बाबू के संख से संखा,
आ संखा सम्पत बढी जाय्ये हो।

जइसे-जइसे बढ़हन संवा के संवा
आ दुसमन रोवै छाती फाडर हो। बाजन बोल।

अब यह रिवाज बन्द है—

गोधन के दिन ग्वालिन लोग गौओं की पूजा करती थीं और गोबर सेन्दुर लेकर टोले में हरेक बथानी में घूम घूम कर गौओं के खूँटे और खानेवाली जगहों को पूजती थीं। उन लोगों को भी न्योछावर मिलता था। अब यह भी बन्द-सा है।

होली—होली भी एक बहुत मनोरंजक पर्व है। इसको कौन नहीं जानता। यह भी समूचे भारतवर्ष में मनाया जाता है। फाल्गुन मास के पूर्णमासी को होलिका-दहन होता है। होलिका-दहन की कहानी प्रायः सभी लोग जानते हैं। यह पर्व होलिका और प्रहलाद की स्मृति दिलाता है। जब होलिका दहन हो जाता है तब गाँव के पट्टियों (टोलों) से गोल गाने बजाने वालों का समूह) निकलता है। एक-एक गोल में दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह आदमी की जमायत रहती है। एक आदमी कमर में ढोलक बान्धता है और उसके चारों ओर झाल बजाने वाले लोग गोलाकार रूप में होकर गाते बजाते होलिका-दहन (अगिजा) के स्थान पर पहुँच जाते हैं। चूँकि लोग गोलाकार होकर गाते हैं इसीलिए गोल कहा जाता है। होलिका की परिक्रमा करके गाते-बजाते अपने-अपने स्थान पर लौट आते हैं। आज का गोल साधारण तरीके का रहता है। होलिका दहन के बाद सूर्योदय होने पर गाँव के बच्चे से लेकर बूढ़े तक होलिका दहन वाली राख को अपने-अपने सिर में लगाते हैं तथा जमायत बान्ध-बान्ध कर नवयुवक लोग गाँव में घूम घूम, जो लोग होलिका दहन के स्थान पर नहीं पहुँचते हैं, उनको भस्म लगाते हैं। उस दिन सवेरे का यही महात्म्य है। बच्चे सब बाँस की पिचकारी बनाकर लोगों पर [illegible] डालते फिरते हैं। पहले नवयुवक लोग भी कीचड़-मिट्टी पड़ाते चलते थे [illegible] होलइया (होली) पढ़ते चलते थे, किन्तु अब नहीं।

रात्रि में सब लोगों के सो जाने पर नवयुवक लोग चोरी भी करते थे। मालूम होता था कि अमुक जगह सूखी लकड़ी या सिल्ली पड़ी हुई है तो बहुत से लोग मिलकर उठा लाते और अगिजा में डाल देते थे। यदि लाते समय मालिक (चुराये गये सामान वाले) पर नजर पड़ जाती तो छोड़ कर भाग चलते थे, नहीं तो जलती अग्नि में डाल देते थे। वह जल जाता था। एक बात थी कि जब अगिजा में चाहे कितनाहू बेशकीमती लकड़ी डाल दी जाती थी तो लोग निकालते नहीं थे। गरीबों की कीमती लकड़ी पर लोग निगाह नहीं डालते थे।

सुनते हैं कि एक बार गढ़ के सखुएँ का सहतीर लाकर डाल दिया गया। मालिक को मालूम हुआ। यदि वे चाहते तो अपने नौकरों से उस सहतीर को निकलवा लेते, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। बोले कि जब हमही इसको निकल देंगे तो और लोग क्यों नहीं निकालेंगे? मैं इस परम्परा का उदाहरण नहीं दे सकता। इतनी लकड़ी अगिजा में इकट्ठी हो जाती थी कि एक हफ्ते तक आग रह जाती थी। गोइठा सरसोटी इत्यादि से पहाड़ जैसा ऊँचा हो जाता था। कोई पंडित आकर विधिवत पूजा करवा कर अगिजा जलवाते थे। लड़के लोग गेहूँ के डंठल को एक-एक मुट्ठी की अँटिया बनाकर उसमें होरहा करते थे या करते हैं, और लुकबाड़ी बना-बनाकर सड़क से होते हुए बहुत दूर तक घुमाते हुए चले जाते हैं। अब लकड़ी लाना बिलकुल बन्द हो गया है। अब सिर्फ लड़के सब घर-घर से गोंईठा या सरसोटी माँग-माँग कर जमा करते हैं और वही जला दिया जाता है। अगिजा गोसाई गोर लागी ला पाँच-पाँच गोंईठा माँगीला। ए जजमानी सोने के केवाँडी, पाँच गो गोइठा दऽ।

फाल्गुन पूर्णिमा के बाद चैत्र कृष्ण पक्ष परिवा को बसन्तोत्सव मनाया जाता है। लगभग चार बजे दिन से ही लोग इस काम में लग जाते हैं। स्नान-ध्यान कर नवीन सफेद वस्त्र पहनते है और जहाँ-तहाँ जमायत बनाकर होली गाते (फगुआ पढ़ते) हैं। रंग-अबीर खूब धुआँधार चलाया जाता है। सबों के मुँह में खूब लपेट दिया जाता है। यहाँ तक कि हाला-हाली पहचानने में दिक्कत हो जाती है जैसे होलिका दहन के दिन गोल निकलता है, उसी तरह आज भी; परन्तु उस दिन और आज में बहुत अन्तर रहता है। पहिला दिन लोग अपने पुराने सादे वेष में ही रहते हैं, लेकिन आज खूब ठाट-बाट से नवीन परिधान में रहते हैं। बसन्तोत्सव के दिन पहले गाँव से ११-१२ गोल निकलते थे। खास-खास जगहों से जमायत निकलती थी और होलिका दहन के पास से होते हुए दुर्गा जी के मन्दिर तक पहुँच कर वहाँ से लौटती थी। आज का उत्सव रातों भर चलता है।

बसन्तोत्सव के दिन लोग खूब बढ़िया से खाना बनाते और खाते हैं। आज के भोजन में हरे चने की कचड़ी का बजका अवश्य बनता है। जिसको नहीं रहता है वे दूसरे से भी माँग कर जरूर बनाते हैं, हाँ एक बात और है। देवी प्रसाद का वर्णन में पहले कर चुका हूँ कि वे बहुत नटखट थे, परन्तु ढोलक बजाने में गाँव में पहला नम्बर उन्हींका था। गोल मे जाकर ढोलक बान्ध लेते थे, लेकिन बजाने वाले लोग जहाँ ताल से बेताल हुआ कि वे ढोलक में ऐसी चाट मार देते थे कि ढोलक साफ वे तो बचपन से ही नटखट थे ही, उँचनीच बोलने के लिए भी उनको स्वतन्त्रता थी। मुट्ठी बान्ध कर और अगूठा दिखाकर कह देते थे कि··· ···हमारे

जाते हैं और यह कह कर वहाँ से नौ-दो ग्यारह। इस चाल से हाला-हाली उनको लोग ढोलक देते ही नहीं थे।

बसन्तोत्सव का विसर्जन यही होली गाकर लोग करते हैं—

चन्दन काठ लगे हिंडोला, रेशम लागे डोरी हो।
सदा अनन्द रहे एहि द्वारे, मोहन खेले होरी हो॥
नाचत आवे कुँअर कन्हैया, हुल त आवे होरी हो।
एक वर खेले कुँअर कन्हैया, दोवर राधा होरी॥
सदा अनन्द रहे एहि द्वारे।

हमारे एक साथी बेचू शर्मा थे जो स्वर्ग-वास कर गये। बेकालीदमन चरित नामक किताब छन्दो-बद्ध बनाकर छपवाये थे। एक प्रति मेरे पास भी है। उनका बनाया हुआ एक फगुआ यहाँ पर लिखता हूँ—

बिहिटा में बीटेश्वर बिराजें सोनपुर ए अनुहारो,
अहो सोनपुर हरिहर नाथ, नगर पयनाऽल में
होरी खेलत जंगली-नाथ नगर पयनाऽल में।
होरी खेलत० ॥

रामनवमी एवं जन्माष्टमी—रामनवमी और जन्माष्टमी में ठाकुर बाड़ियों में उत्सव मनाया जाता है। गाँव के लोग जमा होकर गाते-बजाते भगवान का जन्म-दिवस मनाते हैं। प्रसाद वितरण होता है।

मोहर्रम (दाहा) मुसलमानों का पर्व है। आज से ४०–५० वर्ष पूर्व यह उत्सव हर साल हमारे गाँव में हिन्दू और मुसलमान दोनों के सहयोग से मनाया जाता था। एक बहुत बड़ा दाहा (तजेआ) बनता था। बाँस के कवाँच के कई महल का बनाये जाते थे। रंग-बिरंग के कागज, पन्नी तथा वस्त्र से सजाया जाता था। कागज को काट-छाँट के तथा कपड़ों को सुन्दर ढंग से सजा कर झालर बनाया जाता था, जिससे उसकी खूबसूरती बहुत निराली हो जाती थी। बाँस की बैठक इस तरह से बनायी जाती थी कि उसको चार इया इससे भी अधिक उठाकर तजिया को ले चलने में सक्षम होते थे और एक चबूतरा बनाकर उसी पर स्थापना होती थी। शुक्ल पक्ष सप्तमी को तजिआ की स्थापना होती थी। इसके पहले घर ही पर परदे के अन्दर सजाया जाता था। उसमें अधिक पैसे हिन्दू लोग ही लगाते थे। मुसलमान तो बेचारे समझिए तो दो ही घर थे और गरीब थे; इसलिए हिन्दुओं का प्रयास अधिक रहता था। लगता था कि यह पर्व मुसलमानों का नहीं, बल्कि हिन्दुओं का है। जिस दिन सप्तमी को स्थापना होती थी, उस दिन मुसलमान लोग दिन में नाड़ा, बद्धी, मशाला, तिल छउरी (तिल-चावल) इत्यादि चढ़ाते थे। शाम

को गाँव भर की स्त्रियाँ तिलचउरी चढ़ाने आती थीं। बड़ी भारी भीड़ लग जाती थी। तिलचउकी का ढेर लग जाता था। वह मुसलमान लोगों का होता था ताजिया की प्रसाद भी बाँटी जाती थी। हिन्दुओं में जिनको यज्ञोपवीत संस्कार हो जाता था वे नहीं खाते थे, पर बच्चे सब प्रसाद खाते थे सप्तमी के दिन में लोग मलीदा (रोटी में दूध, घी, इत्यादि सब तरह के मसाले मिला कर तैयार किये हुए) से नेवाज (पूजा) करते और मस्त होकर खाते तथा बाँटते भी थे। करची में करची मिलाकर स्त्रियाँ सब मसीहा गाती थी। मुसलमान तथा हिन्दू की स्त्रियाँ मन्नत भी मानती थीं। इमाम बाबा ! मेरा यह कार्य सुफल हो जाय तो मेरा लड़का आपका पैंक (दूत) बनकर ताजिया का स्वागत करेगा।' मन्नत के अनुसार अष्टमी को मन्नतवाले लड़के सज-धज कर अपनी कमर में घुँघरू बान्ध कर, हाथों में गोजी (लाठी) और रँगीन रूमाल लेकर अमायत बाँध कर दौड़ते हुए गाँव के गाँव हरेक दाहे के चबूतरे के पास जाकर परिक्रमा करते थे। गाँव में घुसने के वक्त खूब जोर से बोला करते थे—'इमाम बाबा की जय।' लोग जान जाते थे कि पैंक आ रहा है। अतः देखने वालों की भीड़ लग जाती थी। मुसलमानों में जो मास्टर रहते थे, वे ताजिया के पास पहुँच जाते थे। एक किताब रहती थी, उसी में से शैर को पढ़-पढ़ कर पैंक को झुलाते थे। शैर की एक-एक पंक्ति पढ़ते थे, उसके बाद घुमता हुआ पैंक रुमाल हाँकते हुए बोलता था—'हइ'। थोड़ी देर बाद फिर वहाँ से उचट कर दूसरी-तीसरी जगह जाते थे। बहुत कड़ी मन्नत थी। लड़के बिना खाये-पीये दिन भर यह क्रम जारी रखते थे। यह मन्नत सिर्फ अष्टमी को पूरा किया जाता था। हमारे गाँव में वलीमहम्मद मियाँ पैंक को झुलाते थे। हिन्दू लोग क्या बालक, क्या जवान, क्या बूढ़े, सब लोग एक महीना पहले से ही गदका खेलने का अभ्यास करते थे। एक हाथ का या कुछ बड़े मजबूत बाँस के पैंने में बाँस की जड़ का ही मुठिया लगा दिया जाता था, जिसमें गदका छटके भी तो उसी मूठ में रुक जाय। हाथ पर जख्म न आने पाय। कुछ अच्छे खेलने वाले तो पैंने में चमड़ा मँढ़वा देते थे। पैंने में चोट खाते-खाते वे घिस जाते थे या फट जाते थे, इसीलिए ऐसा किया जाता था। इस खेल में जाति का विभेद नहीं रखा जाता था। सब जाति के लोग मिल-जुलकर गद्का खेलते थे। रामेआद चमार और मुटुर साव गदका खेलने में बड़े निपुण थे। कैलास सिंह, खोभारी सिंह और बैजू सिंह भी खूब गदका खेलते थे और पैंतरे बाजी भी करते थे। गढ़ के बाबू लोग भी गदका खेलते थे, ऐसा उन लोगों को भी शौक रहता था। मुटुर साव खेलने में अभ्यस्त थे और वे लोग देह से भारी, सुकुमार थे और खेलने की आदत भी नहीं

थी, इसलिए हार जाते थे। मुट्ठर साव आसानी से गदका मार कर निकल जाते थे। लोग इस दृश्य को देखकर खूब हँसते थे। इसमें बाबू लोग भी मान-अपमान का कुछ ध्यान नहीं रखते थे। यह एक बहुत मन-मोहक दृश्य होता था। दशमी के दिन ताजिया उठा कर लोग गाँव भर घुमाते थे और वही गदका जगह-जगह पर ठहर-ठहर कर खेला करते थे। शाम होते-होते सब जमायत सदीसोपुर मिड्ल स्कूल के मैदान में जाकर कुछ देर तक खेल-कूद लेने के बाद 'करबल्लाह' पर जाकर ताजिया को पहलाम (विसर्जन) करते थे। कई गाँवों से ताजिया आते थे। झगड़ा न पैदा हो जाय, इसलिए विधान बना दिया गया था कि किस गाँव का ताजिया पहले पहलाम होगा। और फिर बाद में कहाँ-कहाँ का किस क्रम से होगा? सदीसोपुर के हिजड़े-लोग सबसे बढ़िया और सबसे ऊँचा ताजिया बनाते थे। उसका नाम ही 'चालीसवा' दाहा था। यानी ४० महल का बना रहता था। दाहा को उठाकर ले चलने वाले बोलते थे—'हसन-हुसैन। इमाम बाबा की जय।'

देवास—यह कौतुक तो अन्य-अन्य दिनों भी होता था, लेकिन विशेष करके आश्विन महीने के शुक्ल पक्ष में परिवा से दसमी तक नित्य होता था। इसके भगत बहुत थे। करीब-करीब हरेक टोले में थे। भगत के अनुयायी भी रहते थे। भगत आगे-आगे पचडा गाते थे और उनके पीछे-पीछे दो-चार अनुयायी मिलकर उसी को दुहराते थे। अनुयायी अधिकतर गँजेरी लोग रहते थे; क्योंकि उनको मुफ्त में गाँजा मिल जाया करता था। इन लोगों का कुछ पचड़ा आगे चलकर लिखूँगा। अरदासियाँ (रोगी) रोग दिखाने के लिए आते थे। विशेष कर वे ही जिनको भूत-प्रेत पकड़े रहता था। तमाशा देखने वालों की भीड़ लग जाती थी। खूब हवन होता था। भगत बेंत की छड़ी ऐंठ कर गर्दन में पहने रहते थे और हाथ में भी लिए रहते थे रोगी सामने जाकर बैठता था। उसके अभिभावक से भगत पूछते थे—'क्या बात है'? अभिभावक रोगी से पूछने के लिए कहते थे।

भगत—'बोल, तू कहाँ; कइसे धलहीं हेऽ?'

भूत—'ई परदा ला गेल हल। हम उहँइ हली।' 'ई हमरा टोक देलक, तब हम धरीक नऽ?'

भगत—'अच्छा बोल, छोड़बहीं किनऽ?' (जब भूत कुछ नही बोलता है)। तब भगत बेंत की छड़ी से पीटते और फिर पूछते—बोल, छोड़बहीं किनऽ?'

भूत—'पानी पिलावऽ।'

पानी पी कर भूत चला जाता। इसी प्रकार रोगी को पकड़े हुए भूत-प्रेत, डाकिनी-साकिनी आती और चली जाती थी।

भगत –'देख, ब्रह्म दंड लगतउ। पाँच ब्राह्मणों को भोजन करवाना, आउर दस सेर घीउ हवन करेला देवे परतउ।'

अभिभावक—'अच्छा भगतजी।'

जैसा रोगी, वैसा फरमाइस करते थे। इसी तरह दसों दिन यह कौतुक होता रहता था। हमारे गाँव में श्री जगदीश मिश्र अच्छे तांत्रिक थे। वर्तमान श्री पीताम्बर मिश्र के चाचा थे। महेश ब्रह्म के अनुयायी थे दशहरा के दिन महेश ब्रह्म के पास कंटर-के-कंटर घी जमा हो जाता था और उसको उसी जगह हवन कर देते थे। यह मेरी आँखों देखी बात है। गाँव में जिस जगह-जगह पर देवास होता था, उसमें भी घी दंड लिया जाता था, लेकिन इतनी मात्रा में नहीं, जितना कि महेश ब्रह्म के स्थान पर। पहले चरागाह काफी था। हरेक जाति के लोग भैंस-गाय पोसते थे। दूध-घी बिकता नहीं था। किसी को लेने की जरूरत ही नहीं पड़ती थी। यदि किसी को कुछ लेना भी होता था तो रुपया के सेर-सवा सेर घी मिल जाता था। कार्य-प्रयोजन में घी की ही पूड़ी तथा मिठाई बनती थी। लोगों के यहाँ पूरा घी जमा रहता था। कार्य-प्रयोजन में पैंचा काफी मिल जाता था। फिर जब लेनेवाले के यहाँ घी जमा हो जाता था तब जिसके यहाँ से पैंचा (उधार) लेते थे, सधा देते थे। इसी क्रम में गाँव भर का काम चलता रहता था। घी तौल कर नहीं दिया जाता था—'बर्तन से नाप करके।' घी-दूध को तराजू पर चढ़ना पाप समझते थे। आज के बच्चे यह सुनकर आश्चर्य करेंगे क्योंकि आज घी सपना हो रहा है।

अब न ओझे हैं और न भूत ही। दोनों की विदागी हो गई। दशहरा पर दसों दिन भूत-प्रेत गली-गली घूमा करते थे। जिस दिन दसईं चढ़ती थी, उस दिन रात को लड़के की माँ अपने-अपने बच्चों की ढोंढ़ी, ललाट और तलवे में काजल लगा देती थीं। भूत-प्रेत, डाईन-कवाईन से बचने का यह टोटरम था। दसईं भर बच्चों को भूत-प्रेत के डर से स्त्रियाँ सब बाहर नहीं जाने देती थीं।

भूत जब जल्दी नहीं हटता था तब ओझा कपड़ा से उसका मुँह झाँक कर पानी का छिड़कन देते थे। उससे भी जब नहीं हटता था, तब मिर्चाई (लालमिर्च) का धूंकन देते थे।

पचड़ा

निमियाँ के गाछ मइया लागले हिरोलवा हो,
ताहीचढ़ी सोखा बाबा खेलत जुगवा सार हो।
खेलत खुलत हो बाबा अपनी देव-घरवा आवहु हो,
पलटा उड़इत सोखा बाबा होहु न दयाल हो। निमियाँ।
लोहे केरा सिकरी भवानी मइया, बज्र हो किवांड़।
बज्र बन्हिह, पूरब के दुआर, हेठे बान्हि धरती,
ऊपर हो अकाश, बीचे बीचे बन्हिह हो पवनकुमार। लोहे।
बज्र बान्हिह पच्छिम हो दुआर, पच्छिम के पहरू,
सुभान रखवार। हेठे बन्हिह धरती। लोहे केरा।
बज्र बन्हि बन्हिह मइया उत्तर दुआर,
उत्तर के पहरू गंगा मइया रखवार। हेठे०। लोहे केरा०।
बज्रे बन्हि बन्हिह हो दखिन दुआर,
दखिन के पहरू हनुमानजी रखवार (हेठे बन्हि०)। लोहे केरा०।

योगीरा (जोगिड़ा)—चैत मास में पवनियाँ नवयुवकों का एकदल रात में गाना-बजाना के साथ निकलता था, जिसे योगीरा कहते थे, इसमें कोई योगी बनता था, कोई योगीन। कोई ढोलक बजाता था कोई कंसी। योगीन जनानी वेष में रहती थी और योगी मर्दाना वेष में मूँछ-दाढ़ी के साथ। सतुआनी (मेष की संक्रान्ति) के दिन वे लोग गाते-बजाते गंगातट तक चले जाते थे। एक साल श्री शिव पूजन सिंदुरिया मूँछ और दाढ़ी सन (पटुए) का लगाये हुए था। बीड़ी पीते समय उसकी दाढ़ी में आग लग गई। मुँह झुलस गया, जिसका दाग सदा के लिए रह गया। खैर था कि आँख बच गई। उस दिन से योगीरा बन्द हो गया।

माप

(क) कपड़े का पुराना माप—

सवा दो ईंच का १ गिरह। १२ ईंच का फीट। १७६० गज का १ मील
१६ गिरह का १ गज। ३ फीट का १ गज। २ मील = १ कोस।
कपड़े के व्यापारी या दर्जी लोग प्रायः इस माप को रखते थे।

———

लम्बाई–लम्बाई-मापक भिन्न-भिन्न जगहों में भिन्न-भिन्न प्रकार के थे। हाथ, पैर, गज, गिरह, फीट, ईंच, मील, मीटर, किलो मीटर इत्यादि। अब सभी जगह मीटर का ही माप जारी है। एक मीटर से कम की लम्बाई को नापने के लिए मीटर के १०वें १००वें और १०००वें भागों का उपयोग किया जाता है। मीटर के १०वें भाग को डेसीमीटर १००वें भाग को सेंटीमीटर और १०००वें भाग को मिली मीटर कहते हैं।

१ डेसी मीटर = $\frac{१}{१०}$, मीटर या १ मीटर = १० डेसी मी०

१ सेंटी मीटर = $\frac{१}{१००}$ मी०, या १ मीटर = १० डे० मी० = १०० सें० मी०

१ मिली मीटर = $\frac{१}{१०००}$ मीटर, या १ मी० = १० डेसी मी० = १०० सेंटीमीटर = १००० मिलीमीटर

(ख) नया माप–लम्बाई—

१० मिलीटर = १ सेंटी मीटर
१० सेंटी मीटर = १ डेसी मीटर
१० डेसी मीटर = १ डेका मीटर
१० डेका मीटर = १ हेक्टो मीटर
१० हेक्टो मीटर = १ किलो मीटर
१० किलो मीटर = १ मिरिया मीटर

१ ईंच = १.५ सेंटी मीटर
१ फीट = ३०.५ " "
१ गज = ९१.४ " "

१ फर्लांङ्ग = २०१.२ मीटर
१ मील = १६०९ मीटर
३९ ईंच = १ मीटर
४ फर्लांङ्ग २१३ गज = १ किलो मीटर

(ग) खेत नापने का पुराना तरीका—

८ फीट ३ ईंच की १ लग्गी, बाँस या कट्ठा माना जाता है। इसी बाँस से खेत नापा जाता है। इसके हिसाब करने का तरीका—कट्ठे × कट्ठे = धुर। धूरे × धूरे = धुरकी। फूरे × फूरे = फुरकी। बीघे × बीघे = बीघा। बीघे × कट्ठे = कट्ठा। बीघे × धूरे = धूर इत्यादि।

बाँस में ८ भाग कर दिया जाता है और इसी बाँस में ८ चिन्ह दे दिये जाते

हैं, उसे कड़ी कहते हैं। एक कड़ी लगभग अढ़ाई धूर की होती है। २० लग्गी लम्बा और २० लग्गी चौड़ा का १ बीघा होता है

।३	।१	।१	।०	।०
।१	।२	।३	।४	।०

ऽ२ ।३

ऽ१ ।।।१

ऽ१ ।।।१

ऽ३ ।।०

ऽ१ ।।०

ऽ२ ।।।१

ऽ२ ऽ२

ऽ२ ऽ२

ऽ१ ।।।०

ऽ१ ।।।०

ऽ३ ऽ४

ऽ२ ।३

ऽ२ ।३

ऽ२ ऽ0

ऽ३ ।।२

ऽ२ ।।४

ऽ२ ।।४

ऽ२ ।०

ऽ२ ।0

ऽ२ ऽ०

ऽ१ ।।०

ऽ१ ।।०

ऽ१ ।०

ऽ१ ।०

ऽ२ ।।२ ।।।४ ।।२ ऽ२ ।।।० ऽ४ ।।।३ ।।१ ।०

लिख चुका हूँ कि १ कड़ी अढ़ाई धूर की होती है। इसी तरह कड़ी को कट्ठा, धूर, धुरकी इत्यादि पर हिसाब बैठा लेंगे, जिससे गुणा करके हिसाब निकालने में आसानी होगी।

ऊपर के पैमाने के मुताबिक ८ कट्ठा में ६ कट्ठा से गुणा किया तो ४८ धूर हुआ, क्योंकि ऊपर लिख चुका हूँ कि कट्ठे × कट्ठे = धूर होता है। ४८ धूर का २ कट्ठा ८ धूर हुआ (ऽ२।३) क्षेत्रफल निकालने का तरीका जो ऊपर बता चुका हूँ—ध्यान दीजिये ऊपर वाली पंक्ति जिसमें कट्ठा, धूर इत्यादि लिखा हुआ है, को पहले नीचली पंक्ति में प्रथम ।१ छः कट्ठा से से क्रमशः गुणा करते जाइये और जो हिसाब आयगा नीचे सामने-सामने लिखते जायेंगे। जब ऊपरवाला लाइन ६ कट्ठे से गुणा करके खत्म हो जायगा, तब फिर नीचे वाले दूसरे अङ्क अर्थात् ७ धूर से ऊपर वाले को क्रमशः करते जायेंगे। जो गुणनफल होगा, नीचे हिसाब के मुताबिक सामने-सामने लिखते जायेंगे। इसी प्रकार ८ धुरकी १ फुरकी ५ रुड़की को भी क्रमशः ऊपर-वाले से गुणा करते जायेंगे जैसा कि ऊपर कर चुका हूँ। जब सबका गुणा खत्म हो जायगा तब नीचे एक लाइन खींच कर जोड़ देंगे। यह क्षेत्रफल

हुआ, जैसा कि हिसाब निकाला गया क्षेत्रफल हुआ—

क० धु० धु०

ऽ२ ॥२ ॥।४ ॥२ऽ२॥।० ऽ४॥।३॥१।०

अर्थात्- २ कट्ठा, १२ धूर, उन्नीस धुरकी, १२ फुरकी २ सड़क—इत्यादि।

अब इन सब देशी हिसाबों का समय खत्म हो गया। अब दिन-पर-दिन आसान तरीका व्यवहार में लाया जा रहा है।

(घ) खेत नापने का तरीका—एकड़ डिसमिल में—

खेत नापने के लिए सीकड़ बना रहता है। उसमें छोटी-छोटी कड़ियाँ बनाई रहती हैं। एक सीकड़ में १०० कड़ियों रहती हैं, लम्बाई और चौड़ाई को नाप कर लम्बाई और चौड़ाई में जितनी कड़ियाँ आती हैं, उन लम्बाई और चौड़ाई वाली कड़ियों की गिनती को लम्बाई चौड़ाई वाली गिनती से गुणा कर देते हैं जो गुणनफल आता है उसमें १००० एक हजार से भाग देते हैं जो भाग फल आता है, वही डिसमिल समझा जाता है। नीचे जो शेष बच जाता है, उसे वटा में लिखा जाता है जैसे जम्बाई ११६ कड़ी × चौड़ाई १०४ कड़ी = १२०६४ गुणनफल हुआ। अब १२०६४ में १००० से भाग देने पर १२ पूरा और शेष ६४ बचा। अर्थात् १२$\frac{६४}{१०००}$ डिसमिल हुआ। सर्वे के नाप में डिसमिल का खण्ड नहीं है। यदि आधा, यानी ५०० कड़ी से शेष कम हुआ तो उसको, जैसा कि ऊपर लिख चुका है १२ डि० ही समझा जायगा। यदि शेष ५०० से अधिक आया तो वह १३ डिसमिल लिखा जायगा।

(ङ) तौल के बटखरे

पुराना

ऽऽ – एक कनवाँ (छटाँक)
ऽऽ= दो कनवाँ
ऽऽ= तीन कनवाँ
ऽ।० चार कनवें का पौआ
ऽ। – पाँच कनवा सवा पाव
ऽ। = छः कनवाँ डेढ़ पाव
ऽ।= सात कनवाँ पौने दू पाव
ऽ।।० आठ कनवें का दो पाव
ऽ।। – नौ कनवाँ सवा पाव
ऽ।। = दस कनवाँ अढ़ाई पाव
ऽ।।= ग्यारह कनवाँ पौने तीन पाव
ऽ।।।० बारह कनवें का तीन पाव
ऽ।।। – तेरह कनवाँ सवा तीन पाव
ऽ।।। = चौदह कनवाँ साढ़े तीन पाव
ऽ।।।= पन्द्रह कनवाँ पौने चार पाव
ऽ१ सोलह कनवें का सेर भर
पाँच सेर का १ पसेरी
८ पसेरी का १ मन

नया

१० मिलीग्राम = १ सेंटीग्राम
१० सेंटीग्राम = १ डेसीग्राम
१० डेसीग्राम = १ ग्राम
१० ग्राम = १ डेकाग्राम
१० डेकाग्राम = १ हेक्टोग्राम
१० हेक्टोग्राम = १ किलोग्राम
१० किलोग्राम = १ मिरियाग्राम
१० मिरिया ग्राम = १ क्विन्टल
१० क्विन्टल = १ मैट्रिक टन

१ छटाँक = ५८ ग्राम
१ सेर = ९९३ ग्राम
१ मन = ३७ किलो २२४ ग्राम
१ सेर छौ तोला = १ किलोग्राम
२ मन २७ सेर ३ छटाँक = १ क्विन्टल
२६ मन ३१ सेर ११ छ० = १ मैट्रिकटन
नोट—पाँच तोले का १ छटाँक होता है।

पहले कच्ची सेर, पसेरी वगैरह भी चलता था १६ कनवें का १ सेर, सात सेर की १ पसेरी आठ पसेरी का एक मन

लोग कहते हैं कि सप्तम एडवर्ड वाले ८० रूपये का जितना वजन होता था उतने का १ सेर पक्की और ५६ रु० का १ सेर कच्ची होता था।

पुराना पैसा	नया पैसा
।।० एक पैसा	२
।।।० दो पैसा	३
।।।।० तीन पैसा	५
-) एक आना	६
-)।० सवा आना	८
-)।।० डेढ़ आना	९
-)।।।० पौने दू आना	११
=) दो आना	१२
=)।० सवा दो आना	१४
=)।।० अढ़ाई आना	१६
=)।।।० पौने तीन आना	१७
≡) तीन आना	१९
≡)।० सवा तीन आना	२०
≡)।।० साढ़े तीन आना	२२
≡)।।।० पौने चार आना	२३
।०) चार आना	२५
।०)। सवा चार आना	२७
।०)।। साढ़े चार आना	२८
।०)।।।० पौने पाँच आना	३०
।-) पाँच आना	३१
।-)।० सवा पाँच आना	३३
।-)।।० साढ़े पाँच आना	३४
।-)।।।० पौने छः आना	३६
।) छः आना	३७
।=)।० सवा छः आना	३९
।=)।।० साढ़े छः आना	४१
।=)।।।० पौने सात आना	४२
।≡) सात आना	४४
।≡)।० सवा सात आना	४५
।≡)।। साढ़े सात आना	४७
।≡)।।।० पौने आठ आना	४८

पुराना पैसा	नया पैसा
।।०) आठ आना	५०
।।०)।० सवा आठ आना	५२
।।०)।।० साढ़े आठ आना	५३
।।०)≡ पौने नौ आना	५५
।।-) नौ आना	५६
।।-)।० सवा नौ आना	५८
।।-)।।० साढ़े नौ आना	५९
।।-)।।।० पौने दस आना	६१
।।=) दस आना	६२
।।=)। सवा दस आना	६४
।।=)।। साढ़े दस आना	६६
।।=)।।। पौने ग्यारह आना	६७
।।≡) ग्यारह आना	६९
।।≡)। सवा ग्यारह आना	७०
।।≡)।। साढ़े ग्यारह आना	७२
।।≡)।।। पौने बारह आना	७३
।।।०) बारह आना	७५
।।।०)। सवा बारह आना	७६
।।।०)।। साढ़े बारह आना	७८
।।।०)।।। पौने तेरह आना	८०
।।।)- तेरह आना	८१
।।।-)। सवा तेरह आना	८३
।।।-)।। साढ़े तेरह आना	८४
।।।-)≡पौने चौदह आना	८६
।।।=) चौदह आना	८७
।।।=)। सवा चौदह आना	८९
।।।=)।। साढ़े चौदह आना	९१
।।।=)।।। पौने पन्द्रह आना	९२
।।।≡) पन्द्रह आना	९४
।।।≡)। सवा पन्द्रह आना	९५
।।।≡)।। साढ़े आना	९७

।।।≡)।।। पौने सोलह आना	९८	२० कौड़ी का	१ दाम
१) एक रूपया	१००	२० दाम का	१ आना
२० बीरी का	१ कौड़ी	१६ आने का	१ रूपया होता है।

(अ) २२. विकास, पतन, पुनरुत्थान तथा ग्राम-विकास को अवरोधक मान्यताएँ एवं रूढ़ियाँ—

वर्त्तमान प्रीतम सिंह के पितामह स्व० भगवान सिंह अर्थाभाव की अवस्था में रात में लकड़ी की ज्वाला से उत्पन्न प्रकाश में पढ़ते थे। आपने प्राथमिक शिक्षा छपरा में ही आरम्भ की। अन्ततोगत्वा मैट्रिक तथा अन्य परीक्षाएँ भी छपरा से ही उत्तीर्ण किये। भगवान सिंह ने कलकत्ता प्रेसिडेन्सी के फोर्ट विलियम सेंटर से वकालत की डिग्री प्राप्त की और छपरे में ही प्रैक्टिस करना आरम्भ कर दिया। और वे छपरा में तीन मकान बनाये जो लाल कोठी कहलाता था। अब वह मकान बिक गया है।

वकील साहब को तीन लड़के थे—सीताराम सिंह, अवध विहारी सिंह और वृज बिहारी सिंह। सीता राम सिंह की पहली बहाली थर्ड मुंसिफ मजिस्ट्रेट के पद पर छपरा के जज के द्वारा हुई थी। वह कागज आज भी विद्यमान है। भगवान सहाय सिंह (अब सहाय की उपाधि हो गई) और रघुनन्दन सिंह दोनों चचेरे भाई थे रघुनन्दन सिंह एम० ए० की परीक्षा में प्रथम हुए थे, पर परीक्षा फल घोषित होने के एक माह पूर्व ही इस दुनियाँ से चल बसे थे। अवध विहारी सिंह कानूनगो थे।

सन् १९०० ई० में विहार में भयंकर रोग प्लेग की महामारी फैली और चारों व्यक्ति-भगवान सहाय सिंह, रघुनन्दन सिंह, सीता राम सिंह और अवध विहारी सिंह, इसी बीमारी से असमय में ही काल के गाल में चले गये।

इस महामारी में छप्पर से चूहे गिरते थे और मर जाते थे। उसके कीटाणु मनुष्यों में घुस जाते थे। रोगी आदमी का दाँत काला हो जाता था और तीन घंटे में ही मृत्यु हो जाती थी।

वृज विहारी सिंह नन मैट्रिक थे। कुछ दिनों के बाद ये सदीसोपुर श्री चण्डीपत सहाय के यहाँ गोमास्ता का काम करने लगे थे। चन्द्रसेनपुर उर्फ सदीसोपुर के मालिक बाबू शारदापत सहाय थे। शारदापत सहाय चण्डीपत सहाय के बड़े लड़के थे। वे कायस्थ थे। पटनासिटी के दीवान मुहल्ले के रहने वाले थे। इन्हीं के जमाने में सदीसोपुर निवासी रामलषण और सीताराम जी के प्रयास से

सन् १९५० ई० में सदीसोपुर हाई-स्कूल का निर्माण हुआ। इसमें बृज बिहारी सिंह और सदीसोपुर के अन्यान्य व्यक्तियों का भी सहयोग था। हाई-स्कूल के मुख्य द्वार पर 'रामलषण सीताराम उच्च विद्यालय सदीसोपुर (पटना)' आज भी अंकित है।

True copy

In The Court of Fort Welliam Bengal.

I do hereby certify that Babu Bhagwan Sahay B.L. has this day been Conferred with this degree of Bachelor of Law in the High Court Jurisdection of Fort Welliam in west Bengal.

Dated the 7th day of December in the year of our lord one thousand eight hundred and eighty seven.

Signed and sealed by the order of High court,

Sd/Illegible,
Registrar

Saran Judges Court,

The 15th day of May 1897

To

Sita Ram candidate

you are herebay appointed to act as Munshif 3rd of this Court Vice Safeder Hussain and directed to join your post atonce.

Saran Juuges Court
The 15th May 1897

Sd Illegible
District Judge

True Capy

University of Calcutta.

This is to certify that Bhagwan Sahay obtained the Degree of Bachelor in Law in the University at the Annual Examination in the year 1879 and that he was placed in the second devision.

Dated the15 th March 1879

Sd Illegible
Vice chancellor

विकास क्यों नहीं हुआ ?

वकील साहब के परिवार की शीघ्र उत्थान और पतन से गाँव में भारी आतंक (भ्रमात्मक बीमारी) फैल गयी। लोग विद्याध्ययन को अशुभ मानने लगे। पढ़ाई ठप्प पड़ गई। फलतः विद्या के क्षेत्र में ग्राम का विकास अवरुद्ध हो गया। अब वह भ्रमात्मक बीमारी कुछ पुरानी हो गई, तब कुछ जागृति आई। सर्वप्रथम श्री रामलग्न सिंह (वल्द बाबू कमला सिंह) मैट्रिक पास करके एल० सी० में बहाल हुए। ट्रेनिङ्ग के बाद अकस्मात् १८ महीने बीमार रह गये। अब क्या था, वह भ्रमात्मक बीमारी फिर पनप गई। यह दूसरा धक्का लगा। परन्तु कुछ दिलेर प्रोत्साहित नवयुवक इस तथ्य को नकारते हुए अग्रसर होते गये। भगवान की कृपा से बाद में श्री तीर्थानन्द मिश्र, भरत सिंह, रामयत्न शर्मा, नन्दकुमार मिश्र, सुदर्शन मेहता, कपिलदेव सिंह मैट्रिक पास किये। अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि ग्राम के एक युवक नन्दकुमार मिश्र उसी समय इस दुनियाँ से चल बसे उनके निधन से गाँव की बड़ी भारी क्षति हुई। आज रामलग्न सिंह भी स्वर्गवासी ही हैं। शेष सब लोग सकुशल सरकारी सेवा में लगे हैं। अब वह पुरानी भ्रमात्मक बीमारी शान्त हो गई और हमारे नवयुवक अब उस भ्रम में न पड़ कर आगे बढ़ते जा रहे हैं। बीसवीं सदी में इस ग्राम के सर्व प्रथम तपेश्वर शर्मा ने सन् १९६५ में एम० ए० की डिग्री प्राप्त की और इसके बाद सन् १९७३ में बालमुकन्द ने। स्नातक तो यहाँ अनेक हो चुके हैं तथा वे विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं जिनका विवरण इस पुस्तक में आगे है।

२३ – समाज सेवी एवं कल्याणकारी संस्थाएँ और योजनाएँ

(क) बाल वाग्वर्द्धिनी-स्वर्ण युग का प्रारम्भः

पयनाल के कुछ युवक सर्वश्री नन्दकुमार मिश्र, रामभगवान मिश्र, तीर्थानन्द मिश्र, लाल बाबू मिश्र, रामयत्न शर्मा, राम प्रसाद सिंह, सुदर्शन महतो (मेहता), रामलीला सिंह, शिव कुमार शर्मा, आखितियारपुर के (जो यहाँ रह कर अध्ययन करते थे), भरत सिंह, चन्द्रिका सिंह (गुरुजी), कपिलदेव शर्मा, ब्रह्मदेव सिंह रामअनूप सिंह, हरिकृष्ण सिंह, श्रीकृष्ण सिंह आदि जो उस समय कुछ विकास-कार्य करने की भावना रखते थे और जिन्हें समाचार पत्रों से काफी दिलचस्पी थी, देश-विदेश के उत्थान की बातें पढ़-पढ़ कर अपने गाँव को भी उसी साँचे में ढालने

की बातें सोचने लगे और यही प्रयास गाँव को विकास की ओर अग्रसर करने का प्रथम चरण बना। बाल-वाग्वर्द्धिनी-सभा की स्थापना की गई। इसके जरिये पुस्तकालय, प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा माध्यमिक विद्यालय एवं अन्य-अन्य संस्थाएँ बनी।

बालवाग्वर्द्धिनी सभाने एक पुस्तकालय स्थापना की आवश्यकता महसूस की उपर्युक्त युवकों ने अपने-अपने घर की सभी पुस्तकें ले जाकर जमा कर दी और पुस्तकालय का प्रारंभिक कार्य शुरू हो गया, जिसका प्रथम नाम नन्दन पुस्तकालय रखा गया।

प्रतिबिम्ब—पुस्तकालय की स्थापना के साथ ही 'प्रतिबिम्ब' नामक हस्तलिपि पत्रिका प्रारम्भ हुई। सम्पादन का कार्य प्रारम्भ में कुछ दिनों तक लेखक ने किया। बाद में सुयोग्य एवं विद्वत व्यक्ति श्री राम भगवान मिश्र जी को सौंपा गया, जो जीवन पर्यन्त इसे चलाते रहे।

(ख) नाटक

सन् १९२८ ई० का जनवरी माह इस गाँव के लिए चिर-स्मरणीय रहेगा, क्योंकि सर्व प्रथम दो धार्मिक नाटकों का अभिनय सर्वश्री हरदेव सिंह, राम नारायण महाराज और नारायण मिश्र के अथक परिश्रम, लगन और उत्साह से प्रस्तुत किया गया।

प्रथम प्रयास में आशातीत सफलता मिलने से जहाँ कलाकारों का उत्साह बढ़ा, वहीं इसके सचालकों को अनेक कठिनाइयों, बाधाओं और विरोधों का सामना करना पड़ा। इसके प्रधान संचालक श्री राम नारायण महाराज उर्फ मुसाफिर महाराज थे कठिनाइयों की घटनाओं का विस्तृत वर्णन 'नाट्य कला परिषद पयनाल संक्षिप्त झलक' नामक पुस्तक देखें।

परिषद का मुख्य उद्देश्य सामाजिक शिक्षा का विकास, हिन्दी साहित्य की सेवा एवं सर्व साधारण में नई जागृति, सांस्कृतिक जागरण, कला-विकास, नये कलाकारों का निर्माण, राष्ट्रोत्थान, साम्प्रदायिक एकता और विश्व-बन्धुत्व का सन्देश देना था।

प्राचीन परम्परा से प्रभावित परिषद् कुछ अंशों में धार्मिकता की केन्द्र स्थली बनी रही। फलस्वरूप १९२८ से १९४० तक प्रायः धार्मिक नाटक ही होते रहे। स्वतंत्रता संग्राम में कलाकारों का सक्रिय सहयोग रहा। सन्

१९४२ की क्रान्ति के बाद परिषद ने क्रान्तिकारी कदम उठाया। इसके कलाकार स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय सहयोग प्रदान करते रहे। फलस्वरूप कुछ कलाकारों को स्वतंत्रता संग्राम में कारागार की हवा खानी पड़ी। अभिनय के महोद्देश्य के तलवार आजमाने वाले कलाकार अपनी शक्ति का प्रयोग स्वतंत्रता प्राप्ति में करने को कटिबद्ध हो गये। उक्त संघर्ष में सर्वश्री चन्द्रिका सिंह (चन्दर गुरुजी) चन्द्रिका सिंह (गांधी), शिव केवल सिंह और कामेश्वर सिंह 'कका' को सन् १९४२ में भारत-रक्षा-अधिनियम और आपत्तिजनक साहित्य संग्रह में ब्रिटिश शासकों द्वारा एक-एक वर्ष का कठोर कारावास मिला। कारागार से लौटने पर उन भावुक कलाकारों ने एक महान् क्रान्तिकारी नाटक 'दुखी भारत' उर्फ 'आजादी और बलिदान' का अभिनय सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हमारे कलाकारों ने जहाँ जन-जागरण का महान संदेश दिया, वहीं स्वतंत्रता संग्राम में भी अग्रगण्य रहे।

कुछ दिनों के बाद परिषद के दो विभाग हो गये।

(१) अभिनय संघ और (२) नाट्य कला परिषद् पयनाल।

फिर नाट्य कला परिषद से भी एक शाखा निकली (राम चरित मानस विभाग)'

राम चरित मानस विभाग—राम चरित मानस के आधार पर रामलीला के आयोजन द्वारा समाजोत्थान का कार्य करने लगा।

इसके अलग होने पर तुरत ही रिहल्सल शुरू करके बाल काण्ड की लीला बड़े ठाट के साथ अद्योपान्त सम्पन्न किया गया। रिहल्सल के वक्त प्रायः लोग कहा करते थे कि लीला अच्छी नहीं होगी, परन्तु लीला ऐसी हुई कि सभी दर्शकों के वाह-वाह की ध्वनि ने कलाकारों के मनोबल को बढ़ा दिया। लोग कहने लगे कि यहाँ रामलीला तो बहुत बार हुई, परन्तु धनुष-यज्ञ और भगवान की बारात का उत्सव ऐसा कभी नहीं हुआ था।

राम चरित मानस विभाग के संचालक श्री नारायण मिश्र थे। अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि यह रामलीला सिर्फ एक ही बार होकर जो स्थगित हुई सो आज तक स्थगित ही रह गई।

'अभिनय संघ' और नाट्य कला परिषद् पयनाल, दोनों संस्थाएं जीवित हैं और खूब धूम-धाम से चल रही हैं। साल में एक दो बार रंग-मंच पर उतरती रहती हैं। बीच में 'अभिनय संघ' मृतप्राय हो गया था; परन्तु फिर इसमें श्री शालिग्राम सिंह के प्रयास से नयी चेतना आ गई है और अब तो अभिनय संघ की ओर से प्रतिवर्ष २-३ नये-नये नाटकों का सफल अभिनय होता है।

इसके निदेशक श्री नन्द किशोर शर्मा (गुरूजी) हैं।

'नाट्य कला परिषद पयनाल' निबन्धित संस्था है। इसके निबन्धन के प्रमाण-पत्र की प्रति भी प्रस्तुत है—

निबन्धन का प्रमाण पत्र—

(ऐक्ट २१, १८६०)

संख्या २५, वर्ष १९६३-६४

मैं इसके द्वारा प्रमाणित करता हूँ कि 'नाट्य कला परिषद पयनाल' सोसाइटी रजिस्ट्रेशन ऐक्ट २१, १८६० के अधीत आज यथावत् निबन्धित हुआ। आज तारीख तीन, मास जनवरी, वर्ष उन्नीस सौ चौसठ को पटना में मेरे हस्ताक्षर के साथ दिया गया।

ह० अस्पष्ट

मुहर महानिरीक्षक — वास्ते महानिरिक्षक निबन्धन

निबन्ध-बिहार के — बिहार

कार्यालय का

वि० सं० (म० लेबर) १४२ (डी०)—।—।। —१००

१६-६-१९५८ के० पी०

एस०/Sd. आनन्दी प्रसाद

(ग) पुस्तकालय

पुस्तकालय दो हैं—

१—प्रभात पुस्तकालय

२—दीन हितैषी नन्दन पुस्तकालय

प्रभात पुस्तकालय—१९१८ ई० में मेरे द्वारा स्थापित किया गया। हमारे चाचा तुलसी दास कृत सभी किताबों तथा अन्यान्य धार्मिक किताबों का संग्रह किये हुए थे। उनका नाम श्री हित नारायण सिंह था। उन्हीं के नाम पर मैंने जो इसका नाम 'स्वतंत्र हितनारायण पुस्तकालय' रखा था। इसलिए कोई खास भवन नहीं बना। निजी भवन में ही यह अभी भी कायम है। कुछ दिनों बाद इसका नाम 'प्रभात पुस्तकालय' रखा गया। इस समय किताबों की संख्या इस तरह है—

काव्य—	१२५
कहानी—	७१
धार्मिक—	१०५
नाटक—	१२५
इंगलिश बुक—	१०२
उपन्यास—	६२३
साहित्यिक—	१७४
कुल	१३२५

बिहार सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा अनुदान भी इसे समय-समय पर मिलता है।

दीन हितैषी नन्दन पुस्तकालय—

पुस्तकालय स्थापना की प्रारम्भिक स्थिति—सन १९२५ ई० के आसपास नन्दन पुस्तकालय की स्थापना इस गाँव में हुआ। जिसका जिक्र बालवाग्वर्द्धिनी में कर चुका हूँ। १९४२ तक इस पुस्तकालय से थोड़ा-बहुत लाभ ग्रामीण उठाते रहे। सन १९४२ ई० में गाँव के युवकों की टोली ३ भागों में विभक्त हो गई। एक टोली ने 'हिन्दू हित कारक' पुस्तकालय की स्थापना की। इस पुस्तकालय का नाम करण श्री तीर्थानन्द मिश्र, श्री राधेश्याम मिश्र आदि ने किया था। संस्थापकों में सर्व श्री राम स्वरूप सिंह, रामचन्द्र साव, दिनेश सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। युवकों की दूसरी टोली ने इसी वर्ष 'दीन दयाल पुस्तकालय' की स्थापना की जिसके संस्थापकों में सर्वश्री गजेन्द्र शर्मा, विश्राम सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी वर्ष गांव की तीसरी युवक टोली ने 'जन हितैषी पुस्तकालय' की स्थापना की, जिसके संचालक श्री श्याम बिहारी सिंह आदि थे।

सम्प्रति हमारे गाँव में यह दीन हितैषी नन्दन पुस्तकालय सभी दृष्टियों से स्वस्थ एवं सम्पन्न समझा जाता है, कारण कि इसे एक अच्छा भवन है। इसमें कई आलमारियाँ टेबुल, कुर्सी है। एक सरकारी अनुदान से रेडियो की भी खरीद की गयी है। इन पुस्तकालयों के सम्बन्ध में विविध जानकारी प्राप्त करने के निमित्त मुझे उत्साही व्यक्ति श्री शालिग्राम सिंह (पश्चिमभर) से बात चीत करनी पड़ी। उन्होंने कहा 'प्रारम्भिक अवस्था में इस पुस्तकालय का नाम 'दीन दयालु पुस्तकालय' था। यह श्री राजेन्द्र सिंह के दरवाजे पर चलती थी। इसकी पुस्तकों की सुरक्षा के लिए श्री सिंह ने एक बहुत बड़ी सन्दूक भी दी थी। जहाँ तक मुझे स्मरण है, इसकी स्थापना श्री गजेन्द्र शर्मा (सोसलिस्ट नेता सम्प्रति जनता पार्टी के नेता) तथा विश्राम सिंह ने अथक परिश्रम से की थी। इसी पुस्तकालय से प्रभावित होकर गाँव के अन्य जो पुस्तकालय थे (स्वतंत्र हितनारायण पुस्तकालय

को छोड़कर, जिसका अपना स्वतंत्र इतिहास है, इसी में आकर सम्मिलित हो गये। फलतः सदस्यों की संख्या काफी हो गई। पुस्तकालय को श्री नन्दकिशोर सिंह के दरवाजे पर लाया गया। पुस्तकों को रखने के लिए १६ रु० व्यय करके दीवार में आलमारी बनायी गई। अभी भी श्री नन्दकिशोर सिंह की दीवार में स्मृति स्वरुप वह आलमारी विद्यमान् है। पुस्तकालय के विस्तार एवं प्रसार को दृष्टि-पथ में रखकर पुस्तकालय-व्यवस्थापकों ने इसे श्री नवविन्द सिंह के दरवाजे पर स्थानान्तर कर दिया, जिसमें अभी श्री मुन्ना सिंह की पुरानी दुकान एवं श्री देवबालक सिंह का दवाखाना है। यहीं पर पुस्तकों की अधिक संख्या देखकर बड़ी-बड़ी आलमारियों की आवश्यकता महसूस हुई। ग्रामीणों से बाँस तहसील करके उसे बेच कर १११ रु० में एक बड़ी आलमारी खरीदी गई।

कुछ दिनों के बाद श्री नवबिन्द सिंह ने मकान खाली कर देने का आग्रह किया। पुस्तकालय संस्थापकों एवं व्यवस्थापकों के सामने यह एक जटिल समस्या उत्पन्न हो गयी।

निराशा में आशा की रोशनी लेकर श्री शालिग्राम सिंह अपने नजदीकी गोतिया लोगों के पास आये। सर्वश्री किशोरी शरण सिंह, रामचन्दर सिंह, राम अनूप सिंह, विश्वनाथ सिंह, शिव प्रसाद सिंह वकील सिंह और अवध बिहारी सिंह की सामूहिक बैठक हुई।

श्री शालिग्राम सिंह ने पुस्तकालय-भवन की समस्या के समाधान के लिए 'पुरनकी दालान' से पूरब दो डिसमिल जमीन, जो उपरोक्त व्यक्तियों के अधिकार में थी, उसे पुस्तकालय-भवन-निर्माण के लिए प्रदान करने का प्रस्ताव रखा।

इस सामाजिक कार्य के लिए सभी लोग सहर्ष तैयार हो गये और दूसरे ही दिन वे सभी अपने-अपने खर्चे से दानापुर रजिस्ट्री आफिस जाकर उस जमीन की रजिस्ट्री पुस्तकालय के नाम से कर दिये।

अब पुस्तकालय भवन-निर्माण-हेतु कम-से-कम सत्तर-अस्सी हजार ईंटों की जरुरत हुई। एतदर्थ, गाँव भर में चन्दा किया गया और बीड़ी-बिक्री नियंत्रित करके इसके कमिशन से धनराशि एकत्र की गई।

पुस्तकालय की नीव श्री बजरंगी बाबा ने डाली अब पुस्तकालय का नाम 'दीन हितैषी नन्दन पुस्तकालय' रखा गया।

उच्च विद्यालय

उच्च विद्यालय पैनाल के निर्माण का श्रेय व्यष्टि की प्रेरणा एवं समष्टि के सम्यक सहयोग को है। सन, १९६० ई० के २ जनवरी को संस्थापित इस विद्यालय के निर्माण की प्रेरणा गाँव के समाजिक कार्यकर्त्ता श्री कृष्ण मुरारि शर्मा को श्री विजय कुमार सिंह उर्फ श्री विनोद बिहारी सिंह से मिली, जिन्होंने सन् १९५४ ई० में पयनाल में सर्वप्रथम एक उच्च विद्यालय की स्थपना की थी एवं उसके विकास में पयनाल ग्राम की जनता का पूर्ण सहयोग उन्हें प्राप्त था।

किसी कारण वश वह विद्यालय बन्द हो गया। लेकिन गाँव के युवक सामाजिक कार्य-कर्त्ताओं के इस विद्यालय का बन्द होना एक चुनौती के समान था और संयोग से उस चुनौती को स्वीकार किया कृष्ण मुरारि जी ने। सन् १९६० ई० के पूर्व ये गाँव के लोगों के सहयोग से दीन हितैषी नन्दन पुस्तकालय, पयनाल के भवन निर्माण कार्य को पूरा करने में सफल हो चुके थे। इस निर्माण कार्य में इन के प्रमुख सहयोगी श्री शालिग्राम सिंह थे। अत. जब उच्च विद्यालय की स्थापना हुई तो शालिग्राम जी ने पुन: मुख्य सहयोगी की भूमिका अदा की। दिसंबर, १९५९ ई० के अन्तिम सप्ताह में डुगडुग्गी पिटवा कर मध्य विद्यालय पयनाल के प्रांगण में संध्या समय एक जन सभा का आयोजन किया गया और सर्वसम्मति से उच्च विद्यालय की स्थापना २ जनवरी १९६० ई० से करने का निर्णय लिया गया।

विद्यालय के सामने तात्कालिक समस्या भूमि एवं भवन की थी, जो आसानी से हल हो जायेगी, ऐसा संकेत कुछ जमीन दाताओं के आश्वासन से मिला। राम प्रसाद मध्य विद्यालय के प्रांगण में ही पूर्व में स्थापित उच्च विद्यालय के नाम पर बने कमरों में नये उच्च विद्यालय के आठवें एवं नवे वर्गों की पढ़ाई प्रारम्भ कर दी गई। प्रथम प्रधानाध्यापक के पद पर बिहटा थाना (कंचनपुर निवासी) स्व० संत प्रसाद सिंह की नियुक्ति की गई। तत्पश्चात राघोपुर गाँव बिहटा) के श्री हरिश्चन्द्र मिश्र प्रधानाध्यापक के पद पर आसीन हुए। तीसरे प्रधानाध्यापक हुए श्रीधर प्रसाद सिंह, जो मनेर थानान्तर्गत भवनियाँ टोला गाँव के थे। अन्त में विद्यालय की प्रस्वीकृति को ध्यान में रखते हुए एक सुयोग्य प्रधानाध्यापक की नियुक्ति की आवश्यकता महसूस की गई और इस पद पर बाढ थानान्तर्गत बेढ़ना ग्राम निवासी श्री राजेश्वर प्रसाद शर्मा नियुक्त किये गये, जो आज तक उसी रूप में कार्यरत हैं। विकास शील विद्यालय के प्रधानाध्यापक के लिए जो योग्यता एवं सूझ-बूझ होनी चाहिये, वे इनमें विद्यमान थी।

विद्यालय का स्वतंत्र भवन गाँव के दक्षिण में शिवालय के पास स्वर्गीय बली सिंह एवं श्री चन्दू सिंह द्वारा पदत्त जमीन में जब बनकर तैयार हुआ तो २० सितम्बर सन् १९६३ ई० को मध्य विद्यालय पयनाल के प्रांगण से उच्च विद्यालय के नये भवन में लाया गया। इस विद्यालय के लिए जो ५ एकड़ जमीन की आवश्यकता थी, उसकी पूर्ति सर्व श्री बजरंगी प्रसाद सिंह, बलभद्र मिश्र, बली सिंह, राम अनूप सिंह (पूरब), तृपित ना० सिंह, श्री कृष्ण सिंह (मुनि जी), शिव सागर सिंह, तुलसी मिस्त्री, लोटन ठाकुर, बहादुर सिंह, आनन्द सिंह, सरयू सिंह, चन्द्र देव सिंह (फायर मैन), एवं कपिल देव सिंह द्वारा प्रदत्त दान से हुई। कम कीमत लेकर श्री चन्द्रदेव सिंह (पूरब) एवं श्री सिद्धेश्वर सिंह ने भी जमीन का एक-एक प्लोट दिया, जिससे विद्यालय के लिए प्रर्याप्त प्रांगण का प्रबन्ध हो सका। जमीन दाताओं में सबसे ज्यादा उत्साह स्व० बलभद्र मिश्र में देखा गया, जिन्होंने स्वेच्छा से विद्यालय के लिए दान देना स्वीकार किया। उनके इस कार्य से विद्यालय के कार्यकर्त्ताओं को बहुत ही प्रोत्साहन मिला।

विद्यालय के नाम से निबन्धित भूखण्डों के दाखिलखारिज के कार्य में श्री नागेश्वर प्रसाद शर्मा (सम्प्रति अधिवक्ता, बाढ़ कोर्ट) का सहयोग प्रशंसनीय है। इसके अतिरिक्त इन्होंने सन् १९६० ई० से १९६५ ई० की अवधि में विद्यालय के विकास में कई अन्य प्रकार से भी योगदान किया है। इस अवधि में ये बिहटा भूखण्ड (पटना) में भू-राजस्व विभाग से सम्बद्ध थे।

विद्यालय की प्रस्वीकृति के लिए सुरक्षित निधि में दो हजार रुपये की राशि जमा करना आवश्यक था और यह एक बहुत ही कठिन कार्य मालूम पड़ता था इस कार्य के लिए पयनाल एवं आस-पास के गाँव में सघन एवं व्यापक धन संग्रह अभियान चलाया गया। तीन महीने तक लगातार टोलियों में घूम-घूम कर कार्यकर्त्ता गण चन्दा वसूलते रहे; तौभी करीब सोलह सौ रुपये ही वसूल हो पाये और श्री राम सागर शाही, तत्कालीन अवर प्रमंडल पदाधिकारी, दानापुर के निदेशानुसार सुरक्षित कोष में रुपये जमा करने की तिथि आ गई। श्री कृष्ण मुरारि जी ने पटना के अपने एक सम्बन्धी के यहाँ ५०० (पाँच सौ) रूपये लाने के लिए श्री चन्द्रदेव सिंह को भेजा। संयोग से वह राशि प्राप्त हुई और इस प्रकार दो हजार रूपये का नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट कैन्टोनमेंट डाकघर, दानापुर से खरीदा गया।

उपर्युक्त राशि प्राप्ति के बाद भी श्री राम सागर शाही, तत्कालीन अवर प्रमण्डल शिक्षा पदाधिकारी, दानापुर की उदारता एवं सहानुभूति यदि

विद्यालय को प्राप्ति नहीं रहती तो हम आसानी से विद्यालय की प्रस्वीकृति लेने में सफल नहीं होते। उनके मार्ग दर्शन एवं निदेशन में काम करने से प्रबन्ध समिति एवं प्रधानाध्यापक को अपने कार्य में सहज रूप में सफलता प्राप्त हुई।

विद्यालय के भवन निर्माण के कार्य में प्रयाप्त रुपये की आवश्यकता थी। इस कार्य में ग्राम पंचायत राज, पयनाल का भी सहयोग उत्साह वर्द्धक था। इसके मुखिया श्री गणेश प्रसाद सिंह ने विद्यालय की प्रस्वीकृति के सम्बध में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी, क्यों कि विद्यालय की पूर्ण स्वीकृति के लिए स्पेशल बोर्ड का जो गठन हुआ था उसके एक सदस्य श्री राणा शिवलाख पति सिंह (बाढ़) थे, जो मुखिया के पूर्ण परिचित थे।

६ अप्रैल, १९५४ एवं ६ मार्च, १९६५ का दिन स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा, क्योंकि उक्त तिथि को क्रमशः विद्यालय की आंशिक प्रस्वीकृति एवं पूर्ण प्रस्वीकृति प्राप्त हुई। आंशिक प्रस्वीकृति माध्यमिक शिक्षा पर्षद, बिहार ने १-१-१९६४ से ही प्रदान कर दी।

यों तो विद्यालय के विकास में पयनाल गाँव एवं इसके इलाके के सभी वर्गों का साधारणतः सहयोग प्राप्त हुआ। लेकिन विद्यालय के सक्रिय कार्यकर्ताओं में सर्वश्री श्री कृष्ण सिंह (मुनि जी) बजरंगी प्रसाद सिंह, राजेन्द्र शर्मा, रामयत्न शर्मा, ब्रज बिहारी सिंह, नन्दकिशोर शर्मा, रामअनूज शर्मा (आचारी जी), चन्द्रदेव सिंह (वेतन कार्यालय, पूर्व रेलवे, दानापुर), चन्द्रदेव सिंह (तबला मास्टर), बैजू सिंह, नबिन्द सिंह, हरिकृष्ण सिंह, ललन प्र० सिंह, बृजनन्दन प्र० सिंह, धर्मदत्त सिंह, रामप्रभु सिंह, परशुराम सिंह, शिवदत्त सिंह, रामजन्म सिंह (ड्राईवर), रामनन्दन सिंह, पारसनाथ सिंह, शालिग्राम सिंह, कामेश्वर सिंह (भूतपूर्व मुखिया), अकलू प्रसाद शर्मा, चन्द्रिका प्रसाद शर्मा (गाँधी जी), राम जन्म यादव, कैलास यादव, रामनिहोरा सिंह, कपिलदेव सिंह, भरत सिंह, शिववचन सिंह, रामचन्द्र महतो, सुदर्शन महतो, राजदेव मिश्र, रामचन्द्र राम, रामधनी पासवान एवं शिवउग्रह वर्मा के नाम विशेष उल्लेखनीय है छात्रों एवं युवा पीढ़ी का योग दान उल्लेखनीय रहा।

विद्यालय की स्थापना के समय जो शिक्षककार्यरत थे, उनमें से सर्व श्री कृष्ण मोहन सिंह एवं चन्द्रिका दत्त मिश्र अभी काम कर रहें हैं।

राम प्रसाद
मध्य
विद्यालय

उच्च
विद्यालय
प्रथम भाग
(खपड़ा-
पोस)

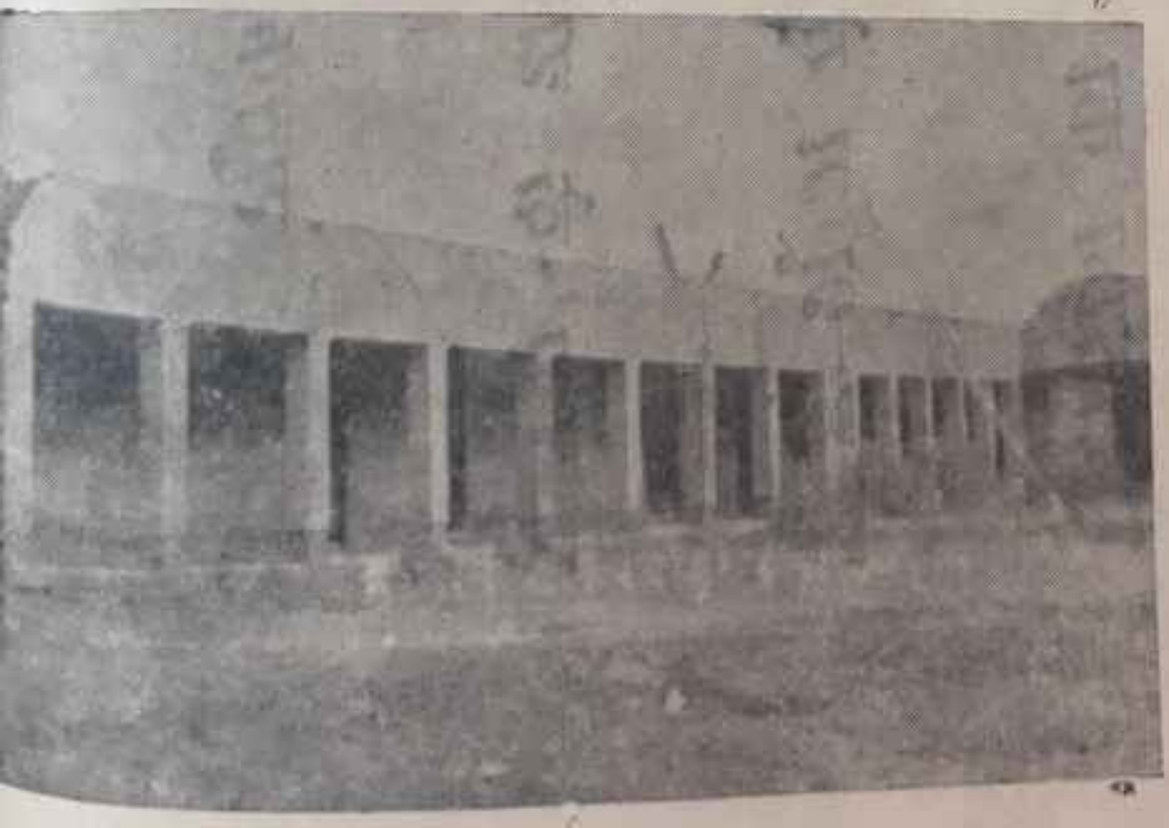

उच्च
विद्यालय
द्वितीय भाग
(छत)

पयनाल का इतिहास यह 'पैनाल' को बतला रहा,

यह भूमि ऐसी है जहाँ पर दूध का नाला बहा।

नाम के अनुरूप ही जिसने सृजा इस ग्राम को,

लड़के युवक बूढ़े पढ़ें निज पूर्वजों के नाम को॥

सम्प्रति शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारी इस प्रकार हैं:—

१	श्री राजेश्वर प्रसाद शर्मा	—	प्रधानाध्यापक
२	" कृष्ण मोहन सिंह	—	सहायक शिक्षक
३	" चन्द्रिकादत्त मिश्र	—	" "
४	" रामाशीष शर्मा	—	" "
५	" रामाशीष सिन्हा	—	" "
६	" सज्जनधारी सिंह	—	" "
७	" सुदर्शन शर्मा	—	" "
८	" कमल देव शर्मा	—	" "
९	" दीना नाथ उपाध्याय	—	" "
१०	" कृष्ण नन्दन प्रसाद शर्मा	—	" "
११	" सिद्ध नाथ सिंह	—	लिपिक
१२	" उमा शंकर ठाकुर	—	आदेशपाल
१३	" महेश ठाकुर	—	" "

प्रधान पंडित के पद पर काम करते हुए श्री कपिल देव मिश्र इस विद्यालय से, २ अक्टूबर, १९८० को कार्य मुक्त हो गये हैं। इस विद्यालय में आरंभ में काम करने वाले कई शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारी सम्प्रति बिहार के विभिन्न जिलों में विभिन्न सरकारी विभागों में कार्यरत हैं। विद्यालय की स्थापना के समय से सरकारीकरण (२ अक्टूबर, १९८०) तक विद्यालय के संचालन के लिए गठित प्रबन्ध समितियों के अध्यक्ष पद पर सर्वश्री श्री कृष्ण सिंह, कृष्ण मुरारि शर्मा, सुशील कुमार बक्सी, वि०डि०यो०, विश्वनाथ प्रसाद सिंह (पी० बी० पी०) एवं गणेश प्रसाद सिंह आसीन थे। सचिव के पद पर विद्यालय की स्थापना से लेकर सरकारी करण (२ अक्टूबर १९८०) तक श्री कृष्ण मुरारि शर्मा आसीन रहे। प्रस्वीकृति के पूर्व अल्प समय के लिए श्री ललन प्रसाद सिंह ने सचिव का पद संभाला था। उक्त अवधि में श्री कृष्ण मुरारि शर्मा अध्यक्ष थे। आरंभ में संयुक्त सचिव का भी पद था, जिस पर श्री शिवदत्त सिंह पद स्थापित थे।

प्रबन्ध समिति के सदस्यों में सर्वश्री महेश्वर शर्मा (तत्कालीन प्राचार्य, शिक्षक प्राशिक्षण विद्यालय, कन्हौली), श्री मती मनोरमा देवी (तत्कालीन

विधायिका, विक्रम विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र) राजकुमार प्रसाद (तत्कालीन प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी, बिहटा प्रखंड), चन्द्रदेव प्रसाद वर्मा (तत्कालीन कृषि मंत्री, बिहार सरकार, पटना), गजेन्द्र शर्मा' श्रीकृष्ण सिंह, चन्द्र देव सिंह (वेतन कार्यालय' पूर्व रेलवे, दाना पुर) चन्द्रदेव सिंह (तबला मास्टर), नन्द किशोर शर्मा, रामनसीब शर्मा, एवं रामगोविन्द राम के नाम उल्लेखनीय है।

अनेक विघ्न बाधाओं एवं बुरे तत्वों से जूझता हुआ यह विद्यालय सतत् प्रगति करता गया। इसकी प्रगति को देखकर बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा १९७० एवं १९७१ में इसे माध्यमिक वार्षिक परीक्षा का केन्द्र बनाया गया। सन् १९ १ से १९७३ ई० तक हिन्दी विद्यापीठ, देवघर द्वारा संचालित परीक्षाओं का केन्द्र भी यहाँ रहा। समान्यतः इस विद्यालय का परीक्षा फल बौसतन प्रतिशत से ज्यादा रहा है।

इस विद्यालय के कई पूर्ववर्ती छात्र डाक्टर एवं इंजिनियर बनकर देश सेवा में संलग्न है।

(च) स्वतन्त्रता संग्राम-क्रन्तिकारी कदम—

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।"
वह नर नहीं; नर-पशु समहि और मृतक समान है।"

इस ग्राम के स्वतन्त्रता-संग्राम का इतिहास अपने आपमें इस बात का प्रतीक है कि गाँव के सपूत समय की पुकार को अनसुनी नहीं कर सके उनके लिए मातृ-भूमि की सेवा ही सर्वोच्च रहा है।

'मुख्य ध्येय-कांग्रेस बैठक की सफलता'—

कांग्रेस की बैठक की सफलता के लिये समर्पित सपूतों में सर्वश्री चन्द्रिका सिंह, शिव केवल सिंह, कामेश्वर सिंह 'कका' नवल सिंह, ब्रह्मदेव सिंह, चन्द्रिका शर्मा 'गांधी' बढ़-चढ़कर भाग लेते थे और स्वतंत्रता संग्राम के अन्तिम समय तक सब के आगे रहे। इस यज्ञ की पूर्णाहुति में स्व० ब्रह्मदेव सिंह का अथक परिश्रम, अटूट लगन एवं अटल धैर्य को विस्तृत नहीं किया जा सकता। बैठक की सूचना देने के लिये उन्हें रात-दिन के अन्तर को भूलना पड़ा, भूख-प्यास की जलन को विस्मृत करना पड़ा तथा रूप-रंग एवं वेष-भूषा को समय-समय पर बदलना

था। सच पूछा जाय तो इस क्षेत्र की कांग्रेसी-बैठक के वे सूत्रधार ही नहीं, जनता के आधार स्तंभ थे।

'जनता समाचार साप्ताहिक पयनाल'

अपनी जादूगरी लेखनी के बल पर श्री रामवृक्ष बेनीपुरी जी के सम्पादन में 'जनता' भारतीय नागरीकों को 'स्वाधीनत' मानव का 'जन्म सिद्ध अधिकार' की शिक्षा दे रही थी। ब्रिटिस सरकार को यह कब बर्दास्त होता। उसने 'जनता' के प्रकाशन पर प्रतिबन्ध ही नहीं लगाया, लेखनी और शक्ति के अमर श्री बेनीपुरी जी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। इसके पश्चात् बिहार स्कूल से प्रिंटेड कांग्रेस समाचार (हिन्दी) 'नाइन्थ अगस्त (अंग्रेजी) का प्रकाशन होने लगा। वितरण करने का श्रेय हमारे ग्रामीण युवक चन्द्रिका शर्मा एवं कपिलदेव सिंह को था। 'जनता' की एक प्रति से दर्जनों गाँवों के नागरिक प्रभावित होते थे और ऐसा उपयुक्त युवकों के चलते ही हो पाता था।

भारतीय कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार की चुनावी शक्ति-परीक्षा—

सन १९३७ ई० की घटना है। भारतीय कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार की शक्ति-परीक्षा इस क्षेत्र में हुई।

भारतीय कांग्रेस के प्रत्याशी बन कर आये 'बाबा'

अमहरा निवासी श्री श्याम नन्दन सिंह—इन्हें सर्वपूज्य स्वामी सहजानन्द सरस्वती का समर्थन एंव आशीर्वाद-प्राप्त था। इनके प्रतिद्वन्दी बनकर आये थे धरहरा के धनाढ्य जमींदार श्री रजनधारी सिंह। इनका प्रचार मोटर एवं दूर संचार-यंत्र से होता था। ऐसे ही समय में श्यामनन्दन बाबू पयनाल आये थे। शिवालय पर कुश्ती हो रही थी। ग्रामीण भाइयों ने उन्हें इज्जत के साथ स्थान दिया। इसी बीच खड़ा होकर श्यामनन्दन बाबू ने कहा-"आपलोग इस अखाड़े में लंगोटा और जाँघिया पहन कर लड़ रहे हैं और मैं रजनधारी बाबू से खादी की साधारण धोती एवं कुर्त्ता पहनकर आप लोगों के वोट पर विश्वस्त होकर लड़ रहा हूँ। हम दोनों की कुश्ती धनी और गरीब की कुश्ती है। अन्याय और न्याय की कुश्ती है। गरीब सुदामा की इज्जत आप लोगों के हाथों में है।"

श्यामनन्दन बाबू का इतना कहना था कि 'जयजयकार' की ध्वनि गूँज उठी। सबों ने उन्हें तहेदिल से समर्थन करने का वचन दिया। पयनाल-वासी श्यामनन्दन बाबू की हार-जीत को अपनी हार-जीत मान बैठे। फलतः यहाँ के लोगों ने सभी तरह से उनकी मदद की।

रजनधारी बाबू नन्दकिशोर सिंह के दरवाजे से लेकर बाबू नरसिंह नारायण सिंह के दरवाजे तक की सड़क को ईंट से पाट दिये, किन्तु सारा पयनाल महात्मागांधी, स्वामी जी एवं श्यामनन्दन बाबू की जय करता रहा। जिला-बोर्ड के चेयरमैन होने के नाते रजनधारी बाबू बोट की खुशामद में श्री चन्द्रिका सिंह (चन्दर गुरुजी) को शिक्षक के पद पर बहाल करने के लिए कहा था।

इस पर गुरुजी ने कहा, स्वाधीन होकर रोटी के लिए बिलबिलाना मुझे पसन्द होगा, किन्तु पराधीनता में शिक्षक क्या, चेयरमेन के पद को भी मैं लात मार दूँगा" ऐसे सपूतों पर इस गाँव को गर्व है।

श्यामनन्दन बाबू प्रचंड बहुमत से विजयी घोषित हुए।

श्री श्यामनन्दन बाबू—१७,५४९ मत

श्री रजनधारी बाबू—४,८७९ मत

ब्रिटिश सरकार के दलाल दफादार की पगड़ी की होली

सन् १९४० ई० की घटना है-स्वतंत्रता पुजारी पयनाल वासियों को महमदपुर के दफादार श्री गोबर्द्धन सिंह से झड़प हो गई। इन्हें लोग ब्रिटिश सरकार के चाटुकार चमचा समझते थे। इनके साथ बात इतनी बढ़ गई कि श्री माधव प्र० सिंह ने फलसा और पगड़ी छीनली और पगड़ी जला दी फलत: सर्वश्री माधव प्र० सिंह, भोला प्र० सिंह, मिथिला प्र० सिंह, राजेन्द्र प्र० सिंह गणेश प्र० सिंह, आदि पर मुकदमा दायर हुआ, परन्तु दफादार के आरोप को दानापुर कोर्ट ने सबूत नहीं मिलने पर इन लोगों को निर्दोष घोषित कर दिया इसी बीच ९-८-४२ को समाचार पत्रों में खबर छपी कि भारत छोड़ो के जवाब में महात्मा गाँधी, जयप्रकाश नारायण एवं अन्य वरिष्ठ नेताओं को ब्रिटिश सरकार ने जेल भेज दिया है। जवानों का खून खौल गया। लोग निर्भीक होकर सरकारी आदेश की अवहेलना करने लगे। इस अवधि में मनेर के दारोगा श्री बनवारी लाल का आदेश आया कि पयनाल के मान्य व्यक्ति आकर थाने पर मिलें सबों ने इस आदेश का विरोध किया और कोई थाने पर नहीं गया।

रेलवे लाईन उखाड़ने, पुलों को ध्वस्त करने, सड़कों को पेड़ों से पाटने, सदीसोपुर स्टेशन को क्षतिग्रस्त करने के अभियोग में सर्वश्री चन्द्रिका सिंह, शिव केवल सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, नवल सिंह, मिथिला सिंह, राम अनुराग सिंह तथा दर्जनों ग्रामीणों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। इसी अभियोग में पैनाठी के श्री चन्द्रदेव वर्मा, नवल वर्मा, सिदेव प्रसाद और बसीढ़ा के श्री भागवत बाबू को भी गिरफ्तार किया गया।

पयनाल का चन्द्रशेखर आजाद बाबू मिथिला शरण सिंह

यह लिखते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि इस गाँव के भी युवकों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कम यातनाएँ नहीं सही। श्री मिथिला शरण सिंह शिवालय पर थे। रेलवे लाईन उखाड़ने एवं बिहटा रेलगाड़ी लूटने के अभियोग में गिरफ्तारी के निमित्त दानापुर के एस० डी० ओ० 'रे' साहब एवं मनेर थाना के प्रभारी श्री बनवारी लाल, गोवर्द्धन सिंह दफादार के साथ आ धमके। दफादार के इशारे पर श्री लाल ने मिथिला शरण सिंह को बुलाया और पूछा –'तुम्हारा नाम क्या है?

मिथिला शरण ने निर्भीकता से जवाब दिया—"आजाद"

दारोगा बनवारी लाल ने आँखें गुरेड़ कर कहा—

'ठीक से बातें करो, हड्डी-पसली एक कर दी जायगी। जेल की बहार दीवारी में दम तोड़ दोगे'।

मिथिला शरण ने जवाब दिया—तुम जेल की धमकी देते हो? मैं खुद जेल जाऊँगा और भारत माता की जंजीर को काटकर, आजाद कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूँगा'। फिर उनके शरीर पर निर्ममता के साथ हण्टर बरसने लगे। मार खाते-खाते बेहोश हो गये। फिर उनको होश में लाया गया।

रे साहब बोले—तुम क्या चाहते हो?

मिथिला शरण—'आजादी' आजादी के अलावे चाहूँगा ही क्या? लड़खड़ाते स्वर में श्री सिंह किसी तरह बोल पाये। उस दिन से लोग इन्हें 'आजाद साहब' कहने लगे।

इन्कलाबी दौरा—२३-८-४२ को श्री राम स्वरूप प्रसाद, श्री मनी लाल (ग्राम सदीसोपुर), राम कृपाल सिंह, नखीदा सिंह, राम गती राय, (गोपालपुर) चन्द्रदेव वर्मा, सिदेव सिंह, नवल प्रसाद (पैनाठी) आदि पचासों 'इन्कलाबी' नारा लगाते हुए पयनाल गाँव में प्रवेश किये। यहाँ के युवकों ने आगे बढ़कर इनका

साथ दिया और सभा कर कसमें खायीं कि इस आजादी की लड़ाई को सफल बनाने के लिए तन, मन और धन तक अर्पण कर दूँगा। सर्व सम्मति से युद्ध समिति का गठन किया गया, जिसका उद्देश्य स्वतंत्रता सेनानियों की संख्या बढ़ाना, लोगों में आजादी का महा-मंत्र फूंकना, अंग्रेजों के साथ असहयोग करना, खादी व्यवहार का प्रचार करना, सत्याग्रह की शक्ति से परिचित कराना था। इस युद्ध समिति का गठन पहले ग्रामीण स्तर पर हुआ। फिर थाना-स्तर पर और बाद में डिवीजन, जिला और प्रान्त-स्तर पर हुआ। युद्ध समिति के कर्मठ सेनानियों में सर्व श्री चन्द्रिका शर्मा, कपिलदेव सिंह, तृपित नारायण सिंह, राम नसीब शर्मा, तथा राम स्वारथ महतो (पैनाठी) का नाम उल्लेखनीय है। थाना-स्तर के युद्ध सेनानियों में—श्री बलराम द्विवेदी 'दिनेश', चन्द्रिका शर्मा, चन्द्रदेव प्रसाद वर्मा, विक्रमादित्य सिंह, राम नसीब शर्मा, राधा प्रसाद, राम गति राय, श्री भगवान सिंह, दुनियारी सिंह, श्री कृष्ण सिंह, भोला प्र० सिंह, वृज नन्दन प्रसाद सिंह आदि थे। सब डिवीजन स्तर पर—बलराम द्विवेदी 'दिनेश', राम केवल शर्मा, कपिलदेव त्रिपाठी, रघुवीर सिंह, अनन्त मिश्र और अनन्त शर्मा। जिला-स्तर पर—रमण बिहारी सिंह, राम यश शुक्ल, के० गोपाल, राणा शिवलाख पति सिंह, चन्द्रिका सिंह उर्फ मेजर साहब, देवी सिंह, राम ध्यान सिंह, और आशा देवी।

प्रान्त-स्तर पर—सर्वश्री योगेन्द्र शुक्ल, सूर्यनारायण सिंह, सूर्यनाथ चौबे, प्रो० बलदेव नारायण, अनिरुद्ध कुमार, चन्द्रिका प्रसाद सिंह (डुमरावाँ) एस० एच० रजी 'अजीमाबादी' सियाराम सिंह, नक्षत्र मालाकर, लषण लाल कपूर।

युद्ध समिति की ऐतिहासिक बैठक:—युद्ध समिति के सदस्यों को निर्देश था कि किसी शर्त पर सभा-स्थल की सूचना अन्य को नहीं दें, परिवार के सदस्य को भी नहीं। अक्सर मीटिंग बहपुरा, पैनाठी, छितरौली, गोपाल पुर पयनाल, सत्तर, रेवा, चौरा-गोपालपुर, कन्हौली, विष्णुपुरा, सदीसोपुर, कालापुर बिहटा, मौदही, सुरौंध, सिकन्दरपुर, दरियापुर, सहबाजपुर आदि गाँवों के एकान्त स्थलों में होती थीं। इसमें सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित होते थे, गुप्त रूप से वेष-भूषा बदलकर। सभा-स्थल की सुरक्षा एवं सफलता के लिए इर्द-गिर्द नवयुवकों को सतर्क रखा जाता था, ताकि पुलिस के आगमन के पूर्व सभासद भाग निकलें।

कांग्रेस के अन्य कर्मठ सेनानी :—बाद में सैनिक दमन के चलते कुछ दिनों तक कार्य-क्रम रोक दिया गया, परन्तु सभी बड़े नेताओं को जेल में बन्द

ति के कारण कार्य को आगे बढ़ाने के लिए क्षेत्र में आये :—श्री राजेन्द्र प्र० सिंह
गणेश प्रसाद सिंह एवं चन्द्रिका सिंह। जी-जान से इन्होंने कांग्रेस की सेवा की।
ये तीन श्री मनी लाल (सदीसोपुर) के साथ जेल भी गये। मनी लाल को दो
वर्षों का कठोर कारावास हुआ। चन्द्रिका सिंह 'गाँधी जी' आज भी जीवित हैं
और इन्हें स्वतंत्रता सेनानी के रूप में भारत सरकार से २०० रु० मासिक पेंशन
मिलता है।

श्री गणेश प्र० सिंह कई क्रान्तिकारियों के गुप्त परचों और पत्रों को यथा
स्थान पहुँचाते रहे। सन् १९४२ की अगस्त क्रान्ति में भी इनकी बड़ी तत्परता
रही। आजादी मिलने के बाद ये पयनाल ग्राम पंचायत के स्तुत्य मुखिया रहे।
श्री कपिलदेव सिंह पहले मिलीटरी में एकाउण्टेण्ट रहे। अभी दानापुर रेलवे
प्रमंडल में उच्च दर्जे के टी०टी० आई० हैं।

महात्मा गाँधी से स्वतंत्रता पुजारियों की प्रथम भेंट

पंडित दुग्धेश्वर मिश्र अपने ग्रामीण-दोस्तों के साथ सदीसोपुर संस्कृत-पाठ-
शाला में पढ़ने जा रहे थे। स्टेशन पर इन्होंने बड़ी भीड़ देखी। पता चला कि
ग्यारह बजे की गाड़ी से महात्मा गाँधी इसी मार्ग से पटना जाने वाले हैं। कुछ
विलम्ब से गाड़ी आई। स्टेशन मास्टर एवं दर्शक समुदाय के आग्रह से कुछ, अधिक
देर तक गाड़ी रुकी रही। बापू के साथ माता कस्तूरबा भी थीं। पिछली बेंच
पर मौलाना शौकत अली और मोहम्मद अली बैठे थे। दो-चार वाक्यों में बापू
ने उमड़ती भीड़ को सम्बोधित किया। महात्मा गांधी की जय से वातावरण गूँज
उठा। गाड़ी चली गई। लोग अपलक नेत्रों से गाड़ी को तब तक देखते रहे
जब तक ओझल न हुई।

अध्यापक का पश्चाताप

पं० दुग्धेश्वर मिश्र करीब साढ़े बारह बजे विद्यालय पहुँचे। उन्हें देर
से आने के कारण वर्गाध्यापक ने प्रधानाध्यापक पं० रघुवीर शरण उपाध्याय
व्याकरणाचार्य-तीर्थ के पास भेज दिया। जब गाँधी जी के दर्शन करने में विद्यार्थी
को देर होने की बात प्रधानाध्यापक को ज्ञात हुई, तो वे फूले न समाये कि मेरे
विद्यार्थी भी देश की स्वतंत्रता की भावना रखते हैं और वे पश्चाताप करने लगे कि
मैं भाग्य का कैसा खोटा हूँ कि पास से बापू चले गये और मैं देख भी नहीं पाया।
उन्होंने हम लोगों की प्रशंसा की तथा कल पटने में होने वाली बैठक में जाने के
लिये छुट्टी भी दे दी।

महात्मा गाँधी के दर्शन और प्रवचन का प्रभाव—पंडित जी से पटने में होने वाली सभा की सूचना मिली। दर्जनों ग्रामीण मित्रों के साथ पं० दुग्धेश्वर मिश्र पटना चल दिये। महात्मा गाँधी के दर्शन और प्रवचन सुनने के लिए हजारों हजार की संख्या में विभिन्न जगहों से लोग आये थे। महात्मा जी का राष्ट्रवादी ऐतिहासिक भाषण हुआ। सभी के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा। सभी ने स्वतंत्रता आन्दोलन के लिये सभी तरह की कुर्बानी करने की कसमें खायीं। वहाँ से सब लोग आये और सदीसोपुर निवासी डिप्टी साहब श्री राय श्यामा चरण जी के प्रांगण में सभा हुई। इस सभा में निकटवर्त्ती सभी गाँवों के प्रतिनिधि आये थे। पयनाल के दर्जनों व्यक्ति उपस्थित हुए थे। आन्दोलन में गति लाने के ख्याल से सेवा-समिति, प्रचार-प्रसार-समिति, स्वतंत्रता-वाहिनी आदि प्रकार की सेना के संगठन की योजना बनी।

पयनाल में कांग्रेस कमिटी की स्थापना—श्री गंगा प्रसाद सिंह की अध्यक्षता एवं पंडित नित्यानन्द मिश्र की उपाध्यक्षता में गाँव में कांग्रेस कमिटी का गठन हुआ। सेवा-समिति के सदस्यों में प्रमुख व्यक्ति थे—सर्व श्री दुग्धेश्वर मिश्र, कमला मिश्र, नथुनी सिंह, राम दास महतो, जट्टू गोप, राम चन्द्र सिंह, चन्द्रिका सिंह (गुरुजी), रुपलाल महतो, शिव केवल सिंह, सरयू सिंह आदि।

सिपाहियों के मुखिया थे श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह। सेवा-समिति के सदस्य बाजारों में घूम-घूम कर मूल्य की स्थिरता को कायम रखते, अन्यायियों एवं ब्रिटिश सरकार के समर्थकों को उचित राय देकर सही रास्ते पर लाते। विलायती वस्त्रों का बहिष्कार एवं खादी धारण की शिक्षा देते। ग्रामीण झगड़ों की बढ़ोत्तरी पर नियंत्रण रखते, मद्यपान और मादक द्रव्यों के सेवन का विरोध करते। लेखक का काम इस पुस्तक का लेखक करता।

सेवा-समिति के सिपाहियों की गिरफ्तारी—सेवा-समिति के सदस्यों की तत्परता से ग्रामीण क्षेत्रों में राम-राज्य की कल्पना साकार होती प्रतीत होने लगी। उन दिनों आपसी झगड़ों का निबटारा और भेद-भाव की भावना का परिष्कार, जातीयता का तिरस्कार, न्यायिक फैसला, एकता में विश्वास जैसे कार्य इस गाँव के लिए ऐतिहासिक महत्व रखते हैं।

सेवा-समिति के सिपाहियों के सफल कार्यों को देखकर ब्रिटिश सरकार की वफादार पुलिस घबड़ाने लगी। सेवा-समिति के सिपाहियों को पकड़-पकड़ कर जेल भेजा जाने लगा। पयनाल के ३०-४० सिपाही जेल गये। उस समय

सेवा-समिति के सिपाहियों से जेल भर गया था। अन्त में पुलिस ऐसे सिपाहियों को जंगल या सुनसान जगहों में ले जा कर छोड़ने लगी। पुस्तक-लेखक के चाचा कैलास सिंह को पुलिस ने सुरौंधा जंगल के पास सोन नदी में कुदा कर छोड़ दिया था। किसी तरह वे घर लौटे थे। उस समय पूरे सप्ताह का लेखा-जोखा सप्ताहान्त में श्री द्वारिका प्रसाद सिंह के समक्ष पेश किया जाता और उस पर विचार किया जाता था तथा आगे के कार्यों की तैयारी की योजना बनती थी।

एक करोड़ रुपयों की कांग्रेस कमिटी की घोषणा :—

कांग्रेस कमिटी ने घोषणा की कि तिलक-स्वराज्यफंड के लिए ३१ दिसम्बर तक एक करोड़ रुपयों की जरुरत है। जगत बाबू इस अभियान के सिलसिले में पयनाल आये थे और प्रवचन के क्रम में उन्होंने एक पद कहा था—

"गज-मुखते कणिकागिर्‌यो, घटे न तासु अहार।
सो लै चली पिपीलिका, पालन को परिवार॥"

इस पद का प्रभाव ऐसा पड़ा कि घर-घर से मुठिया (चुंगी) काढ़ने की व्यवस्था हो गई। नम्बर दे-दे कर हरएक घर में हंडिका रख दी गई। भोजन बनाने के पूर्व एक मुट्ठी अन्न हंडिका में रख दिया जाने लगा। साप्ताहिक उसकी तहसील होती थी। उन्हें बेच कर प्राप्त राशि को कांग्रेस कमिटी को भेज दिया जाता। इस छोटी सी सहायता से बहुत बड़ा कार्य हो जाता था। यह फंड 'तिलक-फंड' के नाम से विख्यात हुआ।

चर्खा-चालन एवं खादी-धारण का संकल्प—महात्मा गांधी के आदेशानुसार चर्खा चलाने तथा खादी पहनने में भी पयनाल पीछे नहीं रहा। पं० दुग्धेश्वर मिश्र सदाकत आश्रम (पटना) में मजरूल हक साहब की अध्यक्षता में जो मीटिंग हुई थी, उसमें शामिल हुए थे। साथ ही अपने साथियों के साथ घूम-घूमकर उन्होंने सुदूर देहातों में चर्खा-चालन एवं खादी धारण का प्रचार किया था। इस से सम्बद्ध साप्ताहिक सभा होती थी, जिसमें बड़े-बड़े नेता शामिल होते थे, जैसे—श्री पुण्य देव शर्मा, कीर्ति नारायण सिंह, रामचरित्र सिंह, जगत नारायण जी, राम विलास सिंह (विष्णुपुरा), तुलसी सिंह (अजवाँ) आदि।

नमक-सत्याग्रह और नेताओं की गिरफ्तारी—

पयनाल में भी खबर पहुँची कि नमक के सत्याग्रह आन्दोलन में देश के बड़े-बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया है, तो इस गाँव ने इस गिरफ्तारी के

विरोध में एक दिन का उपवास किया। साथ ही इस अत्याचार और अन्याय के खिलाफ खुल कर अन्य गाँवों के लोगों को विरोध के लिये उसकाया। इस सिलसिले में कई जगहों पर हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को पुलिस की लाठियाँ भी खानी पड़ी।

पटने में साइमन कमीशन का विरोध - सन् १९३० ई० में साइमन कमीशन के विरोध में पटने के हार्डिंज-पार्क में ऐतिहासिक सभा हुई। राजेन्द्र बाबू के नेतृत्व में लाखों-लाख स्वतंत्रता पुजारी इस जुलूस में भाग लिये। जन-नायक राजेन्द्र बाबू काले रंग की चौवन्दा मिरजई, गाँधी टोपी एवं काला झंडा के साथ जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे। साइंस कॉलेज के पास घोड़े पर सवार सार्जेण्ट सैकड़ों सैनिकों के साथ आया और उसने मार-पीट शुरू कर दी। सैकड़ों सेनानी घायल हुए। फिर भी उसी रात गुलजार बाग में सभा सम्पन्न हुई। इस जुलूस में यहाँ के सैकड़ों नव युवक सम्मिलित हुये थे। जिनमें पं० दुग्धेश्वर मिश्र, तीर्थानन्द मिश्र, चन्द्रिका सिंह, कपिल देव सिंह, रामयत्न शर्मा, गणेश प्रसाद सिंह आदि थे। उन में से कुछ घायल भी हुए थे, जो प्राथमिक उपचार से ही स्वस्थ हो गये।

असहयोग आन्दोलन का गुल—अगस्त १९४२ ई० को बम्बई में स्वतंत्रता पुजारियों के वरिष्ठ नेताओं की गिरफ्तारी हुई। सारा भारत युद्ध के कगार पर खड़ा हो गया। पटना सचिवालय पर तिरंगा फहराने के क्रम में सप्त-पुत्र शहीद हुए। सारे भारतवासी सरकारी कार्य-क्रमों को ठप्प कर देने के लिये कृत-संकल्प हो गये। मेरे गाँव के श्री शिव केवल सिंह, मथुरा सिंह, कामेश्वर सिंह, 'काका', राम नसीब शर्मा तथा कपिल देव सिंह को सरकार के कार्य-क्रमों में अवरोध पैदा करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ को तो निर्जन स्थलों में ले जाकर मार-पीट करके छोड़ दिया गया। अन्य को एक-दो सप्ताह के बाद जेल की चहार दीवारी से मुक्त किया गया।

सामूहिक जुर्माना—स्वतंत्रता आन्दोलन में पयनाल की सक्रियता को देख कर पुलिस अधिकारियों ने चौकीदारी टैक्स का पचीस गुणा ज्यादा सामूहिक जुर्माना के रुप में वसूल करने की नोटिस दी। इस जुर्माना के परिवेक्ष्य में पुलिस की बैमनष्यता काम कर रही थी। श्री मनी लाल जी के नेतृत्व में २१ सितम्बर १९४२ ई० को सरकार के अमानवीय व्यवहार के खिलाफ अभूत-पूर्व जुलूस निकला। पयनाल के बहुत से लोग बड़े उत्साह के साथ इसमें भाग लिये। इतने घोर अत्याचार के बाद भी यह गाँव आन्दोलन में सक्रिय रहा।

कांग्रेस के श्रेष्ठ गुप्तचरों में पयनाल के सर्व श्री राम नसीब शर्मा, चन्द्रिका शर्मा, 'गाँधी', राजेन्द्र प्रसाद सिंह, माधो प्र० सिंह, कामेश्वर सिंह 'काका', शिव केवल सिंह, भोला प्रसाद सिंह, राजा प्रसाद सिंह, कपिल देव सिंह आदि थे।

इनसे रेलवे-लाईन पर उसकी सुरक्षा के लिए पहरा दिलवाया जाता था। एक आदमी के हाथ में झंडा रहता और वह झंडा बारी-बारी से लोगों के हाथ में घूमता रहता। जिसके पास झंडा पहुँचता था, उसी का काम था लोगों को इकट्ठा करना। जब राजा प्रसाद सिंह के पास झंडा पहुँचा तो उन्होंने झंडा को फाड़ दिया। तब से पहरा बन्द हो गया।

मनीलाल के नेतृत्व में तीसरा ऐतिहासिक जुलूस—३ जनवरी १९४३ ई० को श्री मनीलाल जी के नेतृत्व में पयनाल से फिर एक जुलूस निकला। जुलूस सदीसोपुर पहुँचा ही था कि पुलिस आ गई। श्री मनी लाल के साथ पयनाल के सर्वश्री चन्द्रिका शर्मा 'गांधी', राजा प्रसाद सिंह, कपिलदेव सिंह, सत्य नारायण सिंह, राम नसीब शर्मा, भोला प्र० सिंह और राजेन्द्र प्र० सिंह गिरफ्तार हो गये, किन्तु एक सप्ताह के भीतर ही इन्हें छोड़ दिया गया।

देश हित सर्वस्व समर्पित श्री चन्द्रिका शर्मा (गाँधीजी)—२१ मार्च १९४३ ई० को दानापुर सब-डिवीजन के कार्यकर्त्ताओं की बैठक श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह के दरवाजे पर हुई। इस बैठक की अध्यक्षता श्री कीर्तिनारायण सिंह ने की थी। पैनाठी ग्राम के श्री चन्द्रदेव प्रसाद वर्मा को सर्व सम्मति से डाकिये का काम सौंपा गया था। किन्तु पहली बार में ही श्री वर्मा पटना जंकशन पर गिरफ्तार हो गये। तब यह कार्य श्री चन्द्रिका शर्मा 'गाँधी' को सौंपा गया। करीब साल भर तक श्री शर्मा ने अपनी दूर दर्शी प्रतिभा से निर्विघ्न कार्य किया। ६ मार्च १९४४ ई० को 'बउआं हरपुरा' में सब डिवीजन के कार्यकर्त्ताओं की मीटिंग हो रही थी एकाएक पुलिस के सैंकड़ों जवान सभा को घेर लिये। कई कार्य कर्त्ताओं की गिरफ्तारी हुई। ४ महीने तक विचाराधीन कैदी के रूप में रहने के बाद एक साल की सजा पाकर श्री चन्द्रिका शर्मा 'गाँधी' जेल चले गये। सरकार की ओर से अनुदान दिया जा रहा था। राजनीति-पीड़ित कहलाने के अपमान से श्री शर्मा ने उक्त अनुदान को स्वीकार नहीं किया। श्री मिथिला शरण सिंह को अनजाने चार सौ रुपये की राशि मिली। जब सरकार ने स्वतंत्रता सेनानियों को सहायतार्थ पेंशन देने की घोषणा की तब श्री शर्मा ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।

निष्कर्ष:—इस तरह स्वतंत्रता संग्राम में पयनाल-वासियों ने तन-मन-धन

से साथ दिया। यहाँ के लोगों ने जालिम सरकार के जुर्म से कभी घुटने नहीं टेके। महात्मा गांधी के आदेश पर प्राण की बाजी लगाकर स्वतंत्रता के दीवाने बने रहे। पयनाल ग्राम के इन सपूतों पर इस ग्राम के ग्रामीणों को बहुत गर्व है, जिन्होंने पयनाल की मिट्टी में समाहित पौरुष, ओज एवं सामर्थ्य का परिचय अंगार भरे रास्तों पर चल कर दिया। पयनाल-वासी इन सपूतों की अतीत पर गर्वोन्नित हैं।

छ—सामाजिक कार्य

मोतिया बिंद की धर्मार्थ शल्य चिकित्सा (आयोजक श्री नन्द कुमार मिश्र)—

नन्द कुमार मिश्र का जन्म संवत् १९७६ में हुआ था। ये मैट्रिक पास करके सिमरी मिडल स्कूल में शिक्षक का कार्य कर रहे थे। ये न्याय शास्त्र के प्रथम खण्ड एवं विशारद परीक्षोत्तीर्ण थे। आइ० ए० का कोर्स भी सम्पन्न कर चुके थे। भागलपुर जिलान्तर्गत 'छत्रहार' ग्राम के निवासी प० विश्वनाथ शास्त्री एक समय सिमरी ग्राम में आये। वहाँ उनका किसी प्रकार का सम्बन्ध था। वे शिला लेख (रिसर्च स्कालर) के वाचक थे। अकस्मात् सिमरी ग्राम के मि० ई० स्कूल में पहुँचे और श्री नन्द कुमार मिश्र से सम्पर्क हो गया। शास्त्री जी बोले कि आप अपने ग्राम में मोतिया बिन्द के धर्मार्थ ऑपरेशन का एक केन्द्र खोलें। मैं यथा-शक्ति सहयोग प्रदान करूँगा। नन्द कुमार जी भला इस सुअवसर को कैसे खाली जाने देते। तुरत तैयार हो गये। तत्काल ही कार्य प्रारम्भ हो गया। उन्हीं के प्रयास से सन् १९४३ ई० में प्रथम बार यहाँ नेत्र-दान-यज्ञ सम्पन्न हुआ। प्रथम वर्ष लगभग २५० रोगियों के मोतिया बिन्द का आपरेशन हुआ। रोगियों के आराम के लिए मुलायम बिछावन की जरूरत थी, इसलिए ऊख के सूखे पत्ते और धान के पयाप्ति पुआल बिछा दिये गये थे। रोगियों को खाने के लिये खिचड़ी और दूध का इन्तजाम था और ग्रामीणों के सहयोग से ठीक समय पर पहुँच जाता था। उनलोगों की सेवा के लिए गाँव के लोग चौबीस घंटे तत्पर रहते थे। नवयुवकों का बैच बना दिया गया था। वे लोग अपने-अपने नियत समय पर रोगियों की सेवा के लिये उपस्थित हो जाते थे। गाँव के वैद्य भी रोगियों की सेवा शुश्रूषा में तत्पर रहते थे। प्रथम बार यह चिकित्सा १४-१५ फरवरी १९४३ ई० को पयनाल प्राथमिक विद्यालय के प्रांगण में हुई।

डॉ० राजा सेठ बलदेव दास काशी के प्रधान चिकित्सक डॉ० राम बिहारी शुक्ल द्वारा मोतिया बिन्द का धमार्थ आपरेशन सम्पन्न हुआ।

श्री नन्द कुमार मिश्र जी रेलवे ट्रेनिङ्ग स्कूल चंदौसी से स्टेशन मास्टर की ट्रेनिङ्ग पास करके कुछ दिन स्टेशन मास्टर का कार्य भी किये थे। अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि १९४३ ई० के नेत्र-दान यज्ञ को सम्पन्न करके १९४४ ई० में वे परलोक वासी हो गये। परन्तु, उनके अग्रज पं० दुग्धेश्वर मिश्र के प्रयत्न से यह नेत्र-दान यज्ञ आगे भी सम्पन्न होता रहा। स्वर्गीय नन्द कुमार मिश्र की स्मृति में १९४४ में भी यह यज्ञ सम्पन्न हुआ। यह कार्य सन् १९४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ५९ और १९६१ ई० में होकर बन्द हो गया। रोगियों की संख्या २५० से ३५० तक हो जाया करती थी।

(ज) डाक घर – पयनाल (पटना) में दिनांक ८-१-१९५० ई० को श्री हरि कृष्ण सिंह 'विशारद' शिक्षक के मकान में एक शाखा डाकघर स्थापित हुआ, जिसके पोस्ट मास्टर श्री हरि कृष्ण सिंह स्वयं हुए।

(झ) ग्राम – पंचायत राज्य, पयनाल – पंचायती राज्य की स्थापना के साथ पयनाल को विहटा प्रखण्ड-विकास कार्यालय से सम्बद्ध कर दिया गया। पयनाल को स्वतंत्र पंचायत के रूप में अस्तित्व प्राप्त हुआ। इस के अन्तर्गत प्रारंभ में अन्य कई छोटी-बड़ी बस्तियाँ जुड़ी रहीं। जैसे—कन्हौली, भगवतीपुर, बघपुर सुभाव टोला, जैतीपुर, श्रीचन्द पुर, अहिया पुर, महमद पुर, मिलकं चक, मुस्तफापुर, हिरामनपुर आदि। यद्यपि मत-दाताओं की संख्या के आधार पर पयनाल के साथ अन्य बस्तियों को इतनी संख्या में जोड़ने की आवश्यकता न थी, क्योंकि एक पंचायत के लिए जितनी जन-संख्या या जितने मतदाता की अपेक्षा थी, पयनाल एक दो टोले को लेकर इस अपेक्षा की पूर्ति करने में समर्थ था, फिर भी इस पंचायत को इतना विस्तृत एवं व्यापक बनाया गया। इसके परिवेक्ष्य में अधिकारियों का ख्याल यहीं रहा होगा कि पयनाल जमीन्दारों की बस्ती है और अन्य गाँवों में अधिकांशतः रैयत हैं। पयनाल के संदर्भ में उनका समुचित विकास एवं उत्थान होगा। सम्प्रति उपर्युक्त गाँवों में से कुछ गाँव अन्य पँचायत से सम्बद्ध कर दिये गये हैं। जैसे कन्हौली, सुभाव टोला, बघपुर, जैतीपुर आदि। जब से पंचायती चुनाव की प्रक्रिया जारी हुई तब से अब तक छः बार चुनाव हुए हैं, जिसकी तालिका निम्नलिखित है :—

वर्ष	मुखिया	सरपंच
सन् १९५२ ई०	श्री कामेश्वर सिंह 'काका' (पयनाल)	श्री गणेश प्रसाद सिंह (पयनाल)

सन् १९५७ ई०	श्री सुदामा वर्मा (भगवतीपुर)	श्री राम अनूप शर्मा (पयनाल)
सन् १९६१ ई०	श्री गणेश प्रसाद सिंह (पयनाल)	श्री राम जन्म महतो (मुस्तफापुर)
सन् १९६४ ई०	श्री गणेश प्रसाद सिंह (पयनाल)	श्री रामजन्म वर्मा (श्रीचन्दपुर)
सन् १९७१ ई०	श्री रामदेव सिंह (पयनाल)	श्री पंचम राय (सुभन्ध टोला)
सन् १९७८ ई०	श्री पारसनाथ सिंह (पयनाल)	श्री सिद्धनाथ सिंह (पयनाल.

अपने अपने मुखियत्व काल में ऐसे तो सभी ने सामाजिक कार्य किये, किन्तु इस क्षेत्र में जितनी ख्याति एवं लोक प्रियता श्री गणेश प्रसाद सिंह को मिली उतनी अन्य किसी को नहीं।

(ट)—सहयोग-समितियाँ

बहुधन्धी सहयोग-समिति:—पयनाल (पटना) में सन १९४६ ई० में एक बहुधन्धी सहयोग समिति की स्थापना हुई थी और अब यह लक्ष्मणपुर-पयनाल प्राथमिक कृषि शाख सहयोग समिति के रूप में परिवर्तित हो गयी है।

दुग्ध उत्पादक सहयोग समिति:—दिनांक—१९-१-१९७७ ई० को इस सहयोग समिति का कार्य शुरु हुआ।

फल-सब्जी उत्पादक सहयोग समिति:—दिनांक—२१-९-७७ को यहाँ पर एक फल-सब्जी उत्पादक सहयोग-समिति संगठित हुई।

(ठ)-हिन्दी साहित्य-सदन (साहित्यिक संस्थान)

सदन की स्थापना का मूल श्रेय युवा साहित्यकार प्रोफेसर बाल मुकुन्द पयनाली (लेखक के कनिष्ठ पुत्र) को है। इसकी स्थापना सन् १९६९ ई० में हुई। जब 'पयनाली' हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्र थे और 'सुन्दरी' खण्ड-काव्य की रचना कर चुके थे। इसकी प्रथम बैठक नाटय साम्राट स्वर्गीय जय शंकर प्रसाद की जयंती पर हुई थी, जिसमें सर्व सम्मति से सर्व श्री किशोरी शरण सिंह को संरक्षक, कृष्ण मुरारि शर्मा को अध्यक्ष, राम स्वरूप सिंह को उपाध्यक्ष, बाल-मुकुन्द पयनाली को महा मंत्री, पंचानन को उपमंत्री बनाया गया था। इसके सदस्यों में

ग्रामीण माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्न युवकों के नाम दर्ज किये गये थे। सर्व सम्मति से भूतपूर्व बिहार विधान सभाध्यक्ष डॉ० लक्ष्मी नारायण (सुधांशु) को सम्मानित अध्यक्ष एवं सोशलिस्ट नेता श्री गजेन्द्र शर्मा को स्थायी सलाहकार घोषित किया गया था।

सन् १९७१ ई० में तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ डॉ० राम तवक्या शर्मा एम०-ए०, डी० लिट् को प्रवचनार्थ सदन ने आमंत्रित किया। नाट्य कला परिषद के मंच से तुलसी साहित्य के महत्व का प्रतिपादन डॉ० शर्मा ने जिस सारगर्भित भाषा में किया, उसे गाँव का मानव विस्मृति नही कर पा रहा है।

सन् १९७२ ई० में सदन के सम्मानित अध्यक्ष तुलसीसाहित्य के अद्वितीय विद्वान प्रो० डॉ० बचन देव कुमार एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत) पी-एच० डी०, डी० लिट० सर्वसम्मति से बनाये गये। सम्प्रति ये राँची विश्व विद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष एवं आचार्य हैं।

सदन की साहित्य-सेवा उत्कर्ष पर है और लेखन की जागरुकता पैदा करने में इसका सहयोग श्लाघनीय हैं।

कामेश्वर प्रसाद सिंह एम० ए०

(ड) चेतना संघ—ग्रामीण युवको के बहुमुखी विकास के लिए भारत सरकार के प्रतिष्ठान जवाहर लाल नेहरू-युवा-केन्द्र पटना से सम्बद्ध पयनाल ग्राम में चेतना-संघ की स्थापना जनवरी १९७८ ई० में हुइ है।

नेहरू युवा क्लब—जनवरी १९८० ई० में, पयनाल ग्राम में इसकी स्थापना हुई है और इसे जवाहर लाल नेहरू युवा-केन्द्र पटना से २८-१-८० ई० को सम्बद्ध कर दिया गया है।

महिला मंडल—ग्रामीण महिलाओं में जागृति लाने के उदेश्य से श्रीमती शकुन्तला देवी, महिला स्वास्थ्य-दर्शिका के मार्ग-दर्शन में नेहरू युवा-केन्द्र पटना से सम्बद्ध पयनाल ग्राम में एक महिला-मंडल का संगठन हुआ है।

(ढ) साधु-सन्त—इस गाँव के बहुत से लोग साधु हो गये हैं। जहाँ तक मुझे जानकारी है, उनके नाम निम्नाङ्कित हैं—सर्व श्री बाबा रोशन दास जी, आशीर्वाद बाबा, राम प्रीति दास, मंगल दास (पिता स्व० पति सिंह), मंगलदास (पिता स्व० खोभारी सिंह, रामलीला सिंह, फकीरा दास, राम पुकार दास, (पिता श्री रामदहिन सिंह के भाई थे। इनका देहावसान यहीं हुआ और मठिया के पास उनकी समाधी बनी। ये कबीर—पंथी थे)। राम लाल भगत, बुझावन दास

अम्बिका दास, देवकी दास, राम स्वरुप सिंह शुकदेव सिंह, बालकेश्वर भगत आदि।

श्री रोशन दास —पवनाल से अयोध्या जाकर साधु हो गये और बराबर के लिए वहीं रह गये। वहाँ ये श्री १०८ महंत संत शरण के नाम से विख्यात हुए। वहाँ इन्होंने एक विशाल मठ का निर्माण किया। उस मठ का नाम 'सरयू बिहार कुंज अयोध्या' से विख्यात हुआ। उनके चेले श्री मिथिला शरण जी मठाधीश हुए। श्री मिथिला शरण जी वृद्धावस्था में प्रवेशकर जाने के कारण श्री १०८ श्री सीता वल्लभा शरण जी को यहाँ का महन्थी मिला।

श्री यदुनन्दन मिश्र—पं महावीर मिश्र के लड़के वैष्णव सम्प्रदाय में वैरागी होकर अयोध्या वास किये। जानकीघाट में पुजारी थे। वहाँ इन का नाम जनक नंदिनी शरण पड़ा। ये 'निबन्धक त्रय' नामक ग्रन्थ की रचना किये। प्रेस में छप भी चुका था, लेकिन आज अनुपलब्ध है।

श्री बजरंगी सिंह जी

ये पितृ-भक्त थे। पिताजी की सेवा में जीवन पर्यन्त निरत रहे। पिताजी की मृत्यु के उपारान्त इन्होंने श्राद्ध में सम्पूर्ण गाँव के समस्त जाति और धर्म के सभी लोगों को आमंत्रित करके एक आदर्श और अनुकरणीय सहभोज का अनुपम उदाहरण पेश किया था।

श्री कृष्ण मुरारि शर्मा (पिता बजरंगी सिंह)—श्री मुरारि जी मानवोचित समस्त गुणों से विभूषित प्रकृति-प्रसन्न व्यक्ति हैं। इन का व्यक्तित्व महान् स्वभाव परम उदार, अत्यन्त सरल और विनम्र है। ये सम्पूर्ण बिहार राज्य में बालकन जी-बारी, लोक-सेवक-संघ-परेव, कई स्थानों में पुस्तकालय पयनाल उच्च विद्यालय, खगौल घनश्याम बालिका उच्च विद्यालय, खगौल महिला महाविद्यालय आदि अनेक संस्थाओं के प्रवर्तक एवं कुछ संस्था के लोक प्रिय पदाधिकारी हैं।

लोक-हित के निमित्त समाज-सेवा ही इनके जीवन का परम लक्ष्य है। अस्तु, ये अहर्निश लोक-सेवा में तत्पर रहकर प्रत्येक वर्ष नयी-नयी संस्थाएँ खोलते ही रहते हैं। फलतः ये राज्य भर में सर्वव्यापक, एवं विदित और विशिष्ठ यशस्वी समाज-सेवी व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं।

विश्राम सिंह—इन्होंने सद्गुरु कुटी गोलाघाट (अयोध्या) में यात्रियों को ठहरने के लिए एक छोटी सी कोठरी बनवाने में आर्थिक सहयोग किया है।

श्री कृष्ण सिंह (मुनीजी)—ये सन् १९१९ ई० की पहली जनवरी को, बिहार-उड़ीसा डाकतार विभाग में नियुक्त हुए। अन्य जगहों से काम करते हुए सन् १९२३ ई० में आप बनारस (वराणसी) पहुंचे वहाँ लगातार ३२ वर्ष काम किये। २० रु० मासिक पर ट्रेनिंग, में बहाल हुये थे। तीस रु० मासिक वेतन से नौकरी शुरु हुई। वेतन दर—२५०, से ३९०, तक था। १९५५ के १८ मार्च को आप सेवा से निवृत हो गये। इस समय आप को १७५ पेंशन मिलता है। इस समय आपकी उम्र ८० वर्षों से ज्यादा हो गई है। अभी पूर्ण स्वस्थ हैं।

श्री राम निहोरा सिंह—आप १५ अगस्त १९२७ ई० में पुलिस-विभाग के पद पर बहाल हुये। १९२८ ई० में हवलदार और १९४९ ई० में सूबेदार का पद प्राप्त किये। १९५२ में सूबेदार मेजर के पद पर आसीन हुये और १९६० ई० में प्रथम जुलाई को सेवा-निवृत हो गये हैं।

श्री पारस नाथ—ये गोपालपुर पयनाल पट्टी के रहने वाले हैं। इन्होंने 'मीठा-इनार' का जीर्णोद्धार अपने घर से ५०० रु० लगा कर किये।

श्रीरामचन्द्र राम—इनके पिता मासौढ़ा से आकर यहाँ बस गये। रामचन्द्र राम ने दो वर्षों तक यहाँ वयस्क पाठशाला चलाई और इनके द्वारा १९५७ ई० में एक सार्वजनिक कुएँ का निर्माण हुआ। इन्होंने एक हरिजन-कल्याण-संघ' का संगठन किया। हरिजनों द्वारा जगजीवन जयंती तथा डॉ० भीम राय अम्बेदकर जयन्ती मनाने का कार्य इन्हीं के द्वारा चलाया गया। १७ अप्रैल १९६७ ई० में पयनाल उच्चविद्यालक के प्रांगन में इन्होंने एक महती सभा कराई, जिसमें श्री मुंगेरी लाल भूत पूर्व मंत्री, श्रीराम रतन राम एम० एल० सी० आदि पधारे थे।

पं० केदार नाथ मिश्र

ये कर्म काण्ड एवं ज्योतिष के पूर्ण पंडित थे। रामचन्द्र मिश्र अच्छे वैद्य थे। नित्यानन्द मिश्र वैद्य, कर्मकाण्डी, तांत्रिक एवं कथा वाचक थे। कुछ दिनों तक आर्य-समाज के भी धर्मोपदेशक के रूप में इन्होंने कार्य किया था। पं० रामपदार्थ मिश्र का कथा वाचक में पहला स्थान था। पं० शर्वानन्द मिश्र बहुत अच्छे तांत्रिक थे। इनकी ठाकुर-बारी बहुत उच्चदर्जे की थी। भगवान के उत्सव के अवसर पर नाच-गान बहुत ठाट से होते थे। कन्हौली श्री महादेव शरण लाल की ठाकुर बारी में बनारस की प्रमुख अप्सरा तारा और यशोदा आती थी। वह यहां

पं० सवांनन्द की ठाकुर-बारी में भी आकर नृत्य करती थी। पं० जी के लड़के बांकेविहारी मिश्र पटना जाकर बस गये।

श्री तपेश्वर सिंह—ये पयनाल में ही २० वीं सदी में सर्व प्रथम बी० ए० आनर्स और एम० ए० पास किये। दो बार इन्हें अखिल भारतीय स्तरपर निबन्ध प्रतियोगिताओं में राष्ट्र भाषा परिषद हापुड़ (उतर प्रदेश) की ओर से तथा बिहार राज्य-स्तर पर आयोजित कहानी-पुस्तक-प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार में स्वर्ण पदक, पुस्तकें और १००१ रु० नगद प्राप्त हो चुके हैं। सम्पतिये केन्द्रीय विद्यालय (सेण्ट्रल स्कूल) में स्नातकोत्तर अध्यापक हैं।

पं० भवानी प्रसाद मिश्र संस्कृत साहित्य के प्रकांड विद्वान् थे। इन्होंने १९३८ ई० में 'लंकेश-दमन' नामक खंड-काव्य की रचना की। ये सोरमपुर हाई स्कूल (पटना) के हेड पंडित के पद पर थे और इसी स्कूल से सेवानिवृत्त होकर १९-८-७६ को स्वर्गवासी हुये। इनके अनुज पं० यज्ञ नारायण मिश्र भी अच्छे विद्वान तथा तांत्रिक हैं। पं० दुग्धेश्वर मिश्र अच्छे कर्मकाण्डी एवं ज्योतिषी थे। पं० नारायण मिश्र भी कर्मकाण्डी एवं ज्योतिष के अच्छे विद्वान् हैं। अब ये वृद्धावस्था को प्राप्त हो गये हैं। इन्होंने एक बार राम चरित मानस के बाल काण्ड की लीला बहुत अच्छे ढंग से सम्पन्न करायी थी। ये गान विद्या के भी प्रेमी हैं। पं० राजदेव मिश्र शिक्षक नई पीढी के सफल कर्मकाण्डी एवं ज्योतिषी हैं।

कृषि-विकास-साधना में इस समय श्री राम लीला सिंह बहुत कुशल कृषक हैं। श्री सुग्रीम सिंह और श्री आदित्य महतो दशकूटक खूब जानते थे। श्री पचकौड़ी सिंह पुराने तांत्रिक थे। पुराने लोग कहते थे कि एक बार कहीं से कोई डाक (घातक औजार) आकाश-मार्ग से जा रहा था। वे पं० रघुवंश मिश्र के दरवाजे पर बैठे हुए थे। उस जगह के लोगों से बोले कि एक तमाशा आप लोगों को दिखाऊँ? लोगों ने कहा—जी हाँ—

पचकौड़ी सिंह उस जाते हुए डाक को रोक कर अपने पास खींच लिये और उस में के जितने घातक सामान थे, सभी लोगों को दिखाकर जहाँ वह डाक जा रहा था, वहाँ फिर जस के तस बन्द करके रवाना कर दिये। श्री जगदीश मिश्र तांत्रिक, इन्हीं के चेले थे। श्री शिव प्रसाद सिंह उर्फ बेंगा सिंह राम लीला मंडली के व्यास थे। इस कला में वे अद्वितीय थे। जवानी में ही इस काम से

निवृत्त होकर 'वैद्यानाथधाम' जाकर बस गये थे जीवन पर्यन्त वहीं रह गये और वहीं स्वर्गवासी हुए।

वर्त्तमान श्री भरत सिंह के पितामह श्री भागवत सिंह, भोला प्रसाद के पिता श्री द्वारिका प्रसाद सिंह और पशु पति सिंह के पितामह श्री भागवत प्रसाद सिंह (आगा साहब) उर्दू और फारसी के अच्छे विद्वान थे।

सरस्वती के वरद पुत्र महान अभिनेता भिखारी ठाकुर—

यह लिखते हुए मुझे अपार हर्ष और गर्व हो रहा है कि महाकवि, संत एवं अद्वितीय अभिनेता स्व० भिखारी ठाकुर का ननिहाल पयनाल ग्राम में ही है। प्रौढ़ावस्था में जब भिखारी ठाकुर के अभिनय एवं कवित्व का उत्कर्ष काल था, वे हर-एक साल एक बार यहाँ आते और अभिनय करते और उससे प्राप्त धन-राशि को यहाँ अभिनय संघ में लगा देते थे।

पयनाल अभिनय संघ की स्वस्थता उन्हीं की उदारता एवं महानता का स्मृति-स्तूप है। यह संस्था उन्हीं के आर्शीवाद से आज भी अनवरत प्रगतिशील अवस्था में है। आज सरस्वती के वरद पुत्र भिखारी ठाकुर हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु सम्पूर्ण पयनाल ग्राम स्व० भिखारी ठाकुर के प्रति आभारी हैं।

गंगाराम बाबा—

पयनाल-हिरामन पुर के उत्तर-पश्चिम कोने पर गंगाराम बाबा का चबूतरा है। अक्सर लोग मनोकामना-पूर्त्ति या संकट निवारण के लिए इनकी मनौती करते हैं। कार्य-सिद्धि पर गाँजा आदि मानक चीजों को चढ़ाकर प्रसन्न करते हैं। किंवदन्ती है कि हिरामन पुर के धर्मदेव मिस्त्री के कोई पूर्वज गंगा-स्नान करने गये थे। मिस्त्री जी के पूर्वज तंत्रमंत्र ज्ञाता थे। उन्होंने अपनी शक्ति से उन्हें रोक कर यहाँ लाकर उनकी स्थापना कर दी। कहा जाता है कि पयनाल के ढोंढ़ा साव को बच्चे होते थे, किन्तु बचते नहीं थे। गंगाराम की मनौती से ही बचने लगे। तब उन्होंने एक छोटा सा चबूतरा बना दिया। कई वर्षों के बाद हिरामन पुर के धर्मदेव मिस्त्री ने अपनी मनोकामना की पूर्त्ति पर चबूतरे को बनाने का प्रयास किया, किन्तु अधूरा रह गया। जब लेखक के कनिष्ठ पुत्र बालमुकुन्द पयनाली प्रोफेसर हुए तो उन्होंने अपनी माँ की मनौती के अनुसार करीब एक हजार रुपये लगाकर भव्य चबूतरे की स्थापना सन १९७९ ई० में की। इस पर ५०-६० आदमी बैठकर रामायण पढ़ सकते हैं। इस क्षेत्र के लोगों की धारणा

है कि गंगाराम बाबा स्मरण करते ही रक्षा के लिए दौड़ते हैं या मनोकामना की पूर्ति करने के लिए सचेष्ट हो जाते हैं। आज भी उनके प्रति लोगों की भक्ति पूर्ववत है।

गंगाराम बाबा की जय

दंगल का शौक :—

कुश्ती लड़ने का भी यहाँ खूब शौक था। गाँव में कई अखाड़े थे। श्री राम लोभी सिंह और बदरी सिंह नामी पहलवान थे। राम लोभी सिंह का मुझे स्मरण नहीं है, परन्तु बदरी बाबा को खूब जानता हूँ। ये गवैया भी थे। कैथी अक्षर बहुत बढ़िया लिखते थे। इधर में सर्व श्री रामलखन सिंह, मोती भगत, राम नन्दन सिंह, राम अनूप शर्मा (आचारी जी), श्री भगवान सिंह, देव प्रभु सिंह, सच्चिदानन्द, सारंगधारी आदि कुश्ती लड़ने वालों के नाम उल्लेखनीय हैं। हिरामनपुर का गुट पयनाल में ही शामिल था। हिरामन पुर में श्री भुवनेश्वर सिंह दंगली-पहलवान थे। वे अधिकतर पयनाल में ही रहा करते थे। इस समय उनके पुत्र राम आशीष सिंह और रामानुज सिंह एवं श्री शिव सिंह के पुत्र त्रिभुवन सिंह अच्छी कुश्ती लड़ते हैं। पहले यहाँ हर रविवार को जमाव (दंगल) होता था। आस-पास के पहलवान यहाँ लड़ने आते थे। अब इस ओर पहलवानों का झुकाव नहीं रहा, इसलिए जमाव बन्द हो गया।

आवश्यक उपकरण एवं बर्तन :—

आज की भाँति पहले लालटेन नहीं थी। एक लड़की की तख्ती पर चार फ्रेम कर के ऊपर से टीन का ढक्कन लगा रहता था। फ्रेम में घर बनाया रहता था, जिसमें चौखूँट चारों तरफ चार शीशे लगा दिये जाते थे और उसी में दीप रख दी जाती थी।

कार्य प्रयोजन में मिट्टी के बर्त्तन प्रयोग में लाये जाते थे। मिट्टी की हाँड़ी भोजन बनाता था। घिरसिरी (पानी रखने का ऊँचा स्थान) पर मिट्टी के घड़े में जल रखा जाता था। यह रिवाज तो आज भी है। मिट्टी के बर्त्तन का जल गर्मी में भी ठंढा बना रहता है। मिट्टी के बर्त्तन में बनाया भोजन भी बहुत बहुत स्वादिष्ट होता है। मिट्टी के ही गोलाकार का एक डोल रखा रहता था। बसना से कुएँ से दाइयाँ पानी भरती थीं आम लोगों को पानी पीने के लिए कुएँ

पर लोहे का एक गोलाकार डोल रखा रहता था। आजकल जो बालटी चल पड़ी है, इसका प्रयोग लोग नहीं करते थे। बालटी घोड़े को दाना-पानी देने के काम में ही आती थी। यह बहुत अशुद्ध समझी जाती थी, लेकिन आज कल तो वह पवित्र हो गई है। कुएँ पर रखी रहती है। धोने मांजने की भी जरूरत नहीं। किसी का पिया हुआ जूठा ही क्यों न हो, उसमें जूठा जल का शेषांश ही क्यों न बचा हो, झट कुएँ में बालटी डुबाया और पानी पी लिया। अलमुनियम के बर्त्तन, चीनी मिट्टी के बर्त्तन या शीशे के बर्त्तन खाने के काम में नहीं लाये जाते थे।

मादक द्रव्य सेवन—पहले यहाँ के लोग गाँजा, भाँग, खैनी तम्बाकू का व्यवहार बहुत करते थे। अब लोग सिर्फ खैनी अधिक खाते हैं। मैं गाड़ी से पटना जा रहा था। एक प्रोफेसर आपस में बतिया रहे थे कि आजकल खैनी खाने का रिवाज छात्रों में बहुत बढ़ गया है। मैंने कहा कि आजकल के प्रोफेसर लोग भी तो प्रायः खैनी खाया करते हैं। इसपर उन्होंने कहा कि जी हाँ;—आजकल के प्रोफेसर लोग भी तो वे ही छात्र हो रहे हैं। तम्बाकू की जगह पर बीड़ी चल पड़ी है। पहले प्रायः सभी के दालान पर नारियल-तम्बाकू और टिकिया रखे रहते थे। कोई भी आता टिकिया जला कर तम्बाकू पी लिया करता। यह रिवाज दरवाजे की एक प्रतिष्ठा समझी जाती थी। बीड़ी पहले मर्दों से शुरु हुई। अब तो पीने वाले औरतों की संख्या मर्दों से भी बढ़ गई है। यहाँ पर बीड़ी की खपत प्रतिदिन ५००० के लगभग है। बहपुरा मकबूल मियाँ की बीड़ी यहाँ अधिक चलती है। मकबूल मियाँ रोजाना यहाँ पहुँचाया करते थे। अब वे मर गये। उनका लड़का आता है। उन दिनों चाय का नाम भी नहीं था। अब तो शायद ही घर बाकी होगा।

महिलाओं की अवस्था—पहले स्त्रियाँ सब जूते, चप्पल नहीं पहनती थीं। गाँव की एक भी लड़की स्कूल में पढ़ने नहीं जाती थी। पर्दा-प्रथा ऐसी थी कि सदीसोपुर स्टेशन तक (जो यहाँ से डेढ़ मील की दूरी पर है, वयो-वृद्ध स्त्रियाँ भी बिना सवारी के नहीं जाती-आती थीं। अब सदीसोपुर तक सिर्फ गौने तक ही सवारी की जरूरत रहती है। छोटी-छोटी बच्चियाँ भी साड़ी पहनती थीं और माथे पर आँचल रखती थीं। सिर खुला रखना ठीक नहीं समझा जाता था। घर की सभी स्त्रियाँ आयुर्वेद की कुछ-न-कुछ दवाएँ अवश्य जानती थीं और दुध मुहे बच्चों की दवा खुद कर लेती थीं।

बीमारी में वैद्य लोग उपवास बहुत कराते थे। मियादी बुखार में मियाद भर सिर्फ पानी पिलाकर रखते थे। दवा तक नहीं देते थे कि दवा पथ्य हो जायगा बीमारी बढ़ जायगी। बहुत दिन उपवास करने वालों को बहुत पुराना चावल का भात और परवल या केले की तरकारी पथ्य दिया जाता था। जामुन या ऊख के रस का सिरका बनाया जाता था, जो अपच, पेट-दर्द, वायु-विकार आदि में रामबाण का काम करता था।

बिना द्विरागमन हुए लड़कों को ससुराल या ससुराल के गाँव में जाना मना था। मालूम होता है कि पहले बाल-विवाह होता था, इसीलिए यह नियम बनाया गया था। रजाई ओढ़ कर या मिरजई पहन कर लोग भोजन नहीं करते थे।

बीन (बाँस फोड़) बाँस की कमाची से छाता और पासी ताड़ के पत्तों से घोघी बनाते थे। बरसात में चरवाहे बाँस के छाता और ताड़ की घोघी ओढ़कर गाय-भैंस चराते थे। ईंट पकाने के लिए कोयले के अभाव में लकड़ी का प्रयोग करते थे। कुम्भकार खेत से मिट्टी लाकर बर्त्तन और खपड़े इत्यादि बनाते थे और अभी भी बनाते हैं। इनके रोजगार में पैसे खर्च नहीं होते। अपने शारीरिक मिहनत से बिना धन लगाये पैसे उपार्जन कर लेते हैं।

पवनियाँ (कुम्भकार, धोबी, हजाम, बढ़ई, लोहार इत्यादि) अपने-अपने स्थायी गृहस्थ मुकर्रर किये रहते हैं। इन्हें साल में रब्बी या धान का बोझा-पाँजा दिया जाता है इस पाँजा के बदले में व्रत या कथा वगैरह में कुम्हार बिना मूल्य बर्त्तन दे देते हैं। इसी तरह धोबी, हजाम, बढ़ई और लोहार लोग भी साधारण से काम के लिए पैसे नहीं लेते; परन्तु विशेष कार्य के लिए विशेष मजदूरी मिलती है। विवाहादि उत्सव में साड़ी या धोती इन लोगों को मिल जाती है। यज्ञादि में भोजन करने के लिए भी इन लोगों को निमंत्रित किया जाता है। लोहार और बढ़ई लोग पाँजा न लेकर एक हाल पर साल में कच्ची नौ पसेरी अनाज लेते हैं। इन लोगों का काम रहता है—हल का फाल, खुरपी, हँसुआ, कुदाल पजा देना और हल ठोकना-बनाना आदि। इस समय पयनाल में सिर्फ तीन घर बढ़ई हैं। प्रहलाद मिस्त्री बहुत परिश्रमी थे। उनको साल में गृहस्थ के यहाँ से ७५-८० मन तक अनाज मिल जाता था। घर छाने के लिए कोरो काटने, ठोकने आदि गृहस्थ के काम के लिए तो दो दिन सिर्फ सीधा (सेर भर चावल-दाल) लेते थे। अधिक दिनों के लिए जो मजदूरी अन्य लोगों की होती, वही वे भी लेते थे। वे बहुत नेक स्वभाव के थे। उनके लड़के आज गंगा मिस्त्री हैं। ये अधिक परिश्रमी तो नहीं,

किन्तु इस क्षेत्र में कार्यों के अच्छे जानकार हैं। गृहस्थों के यहाँ से आमदनी कम हो गई है, किन्तु स्वतंत्र खेती से जीविकोपार्जन कर लेते हैं। इस समय रामनन्दन और राजदेव दोनों भाई सतत् परिश्रम करते हैं। इस समय यहाँ लोहार नहीं है। हिरामन पुर और कन्हौली के लोहार से काम लिया जाता है। पहले यहाँ दो घर 'ततवाँ' थे। अब नहीं हैं। 'सोनार' भी एक घर था। अब नहीं हैं। स्त्रियों के प्रसव होने पर चमईन आकर नाल-पुरईन काटती है और जब तक प्रसूती पाक-साफ नहीं हो लेती है, तब तक वही सेवा करती है। इसके लिए नियत मजदूरी और खाने के लिए रोज बना-बनाया हुआ भोजन मिलता है। विवाहादि में कपड़े दिये जाते हैं। पुराने कपड़े भी मिल जाते हैं।

लड़का पैदा होने या विवाह होने पर 'पँवरिया' और 'बक्खो-बखोईन' आ कर बधाई गाती हैं और लोगों को रिझाकर बहुत कपड़े और पैसे लेती हैं। अब यह रिवाज कम होते जा रहा है। पहले बाप के रहते बेटा मूँछ नहीं बनवाता था। अब के नवजवान इस प्रथा को हटा दिये हैं। जूता पहने हुए लोग पानी तक नहीं पीते थे। यहाँ तक कि मुँह धोने के वक्त भी जूता निकाल कर ही धोते थे। दतवन करते समय उठकर एक पग भी नहीं हटते थे। बिना स्नान किये कोई भी भोजन नहीं करता था। प्याज की गृहस्थी नहीं होती थी। दवा-दारु में प्रयोग के सिवा प्याज छूना भी लोग अनुचित समझते थे। छुआ-छूत बिलकुल निषेध था। हमारे गाँव के कुछ लोग राजपुर के पं० श्री बाला नन्द जी और श्री जीवानन्द जी दोनों भाई के चेले थे। अब भी वहाँ के चेले हैं। वे आते थे तो उनकी बनायी हुई रसोई उनके चेले कान्दू, ग्वाले लोग भी नहीं खाते थे। अब ये सब बातें नहीं रहीं। रैयत (कास्तकार) लोग भेंट हो जाने पर 'सलाम' करते थे। कहते थे—'सलाम मालिक', तो मालिक भी बदले में कहते थे—'सलाम'। मालिक जब रैयत के दरवाजे पर पहुँच जाते थे, तब एक छोटा बच्चा भी खाट पर से उतर जाता था और 'सलाम' करके धरती पर बैठ जाता था। बड़े ओहदे वालों के सामने छोटे दर्जे वाले उच्च आसन पर नहीं बैठते थे। तब से अभी तक यहाँ की एक विशेषता यह है कि किसी के साथ शत्रुता और द्वेष-भाव होने पर भी किसी की विषम परिस्थिति में जैसे—आग लगने, जल में डूबने, पेड़ से गिरने आदि के अवसर पर सब कुछ भूल कर संकट और मुसीबत में पड़े लोगों की मदद करके के लिए जुट जाते हैं। पहले कुँआ खोदने के लिए गाँव भर के लोग परिश्रम करते थे और उन्हीं लोगों के सहयोग से बड़े-बड़े कुँए खोदे जाते थे। सिर्फ उन लोगों के लिए गुड़ का शर्बत बराबर तैयार रहता था। श्री शंभु प्रसाद सिंह के पितामह को चिड़ियाँ पालने का बड़ा शौक था। खरहा, तीतर,

तोता, मैना और कबूतर पालते थे। कबूतर का वास करने से उस जगह का नाम 'कबूतरी दरवाजा' पड़ गया। मेरी जमीन जिसका प्लोट नं० ८०३ है, इसके दक्षिण सिरे पर एक विशाल महुआ का वृक्ष था। यहीं पर बाजार लगता था सर्वे खतियान में भी इस जगह का नाम 'पेठिया पर' लिखा गया है। पुराने लोग कहते थे कि उस पर से गंगा नदी के अग्नि-बोट का मस्तूल दिखाई देता था।

बैण्ड पार्टी—पयनाल ग्राम में ६ बैंड पार्टियाँ हैं—

(१) बोध चमार की पार्टी में ६ व्यक्ति (२) चुटरी चमार की पार्टी में १२ (३) सोमारू की पार्टी में ६ (४) गौरी की पार्टी में ६ (५) राम प्रसाद की पार्टी में १२ और (६) मुन्द्रिका की पार्टी में भी १२ व्यक्ति बाजा बजाने वाले रहते हैं।

यहाँ की बैण्ड पार्टियों में डंका, ढोल, तम्बूर, किलाट, कार्नेट, सिरकी, झोमपट, बगलवेश, सिक्सटी फोन, अनफोनियम आदि पुराने और आधुनिक ढंग के बाजे हैं तथा बाजा बजाने वालों को यहाँ रंग-विरंग की पोशाक भी है।

शादी-ब्याह के लगन के दिनों में यहाँ की बैण्ड पार्टियाँ दूर-दूर तक बाजे बजाने जाती हैं और इसके लिए १-२ महीने आगे से ही सट्टे हो जाते हैं। लगन के दिनों में बैण्ड पार्टियों के चलते भी पयनाल ग्राम का नाम उजागर होता है।

२५ रचनाकार कर अन्तिम मन्तव्य

मनुष्ययोनि में जन्म लेकर यदि गया (पिंड) न दिया तो जीवन व्यर्थ है। कहा गया है—'जो गया न किया सो कहीं न किया। कहीं करे या न करे; परन्तु गया में जाकर पिंड दान अवश्य करना चाहिए।

कांक्षंति पितरः सर्वे नरकाद्भय भीरवः।
गयां यास्याति यः पुत्रः सनस्त्राता भविष्यति ॥

भावार्थ-नरकों से डरते हुए पितृ-गण ऐसी इच्छा करते हैं कि जो पुत्र गया जायगा वह हमारा रक्षक होगा।

गया शिरसियत्किंचिन्नाम्नो पिंडतुनिर्वं प्रेत्।
नरकस्थो दिवं याति स्वर्गस्थो मोक्ष माप्नुयात् ॥

भाषा-जो मनुष्यगया में जाकर नामोल्लेख करके 'गया शिर' पर पिंड दान करता है यदि वह नरक में भी हो तो भी स्वर्ग में जाता है और जो स्वर्ग में होय तो उसकी मुक्ति हो जाती है।

महानदीमुपस्पृश्य तर्पयेत्पितृ देवताः ।
अक्षयाँल्लभते लोकान्कुलंचैव समुद्धरेत् ॥

भाषा-फल्गु में स्नान करके पितरों और देवताओं के तर्पण करने वाले मनुष्य अपने कुल का उद्धार करते है और मृत्यु होने पर अक्षय लोक को जाते हैं ।

एक महाभारत का आख्यान—प्राचीन काल में जरत्कारु नामके एक महान् ऋषि हो चुके हैं वे सदा उग्रतपस्या में संलग्न रहते थे । एक समय तपोबल से सम्पन्न उन महाभाग जरत्कारु ने यात्रा परारम्भ की । वे मुनि-वृति से रहते हुए जहाँ शाम होती वहीं डेरा डाल देते थे ।

"वे कभी वायु पीकर रहते और कभी भोजन का सर्वथा त्याग कर के अपने शरीर को सुखाते रहते थे । उनमहर्षि ने निद्रा पर भी विजय प्राप्त कर ली थी, इसलिये उनकी पलक नहीं लगती थी । घूमते-घूमते किसी समय उन्होंने अपने पितामहों को देखा जो ऊपर को पैर और नीचे को सिर किये एक विशाल गड्ढे में लटक रहे थे ।" उन्हें देखते ही जरत्कारु ने उनसे पूछा—"आपलोग कौन हैं ? जो इस गड्ढे में नीचे को मुख किये लटक रहे हैं ? 'आप जिस खस के तिनकों के समूह को पकड़ कर लटक रहे हैं, उसे इस गड्ढे में गुप्त रूप से नित्य निवास करने वाले चूहे ने सब ओर से प्रायः खा लिया है । यहाँ भूलोक ही गड्ढा हैं । स्वर्गवासी पितरों को जो नीचे गिरने का भय लगा रहता है उसको सूचित करने के लिये यह कहा गया हैं कि उनके पैर ऊपर थे और सिर नीचे । काल ही चूहा है और वंश परम्परा ही खस नामक तिनकों का समुदाय है । उस वंश में केवल जरत्कारु बच गये थे और अन्य सब पुरुष काल के अधीन हो चुके थे । यही व्यक्त करने के लिये चूहे के द्वारा तिनकों के समुदाय का सब ओर से खाया हुआ बताया गया हैं । जरत्कारु के विवाह न करने से उस वंश का वह शेष अंश भी नष्ट होना चाहता था । इसीलिये पितर व्याकुल थे और जरत्कारु को इस का बोध कराने के लिये उन्होंने इस प्रकार दर्शन दिया ।

पितर बोले—ब्रह्मण ! हमलोग कठोर व्रत का पालन करने वाले यायावर नामक मुनि हैं । अपनी सन्तान परम्परा का नाश होने से हम नीचे—पृथ्वी पर गिरना चाहते हैं हमारी एक संतति बच गई है जिसका नाम है जरत्कारु । हम भाग्यहीनों की वह आभागी संतान केवल तपस्या में ही संलग्न है ।

वहमूढ़, पुत्र उत्पन्न करने के लिये किसी स्त्री से विवाह करना नहीं चाहता है। अतः देश परम्परा का विनाश होने से हम यहाँ इस गड्ढे में लटक रहे हैं। हमारी रक्षा करने वाला वह वंश मौजूद है, तो भी पापकर्मी मनुष्यों की भाँति हम अनाथ हो गये हैं। साधु शिरोमणे ! तुम कौन हो जो हमारे बन्धु-बान्धवों की भाँति हमलोगों की इस दयनीय दशा के लिये शोक कर रहे हो ! ब्रह्मण हम यह जानना चाहते हैं कि तुम कौन हो जो आत्मीय की भाँति यहाँ हमारे पास खड़े हो ? सत्पुरुषों में श्रेष्ठ ! हम शोचनीय प्राणियों के लिये तुम क्यों शोकमग्न होते हो ? जरत्कारू ने कहा—महात्माओ ! आपलोग मेरे ही पितामह और पूर्वज पितृ गण हैं। स्वयं मैं ही जरत्कारू हूँ। बताइये, आज आप की क्या सेवा करूँ।

पितर बोले—तात ! तुम हमारेकुल की संतान परम्परा को बनाये रखने के लिये निरन्तर यत्नशील रहकर विवाह के लिये प्रयत्न करो। प्रभो ! तुम अपने लिये, हमारे लिये अथवा धर्म का पालन हो इस उद्देश्य से पुत्र की उत्पति के लिये यत्न करो।

नहि धर्मफलैस्तात न तपोभिः सुसंचितैः।
तां गतिं प्राप्नुवन्तहि पुत्रिणो यां व्रजन्ति वै।

भाषा—तात ! पुत्र वाले मनुष्य इस लोक में जिस उत्तम गति को प्राप्त होते हैं, उसे अन्य लोग धर्मानुकूल फल देने वाले भली भाँति संचित किये हुये तप से भी नहीं पाते अतः बेटा ! तुम हमारी आज्ञा से विवाह करने का प्रयत्न करो और संतानोत्पादन की ओर ध्यान दो। यही हमारे लिये सर्वोत्तम हित की बात होगी।

जरत्कारूसवाच—

न दारान् वैकरिष्योऽहंन धनं जीवितार्थत :।
भवतांतु हितार्थाय करिष्ये दार संग्रहम् ॥

भाषा—पितामह गण ! मैंने अपने मन में यह निश्चय कर लिया था कि मैं जीवन के सुख-भोग के लिये कभी न तो पत्नी का परिग्रह करूँगा और न धन का संग्रह ही; परन्तु यदि ऐसा करने से आप लोगों का हित होता है तो उसके लिये अवश्य विवाह कर लूँगा। आप मेरे पितर अपने सनातन स्थान पर जाकर वहाँ प्रसन्नता पूर्वक रहें।

महामुनि जरत्कारु नाग राज वासुकि की बहिन जिस का नाम जरत्कारु

ही था, से शास्त्रीय विधि के अनुसार विवाह किया और उससे 'आस्तीक' नाम का पुत्र पैदा हुआ।

निष्कर्ष—पितरों की यह अभिलाषा बनी रहती है कि हमारी वंश परम्परा कायम रहे। कोई तो गया जाकर पिंड देगा और पितरों को पतन से बचायगा।

विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी सेवाओं में कार्यरत व्यक्तियों की नामावली

केन्द्रीय सेवा—

१ सुरक्षा विभाग—

स्थल सेना—सर्वश्री गोरी शंकर सिंह-सिगनल्स, बैजनाथ सिंह, केदारनाथ सिंह, श्रीकान्त शर्मा (प्रशिक्षण)

नौ सेना—सर्वश्री शुकुलदेव सिंह, अखिलेश कुमार

आयुध निर्माणी (आर्डिनेन्स फैक्टरी)—सर्वश्री कृष्णा नन्द सिंह सहायक फोरमैन, इन्द्र देव शर्मा-चार्जमैन (हाइजिन सेल), श्री भगवान सिंह-टर्नर ललन सिंह-निरीक्षण विभाग, पशुपति मिश्र-आडिटर, रक्षा-लेखा-नियन्त्रक।

२ रेलवे विभाग—सर्वश्री कपिलदेव सिंह-टी० टी० ई०, सुदर्शन महतो-गार्ड।

क्लर्क—सर्वश्री कामेश्वर सिंह, रवीन्द्र नाथ मिश्र (स्टेनो), रमाशंकर प्रसाद शर्मा, चन्द्रदेव सिंह

ड्राईवर—श्री मोहन सिंह

फायरमैन—सर्वश्री सत्यदेव सिंह, हजारी चौधरी, चन्द्रदेव सिंह, राम प्रसाद साव

सहायक स्टेशन मास्टर—सर्वश्री हरिशंकर प्रसाद शर्मा, रामप्यारे पाल राम अनुप शर्मा—कोल चेकर।

मिस्त्री—राम बालक वर्मा, राम उग्रह महतो, राम वदन वर्मा

सिगनल—राम प्रसाद पाल

आर० पी० एफ—सर्वश्री सत्यदेव सिंह, शारंगधारी सिंह, सिद्धनाथ सिंह; सोमनाथ साव, रामध्यान रजक

अस्थायी सेवा—सर्वश्री रामेश्वर सिंह (इलेक्ट्रिकल हेल्पर), गणेश कुमार (टी० टी० ई० पोर्टर), दीनानाथ शर्मा (लोको)

३ डाक तार विभाग-टेलीफोन—सर्वश्री राम बलिष्ट शर्मा-रिपीटर इंचार्ज, टेलीफोन इंजीनियरिंग, मनीशचन्द्र मिश्र-इंजीनियरिंग सुपरवाईजर, सिद्धेश्वर शर्मा-मैकेनिक, शचीन्द्र कुमार शर्मा-ऑपरेटर, चन्द्रदेव सिंह-क्लर्क (आर० एम० एस०), सतीशचन्द्र मिश्र-पोस्टमैन, शनीचर साव-पोस्टमैन, रघुनन्दन साव मेल पीऊन, जीतन प्रसाद साव-पीऊन, हरिकृष्ण सिंह-शाखा डाकपाल, तिलक साव शाखा डाकवाहक-सह डाक वितरक

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया—सर्वश्री सुरेन्द्र सिंह—सहायक ट्रेजरर, आदेशपाल—रामनाथ सिंह, राम नरेश सिंह नगीना राय [बैंक ऑफ इंडिया]

जीवन बीमा निगम—श्री भोला शर्मा-क्लर्क

भविष्य निधि—सर्वश्री जयेन्द्र शर्मा, वीरेन्द्र शर्मा

केन्द्रीय विद्यालय—श्री तपेश्वर शर्मा (पी० जी० टी०)

तकनीकि विभाग—सर्वश्री कृष्ण मुरारि सिंह—जॉब इन्सपेक्टर, उमा शंकर प्र० शर्मा-टनर, रामध्यान राय-हेल्पर, भारी अभियन्त्रण निगम, रामाधार सिंह-मैटेरियल इन्सपेक्टर, टेल्को, राजनन्दन सिंह-सहायक यार्ड मास्टर, बोकारो स्टील, राम कृपाल पाल-S. D. T. ढोढ़ा सिंह, अकलू सिंह-उषा फैक्टरी, अवध नन्दन शर्मा-ऑपरेटर, बलराम प्रसाद शर्मा-पेपर मिल अमलाई, बलदेव प्रसाद शर्मा पेपर मिल दरभंगा, रामानुज सिंह-मैकेनिक, इन्द्रसेन राम-मैसेंजर, एफ० सी० आई० बरौनी, कृष्णदेव प्रसाद वर्मा, विष्णुदेव वर्मा, कमलेश वर्मा-कोयला खान, राजेन्द्र मिश्र-पुरातत्व विभाग

इंडियन एयर लाइन्स—सर्वश्री देवेन्द्र राम-हेल्पर, श्यामजीत सिंह

इंडियन आयल—सर्वश्री दीननाथ रजक-ड्राईवर, विनोद राम

महालेखाकार विभाग—श्री चक्रपाणि मिश्र (ऑडिटर)

राज्य सरकार की सेवाओं में कार्यरत

राजपत्रित पदाधिकारी—१. श्री कैलाश प्रसाद सिंह-उपसमाहर्ता २. श्री सूर्यदेव प्रसाद सिंह-प्राचार्य, पंचायत विभाग

कनीय अभियन्ता—सर्व श्री रामनरेश सिंह, विद्यानारायण शर्मा, शिवशंकर सिंह

प्राध्यापक—श्री बालमुकुन्द 'पैनाली'-हिन्दी विभाग डा० व्यास शर्मा (वर्तमाननिवासी टेंगरैल)

अधिवक्ता—परमानन्द सिंह

चिकित्सक—पं० श्री भगवान मिश्र, डा० रामस्वरूप सिंह

पत्रकार—सर्व श्री रामप्रवेश सिंह, कृष्ण मुरारि शर्मा

पुलिस विभाग—उपआरक्षीनिरीक्षक एस० आई (दारोगा)—सर्वश्री सियाराम सिंह, सुरेशचन्द्र सिंह

उपआरक्षीनिरीक्षक (ए० एस० आई) जमादार—सर्वश्री हरिहर नाथ सिंह रामवचन सिंह (वायरलेस)

सिपाही—सर्वश्री बैजू सिंह, मंगल सिंह, नन्दलाल सिंह, छोटेलाल साव, रामविशुन राम सुरेस सिंह, विश्वनाथ सिंह, रामनथेश सिंह (अग्निशामक), कुँअरनन्दन शर्मा, (बी० एम० पी०), जयराम रजक बी० एस० एफ०), रामानुज राम (आदेशपाल)

शिक्षाविभाग—अध्यापक (उच्चविद्यालय)—सर्वश्री कृष्ण मुरारि शर्मा, कृष्णनन्दन शर्मा, रामकुमार सिंह, अवधेश सिंह, यज्ञनारायण मिश्र, चन्द्रिकादत्त मिश्र, सिद्धनाथ सिंह (लिपिक)

मध्य एवं प्रार्थमिक विद्यालय—सर्वश्री रामाश्रय नारायण शर्मा, रामलेखा शर्मा, भाष्करानन्द मिश्र प्रधानाध्यपक, सियाराम शर्मा वर्तमान निवासीटेंगरैला रामपुकार सिंह, मदन सिंह, मदन मोहन शर्मा, वाल्मीकि प्रसाद शर्मा नवविन्द सिंह नन्दकिशोर शर्मा, राजदेव मिश्र, शिवदत सिंह, धर्मदत सिंह जगन्नाथ सिंह रघुनाथ सिंह श्यामप्यारे सिंह रामप्रवेश सिंह रामप्रताप मिश्र शशिशेखर शर्मा भुवनेश्वर राम अवधेश मिश्र

जयराम शर्मा रामकुमार सिंह वर्तमाननिवासी दँगरैला एवं सियाराम शर्मा अध्यापक तथा इनकी भार्या श्रीमती·····देवि अध्यापिका

लिपिक—सर्वश्री योगेन्द्र मिश्र एकाउन्टेन्ट विद्युत विभाग रजनीकान्त शर्मा सच्चिदानन्द मिश्र रामचन्द्र साव प्रधान लिपिक स्वास्थ्य विभाग भुवनेश्वर शर्मा स्वास्थ्यविभाग राम निकस राम गवर्नमेन्ट प्रेस दिनेश सिंह (आवास),

कैलाश प्रसाद यादव (पटना क्षेत्रीय विकास प्राधिकार), रघुवर रजक (उद्योग विभाग), जगलाल चौधरी (सिचाई विभाग), राम विनय सिंह (टंकक, कल्याण विभाग), राम किशोर मिश्र (कृषि विभाग), राम प्रभु सिंह (पथ परिवहन विभाग)

विविध विभागों में निरीक्षक एवं पर्यवेक्षक—सर्वश्री राम भवन सिंह (प्रखण्ड सांख्यिकी पर्यवेक्षक), राम नरेश सिंह (खाद्य पदार्थ, स्वास्थ्य और सफाई निरीक्षक) राम नरेश प्रसाद शर्मा (सहकारिता निरीक्षक), नागेन्द्र मिश्र (सहकारिता निरीक्षक), रामानुज मिश्र (मलेरिया निरीक्षक), श्रीमती शकुन्तला देवी (महिला स्वास्थ्य परिदर्शिका), उमर मियाँ (पर्यवेक्षक, बाटा कंपनी)

कृषि और पशुपालन विभाग—सर्वश्री राघो सिंह, राम दर्शन वर्मा —जनसेवक, उमाशंकर सिंह, सुमन शर्मा—ग्राम सेवक, लक्ष्मण सिंह—कर्मचारी, राम विनोद सिंह, चन्देश्वर सिंह, फेकन साव (पशु पालन)

चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी—स्वास्थ्य विभाग—सर्वश्री कैलाश सिंह, चन्द्रिका साव, युगेश्वर सिंह, राम कौशल वर्मा, मूरत राम, राम सागर महतो, जनकदेव प्रसाद, चन्द्र शेखर वर्मा, राधेश्याम मिश्र, राम विजय शर्मा वैद्यनाथ प्रसाद गुप्ता (फाइलेरिया)

सिंचाई विभाग—नलकूप चालक—सर्वश्री राजेश्वरी प्र० सिंह, राम नारायण सिंह, सुरेशचन्द्र सिंह, दीनानाथ सिंह, सुरेश्वर सिंह, लाल बाबू सिंह, सुरेश वर्मा राम, उजियार सिंह

विद्युत विभाग—मिस्त्री—सर्वश्री उमेश चन्द्र सिंह, श्याम नारायण राम, काशिम मियाँ।

पथ परिवहन—सर्वश्री रामजन्म सिंह (चालक) राम बाबू सिंह, राम भगवान सिंह (हेल्पर), राम उग्रह सिंह (सुरक्षा गार्ड), रण विजय सिंह (कन्डक्टर)

लोक निर्माण विभाग—सर्वश्री जगदीश शर्मा, सतीश प्र० शर्मा, ब्रज, किशोर शर्मा,

गृह रक्षा वाहिनी—सर्वश्री उमेश सिंह, अर्जुन सिंह, जगदेव वर्मा, अशोक कुमार वर्मा, बिन्दु राम।

विविध—श्रीमती पार्वती देवी (गृह सेविका समाज कल्याण विभाग), उपेन्द्र शर्मा, (प्रेस कम्पोजिटर), विश्वनाथ सिंह (सेल्स मैनेजर खादी भंडार), बालेश्वर मिश्र (गोदाम कन्ट्रोल प्रभारी), देवराज साव (एन० टी० सी०),

अन्यान्य चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी—सर्वश्री विश्राम सिंह, तारकेश्वर मिश्र, जीतेन्द्र मिश्र, ईश्वर मिश्र, शिव प्रसाद राम, रामनाथ राम, अलबेला राम, दसई राम, रमाकान्त सिंह, श्याम नन्दन सिंह।

ताईद—सर्वश्री तपेश्वर सिंह, राम सरोज सिंह, सना सिंह।

सेवा निवृत कर्मचारी—सर्वश्री श्रीकृष्ण सिंह (मुनि जी), (उच्च प्रवर कोटि आर० एम० एस०), राम निहोरा सिंह (सूबेदार), शम्भु सिंह (सिगनल्स स्थल सेना), राम जतन शर्मा (गार्ड रेल), भरत सिंह (प्रधान लिपिक रेलवे). जनकधारी सिंह (आदेश पाल रिजर्व बैंक), श्यामधारी सिंह, तीर्थानन्द मिश्र, रघुराज सिंह, हरि कृष्ण सिंह (शिक्षक), राजदेव मिश्र (ऑपरेटर), लक्ष्मी सिंह (कर्मचारी), स्व० राम लगन सिंह (उप आरक्षी निरीक्षक), स्व० राधा कान्त शर्मा (कनीय अभियन्ता)।

होनहार मेधावी छात्र—

१. श्री हरिहर दीक्षित—एम० बी० बी० एस (एन० एम० सी० एच० पटना)।

२. श्री अखिलेश्वर कुमार—एम० बी० बी० एस० (आर० एम० सी० एच० राँची)।

३. श्री अखिलेश्वर कुमार सिंह—डिग्री इन इन्जिनियरिंग (मैकेनिकल)।

४. श्री ओमप्रकाश—डिग्री इन इन्जिनियरिंग (इलेक्ट्रिकल)।

५. श्री जयनन्दन शर्मा—डिप्लोमा इन इन्जिनियरिंग (इलेक्ट्रिक)।

६. सुधीर कुमार—डिप्लोमा इन इन्जिनियरिंग (सिविल)।

समाज सेवी व्यक्तियों की सूची—

१. श्री चन्द्रिका शर्मा (गांधी जी)—पेंशन प्राप्त स्वतन्त्रता सेनानी।

२. श्री कृष्ण मुरारि शर्मा।

३. श्री गजेन्द्र शर्मा

४. श्री किशोरी शरण सिंह

५. गणेश प्रसाद सिंह

गायक एवं वादक—सर्वश्री बद्री महाराज, चन्द्रदेव सिंह, रामनाथ सिंह,

आदेशपाल—धनराज साव, केशव साव. इन्द्रदेव राय।

अभिलेख वाहक—बद्री महाराज

भक्तमाल

चन्दा देने वाले व्यक्तियों की सूची

महमदपुर पयनाल पट्टी

१	श्री श्रीकृष्ण सिंह	....	३२०·०
२	,, उमा शंकर सिंह	....	५१·००
३	,, दीप लाल सिंह	...	२०·००
४	,, राम नरेश शर्मा	....	१०·००
५	,, राम अनूप शर्मा	....	२५·००
६	,, रामाश्रय सिंह	....	२५·००
७	,, जय राम शर्मा (टेंगरइला)	....	२५·००
८	,, डॉ० व्यास ,, ,,	....	५१·००
९	,, सिया राम ,, ,,	....	५१·००
१०	,, सूर्यदेव सिंह	....	१५·००
११	,, भोला प्रसाद शर्मा—नतैत	....	५५·००
१२	,, कृष्ण मुरारि शर्मा	....	५०१·००
१३	,, बृज विहारी सिंह	....	१२५·००
१४	,, राजनाथ सिंह	....	०५·००
१५	,, भोला सिंह—नतैत	....	५१·००
१६	,, राम यतन सिंह	...	२०·००
१७	,, नविन्द सिंह	...	३०·००
१८	,, इन्द्र देव शर्मा	....	१५·००
१९	,, राम विनोद प्रसाद सिंह—नतैत	....	३०·००
२०	,, गुप्तेश्वर सिंह—नतैत	....	५१·००
२१	,, नन्द किशोर शर्मा	....	२०·००
२२	,, सिद्धनाथ सिंह वल्द बाबू भोला सिंह	....	१५·००
२३	,, श्याम धारी सिंह	....	१६·००
२४	,, अकलू सिंह वल्द बाबू गोवर्द्धन सिंह	....	१५·००
२५	,, अकलू शर्मा वल्द बाबू दसई सिंह	....	१५·००
२६	,, रमेश शर्मा 'सत्यार्थी'	....	४०·००
२७	,, सत्य देव सिंह वल्द बाबू ब्रह्मदेव सिंह	....	०२·००
२८	,, हरि कृष्ण सिंह	....	३५·००

२९	श्री विश्व नाथ सिंह	....	०५·००
३०	,, भुवनेश्वर शर्मा	....	१५·००
३१	,, चन्दू सिंह	....	१५·००
३२	,, जगन्नाथ ,,	....	३१·००
३३	,, प्रहलाद सिंह	....	०५·००
३४	,, चतुर्भूज सिंह	....	१६·००
३५	,, राम जी सिंह	....	२१·००
३६	,, सत्य देव शर्मा वल्द बाबू राम केवल सिंह	....	४५·००
३७	,, सिद्ध नाथ सिंह	....	२०·००
३८	,, कपिलदेव सिंह	....	३०·००
३९	,, रामजन्म सिंह	....	२५·००
			१५७४·००

खास पयनाल पट्टी

१	श्री कृष्ण नन्दन सिंह—देवी स्थान	....	३२·००
२	,, शिव लाल सिंह	....	६६·००
३	,, चन्द्रदेव सिंह	....	३०·००
४	,, धरीछन सिंह	....	२०·००
५	,, परमानन्द सिंह	....	५१·००
६	,, जयगोबिन्द सिंह	....	०६·००
७	,, चन्द्रिका सिंह—(चुनका)	....	५१·००
८	,, रामसनेही सिंह	....	०५·००
९	,, जयशंकर प्रसाद	....	२५·००
१०	,, आनन्द सिंह	....	४०·००
११	,, केदार नाथ सिंह	....	२५·००
१२	,, राम प्रभु सिंह	....	१०१·००
१३	,, राम सेवन सिंह	....	५१·००
१४	,, राम प्रसाद सिंह	....	२०·००
१५	श्री राम उजियार सिंह	....	०५·००
१६	,, लक्ष्मण सिंह	....	२१·००
१७	,, रामदहिन सिंह	....	१०·००
१८	,, कैलास सिंह	....	२०·००

१९	श्री सिद्धनाथ सिंह	....	१०·००
२०	" नन्द किशोर शर्मा (फकीरचन्द)	....	१६·००
२१	" राम विनय सिंह	....	२५·००
२२	" पंचानन सिंह	....	२५·००
२३	" सच्चिदानन्द सिंह	....	२५·००
२४	" बेणी माधव सिंह—मोहन सिंह	....	०५·००
२५	" डॉ० रामस्वरूप सिंह	....	१०१·००
	" कृष्ण मुरारि सिंह	....	१०१·००
	" शचीन्द्र कुमार शर्मा	....	१०१·००
	" बाल मुकुन्द 'पैनाली'	....	१०१·००
	" डॉ० कौशलेश कुमार	....	१०१·००
२६	" श्री राम बलिष्ठ सिंह	....	५३·००
२७	" राम भवन सिंह	....	२५·००
२८	" शिव प्रसाद सिंह	....	७०·००
२९	" कृष्ण देव सिंह—बउआ	....	४१·००
३०	" राम प्रवेश सिंह	....	१५·००
३१	" जगदीश सिंह	....	१८·००
३२	" मदन प्रसाद सिंह	....	३५·००
३३	" देव पूजन सिंह	....	३५·००
३४	" शिव पूजय सिंह	....	२५·००
३५	" सिया राम सिंह	....	१५·००
३६	" राम नारायण सिंह	....	२१·००
३७	" श्याम नन्दन सिंह	....	१५·००
३८	" दीनेश सिंह	....	२०·००
३९	" रामाश्रय नारायण सिंह	....	३६·००
४०	" रामानुग्रह सिंह	....	१०·००
४१	श्री शालिग्राम सिंह	....	५१·००
४२	" राम सुजान सिंह	....	१०·००
४३	" राम कुमार सिंह - टेंगरइला	....	५१·००
४४	" राम निहोरा सिंह	....	५१·००
४५	" सिया राम सिंह वल्द बाबू शुक देव सिंह	....	२५·००
			१८१२·००

गोशाल पुर पयनाल पट्टी

१	श्री विद्या भूषण सिंह	....	०२·००
२	" तृपित नारायण सिंह	....	३१·००
३	" भोला प्रसाद सिंह	....	३५·००
४	" योगीन्द्र प्रसाद सिंह	....	१०·००
५	" देवेन्द्र प्रसाद सिंह	....	१५·००
६	" शारंग धारी सिंह	....	३१·००
७	" पारस नाथ सिंह	....	५१·००
८	" गणेश प्रसाद सिंह	....	५००·००
९	" जयेन्द्र शर्मा	....	१०१·००
१०	" बृज नन्दन प्रसाद सिंह	....	०४·००
११	" कृष्ण नन्दन सिंह वल्द श्री सच्चू प्र० सिंह	....	३१·००
१२	" मदन प्रसाद सिंह	...	०५·००
१३	" कैलास प्रसाद सिंह	....	१०१·००
१४	" शंभु प्रसाद सिंह	....	१२·००
१५	" चन्द्र देव सिंह	....	१०१·००
१६	" राम रेखा सिंह	....	५१·००
१७	" गजेन्द्र शर्मा	....	५१·००
			११२२·००

श्रीपालपुर पट्टी

१	श्री शत्रुहन सिंह	....	५१·००
२	" प्रेम नाथ सिंह	....	२५·००
३	" धर्म नाथ सिंह (बूढ़ा)	....	१०·००
४	" भरत सिंह	....	१०१·००
५	" राज बली सिंह	...	२१·००
६	" राम भजु सिंह	....	१०·००
७	" चन्द्र देव सिंह	....	१०१·००
८	" विन्देश्वरी सिंह	....	४१·००
९	" शशि शेखर शर्मा	....	५३·००
१०	" सुरेन्द्र कुमार शर्मा	....	१०१·००
११	" राम स्वरूप सिंह	—	०१·००

१२	श्री रघुनाथ सिंह	...	१५२·००
१३	,, लक्ष्मी नारायण ,,	—	५१·००
१४	,, उमा शंकर सिंह	....	३२·००
१५	,, मेघन दास सिंह	....	०५·००
१६	,, श्याम प्यारे सिंह	....	२५·००
१७	,, राघो सिंह	...	३०·००
१८	,, बैजनाथ सिंह (प्रयाग)	....	२०·००
१९	,, सुदर्शन सिंह	....	१०.००
			७०३·००

मिन जुमले पयनाल पट्टी

१	श्री ईश्वर दयाल सिंह	...	२१·००
२	,, सिद्ध नाथ सिंह	—	३१·००
३	,, श्री कृष्ण मुरारि सिंह	—	१०·००
४	,, राम नरेश शर्मा	....	२०·००
५	,, हरदेव सिंह	....	२०·००
६	,, मोहन सिंह श्री सुग्रीम सिंह	....	४०·००
			१४२·००

अन्यान्य

१	श्री कपिल देव सिंह (चेसियार ब्राह्मण)	....	२०·००
२	,, श्री नारायण शर्मा (अमहरा)	....	०५·००
३	,, दिलकेश्वर सिंह (बरइंयाँ ब्राह्मण)	....	२५·००
४	,, वीरेन्द्र कुमार शर्मा ,, ,,	....	२५·००
५	,, राम नाथ सिंह ,, ,,	....	१५·००
			९०·००

शाक द्वीपी ब्राह्मण

१	श्री कपिल देव मिश्र	...	२०·००
२	,, पशुमति मिश्र	—	१०·००
३	,, यज्ञ नारायण मिश्र	....	५१·००
४	,, राम प्रताप मिश्र	....	२५·००
५	,, कृष्ण मोहन मिश्र	....	२०·००

६	,, राज देव मिश्र वल्द श्री पीताम्बर मिश्र	....	३०·००
७	,, योगेन्द्र मिश्र	...	१५·००
८	,, राधेश्याम मिश्र	....	२०·००
			१९१·००

यादव

१	श्री साधु भगत उर्फ सत्य नारायण	....	१७·००
२	,, गुरु सहाय राय	....	१५·००
३	,, मोती भगत	....	६६·००
४	,, शिव नारायण राय	....	२०·००
५	,, जगन्नाथ भगत	....	०५·००
६	,, नेतराम भगत	....	२१·००
७	,, राम दयाल भगत	....	०१·००
८	,, राज नन्दन राय	....	५६·००
९.	,, श्याम लाल भगत—राम जन्म	....	२०·००
१०	,, मुल्ला राय	....	१०·००
११	,, तेजा भगत	...	०५·००
१२	,, अच्छे लाल भगत	...	०२·००
१३	,, बदरी यादव	....	१०·००
१४	,, राम ध्यान राय	....	३०·००
१५	,, श्री कृष्ण यादव	....	०२·००
			२८०·००

कहार

१	श्री सहदेव राम	....	१६·००
२	,, राम नारायण राम	....	१६·००
३	,, श्याम नारायण राम	....	२५·००
४	,, रणजीत सिंह	....	२५·००
५	,, बदरी राम	....	०२·००
६	,, राम ईश्वर राम	—	०५·००
७	,, देव लाल राम	....	०१.००
८	,, राम निवास राम	....	१०·००

९	,, राम नाथ राम	....	०२'००
			१०२'००

गँरेड़ी

१	श्री लोक नाथ भगत	....	०५'००

बढ़ई

१	श्री राम नन्दन मिस्त्री	....	२५'००

रजक

१	श्री व्यास रजक	....	०५'००
२	,, दीना नाथ रजक	—	५१'००
			५६'००

बनियाँ

१	श्री तिलक साव, श्री ठाकुर साव	....	१३'००
२	,, गया साव	...	२३'००
३	,, मूरत साव	....	१०'००
४	,, भूलन साव	—	१०'००
५	,, प्रयाग साव	....	२१'००
६	,, काशी साव	...	२१'००
			९६'००

कन्हौली

हजाम

१	श्री चन्द्र देव ठाकुर	....	०६'००
२	,, शिव ठाकुर	...	०५'००
३	,, प्यारे ठाकुर	....	०१'००
			१२'००

कुम्हार

१	श्री भुचेंगन पिंडित	....	२०'००

कोइरी

१	श्री राम जीवन महतो	....	२०'००
२	,, सुदर्श महतो	....	२०'००
			४०'००

कान्दु

१	श्री राम प्रसाद साव—देवी स्थान	....	२०.००
२	,, बचन साव	....	१२.००
३	,, राम रतन साव	....	०१.००
४	,, मेघ नाथ साव	...	०१.००
५	,, केशव साव —सिया राम	....	१६.००
६	,, रघुनन्दन साव	....	०५.००
७	,, सकल देव साव	....	२१.००
			७६.००

पासी

१	श्री गाजर चौधरी	....	०६.००

मुसलमान

१	श्री जंगी मियाँ	....	०६.००
२	,, रजक मियाँ	...	०१.००
३	,, एम सुद्दीन मियाँ	...	०८.००
४	,, लुकमान मियाँ	...	०७.००
			२२.००

भाँट (ब्रह्म भट्ट)

१	श्री बदरी महाराज	....	२५.००

तेली

१	श्री महादेव साव	....	१६.००
२	,, बुधराम साव	....	०५.००
३	,, भूषण साव—सगुनी	....	१५.००
४	,, देव राज साव	....	०७.००
			४३.००

दुसाध

१	,, विमल पासवान	....	०२.००
२	,, दुखहरण पासवान	....	०४.००

३	श्री विशुन पासवान	....	०४·००
४	,, राजबंशी पासवान	....	०२·००
५	,, विश्वनाथ पासवान—खेसारी	....	०२·००
			१४ ००

चमार

१	श्री केश्वर राम	....	०५·००
२	,, सुन्दर राम	....	०१·००
३	,, डोमन राम	....	१६·००
४	,, बासगीत राम	....	०५·००
५	,, सोमारू राम	....	०२·५०
६	,, बौध राम	....	०२·००
			३१·५०

सिन्दुरिया

१	श्री उमा शंकर लाल	....	१५·००
२	,, रघुनाथ लाल	....	१५·००
३	,, लाल बाबू लाल	....	०२·००
			३२·००

कुल योग ६५१९–५०

१.	श्री राजेश्वर प्रसाद शर्मा प्रधानाध्यापक, पैनाल उच्च विद्यालय ग्राम–बेढ़ना, बाढ़ (पटना)	....	५०१-००
		योग	७०२०-५०
१.	कर्ज लिया गया	....	५६९·५०
		कुल योग	७५९०·००

श्री गजेन्द्र शर्मा

यह मेधावी युवक जन हित में इतना संलग्न है कि घर तथा परिवार तक की ममता छोड़ चुका है। अनेक संस्थाओं का कुशलता पूर्वक संचालन करता हुआ अपने जीवन के महान लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। इसने हमें इतिहास कोष संग्रह तथा प्रेस के कार्यों में काफी मदद दिया है। यह चन्दा के अलावा लगभग १०० रुपये अपने तरफ से खर्च किया है परन्तु ये हिसाब में नहीं है और न वो देने दिया। भगवान इसे मंगलमय दीर्घायु बनायें, जिससे समाज कल्याण का अधिक से अधिक कार्य सम्पन्न कर सके। हरि ॐ

—किशोरी शरण सिंह

परिशिष्ट

पृष्ठ ५५ के नीचे वीरेन्द्र का लड़का—नीरज कुमार

" १०९ के पंक्ति ९ में काशी का लड़का मंडल कुमार तथा गोपाल का लड़का रंजय कुमार

" ११९ के पंक्ति १० में—

रघुवर

अरुण | अभय | अशोक | तारकेश्वर | अजीत

" १११ के ४ पंक्ति में रमेश का लड़का-दीनेश

" ५३ के १६ वें लाइन में कामेश्वर का लड़का-अक्षय कुमार है तथा राम कुमार का लड़का मन्नू नाम गलत है। शुद्ध नाम मुन्ना है।

" ५६ के १२ वें लाइन में—

सुरेश चन्द्र

अरुण कुमार | विजय कुमार

एवं विद्या नारायण का लड़का-अभय कु० और अमिय कु० पृष्ट ५६ के नीचे-

विश्वनाथ

शत्रुघ्न | विजय | ग्रानय

महेश्वर

पृष्ठ १६१ में श्री ब्यावर सिह (टेंगरइला) अपने ननिहाल में बस गये हैं। ससुराल में बसना लिखा गया है सो गलत है। ३०५ पृष्ट के २४ वें पंक्ति में श्री सियाराम शर्मा की भार्या का नाम श्रीमती विद्यावती देवी है पहले से इनका नाम न मालूम रहने से वह स्थान रिक्त रहा। ये औ श्री प्रेम नाथ सिह गायक एवं वादक भी हैं। पृष्ट ४८ के ८ वें पंक्ति में अभय कुमार का लड़का असंतोष।

वीर भानु

[पयनौल ग्राम में पूज्य देवी-देवताओं के विषय में इस इतिहास में पहले ही लिखा जा चुका है। स्मरण नहीं रहने के कारण इनका लिखना भूल गया था, इसलिए इनके विषय में यहां लिखना पड़ रहा है।] ले०।

वीर भानु के विषय में किम्वदन्ती इस प्रकार है कि—पयनाल के महमदपुर पट्टी में एक भूमिहार ब्राह्मण के घर में इनका जन्म हुआ था। जिस प्रकार सती ने अपने पिता के यज्ञ में ग्लानि वश योगाग्नि द्वारा अपना शरीर भस्म कर दिया था, उसी प्रकार वीर भानु ने किसी तरह की गलानि से योगाग्नि द्वारा अपना शरीर भस्म कर दिया था, और इन्होंने अपने पिता को स्वप्न में बताया कि जो कोई व्यक्ति अपने प्रथम पुत्र के यज्ञोपवीत संस्कार के पूर्व मेरी पूजा करेगा, उसका महा-कल्याण होगा। उसी समय से इनकी पूजा प्रारम्भ हुई। इनकी मूर्त्ति पहले श्रीकृष्ण सिंह (मुनि जी) के मिट्टी के मकान में थी। जब वे मिट्टी के मकान को तोड़कर पक्का बनाने लगे तब उन्होंने उसी जगह एक दीवार में ताख बनवा कर उसी में इनकी मूर्त्ति स्थापित कर दी। इनकी मूर्त्ति अन्यान्य व्यक्ति के घरों में भी स्थापित है।

यज्ञ कर्त्ता पूजार्थ मांगलिक सामग्री लेकर जब घर से निकलता है, तो उसके पीछे झुंड बान्ध कर स्त्रियाँ बाजे-गाजे के साथ वीर भानु का गीत गाती हुई वीर भानु के पास पहुँचती हैं।

वहाँ आचार्य वीर भानु की विधिवत् पूजा करवाते हैं। वहाँ की पूजा सम्पन्न हो जाने पर यज्ञकर्त्ता के साथ उसी प्रकार गीत गाती हुई स्त्रियाँ सब उनके घर लौटती हैं और तब यज्ञोपवीत—संस्कार का कार्य प्रारंभ होता है

वीर भानु का गीत स्त्रियाँ इस प्रकार गाती हैं—

"आटुर बाटुर कियवा ए वीर भानु,
राज भोगहु न पवलू मँजीरवा,
सुख भोगहु न पवलू मँजीरवा।
ऊ जे सोनानी के रे सिकरिया ए वीर भानु,
राज भोगहु न पवलू मँजीरवा,
सुख भोगहु न पवलू मँजीरवा॥"

पुस्तक प्रकाशन में :—

१	पुस्तक के मुद्रण में कागज, कार्ड बोर्ड, आर्ट पेपर में खर्च	..	[illegible]
२	पुस्तक मुद्रण तथा आवरण, तस्वीर मुद्रण में खर्च	..	[illegible]
३	ब्लॉक बनवाने में रेल के माध्यम से खर्च	..	[illegible]
४	ब्लॉक बेल बूल का नागरी ब्लॉक लेखर में बनवाने में खर्च	..	[illegible]
५	जिल्दबंदी में खर्च	..	[illegible]
६	फुटकर खर्च	..	[illegible]
	कुल खर्च	..	[illegible]

नोट :—१. रवनाल का इतिहास के प्रकाशन में सौंध वालों ने आर्थिक सहायता की है। एतदर्थ लेखक उनके सामने नत मस्तक है। यदि प्रकाशन यज्ञ को सफल बनाने में आर्थिक सहायता नहीं मिलती तो प्रकाशन होना असम्भव था। प्रकाशन में चन्दा से पूर्ति न हो सकने के कारण कर्ज लेकर पूरा किया गया। भगवान सभी को दीर्घायु प्रदान करें।

२. श्री कृष्ण मुरारि शर्मा फोटो ग्राफर को बुलाकर देवस्थल इत्यादि का चित्र खिचवाये थे, जिसमें दो सौ रुपये खर्च थये। पैसे की कमी से सभी चित्रों का ब्लॉक नहीं बन सका।

३. श्री राधा कृष्ण, लेखक, भावल रामायण के अक्षरों के नमूने का तथा डॉ० राम स्वरूप के ब्लॉक बनवाने में जो खर्च हुए चन्दा से नहीं किया गया यह लेखक का अपना खर्च हुआ है।